CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऊ5/9

# अष्टछाप

आम्नाय-ग्रन्थालय,
[illegible]
वाराणसी-5

लय
णसी-५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

1·1

आम्नाय–ग्रन्थालय,
रत्ननिधि, द. दीवे
वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीगोकुलनाथ कृत

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि. न्यास
वाराणसी-5

# अष्टछाप

संकलनकर्ता

**धीरेन्द्र वर्म्मा, एम० ए०**

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

श्रीगोकुलनाथ कृत

# अष्टछाप

आम्नाय–ग्रन्थालय,
भरतमिलाप, करौंदी
वाराणसी-5

—:o:—

संकलनकर्ता
धीरेन्द्र वर्म्मा एम० ए०, डी० लिट्०
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
विश्वविद्यालय, प्रयाग

---

प्रकाशक
रामनारायण लाल
पब्लिशर और बुकसेलर
इलाहाबाद
१९३९

द्वितीय संस्करण १००० ] [ मूल्य १)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

1st Edition 1929.
1. M. 32.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदी
वाराणसी-5

# सूची

—:०:—


| | | |
|---|---|---|
| | वक्तव्य | १—३ |
| १. | सूरदास | १ |
| २. | कृष्णदास | १६ |
| ३. | परमानंददास | ४५ |
| ४. | कुंभनदास | ७० |
| ५. | नंददास | ६४ |
| ६. | चतुर्भुजदास | १०४ |
| ७. | छीतस्वामी | ११३ |
| ८. | गोविंद स्वामी | ११६ |


Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय–ग्रन्थालय,
रत्ननिधि, फरौंदा
वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय-ग्रन्थालय,
परमनिधि, करोंदी
वाराणसी-5

# वक्तव्य

गोकुलनाथ जी ने 'अष्टछाप' नाम से कोई पुस्तक नहीं लिखी है। प्रस्तुत पुस्तक गोकुलनाथ जी के नाम से प्रचलित "८४ वैष्णवन की वार्ता" तथा "२५२ वैष्णवन की वार्ता" शीर्षक ग्रंथों से अष्टछाप कवियों की जीवनियों का संग्रहमात्र है। ८४ वार्ता में महाप्रभु वल्लभाचार्य के सेवकों का वर्णन है। सूरदास, कृष्णदास, परमानन्ददास, तथा कुंभनदास महाप्रभु वल्लभाचार्य के सेवकों में प्रमुख थे। इनकी जीवनियाँ ८४ वार्ता के अन्त में एक स्थान पर मिलती हैं और यह वहाँ से ही ली गई हैं। महाप्रभु वल्लभाचार्य के पुत्र तथा उत्तराधिकारी गुसाईं विट्ठलनाथ के सेवकों का वर्णन २५२ वार्ता में मिलता है। गुसाईं जी के सेवकों में नंददास, चतुर्भुजदास, छीत स्वामी तथा गोविंद स्वामी ने विशेष प्रसिद्धि प्राप्त की थी और इनकी जीवनियाँ २५२ वार्ता में सबसे प्रथम दी गई हैं। कहा जाता है कि गुसाईं विट्ठलनाथ ने ही अपने तथा अपने पिता के इन चार चार प्रमुख सेवकों को लेकर "अष्टछाप" नाम दिया था। अतः प्रस्तुत संग्रह के इस नाम के पीछे कुछ ऐतिहासिक तथा सांप्रदायिक परम्परा है।

इस संग्रह को हिन्दी जनता के सन्मुख रखने में मेरे दो मुख्य उद्देश हैं। भाषा संबंधी उद्देश तो है सत्रहवीं सदी के ब्रजभाषा गद्य को सर्व साधारण के लिये सुलभ करना तथा साहित्यिक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



उद्देश है सूरदास आदि कुछ प्रसिद्ध हिन्दी कवियों की जीवनियों के इन प्रायः समकालीन जीते जागते वर्णनों से हिन्दी प्रेमियों का घनिष्ठ परिचय कराना। ८४ तथा २५२ वार्ताओं के अच्छे संस्करण न होने तथा इन ग्रंथों के बहुत बड़े होने के कारण उपर्युक्त उद्देशों की पूर्त्ति नहीं हो पा रही थी। इसके अतिरिक्त यह जीवनियाँ देश की तत्कालीन धार्मिक, सामाजिक तथा राज-नीतिक स्थिति पर भी अत्यन्त महत्वपूर्ण प्रकाश डालती हैं। राष्ट्रीय जीवन के इन आवश्यक अंगों का सच्चा इतिहास लिखने के लिये हिन्दी साहित्य में कितना भंडार भरा पड़ा है इसका दिग्दर्शन इस छोटे से संग्रह को आद्योपान्त पढ़ने से भली प्रकार हो सकेगा। इस दृष्टि से हिन्दी साहित्य का अध्ययन अभी किया ही नहीं गया है।

इस संग्रह के मूल का आधार डाकोर से प्रकाशित ८४ तथा २५२ वार्ताओं के संवत् १९६० के संस्करण हैं। ८४ वार्ता का डाकोर से एक नया संस्करण निकला है किन्तु इसके तथा पुराने संस्करण के मूल में विशेष अन्तर नहीं है। ८४ वार्ता का मथुरा से प्रकाशित संवत् १९४० का लिथो का छपा एक दूसरा संस्करण देखने को मिल गया था। इस संस्करण से कुछ महत्वपूर्ण पाठ-भेद फुटनोट में दे दिये हैं। २५२ वार्ता का न कोई अन्य संस्करण ही मिल सका और न हस्तलिखित प्रति ही अतः अन्तिम चार जीवनियों में पाठान्तर नहीं दिये जा सके हैं। पर्याप्त हस्त लिखित प्रतियों अथवा छपे हुये संस्करणों के बिना किसी ग्रंथ के मूल को

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



" शुद्ध करने " अथवा " संपादन करने " में मुझे विश्वास नहीं है अतः इस ओर प्रयास ही नहीं किया गया है।

इस बड़ी त्रुटि के रहते हुये भी प्रस्तुत संग्रह के प्रकाशन से उपर्युक्त उद्देशों की पूर्त्ति में बहुत कुछ सहायता मिल सकेगी इसी धारणा से हिन्दी जनता के सामने यह अपूर्ण पुस्तक रक्खी जा रही है। मुझे पूर्ण आशा है कि विद्यार्थी वर्ग तथा हिन्दी जनता दोनों ही इस संग्रह को रुचिकर तथा हितकर पावेंगे।

१—१—१९२९

धीरेन्द्र वर्म्मा

आम्नाय-ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदा
वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय—ग्रन्थालय,
भरतनिधि, करौंदा
वाराणसी-5

# अष्टछाप

—:०:—

## अथ[1] सूरदास जी गऊघाट ऊपर रहते तिनकी वार्ता

—:०:—

### प्रसंग १

सो एक समय[2] श्रीआचार्य जी महाप्रभू अडेलते[3] व्रज को[4] पावधारे[5]। सो कितनेक दिन में गऊघाट आयै[6]। सो गऊघाट आगरे और मथुरा के वीचोंवीच[7] है तहाँ श्रीआचार्य जी महाप्रभू पावधारे। सो गऊघाट ऊपर श्रीआचार्य जी महाप्रभू उतरे। तहाँ श्रीआचार्य जी महाप्रभू आप स्नान करिके संध्या-वंदन करिके पाक करन को वैठे[8] और श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवकन को समाज बहुत[9] हुतौ और सेवकहू अपने अपने श्रीठाकुर जी को[10] रसोई करन लागे।

सो गऊघाट ऊपर सूरदास जी कौ स्थल हुतौ[11]। सो सूरदास

१ अब श्री आचार्य जी महाप्रभून के सेवक। २ समें। ३ अंडेलते। ४ व्रज कों। ५ पाउं धारे। ६ आये। ७ वीचा वीच। ८ वैठे। ९ वहुत।

१० श्रीठाकुर जी की। ११ हुतो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



जी स्वामी हैं आप सेवक करते। सूरदास जी भगवदीय हैं[१] गान बहुत आछौ[२] करते ताते बहुत[३] लोग सूरदास जी के सेवक भये हुते। सो श्रीआचार्य जी महाप्रभू गऊघाट ऊपर उतरे। सो सूरदास जी के सेवक देखि के सूरदास जी सों जाय कही जो आज श्रीआचार्य जी महाप्रभू आप पधारे हैं जिनने दक्षिण में दिग्विजय कीयो है तब[४] पंडितन को जीते हैं भक्तिमार्ग स्थापन कीयौ है सो श्रीवल्लभाचार्य यहाँ पधारे हैं। तब सूरदास जी ने अपने सेवक सों कह्यौ जो तू जाय के दूर बैठि जब आप भोजन करिकें बिराजे तब खबरि करियो हम श्रीआचार्य जी महाप्रभून के दर्शन को जायँगे। सो वह तनक दूर जाय बैठौ।

तब श्रीआचार्य जी महाप्रभू आप पाक करत हुते। सो पाक सिद्ध भयौ। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने श्रीठाकुर जी को भोग समर्प्यो। पाछे समयानुसार भोगसराय अनोसरि करिकें महाप्रसाद ले कें श्रीआचार्य जी महाप्रभू गादी ऊपर बिराजे। तहाँ सब सेवकहू पहुँचिकें श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आसपास आय बैठे। तब वह सूरदास जी को सेवक आयौ सो सूरदास जी सों कही जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू बिराजे हैं तब सूरदास जी अपने स्थलते आयकै श्रीआचार्य जी महाप्रभून के दर्शन कों आये। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने कह्यौ जो सूर आवों बैठौ। तब सूरदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून को दर्शन करि कै आगे आय बैठे। तब श्रीआचार्य जी

---

१ हे। २ आछो। ३ बहुत। ४ सब।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



महाप्रभून ने कही जो सूर कछू भगवद जस वर्णन करौ। तब सूरदास जी ने कही जो आग्या[1]। सो सूरदास जी ने श्री आचार्य जी महाप्रभून के आगे एक पद गायौ॥ सो पद॥

राग धनाश्री

हौं हरि सब पतितन को नायक।
को करि सकै बराबर मेरी इतने मान कों लायक॥१॥
जो तुम अजामेलि सों कीनी जो पाती लिख पाऊँ।
होय विश्वास[2] भलौ जिय अपने और[3] पतित बुलाऊँ॥२॥
सिमिटे[4] जहाँ तहाँते सब कोऊ आयजुरे इक ठौर।
अब के इतने आन मिलाऊँ बेर दूसरी और॥३॥
होडाहोडी मन हुलास करि करे पाप भरि पेट।
सबहिन ले पायन तरिपरि हौं यही हमारी भेट॥४॥
ऐसी कितनी कब नाऊँ[5]प्रानपति सुमरन है भयौ आडौ।
अबकी बेर निवार लेउ प्रभू सूर पतित कों ठाडौ॥५॥

और पद गायौ।

राग धनाश्री

प्रभु में सब पतितन को टीकौ।
और पतित सब द्यौस चारिके में तौ जन्मत ही कौ॥१॥
बधिक अजामिलि गनिका त्यारी और पूतना ही कौ।
मोहि छांडि तुम और उधारै मिटै शूल केसें जीकौ॥२॥

---

१ आज्ञा। २ विस्वास। ३ औरहु। ४ सिमिट। ५ कितनीक बनाऊँ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



कोउ न समरथ सेवकरनकौ खेचि कहत हौं लीकौ।
मरियत लाज सूरपतितन में कहत सवन में नीकौ ॥ ३ ॥

ऐसौ पद श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगे सूरदास जी ने गायौ सो सुनि के श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने कह्यौ जो सूर है कें ऐसो घिघियात काहे को है कछू भगवल्लीला वर्णन करि। तब सूरदास नें कह्यौ जो महाराज हौं तो समझत नाहीं। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो जा स्नान करि आउ हम तोकों समझावेगे[१]। तब सूरदास जी स्नान करि आये तब श्री-महाप्रभू जी नें प्रथम सूरदास जी कों नाम सुनायौ पाछें समर्पण करवायौ और फिर दशम स्कंध की अनुक्रमणिका कही सो ताते सब दोष दूर भयै। ताते सूरदास जी कौ नवधा भक्ति सिद्ध भयी। तब सूरदास जी ने भगवल्लीला वर्णन करी। अनु-क्रमणिका ते संपूर्ण लीला फुरी सो क्यों जानियै सो दसमस्कंध को सुबोधिनी में मंगलाचरण कौ प्रथम कारिका कीये हैं सो यह श्लोक सूरदास जी नें कह्यौ। सो श्लोक।

नमामि हृदये शेषे लीलात्तराब्धि सायनम्[२]।
लक्ष्मी सहस्र लीलाभिः सेव्यमानं कलानिधिम् ॥ १ ॥

और ताही समय श्रीमहाप्रभून के सन्निधान पद कीयै। सो पद। रागविलावल "चकई री चलि चरण सरोवर जहाँ न प्रेम बियोग।" यह पद संपूर्ण करिकें सूरदास जी ने गायौ। सो यह

---

१ समझायेंगे। २ लीलाचराब्धि सायिनं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



पद दशमस्कंध के मंगलाचरण की कारिका के अनुसार कीयौ। सो यामें कह्यौ है जो तहाँ श्रीसहस्र सहित नित क्रीडत शोभित। सूरदास या भाँति पद कीयै ताते जानी जो सूरदास को सम्पूर्ण सुबोधिनी स्फुरी। सो श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने जान्यो जो लीला को अभ्यास भयौ। पाछें सूरदास जी ने नंदमहोत्सव कीयौ। सो श्रीआचार्य महाप्रभून के आगे गायौ। राग देवगन्धार। "व्रज भयौ महर के पूत। जब यह बात सुनी।" सो यह श्रीआ॰ चार्य जी महाप्रभून के आगे गायौ। सो सुनि के श्रीआचार्य जी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भयै और अपने श्रीमुख ते कहैं जो सूरदास मानों निकट ही हुते।

पाछें सूरदास जी ने अपने सेवक कीयै हुते तिन सबन को नाम दिवायौ। पाछे सूरदास जी ने बहुत पद कीये। पाछे श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने सूरदास जी कों पुरुषोत्तम सहस्रनाम सुनायौ तब सूरदास जी को सम्पूरण भागवत स्फुर्तना भई। पाछें जो पद कीयै सो श्रीभागवत प्रथम स्कंधते द्वादश स्कंधताई कीये। ताते वे सूरदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपा-पात्र भगवदीय हैं। पाछें श्रीआचार्य जी महाप्रभू गऊघाट ऊपर दिन दोय तीन बिराजे। पाछें फेरि व्रज को पाव धारे तब सूरदास जी हू श्रीआचार्य जी महाप्रभून के साथ व्रज को आयै।

## प्रसंग २

अब जो श्री आचार्य जी महाप्रभू व्रजकों पधारे सो प्रथम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



श्रीगोकुल पधारे। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून के साथ सूरदास जी हू आये। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने अपने श्रीमुखसों कह्यौ जो सूरदास श्रीगोकुल कों दर्शन करौ। सो सूरदास जी ने श्रीगोकुल कों दंडवत करी। सो दंडवतमात्र श्रीगोकुल की बाल-लीला सूरदास जी के हृदय में फुरी और सूरदास जी के हृदय में प्रथम श्रीमहाप्रभून ने सकल लीला श्रीभागवत की स्थापी हैं, ताते दर्शन करत मात्र सूरदास जी कों श्रीगोकुल की बाललीला स्फुर्दना भई। तब सूरदास जो ने विचारयौ मन में जो श्रीगोकुल की बाललीला को वर्णन करिकैं श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगें सुनाइयै। जन्म लीला को पद तौ प्रथम सुनायौ है अब श्रीगोकुल की बाललीला को पद गायौ। सो पद।

राग बिलावल

सो नित करन पुनीत लियै।[1]
घुटुरुवन चलत, रेणुतन मेड़त,[2] सुरत वेष कियै[3] ॥ १ ॥
चारु कपोल लोल लोचन छवि गोरोचन कौ तिलक दिये।
लार लटकन मानो मत[4] मधुपगन माधुरी मधुर पियै ॥ २ ॥
कठुला कंठ बजत, केहरि नख राजत है सखी रुचिर हिये।
धन्य सूर एकौ पल यह सुख कहा भयौ जीये ॥ ३ ॥

यह पद सूरदास जी ने गायौ। सो सुनि के आप बहुत प्रसन्न भये। पाछें औरहू पद गायौ।

---

१ सोभित कर नवनीत लिये। २ मंडित। ३ मुख लेप किये। ४ मत्त।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



तब श्रीमहाप्रभू जी आपने मन में बिचारे जो श्रीनाथ जी के यहाँ और तो सब सेवा कौ मंडान भयौ और कीर्तन को मंडान नाही कियौ है ताते अब सूरदास जी को दीजियै। तब आप श्री जी द्वार पधारे। सो सूरदास जी कौ साथ लीये ही सो श्रीनाथ जी द्वार जाय पहुँचे। तब आप स्नान करिकें मंदिर में पधारे। तब सूरदास जी सों कह्यौ जो सूरदास ऊपर आउ स्नान करिकें श्रीनाथ जी कौ दर्शन करि। तब सूरदास जी पर्वत ऊपर जायकै श्रीनाथ जी कौ दर्शन कीयौ। तब आपने कह्यौ जो सूरदास कछू श्रीनाथ जी को सुनावौ। तब सूरदास जी ने प्रथम विग्यप्त[1] को पद गायौ। सो पद। राग धनाश्री। "अब हों नाच्यौ बहुत गोपाल।" यह पद सम्पूर्ण करिकें श्रीनाथ जी के आगें गायौ। तब श्रीमहाप्रभून जी ने कह्यौ जो अब तौ सूरदास तुममें कछू अविद्या रही नाहीं तुम्हारी अविद्या तो प्रभून ने दूर कीनी ताते कछू भगवद्यश वर्णन करौ। तब सूरदास जी ने महात्म्य और लीला ऐसो जस करिकें गाय सुनायौ। सो पद। राग गौरी। "कोन सुकृत इन व्रजवासिन कों।" यह पद सम्पूर्ण करिके गायौ। सो सुनिकें श्रीमहाप्रभू जी बहुत प्रसन्न भये।

सो जैसो श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें मार्ग प्रकाश कीयौ है ताके अनुसार सूरदास जी ने पद कीये। श्रीआचार्य जी महाप्रभून के मार्ग को कहा स्वरूप है महात्म्य ग्यान पूर्वक सुदृढ़ स्नेह की यौ[2] परमकाष्ठा हैं और स्नेह आगे भगवान को महात्म्य रहत नाहीं

---

१ विज्ञप्ति। २ तौ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



ताते भगवान वेर वेर महात्म्य जनावत हैं। नाम प्रकरन में पूतना करि, सकट तृनावर्तकरि, गर्गाचार्य करि, यमलार्जुन करि, वैकुण्ठ दर्शन करी[1], ऐसें करिकें भगवान ने बहुत महात्म्य जनायौ। परि नइ व्रजभक्तिन को स्नेह परमकाष्ठापन्न है ताते ताही समय तौ महात्म्य रहै पाछें विस्मृत ह्वो जाय।

## प्रसंग २

और सूरदास जी ने सहस्रावधि[2] पद कीये हैं ताको सागर कहियै सो सब जगत में प्रसिद्ध भये। सो सूरदास जी के पद देशाधिपति ने सुने सो सुनिकें यह विचारौ जो सूरदास जी काहू बिधि सों मिले तो भलौ। सो भगवदिच्छा ते सूरदास जी मिले। सो सूरदास जी सों कह्यौ देशाधिपति ने जो सूरदास जी में सुन्यो है जो तुमने बिसनपद वहु[3] कीयै हैं जो मोकों परमेश्वर[4] नें राज्य दीयौ है सो सब गुनीजन मेरौ जस गावत हैं ताते तुमहूँ कछू गावो। तव सूरदास जी ने देशाधिपति के आगे कीर्तन गायौ। सो पद। रागबिलावल। "मना रे तू करि माधो सों प्रीति।" यह पद देशाधिपति के आगे संपूर्ण करिके सूरदास जी नें गायौ। सो यह पद कैसो है जो यह पद को अहर्निश ध्यान रहे तौ भगवदनुग्रह की सदा सार्ति रहै, और संसार ते सदा वैराग्य रहै, और कुसंग को सदा भय रहै, और भगवदीय के संग की सदा चाह रहै और श्रीठाकुर जी के चरणारबिंद ऊपर सदा स्नेह रहै, देशादि के ऊपर आसक्ति न होय, ऐसो पद देशाधिपति कों सुनायौ।

---

१ करि। २ सहस्रा विधि। ३ बहुत। ४ पनमेश्वर।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



सो सुनि के देशाधिपति बहुत प्रसन्न भये और कह्यौ जो सूरदास जी मोकों परमेश्वर[1] ने राज दीनों है सो सब गुनीजन मेरो जस गावत हैं ताते मेरो जस कछू गावौ। तब सूरदास जी ने यह पद गायौ। सो पद। राग केदारौ। "नाहिन रह्यौ मनमें ठौर।" यह पद संपूर्ण करि कें सूरदास जी ने गायौ। सो सुनि कें देशाधिपति अकबर बादशाह[2] अपने मन में विचारयौ जो ये मेरौ जस काहे को गावेंगे जो इनको कछू मेरी बात कौ लालच होय तौ गावै ये तो परमेश्वर के जन हैं। और सूरदास जी ते (ने) या पद के समाप्त में गायौ। "हो जो सूर ऐसें दर्श को इमरत[3] लोचन प्यास।" यह गायौ है। देशाधिपति ने पूछौ जो सूरदास जी तुम्हारे लोचन तो देखियत नाहीं सो प्यासे कैसें मरत हैं और बिन देखें तुम उपमा को देत हो सो तुम कैसें देत हो। तब सूरदास जी कछू बोले नाहीं। तब फेरि देशाधिपति बोलौ जो इनके लोचन हैं सो तो परमेश्वर के पास हैं सो उहाँ देखत हैं सो वर्णन करते हैं। तब देशाधिपति नें सूरदास जी के समाधान की मन में विचारी जो इनको कछू दीयौ चाहियै परि यह तौ भगवदीय है इनकों कछू काहू बात की इच्छा नाहीं। पाछें सूरदास जी देशाधिपति सों बिदा होयकें श्रीनाथ जी द्वार आयै।

## प्रसंग ४

एक समय[4] सूरदास जी मार्ग में चले जाते हैं[5] सो कोई[6]

---

१ पनमेश्वर। २ पातसाह। ३ ए मरत। ४ समें। ५ जात है। ६ कोऊ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



चौपड़ खेलत हुते । सो वा चौपड़ खेल में ऐसे लीन है[1] जो काऊ आवते जाते की सुधि नाहीं । ऐसे खेल में मग्न हैं । सो देख सूरदास जी के संग के भगवदीय है तिनसो सूरदास जी नें कह्यौ जो देखौ वह प्राणी कैसौ अपनौ जनमारो[2] खोवत हैं । भगवान ने तौ मनुष्य देह दीनी है सो तौ अपनी सेवा भजन के लियै दीनी है सो ये तौ या देह सों हाड कूटत हैं । या में यह लौकिक सिद्धि नाहीं सो काहे ते जो या लोक में तो अपजस और परलोक में भगवान ते बहिर्मुख । तातें श्रीठाकुर जी ने इनकौ मनुष्य देह दीनी है तिनकों चौपड़ ऐसी खेलनी चाहियै । सो ता समय एक पद सूरदास जी ने अपने संगकेन सों कह्यौ । सोपद ।

राग केदारौ

मन तू समझि सोच विचार ।
भक्ति बिन भगवान दुर्लभ कहत निगम पुकार ॥ १ ॥
साध संगति डारि फासा फेरि रसना सारि ।
दाव अबकें पर्यौ पूरौ उतरि पहिली पार ॥ २ ॥
वाकसत्रे सुनि अठारे पच[3]ही कों मारि ।
दूर ते तजि तीन कौन[4] चमकि चौक विचार ॥ ३ ॥
काम क्रोध जंजाल भूल्यौ ठग्यो ठगनी नारि ।
सूर हरि कें पद भजन बिन चल्यौ दोउ कर झार ॥ ४ ॥

यह पद सूरदास जी नें अपने संग के भगवदीयन सें कह्यौ ।

१ हे । २ जमारो । ३ पंच । ४ काने ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



सो या पद में सूरदास जी नें कहा कह्यौ 'मन तू समझि सोच बिचार।' ये तीन्यौ वस्तु चौपड़ में चाहियै सोई तीनों वस्तु भगवान के भजन में चाहियै। काहे ते जो समझि न होय तौ श्रवण कहा करेगौ ताते पहिले तौ समझ चहियै। और सोच कहियै चिंता, सों भगवान के प्राप्त[1] की चिंता न होय तौ संसार ऊपर बैराग्य केसें आवै ताते सोच कहियै। और विचार, जो या जीव कों विचार हों नाहीं तौ संग कुसंग में कहा करेगौ ताते बिचार चाहियै। सो ये तीनों वस्तु होंय तैा भगवदीय हाय ताते ये तीनों वस्तु भगवदीय कों अवश्य चाहियै। और चौपड़ में हूँ ये तीनों वस्तु चाहियै। समझ कहै गिनवो न आवतो गोट केसें चलै, और सोच अगम जो मेरे यह दाव पड़ै ता यह गोट चलूँ, विचार जो वाही में तन मन। जो यह वस्तु होय तो चौपड़ खेली जाय। सो वे सूरदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं[2]।

## प्रसंग ५

वहुर सूरदास जी श्रीनाथ जी द्वार आयकें बहुत दिन ताईं श्रीनाथ जी की सेवा कीनी। बीच बीच में श्रीगोकुल श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन कों आवते। सो एक समय श्रीसूरदास जी श्रीगोकुल आयै श्रीनवनीतप्रिया जी के दर्शन कीये और बाललीला के पद बहुत सुनायै। सो श्रीगुसाईं जी सुनिकें बहुत प्रसन्न भयै।

---

१ प्राप्ति। २ हे।

आम्नाय-संस्थान, [illegible] करौली

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



पाछें श्रीगुसांई जी ने एक पालना संस्कृत में कीयौ सो पालना सूरदास जी कों सिखायौ। सो पालना सूरदास जी ने श्रीनवनीत प्रिया जी झुलत हुते ता समय गायौ। सो पद। राग रामकली। "प्रेम[1] पर्यंक शयनं" यह पद सूरदास जी ने सम्पूर्ण करिकें गाय सुनायौ श्रीनवनीतप्रिया जी कों। पाछें या पद के भाव के अनुसार बहुत पद किये सो सुनि कें श्रीगुसाईं जी बहुत प्रसन्न भये। पालना के भाव अनुसार पद गायो। सो पद।

## राग बिलावल

बाल विनोद आँगन में की डोलनि।
मणिमय भूमि सुभग नंदालय बलिबलि गई तोतरी बोलनि ॥ १ ॥
कठुलाकंठ रुचिर केहरि नख ब्रजमाल बहुतई अमोलनि।
बदन सरोज तिलक गोरोचन लरलटिकन मधुगनि लोलनि ॥२॥
लीन्यौ कर परसत आनन पर कछू खाय कछू लग्यौ कपोलनि।
कहैं जन सूर कहाँ लों बरनों धन्य नंद जीवन जग तोलनि ॥३॥
गोपाल दुरे हैं माखन खात।
देखि सखी सोभा जो बढ़ी अति स्याम मनोहरि गात ॥१॥
उठि अवलोकि ओट ठाढ़ी ह्वै जिह विधि नहीं लखि लेत।
चक्रत नेन चहूँ दिस चितवत और सबन कों देत ॥२॥
सुन्दर कर आनन समीप हरि राजत यह आकार।
जनु जलरुह तजि वेर विधि सों लाये मिलत उपहार ॥३॥

---

1 प्रेष।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



गिरि गिरि परत बदनते ऊपर है दधिसुत के बिंदु ।
मानहु सुधाकन खीरवत पिय जिय दुंद[1] ॥४॥
बालबिनोद बिलोक सूर प्रभु बित भई ब्रज की नारि ।
फुरत न बचन बरजिवे कों मनराही[2] विचार बिचार ॥५॥

राग जैतश्री

कहाँ लग वरनो सुन्दरताई ।
खेलत कुमर कतिक आँगन में नेन निरखि सुखभाई ॥१॥
कुलहै[3] लसत श्याम सुंदर के बहु विधि रंग विवनाई ।
मानउ नवघन ऊपर राजत मघुवा मनुष्य[4] चढ़ाई ॥२॥
सेतपीत अरु असितलाल सणि[5] लटकनि भाल सराई ।
मानहुँ असुर देव गुरु सों मिलि भूमि जसो[6] समुदाई ॥३॥
अति सुदेश मृदु चिहर[7] हरत मन मोहन सुख वगराई ।
मानहुं मंजुल कंज[8] ऊपर वरअलि अवलि फिर आई ॥४॥
दूधदंत छबि कही न जात कछू अलि पल लय झलकाई ।
किलकत हंसन दुरति प्रगटत मानो विंधु[9] में विपुलताई ॥५॥
खंडत वचन देत पूरन सुख अद्भुत यह उपमाई ।
घुटुरुन चलत उठत प्रमुदित मन सूरदास बलि जाई ॥६॥

राग रामकली

देखौ सखी एक अद्भुत रूप ।
एक अम्बुजमध्य देखियत बीस दधिसुत जूप ॥१॥

---

१ जनदिंदु । २ रहि । ३ कुलहे । ४ धनुष । ५ मणि । ६ भूमिज सो ।
७ चिहुर । ८ कंजन ९ विंदु ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



एक अवली दोय जलचर उभे अर्क अनूप ।
पंचवार चढ़ि गहि देखियत कहौ कहा स्वरूप ॥२॥
सिसुगन में भई सोभा कोउ करौ बिचार ।
सूर श्रीगोपाल की छबि राखो यह निरधार ॥३॥

ऐसे पद सूरदास जी ने गाये पाछें फेरि श्रीनाथ जी द्वार आये ॥

## प्रसंग ६

अब सूरदास जी नें श्रीनाथ जी की सेवा बहुत कीनी बहुत दिन ताईं । ता उपरांत भगवद् इच्छा जानी जो अब प्रभून की इच्छा बुलायवे की है । यह विचारिकें जो नित्य लीला फलात्मक रासलीला जो जहाँ करे हैं ऐसी परासोली तहाँ सूरदास जी आयै। श्रीनाथ जी की ध्वाजा कौ दंडौत करिकें ध्वजा के साम्हे सन्मुख करिकें सूरदास जी सोयै परि अंतःकरन यह जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू दर्शन देयंगे । अव यह देह तौ थकी ताते अब या देह सें श्रीनाथ जी को दर्शन होय तौ जानियै परम भाग्य है । श्रीगुसाईं जी को नाम कृपासिंधु है भक्तन के मनोरथ पूरन कर्त्ता हैं । ऐसे विचार कै सूरदास जी श्रीगुसाईं जी कौं चिंतवन करत हैं । और श्रीगुसाईं जी कैसे कृपासिंधु हैं जैसें सूरदास जी उहाँ स्मरण करते हैं तैसे ही श्रीगुसांईं जी इनको छिनहूँ नहि भूलत है ।

श्रीनाथ जी को सिंगार होतौ ता समय सूरदास जी मणि कोठा में ठाडे ठाडे कीर्तन करते । सो तादिन श्रीगुसांईं जी श्री-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



नाथ जी कौं सिंगार करत हुते और सूरदास जी कौ कीर्तन करत न देखौ तब श्रीगुसाईं जी ने पूछौ सूरदास जी नाहीं देखियत सो काहे ते। तब काहू वैष्णावन ने[1] कह्यौ जो महाराज सूरदास जी तो आज परासोली की ओडी[2] जात देखे है। तब श्रीगुसाईं जी जान्यो जो भगवदि इच्छाते अवसान समें हैं ताते सूरदास जी परासोली गये हैं। तब श्रीगुसाईं जी ने अपने सेवकन सों कह्यौ जो पुष्टमार्ग कों जिहाज[3] जात हैं जाकों कछू लेनों होय तौ लेउ और जो भगवद इच्छा ते राजभोग आरती पाछें रहत हैं तो में हू आवत हों। पाछें श्रीगुसाईं जी वेर वेर सूरदास जी की खबरि मँगायो करें जो आवै सोई कहै जो महाराज सूरदास तो अचेत हैं कछू बोलत नाहीं। ऐसे करत श्रीनाथ जी के राजभोग को समय भयो।

सो राजभोग आरती करिकें श्रीगुसाईं जी श्रीगिरिराजते नीचे उतरे सो आप परासोली पधारे। भीतरिया सेवक रामदास जी प्रभृत और कुंभनदास जी और श्रीगुसाईं जी के सेवक गोविंद-स्वामी चत्रभुजदास प्रभृत और सब श्रीगुसाईं जी के साथ आये। सो आवत ही सूरदास जी सों श्रीगुसाईं जी ने पूछौ जो सूरदास जो केसे हौ। तब सूरदास जी ने श्रीगुसाईं जी को दंडोत करिकें कह्यौ जो महाराज आये हौ महाराज की बाट देखत हुतौ। यह कहिकें सूरदास जी ने एक पद गायौ। सो पद।

---

१ वैष्णव ने। २ ओरी। ३ जहाज।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



## राग सारंग

देखो देखौ हरि जू को एक सुभाव ।
अति गंभीर उदार उदधि प्रभु जान सिरोमनराय ॥१॥
राई जितनी सेवा को फल मानत मेरु समान ।
समझि दास अपराध सिंधु सम बूंद न एकौ जानि ॥२॥
बदन प्रसन्न कमलपद सन्मुख दीखत ही है ऐसें ।
ऐसें विमुखहू भये कृपा या मुख की[1] तब देखौ तब तैसे ॥३॥
भक्त विरह करत करुणामय डोलत पाछें लागे ।
सूरदास ऐसे प्रभु कों कत दीजै पीठ अभागे ॥४॥

यह पद सूरदास जी ने कह्यौ। सो सुनिकें श्रीगुसाईं जी बहुत प्रसन्न भये और कह्यौ जो ऐसे दैन्य प्रभु अपने सेवकन को देहि या दैन्य के पात्र एही है। तब वा वेर श्रीगुसाईं जी पास ठाडे हुते और चत्रभुजदास हूँ ठाडे हुते। तव चत्रभुजदास ने कह्यौ जो सूरदास जी ने भगवद् जस वर्णन कीयौ परि श्रीआचार्य जी महाप्रभून को जस वर्णन ना कीयौ। तब यह वचन सुनिकें सूरदास जी बोले जो में तो सब श्रीआचार्य जी महाप्रभून को ही जस वर्णन कीयौ है कछू न्यारौ देखूँ तौ न्यारौ करूँ परि तेरे साथ कहत हौ या भाँति कहिकें सूरदास जी ने एक पद कह्यौ। सो पद।

---

१ कृपाया सुख की।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



### राग बिहागरौ

भरौसौ द्रढ़ इन चरनन केरौ ।
श्रीवल्लभ नखचंद्र छटा बिनु सब जगमांझि अंधेरौ ॥१॥
साधन और नहीं या कलिमें जासों होत निवेरौ ।
सूर कहाकहि दुबिधि आंधिरौ[1] बिना मोल कौ चेरो ॥२॥

यह पद कह्यौ। पाछें सूरदास जी कों मूर्छा आई। तब श्री-गुसांई जी कहें जो सूरदास जी चित्त की वृत्ति कहाँ है। तब सूर-दास जी ने एक पद और कह्यौ। सो पद।

### राग बिहागरौ

बलि बलि बलि हो कुमर राधिका नंदसुवन जासों रति मानी।
वे अति चतुर तुम चतुर सिरोमन प्रीति करी कैसें होत है छानी ॥१॥
वे जु धरत तन कनक पीत पट सो तो सब तेरी गति ठानी।
ते पुनि श्याम सहेज वे शोभा अंबर मिस अपने उर आनी ॥२॥
पुलकित अंग अब ही ह्वै आयौ निरखि देखि निज देह सयानी।
सूर सुजान सखी के बूझे प्रेम प्रकाश भयौ बिहसानो ॥३॥

यह पद कह्यौ इतनों कहिकें सूरदास जी को चित श्रीठाकुर जी को श्रीमुख तामें करुणारस कें भरे नेत्र देखे। तब श्रीगुसाईं जी ने पूछौ जो सूरदास जी नेत्र की वृत्ति कहाँ है। तब सूरदास जी ने एक पद और कह्यौ। सो पद।

---

१ आँधरो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



## राग विहागरो

खंजन नैन रूपरस माते ।
अतिसे चारु चपल अनियारे पल पिंजरा न समाते ।
चलि चलि जात निकट श्रवन[1] के उलटि पुलटि ताठंक[2] फँदाते।
सूरदास अंजल[3] गुण अटके नातर अब उडि जाते ॥१॥

इतनों कहत ही सूरदास जी ने या शरीर को त्याग कीयौ। सो भगवल्लीला में प्राप्त भये। पाछें श्रीगुसाईं जी सब सेवकन सहित श्रीगोवर्द्धन आयै। ताते सूरदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं सो इनकी वार्ता कहां ताईं लिखियै। प्रसंग ॥ ६ ॥ वैष्णव ॥ ८८ ॥

---

१ श्रवण । २ ताटंक । ३ अंजन ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# अथ कृष्णदास अधिकारी तिनकी वार्ता

—:०:—

## प्रसंग १

सो वे कृष्णदास शूद्र एक वेर द्वारिका गये हुते। सो श्रीरणछोर जी के दर्शन करिकें तहाँ ते चले। सो आपन[1] मीराबाई के गाँव आयौ। सो वे कृष्णदास मीराबाई के घर गयै। तहाँ हरिवंश व्यास आदि दे विशेष सह वैष्णव हुते। सो काहू कों आयै आठ दिन, काहू को आये दश दिन, काहू को आये पन्द्रह दिन भये हुते। तिनकी बिदा न भई हुती। और कृष्णदास नें तो आघत ही कही जो हूँ तो चलूंगो। तब मीराबाई ने कही जो बैठो। तब कितनेक महैार श्रीनाथ जी को देन लागी। सो कृष्णदास नें न लीनी और कह्यौ जो तू श्रीआचार्य जी महाप्रभून की सेवक नाहीं होत ताते तेरी भेट हम हाथ ते छूवेंगे नाहीं। सो ऐसे कहि कें कृष्णदास उहाँ ते उठि चले। सो जब आगे आयै तब एक वैष्णवन नें कह्यौ जो तुमने श्रीनाथ की भेट नाहीं लीनी। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो भेट की कहाँ[3] है परि मीराबाई के यहाँ जितने सेवक वैठे हुते तिन सवन की नांक नीचे करिकें भेट फेरी है इतने इकठौर कहाँ मिलते। यह हू जानेंगे जो एक वेर शूद्र श्री-

---

१ आघन। २ वैष्णव। ३ कहा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



आचार्य जी महाप्रभून कौ सेवक आयौ हुतो ताने भेट न लीनी तो तिनके गुरु की कहा बात होयगी ॥

## प्रसंग २

और प्रथम सेवा श्रीनाथ जी की बंगाली करते। सो श्री-आचार्य जी महाप्रभून नें मकुट[1] काछनी हीरा के आभरन भराय दीने हैं[2] सो नित्य करते[3]। सो भेट आवती सो खरच होती, कछू संग्रह न राखते, सब खरच होय जातौ, और बंगाली सेवा करते। पाछें श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने कृष्णदास कौ आज्ञा दीनी जो तुम श्रीगोवर्द्धन रहौ सेवा टहल करौ तब कृष्णदास अधिकारी भयै, अधिकार करन लागे।

पाछे एक दिन मथुरा कौ चलन लागे सो अडींगलों पहुँचे तब पेंडे में अवधूतदास मिले। महापुरुष हुते ब्रज में फिर्‌यौ करते सो कृष्णदास कौ मिले। तब अवधूतदास ने कह्यौ जो कृष्णदास तुम कहाँ चले। तब कृष्णदास ने कही जो मथुरा जात हौं कछू काम है। तब अवधूतदास ने पूछौ जो श्रीनाथ जी की सेवा कोन करत हैं। तब कृष्ण दास ने कही जो बंगाली करत हैं। तब अवधूतदास ने कही जो श्रीनाथ जी कौ अपनौ वैभव वढ़ावनो है ताते तुम बंगालीन को दूर क्यों नाहीं करत। सो अवधूतदास सों श्रीनाथ जी ने कह्यौ जो मोकों बंगाली बहुत दुःख देत हैं। सो तब बंगाली श्रीनाथ जी को भोग धरते सो उनकी चुटि[4] में छोटो सो स्वरूप हुतौ

१ मुकट। २ हे। ३ धरते। ४ चुटिया।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



देवी को सो सामने वैठावतै जब भोग सरावते। वा देवी कैा अपनी चुटिया में धर लेते ऐसे सदा करते। सो बात अवधूतदास कौ श्रीनाथ जी ने जनाई ताते अवधूतदास ने कृष्णदास सों कह्यौ जो तुम बंगालीन को दूर करौ। तब कृष्णदास ने कही जो श्रीगुसाईं जी की आज्ञा बिना कैसे काढ़ें। तव अवधूतदास ने कह्यौ जो तुम अडेल में जायके श्रीगुसाईं जी की आज्ञा ले आवौ। जैसे वने तैसे इन बंगालीन को काढो।

तब कृष्णदास अडींगते फिरे। सो श्रीगोवर्द्धन आये। तब बंगालीन सों कह्यौ जो हूँ तौ श्रीगुसाईं जी के पास अडेल जात हों तुम श्रीनाथ जी की सेवा सावधानी सों करियो[1]। और सब सेवक हुते तिनसों कृष्णदास ने कह्यौ जो हूँ तो श्रीगुसाईं जी के पास कछू काम है सो अडेल कों जात हों तुम सावधान रहियो। ता पाछें श्रीनाथ जी सों विदा होय के अडेल कों चले। सो दिन १५ में श्रीगुसाईं जी के पास आप पहुँचे सो आयके श्रीगुसाईं को दंडौत कीये। तब श्रीगुसाईं जी ने पूछौ जो कृष्णदास तुम क्यों आयौ। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो श्रीनाथ जी कों अपनों वैभव वढ़ावनों है और बंगालीन ने वहुत माथौ उठायौ है जो भेट आवत है सो ले जात हैं सो सब अपने गुरुन को देत हैं।

तब श्रीगुसाईं जी कहैं जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू असुर व्यामोह लीला दिखाई। ता पाछें श्रीगोपीनाथ जी पूरब को परदेश कीयौ सो एक लक्ष की भेटभई। पाछें अडेल आये। तब श्रीगोपी-

---

१ करियो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



नाथ जी ने कह्यो जो यह पहलो परदेश है ताते यामें आयो सो सब श्रीनाथ जी को है श्रीनाथ जी कों विनियोग कियौ चाहिये। ता पाछें श्रीगोपीनाथ जी दिन दश बारह रहकै पाछें श्रीनाथ जी द्वार पधारे। सो जाय पहुँचे। तब श्री गोपीनाथ जी ने दर्शन कीयों। पाछें जो लाये हुते सो सब भेट कियौ। आभूखन सब जड़ाव के समराये। थार कटोरा डवरा चमचा तष्टी प्रभृत सब सोना रूप के किये। सब करिकै श्रीनाथ जी सों विदा होयकें श्रीगोपीनाथ जी अडेल आयै। ता पाछें बंगाली बरस एक कें भीतर सब ले गयै। अपने गुरु के यहाँ जाय के दीयै। यह बात श्रीगुसाईं जी ने कृष्णदास सों कही और कह्यौ जो बंगालीन ने माथौ उठायौ परि वे श्रीआचार्य जी महाप्रभून के राखे हैं सो कैसें निकलेंगे।

तब कृष्णदास ने श्रीगुसाईं जी सों कह्यौ जो महाराज श्रीनाथ जी की आज्ञा है जो बंगालीन कों निकासौ ताते आप या बात में कछू मति बोलौ। मोकों आप आज्ञा करौ तौ अपनो आप कर लेउँगो। जेसे बंगाली निकसेंगे तेसे काढ़ूँगो। तब श्रीगुसाईं जी ने कह्यौ जो अवश्य। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो महाराज दोय पत्र लिखयै, एक राजा टोडरमल्ल के नाम कौ एक बीरबल के नाम कौ। तब श्रीगुसाईं जी ने दोय पत्र लिख दीने राजा टोडर मल्ल कौ और बीरबल कों। लिखौ जो कृष्णदास कों श्रीनाथ जी द्वार भेजे हैं जो तुमसों कृष्णदास कहैं सो करि देउंगे[1]। सो पत्र लेकें श्रीनाथ

१ देउगो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



द्वारिका[1] कों चले। सो आगरे आये। तहाँ टोडरमल्ल राजा बीरबल सों मिले। पत्र श्रीगुसाईं जी के हुते सो दीये। सो उन पत्र बाँचि कें कृष्णदास सों कह्यौ जो तुम कहैा तेसें करें। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो अब तो में मथुरा जात हौं बंगालोन कों काढिवे कों।

ता पाछें कृष्णदास राजा टोडरमल्ल सों विदा होय कें श्रीनाथ जी द्वार को चले। सो मथुरा आये। तब मार्ग में अवधूतदास मिले। तब कृष्णदास सों अवधूतदास ने कही जो कृष्णदास जी ढील कहा करि राखी है बंगालोन कों काढौ, श्रीनाथ जी की ऐसी इच्छा है, श्रीनाथ जी कों अपनों वैभव फैलावनों है। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो श्रीगुसांईं जी की आज्ञा लेके आयैा हौं अब जाय कें बंगालीन कैा काढत हौं। इतनों कहिकें कृष्णदास चलै। सो श्रीनाथ जी द्वार आये। सो वे बंगाली सब रुद्रकुंड ऊपर रहते सो उहाँ उनकी झोंपरी हुती। सो कृष्णदास ने जराय दीनी। तब सोर भयौ। तव बंगाली सेवा छोड़ कै पर्वत के नीचे आये। तब कृष्णदास ने पर्वत ऊपर अपने मनुष्य पठाय दिये। तब बंगाली देखें तौ कृष्णदास नें झोंपरी में आग लगाय दीनी है। तब सब बंगाली कृष्णदास सों लरन लागे। तब कृष्णदास ने द्वै द्वै चार चार लाठी सबन में दीनी।

तब वे बंगाली तहाँ ते भाजे सों मथुरा आये। तब रूपसनातन के पास आयकै सब बात कही। तब इतने में कृष्णदास

१ श्रीनाथ जी द्वार।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



हू आय ठाडे भये। तब रूपसनातन ने कृष्णदास के ऊपर खीज कें कह्यौ जो क्यों रे शूद्र तू कोंन जो इन ब्राह्मणन कों मारे। तब कृष्णदास ने कही जो हूँ शूद्र हों परि तुम हू तौ अग्निहोत्री नहीं, तुमहू तो कायस्थ हौ। तब सनातन ने कह्यौ जो यह बात पातसाह सुनेगौ तौ तू कहा जवाब देयगौ। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो हों तो नीके जवाब देउंगौ परि तुमको जुवाब देत में दुःख होयगो, और तुमकों जुवाब आवेगौ[1] जो तुम कायस्थ होयकै इन ब्राह्मणन सों दंडौत करावत हौ। तब रूप सनातन तौ चुप ह्वै रहै और बंगालीन सों कह्यौ जो तुम जानौ ये जानें।

तब बंगाली मथुरा के हाकिम पास गयै। तब कृष्णदास जाय ठाडे भयै। तब हाकिम ने कह्यौ जो भयौ सो तो भयौ परि अब इनकौं राखौ। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो अब तौ इनका[2] न राखेंगे। ये तौ हमारे चाकर हुते सो हमने इनकों सेवा सोंपी हुती सो ये सेवा छोड़ कें क्यों आये। जो इनकी झोंपरी जर गई हुती तौ हम नई छवाय देते ताते अब हम तौ न राखेंगे। ताऊपर तुम कहत हौ जो हम श्रीगुसाईं जी कों लिखेंगे। वे कहेंगे तेसें करेंगे। तुम श्रीगुसाईं जी कों लिखौ।

पाछें कृष्णदास श्रीनाथ जी द्वार आये और बंगाली सब अपने श्रीकुंड आये। तव कृष्णदास ने श्रीगुसाईं जी कों पत्र लिखौ तामें बंगाली काढे सो सब समाचार बिस्तार करिकै लिखे और लिख्यौ

---

१ न आवेगो। २ इनको।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



जो अब पधारियै तौ भलौ है। सो पत्र श्रीगुसांईं जी के पास अडेल आयै। ता पाछे श्रीगुसांईं जी अडेल ते चले सो श्रीनाथ जी द्वार आयै। तब वे बंगाली सब आयै। तब श्रीगुसांईं जी सों कह्यौ जो हमकों श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने सेवा में राखे हुते सों कृष्णदास ने हमकों काढे। तब श्रीगुसांईं जी ने कह्यौ जो तुम सेवा छोड़ के क्यों गयै दोष तुम्हारो है ताते अब तो सेवा में न राखेंगे।

तब वा[1] बंगाली बहुत बीनती करन लागे जो महाराज अब हम खाँयगे कहा। तब श्रीगुसांईंजी ने इनकों श्री नाथ जी के बदले श्री मदन मोहन जी की सेवा दीनी और कह्यो जो इनकी सेवा तुम करियों जो आवै सो खाइयो। तब वे बंगाली श्री मदन मोहन जी की सेवा करन लागे ताते उन बंगालीन ने श्री गोवर्द्धन रहिवौं छोड़ दीयौ। ता पाछें श्रीनाथ जी की सेवा में गुजराती ब्राह्मण भीतरिया राखे। श्रीनाथ जी को अपनों वैभव बढ़ावनों हौ सो सब भीतरियान कौ नेग और सब सेवकन कों नेग जो जा भाँति श्रीनाथ जी ने कह्यौ ता भाँति श्रीगुसांईं जी ने बाँधे। तब तो श्रीनाथ जी की सेवा प्रनालिका ते होन लागी और कृष्ण दास अधिकार करन लागै।

आम्नाय-ग्रन्थालय ... कटोंवी
बाराबंकी-5

## प्रसंग ३

बहिर[2] श्रीनाथ जी ने कृष्णदास कों आज्ञा दीनि[3] जो श्याम मति[4] को लेकें ताल पखावज ले कें तू परासोली में आईयो।

---

१ वे। २ बहुरि। ३ दीनी। ४ कुमरि।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



सो श्यामकुमर आछौ मृदंग बजावते। सो श्रीनाथ जी की सैन आरती उपरांत अनोसर भयौ तब कृष्णदास श्यामकुमर के घर गये। तब कृष्णदास ने श्यामकुमर सों कही जो श्रीनाथ जी ने आज्ञाकरी है सो मृदंग ले के परासोली चलौ। तब श्यामकुमर ने कह्यौ जो मोहू कों श्रीनाथ जी ने आज्ञाकरी है ताते चलियै। तब श्यामकुमर मृदंग ले कें आयौ।

तब कृष्णदास और श्यामकुमर ये दोऊ जने परासोली सों देखे तौ श्रीनाथ जी स्वामिनी जी सहित बिराजे हैं। तब श्रीनाथ जी ने श्यामकुमर सों कह्यौ जो तू तौ मृदंग बजाय, और कृष्णदास सों कह्यौ जो तू कीर्तन करि और श्रीनाथ जी और श्रीस्वामिनी जी नृत्य कीयौ। तहाँ कृष्णदास ने पद गायौ। सो पद।

राग केदारो।

श्री वृषभानुनन्दनी नाचत गिरधर संग
लाग डाट उरपतिरपरास संग राखौ।
झपताल मिल्यौ राग केदारौ
सप्तसुरन अव घर तान रंग राख्यौ॥
पाई सुख सिद्धि भरत काम विविध रिद्धि
अभिनव दल लसत सुहाग हुलास रंग राख्यौ।
वनिता सत जूथ संग लिये निरखत क्यों सघस [1]
चंद बलिहारी कृष्णदास सुधर [2] रंग राखौ॥

---

१ सघन। २ सुघर।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



यह पद कृष्णादास ने गायौ। श्यामकुमर ने मृदंग बजायौ। श्रीनाथ जी और स्वामिनी जी नृत्य कीयौ। ताते श्रीमहाप्रभू जी की कानि ते श्रीनाथजी कृष्णादास के ऊपर ऐसी कृपा करत हुते।

## प्रसंग ४

और कृष्णादास नें बहुत पद कीये। तब एक समय सूरदास जी नें कृष्णादास सों पूछी जो तुम पद करत हौ ता में मेरी छाया है। तब कृष्णादास ने सूरदास जी सों कह्यौ जो अब के ऐसो पद करूँ जो जामें तुम्हारी छाया न आवे। तब कृष्णादास एकांत में बैठिकें एकाग्रचित्त करिकें नयौ पद करन लागे जो जामें तीन तुक को[1] कीयौ और चौथी तुक बने नाहीं। तब घड़ी दोयलों बिचारे जो आगें तुक चलत नाही तो भलौ फेरि प्रसाद लेकें विचारेंगे। सो जा पत्र में लिखत हुते सो पत्र तथा द्वाति लेखनी उहांई धरि कै प्रसाद लेवे को उठे।

जब कृष्णादास प्रसाद लेवे को बैठे तब श्रीनाथ जी ने आप तीन तुक वा पत्र में अपने श्रीहस्त सों लिख दीयै। कृष्णादास ने आधौ पद कियौ हुतौ ताकों आप श्रीनाथ जी पूरौ करिकै आप तौ पधारे। ता पाछें कृष्णादास प्रसाद लेकें आये तब देखौ तौ श्रीनाथ जी पूरौ पद करिकै श्रीहस्त सों लिखि गये हैं। सो देख के कृष्णादास बहुत प्रसन्न भयौ और कहें जो सूरदास जी आवें तौ पद सुनावें। तब उत्थापन के समय सूरदास जी दर्शन को

---

१ तो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



आयै तब कृष्णदास ने कह्यौ जो सूरदास जी नयौ पद एक मैनें कीयो है तामें तुम्हारी छाया नाहीं धरी। तब सूरदास जी ने कह्यौ जो कहौ सुनों तौ जानों। तब पद कह्यौ। सो पद।

राग गौरी

आवत वने कान्ह गोपबालक संग
नेंचुकी खुर रेणु छुरतु[1] अलकावली॥
भौहैं मनमथ चाप वक्र लोचन बान
सीस सोभित मत्त मयूर चंद्रावली॥
उदित उडुराज सुन्दर सिरोमणि वदन
निरखि फूलो नवल जुवती कुमुदावली॥
अरुण सकुच अधर बिंबफल हसात
कहत कछुक प्रकटित होत कुंद रसनावली।
श्रवण कुंडल भाल तिलक वेसरि नाक
कंठ कौस्तुभ मणि सुभग त्रिवलावली॥
रत्न हाटक खचित पुरसि पदिक निपाति
बीच राजत सुभ पुलक मुक्तावली॥

अथ श्रीनाथ जी कृत।

वलय कंकण बाजूबंद आजानुभुज
मुद्रिका कर दल बिराजत नखावली॥
कण[2]तर मुरलिका मोहित अखिल विश्व
गोपिका जनमसि असथित प्रेमावली॥

---

१ छुरित। २ क्वण।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



कटि छुद्र घंटिका जटित हीरामयी
नाभि अम्बुज बलित भृगरोमावली ॥
धायक वहुक चलत भक्त हित जानि पिय
गंड मण्डल रुचिर श्रमजल कणावली ॥
पीत कोसय परिधानें सुन्दर अंग चरण
नुपुरवाद्य गीत सवदावली ॥
हृदय कृष्णदास गिरवर धरण लाल की
चरण नख चन्द्रिका हरति तिमिरावली ॥

यह पद कृष्णदास नें सूरदास जी के आगें कह्यौ। सो सूरदास जी तीन तुक ताँहि तो बोले नाहीँ। और तीन तुक के आगे कहन लागै तब सूरदास जी ने कृष्णदास सों कह्यौ जो कृष्णदास मेरे तुमसों वाद है और प्रभून सों वाद नाहीं में प्रभून की वानी पहिचानत हों। तब कृष्णदास चुप कर रहै। ताते कृष्णदास ऐसे भगवदीय हैं।

## प्रसंग ५

और एक समय श्रीनाथ जी के भंडार में कछू सामग्री चाहियत हुती। सो कृष्णदास गाडा लेकें आगरे कैा आये। सो आगरे के बाजार में एक वेश्या नृत्य करत हुती। ख्याल टप्पा गावत हुती और भीर हुती। सब लोग तमासो देखत हुते। सो कृष्णदास बाजार में तमासे में जाय ठाडे भये। तब भीर सरक गई तब वह वेश्या कृष्णदास के आगें नृत्य करन लागी। सो वह वेश्या

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



बहुत सुन्दर, और गावै बहुत आछौ, नृत्य तैसौई करे। सो कृष्ण-दास वा वेश्या के ऊपर रीझे और मन में कहैं जो यह तौ श्रीनाथ जी के लायक है। ता पाछें वा वेश्या कों दशमुद्रा तौ वहां ही दियै और कही जो रात्रि कों समाज सहित आइयौ। ता पाछे कृष्णदास उहाँ हवेली में उतरे। सो सामग्री चाहियत हुती सो सब लेकै गाडा लदाय सिद्धि करवायौ।

ता पाछें रात्रि पहर गई। तब वेश्या समाजसहित आई। ता पाछें नृत्य भयै गान भायौ। वापै कृष्णदास बहुत रीझें सो रुपैया सत एक दिये। तब वा वेश्या सों कह्यौ जो तेरौ गान हू आछौ और नृत्य हू आछौ परि हमारो सेठ है सो तेरे ख़्याल टप्पा ऊपर रीझेगो नाहीं ताते हों कहों सो गाइयौ। ता पाछें कृष्णदास ने एक पूरवी राग में पद करि कैं सिखायौ। ता पाछें दूसरे दिन वा वेश्या कों साथ ले के चले सो आगरे ते आयै। पाछे तीसरे दिन श्रीनाथ जी द्वार आयै। सामग्री सब भंडार में धराई। ता पाछे जब उत्थापन को समय भयौ तब कीर्तनियाँ काहू कों बागे[1] न दीयै। तब वा वेश्या कों समाज सहित ले गयै। श्री गुसाईं जी मंदिर में ठाड़े श्रीनाथ जी कों मूंढा[2] करत है और मणि कोठा वेश्या नृत्य करन लागी और यह पद गायौ॥ सो पद॥

राग पूरवी॥

मोमन गिरधर छवि पर अटक्यौ।
ललित त्रभंगी अंगन परि चलि गयौ तहांई ठटक्यौ॥ १

१ बागै लैजान। २ मूंछा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



सजल श्यामघन चरण नीलहै फिर चित अनित न आनि तन भटक्यौ।
कृष्णदास कियै प्राण न्यौछावरि यह तन जग सिर पटक्यौ ॥ २ ॥

यह पद वा वेश्या ने गायौ। सो जब गावत गावत पिछली तुक आई जो "कृष्णदास कियै प्राण न्यौछावर यह तन जगसिर पटक्यौ" इतनों कहत मात्र वा वेश्या के प्रान ततकाल निकसि गयै और दिव्य स्वरूप धरि के श्रीनाथ जी की लीला में प्राप्त भई। और वा वेश्या के समाजी हुते सो मरन लागे जो हमारी तौ या तें जीविका हुती अब हम कहा खायंगे। तब कृष्णदास नें कह्यौ जो तुम क्यों रोवत हैा चलौ नीचे खायवे को देऊँ। तब उन समाजिन कों नीचे लायकें कृष्णदास नें सहस्र रुपया दे विदा कियै।

कृष्णदास ने अपने मनते समर्पी ताते श्रीनाथ जी नें वा वेश्या को अंगीकार करी। ताते श्रीआचार्य जी महाप्रभून की कानि तें सेवक की समर्पी वस्तु या भाँति सों अंगीकार करत हैं।

## प्रसंग ६

और कृष्णदास को गंगाबाई सों बहुत स्नेह हुतो सो श्री-गुसाँईं जी को न सुहावतौ। सो एक दिन श्रीगुसांईं जी श्रीनाथ जी कों भोग समर्पित हुते सो सामग्री ऊपर गंगाबाई की दृष्टी परी ताते श्रीनाथ जी आरोगे नाहीं। परि भोग तौ समर्प्यौ। ता पाछें समय भयौ तब भोग सरायौ। तब आरती करि अनोसरि करि कें श्रीगुसांईं जी आप नीचे पधारे। तब सेवक आदि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



भीतरिया सब ने प्रसाद लीयौ। तब श्रीगुसांईं जी आप तौ भोजन करिकैं पोढ़े। तब श्रीनाथ जी नें भीतरिया कों लात मारि कैं जगायौ और वासूं कहैं जो हूँ तौ भूखो हूँ। तब वा[1] भीतरिया ने कह्यौ जो महाराज श्रीगुसांईं जी नें भोग समर्प्यौ है और तुम भूखे क्यों रहै। तब श्रीनाथ जी ने कही जो राजभोग में तो गंगाबाई की दृष्टि परी हुती तातें राजभोग आरोग्यौ नाहीं।

तब वा भीतरिया उठि श्रीगुसांईं जी के पास आयौ। सो श्रीगुसांईं जी भोजन करिकैं पोढ़े हुते। तब भीतरिया ने आयकें श्रीगुसांईं जी के चरण दाबे। तब श्रीगुसांईं जी चौंकि उठे तब देखें तौ श्रीनाथ जी को भीतरिया है। तब वा भीतरिया सों पूछौ जो यहाँ इतनी वेर कहाँ आयौ है। तब वा भीतरिया ने कह्यौ जो महाराज आज श्रीनाथ जी भूखे हैं मोकों लात मारिके जगायौ और कह्यौ जो आज तौ मैं भूखौ हौं। तब मेने श्रीनाथ जी सों कह्यौ जो महाराज भोग तौ श्रीगुसांईं जी ने समर्प्यौ है तुम भूखे क्यों रहै। तब श्रीनाथ जी ने कही जो सामग्री पर तो गंगाबाई की दृष्टि परी तातें मैं नाहीं आरोग्यौ।

तब श्रीगुसांईं जी सुनत ही ततकाल स्नान करिकें श्रीगुसांईं जी के साथ ही आयौ। तब श्रीगुसांईं जी नें वा भीतरिया सों कही जो भात और बड़ी करौ जो तत्काल सिद्ध होय आवै। तब भात और बड़ी करी सो तत्काल सिद्ध भयौ। तब श्रीनाथ जी को भोग समर्प्यौ। पाछें भीतरिया रसोई करिकें स्नान करिकें पर्वत

[1] वह।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



ऊपर आये। तब श्रीगुसांई जी आज्ञा भई जो राज भोग की सामग्री तौ भई सिद्धि ता पाछें राज भोग सेन भोग इकठौरो समर्प्यौं। ता पाछें समय भयौ। तब भोग सराय सेन आरती करी। तब श्रीनाथ जी कों पोढाये भोग सर्यौ हो सो प्रसाद एक डबरा में उहाई रह गयौ। तब रामदास भीतरिया ने कही जे पहले भोग समर्प्यौं हुतौ सो उहां ही रह गयौ। तब श्रीगुसांई जी डबरा में ते ठलाय के लेत उतरे। पाछें सब सेवकन कौं वह बडी भात को महाप्रसाद रंचक रंचक बाँटि दीनों ता पाछें श्री गुसांई जी आप हू आरोगे। सो वह बडी भात को प्रसाद अति अद्भुति भयौ। अति अलौकिक स्वाद भयौ। सो श्रीगुसांई जी आप सरायौ। तब कृष्णदास ठाड़े हुते। तब कृष्णदास ने कही जो महाराज आप ही करन हारे आप ही आरोगन हारे तो क्यों न उत्तम होय। तब श्रीगुसांई जी ने हँस के कही जो यह तुम्हारे ही कीये भोगत हैं।

## प्रसंग ७

अब जो यह बात श्रीगुसांई जी ने कही जो यह तुम्हारे ही कीये फल भोगत हैं सो यह बात सुनिकें कृष्णदास ने श्रीगुसांई जी सों बिगाडी। तब श्रीगुसांई जी सों श्रीकृष्णदास ने कही जो तुम पर्वत ऊपर मति चढ़ो। तब श्रीगुसांई जी आप तौ तहाँ ते फिरे सो परासोली में आय रहै। तब मन में विचारौ जो कृष्णदास कहा मने करेगो परि श्रीनाथ जी की इच्छा ऐसी है

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



सो श्रीनाथ जी की इच्छा जानि कें कछू बोले नाहीं। सो आ परासोली में रहै। सो परासोली में ध्वजा के साम्है बेठि विज्ञप्ति कियै। और श्रीगुसांई जी तीन दिन तौ श्रीगोवर्द्ध रहते और तीन दिन श्रीगोकुल रहते। तब ते परासोली आ रहै। तब श्रीगुसांई जी के मंदिर की खिरकी परासोली की ओ पडती ताके साह्मै बेठिते। तब श्रीनाथ जी आप खिरकी आय दर्शन देते। तब यह जानि कै कृष्णदास नें परासोली क और की खिरकी बनवाय दीनी तब ते श्रीगुसांई जी गोकुल ते जब परासोली आवते तब रामदास जी सब सेवक आदि दे श्रीनाथ जी के राजभोग आरती करिकै अनोसरि करिकै श्री- गुसांई जी के दर्शन को परासोली आवते। सो आय के चर णोदक लेय पाछें प्रसाद लेते। सो कृष्णदास कों सुहावतौ नाहीं और सब सेवक श्रीगुसांई जी के दर्शन विना महाप्रसाद केसे लेंय। परि सेवकन सों कृष्णदास की चले नाहीं।

और श्रीगुसाँई जी एक पत्र लिखिकें रामदास भीतरिया कों देते और कहते जो श्रीनाथ को दे दीजै। सो पत्र श्रीनाथ जी को देते। श्रीनाथ जी विज्ञप्त उत्तर लिखिकें रामदास को देते। सो रामदास श्रोगुसांई जी को देते। तव श्रीगुसांई जी वा पत्र को बाँचि कै पानी में पी जाते। या भाँति सों छै महीना बीते परि श्रीगुसांई जी नें श्रीनाथ जी कों अधिकारी वैष्णव जानि कै और श्रीआचार्य जी महाप्रभून कों सेवक जानि कछु न कह्यौ। परि श्री- नाथ जी के बिरह को स्नेह बहुत करते। या भाँति छै महीना भयै।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



तब एक दिन राजा बीरबल आय निकसे। तब ता दिन तौ श्रीगुसांई जी परासोली हुते। श्रीगिरधर जी घर हुते। तब राजा बीरबल नें श्रीगुसांई जी कौ खबर कराई। तब पोरियान नें कही जो श्रीगुसाईं जी तौ परासोली है श्रीगिरधर जी घर है। तब राजा श्रीगिरधर जी के दर्शन कों आयै। तब बीरबल सों श्रीगिरधर जी ने कही जो कृष्णदास अधिकारी काका जी कौ श्रीनाथ जी के दर्शन नाहीं करन देत, सो काका जी कों खेद बहुत होत है, काका जी परासोली में जाय दर्शन करत है। तब बीरबल ने श्रीगिरधर जी सों कह्यौ जो अब हूं जाय के कृष्णदास कों काढूँगौ। यों कहि कें राजा बीरबल श्रीगिरधर जी सों विदा होय कें मथुरा आयै और श्रीगुसांई जी परासोली ते श्रीगोकुल आये। और बीरबल ने पाँच सौ मनुष्य भेजे और कह्यौ जो कृष्णदास को पकरि लावौ। सो वे मनुष्य श्रीगोवर्द्धन आय कें कृष्णदास कों पकरि लायै। सो वे बीरबल ने कृष्णदास को बंदीखाने में दीनों। तब श्रीगिरधर जी सों कहवाय पठाई जो कृष्णदास को बंदीखाने में दीनों।

तब श्रीगिरधर जी ने श्रीगुसांई जी सों कही जो कृष्णदास को बंदीखाने में दीने हैं। तब श्रीगुसांई जी ने कह्यौ जो हाय हाय श्रीआचार्य महाप्रभून के सेवकन को ऐसो कष्ट। तब श्रीगुसांई जी सों कह्यो जो तुमनें कह्यौ होयगौ। तब श्रीगिरधर जी ने कह्यौ जो हमने तो बीरबल सों सहज ही कह्यौ हुतौ जो काका जी कों दर्शन नाहीं करन देते सो काका जी कों बहुत खेद होत है। तब

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



श्रीगुसांईं जी ने कह्यौ जो भोजन जब करूँगौ तब कृष्णदास आवेगौ। तब श्रीगिरधर जी ततकाल घोड़ा मँगाय असवार होय कें मथुरा कों आये। तब बीरबल सें कह्यौ जो काका जी भोजन नाहीं करत ताते कृष्णदास कों छोड़ देउ। तब राजा बीरबल नें कृष्णदास श्रीगिरधर जी के हवाले कर दियौ। तब श्रीगिरधर जी ततकाल संग ले श्रीगोकुल आये। तब श्रीगुसांईं जी ने सुनो जा गिरधर जी कृष्णदास को साथ लेके आवत हैं सो श्रीगुसांईं जी ठकुरानी घाट ऊपर पहुँचे। और वा ओर ते कृष्णदास आये सो श्रीगुसांईं जी कों दर्शन कियौ, और दंडौत करी और एक नयौ पद करिकें गायौ। सो पद॥

राग केदारौ

श्री बिट्ठल जू के चरण की बलि॥

हमसे पतित उधारन कारन परम कृपाल आये आपन चलि।
उज्जल अरुण दया रंग रंजित दश नख चंद्र विहरत मन निरदलि।
सुभगकर सुखकर शोभन पावन भक्ति मुदित ललित कर अंजलि।
अति सेमरदुल्लि सुगंध सुशीतल परत त्रिबिधि ताप डारत मल।
भजि कृष्णदास वार एक सुधि करि तेरौ कहा करेगौ रिपुकल।

यह पद श्रीगुसाईं जी के आगे गायौ। पाछें श्रीगुसांईं जी कृष्णदास कों अपने घर ले आये। पाछें कृष्णदास सें श्रीगुसांईं जी ने कह्यौ जो उठौ भोजन करौ। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



महाराज आप भोजन करियै पाछें में झूठन लेउगौ। तब श्री-गुसांई जी भोजन को बैठे। तब कृष्णदास नें एक पद और गायौ ॥ सो पद ॥

राग कान्हरौ

ताही कौं सिर नाइयै जौ श्रीवल्लभसुत पदरज रति होय ॥
कीजै कहा आन ऊचे पद तिनसों कहा सगाई मोय ॥
सार सार विचार मतौ करि श्रुति वचन[1] गोधन लियो निचोय ॥
तहाँ नवनीत प्रगट पुरुषोत्तम सहजई गोरस लियो विलोय ॥
जाके मन में उभ्र भरम है श्रीविट्ठल श्रीगिरधर दोय ॥
ताकौ संग विषम विष हू ते भूलिहू चातुर कर है जिन कोय ॥
जिन प्रताप देखि अपने चख असन सार जोभिदेन तोहिं ॥
कृष्णदास ते सुरते असुर भये असुरते सुर भये चरणन छोह[2] ॥४ ॥

यह पद सुनिकै श्रीगुसांई जी बहुत प्रसन्न भयै। पाछें श्री-गुसांई जी भोजन करिकै पधारे तब कृष्णदास सों कह्मौ जो अब जाउ भोजन करौ। तब कृष्णदास भीतर गयै। तब श्रीगिर-धर जो नें श्रीगुसांई जी की झूठन की पातर कृष्णदास के आगे धरी। तब कृष्णदास नें महाप्रसाद लीनों। पाछें बीडा दोय दियै। रात्रि कों कृष्णदास वहाँई सोय रहै।

ता पाछें पिछली रात्रि घड़ी दोय रही तब श्रीगुसांई जी उठे। देहकृत करि कें स्नान कियौ। श्रीनवनीत प्रिया जी के मंगला के

१ वच। २ छोहि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



दर्शन करि कें बाहिर पधारे। तब श्रीनाथ जी द्वार पधारवे कं तैयारी किये। तब घोड़ा दोय मंगायै एक घोड़ा ऊपर श्रीगुसां असवार भयै एक घोड़ा ऊपर कृष्णदास असवारी कीयै औ श्रीगोकुल ते चले। सों श्रीनाथ जी द्वार दिन पहर सवा एक च जाय पहुँचे। सो वहाँ श्रीनाथ जी को राजभोग आयौ हुतौ से श्रीगुसांई जी ततकाल स्नान करिकै ऊपर पधारे। और श्रीगुसां जी विज्ञाप्ति पत्र परासोली ते लिखते सो रामदास भीतरिया हाथ पठावते। ताकों प्रति उत्तर श्रीनाथ जी पत्र में लिखि श्रीगुसांई जी को पठावते। सो श्रीगुसांई जी जल में घोर पिजाते सो पिछले दिन को पत्र श्रीनाथ जी के हस्ताक्षर को सो श्रीगुसां जी राखे हुते। सो पत्र साथ ही ले आये हुते।

पाछें श्रीनाथ जी कों राजभोग आयौ हुतौ। सो समय भयौ तब श्रीगुसांई जी भोग सरायवे को पधारे। तब श्रीगुसांई जी के देख के श्रीनाथ जी बहुत प्रसन्न भये और पूछैा जो नीके हो। त श्रीगुसांई जी कहें जो तुमको देखे सोई दिन नीके हैं। पा परस्पर दोऊ जने मुसिक्यायै। पाछें श्रीगुसांई जी राजभोग सरा पाछें वह पत्र हुतो सो झारी में धरयौ। पाछें राजभोग दर्शन खुले। तब कृष्णदास ने कीये। पाछे श्रीगुसांई जी राज भोग आरती करि अनोसरि करि नीचे पधारे। पाछे रसोई कर भोग समर्पित भोजन करि श्रीगुसांई जी पोढ़े। सो उत्थापन घड़ी दोय पहले उठे। पाछें उत्थापन को समय भयौ तब स्नान करि ऊपर पधारे। सो संखनाद करवायौ। श्रीनाथ जी के उत्थापन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



भयै पाछें सेन आरती उपरांत दर्शन करि कें कृष्णदास कों श्रीनाथ जी के सनिधान बुलायौ और कहौ जो कृष्णदास तुम अधिकार करौ और श्रीनाथ जी की सेवा नीकी भाँति सों करियौ। तब कृष्णदास ने श्रीनाथ जी के सन्निधान एक पद गायौ। सो पद॥

राग कान्हरो

परम कृपाल श्रीवल्लभनंदन, करत कृपा निज हाथ दे माथै॥
जे जन शरण आये अनुसरही गहि सों पति श्रीगोवर्द्धन नाथै॥
परम उदार चतुर चिंतामणि राखत भव धरा[1] ते साथै॥
भजि कृष्णदास काज सब सरहीं जो जानें श्रीबिट्ठल नाथैं॥२॥

यह पद गायौ और बीनती कीनी जो महाराज मेरौ अपराध क्षमा करौ। तब श्रीगुसाईं जी ने कह्यौ तुमारौ अपराध श्रीनाथ जी क्षमा करेंगे। पाछें कृष्णदास को बिदा कीयौ। पाछें श्रीनाथ जी कों पोढाय कें श्रीगुसाँई जी नीचे उतरे। श्रीगुसाईं जी परम दयाल कृष्णदास को कृत कछू मन में न आनो। श्रीआचार्य जी के सेवक जानि अनुग्रह कीयौ। पाछें श्रीगुसांई जी दिन दोय रहै पाछें श्रीगोकुल पधारे। फिर कृष्णदास श्रीगुसांईं जी की आज्ञा ते अधिकार करन लागे॥

## प्रसंग ८

सों बहुत बरस लों भली भाँति सों अधिकार कीयौ। पाछें

१ धारा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



एक वैष्णव ने कृष्णदास सों कही जो मोकों एक कूआ बनवा
वनों है, और मोकों अपने देश कों जानों है। ताते द्रव्य तुमकों
जात हैं। सो तुम बनवाय दीजों। तब कृष्णदास ने कही
आछौ। तब वह वैष्णव तीन सौ रुपैया देकें अपने देश को गयौ।
तब कृष्णदास ने उन रुपैयान में ते एक सौ रुपैया एक कुल्हरा
धरि कें आम के वृक्ष के नीचे गाड़ दिये। कह्यौ जो दोय
रुपैया लाग चुकेंगे तब इनको काढ़ेंगे। सो आछै मुहूर्त देखि
रुद्रकुंडऊपर कूआ खुदायौ। तब कितनेक दिन में वह कूआ
मोहताई बन के तयार भयौ और दोय से रुपैया लगे। मठो
बाकी रह्यौं।

तब उत्थापन के दर्शन करिकें कृष्णदास कूआ देखन को गये
सो हाथ में आसा हुतौ। सो आसा टेक के कूआ के ऊप
ठाडे भये। सो वह आसा सरक्यौ। तब कृष्णदास कूआ में जा
परे। तब तो मनुष्य दोय कूआ में उतरे। सो बहुतेरो ढूढ़ें प
कृष्णदास कौ शरीर हू न पायौ। तब सब मनुष्य उहाँ ते फे
आये। सो ता समय श्रीगुसांई जी श्रीनाथजी को सेन भोग ध
कें मंजूष विराजे हुते। और रामदास श्रीगुसांई जी के पास
हुते। ता समय काहू ने आय कें कह्यौ जो महाराज कृष्णदा
ने कूआ बनवायौ हौ। सो कृष्णदास देखन गये हुते, सो आसा टे
कें कूआ के मौहडे ऊपर ठाडे हुते, सो आसा सरक्यौ सो कूआ
में गिरि परे। और मनुष्य दोय कृष्णदास को ढूँढवे को उतरे,
बहुतेरौ ढूँढे परि शरीरहू न पायौ, कहा जानियै कहा भयौ। त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



रामदास जी कहैं जो "अधोगच्छंतितामसाः" तब श्रीगुसाईं जी कहै जो रामदास ऐसें न कहि।

अब जो कृष्णदास कूआ में गिरे सो शरीर न मिल्यौ ताको कारन कहा। सो ताको कारन यह जो कृष्णदास में कोई अलौकिक जीव हुतौ सोतो श्रीनाथ जी की सेवा में प्राप्त भयौ। और कृष्णदास ने या शरीर सों श्रीगुसाईं जी की अवीज्ञा करी है। जो यह शरीर अलौकिक जीव भुगतनों हो। कूआ में गिरत मात्र कृष्णदास को शरीर लौकिक सद्य होय कें पूछरी की ओर एक कृष्ण[1] है पीपर कौ तहाँ प्रेत होय कें रह्यौ भोग भुगतन कों। ताते कृष्णदास को शरीर कूआ में न मिल्यौ। श्रीगुसाईं जी की अवीज्ञा ते कृष्णदास की यह गति भई जो प्रेत होय कें पूछरी की ओर पीपर के वृक्ष ऊपर वैठे रहत हैं।

## प्रसंग ९

और एक समय श्रीनाथ जी की भैंस खोय गई हुती। सो गोपीनाथ ग्वाल और पाँच ग्वाल पूछरी की ओर ढूंढ़वे कों गये हुते। सो गोपीनाथ देखें तो पूछरी की ओर श्रीनाथ जी खेलत हैं और एक पीपर ऊपर कृष्णदास प्रेत ह्वै के वैठे हैं। तब कृष्णदास ने गोपीनाथ ग्वाल सों कही जो अरे भैया मेरी विनती श्रीगुसाईं जी सों करियो और कहियौ जो कृष्णदास ने कह्यौ है जो हों तुम्हारौ अपराधी हो ताते मेरी यह अवस्था है। हूँ श्रीनाथ जी के

---

[1] वृच्छ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



पास हूँ तौ मेरी गति होत नाहीं तातें मेरौ अपराध क्षमा करौ तो मेरी गति होय। और बाग में एक आम के वृक्ष के नीचे कूलहरा में एक सौ रुपैया गड़े हैं सो काढ़िकें वा कुआ को मठोठा बाकी रह्यौ है सो बनवाओ तो मेरी गति होय। सो गोपीनाथ ग्वाल नें यह बात श्रीगुसाईं जी के आगे कही जो महाराज कृष्णदास अधिकारी ने यह बीनती करी है। तब गुसाईं जी ने आम के नीचे ते रुपैया लाय कें मठोठा कूआ कौ बनवायौ तब कृष्णदास की गति भई।

कृष्णदास कों प्रेत जोन में श्रीनाथ जी दर्शन देते ताको कारन यह जो श्रीनाथ जी के सन्निधान श्रीगुसाईं जी ने कृष्णदास सों कह्यौ जो कृष्णदास तुम अधिकार करौ और श्रीनाथ जी की सेवा नीकी भाँति सों करियों। तब कृष्णदास ने कह्यौ जो महाराज मेरौ अपराध क्षमा करौ। तब श्रीगुसाईं जी ने कह्यौ जो तुम्हारौ अपराध श्रीनाथ जी क्षमा करेंगे। श्रीनाथ जी की कृपा ते श्रीनाथ जी ने अपराध क्षमा कर्‌यौ। सो प्रेत जोन में दर्शन देते। परि स्पर्श न कीयौ। जो स्पर्श होय तो उद्धार होय। सो उद्धार तौ श्रीगुसाईं जी के हाथ है। कृष्णदास श्रीनाथ जी सों कहते जो महाराज तुम मोकों दर्शन देत हौ, मो सों बोलत हौ और में प्रेत हौं ताते मेरो उद्धार क्यों नाहीं करत। तब श्रीनाथ जी ने कह्यौ जो हूँ तोकों दर्शन देत हौं बोलत हौं सो तौ श्रीगुसाईं जी के बचन के लियै। नाहीं तो प्रेत जोन में दर्शन नाहीं देतौ और बोलतोहू नाहीं और उद्धार तौ श्रीगुसाईं जी के हाथ है

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



तेने श्रीगुसाईं जी को अपराध कीयौ है ताते श्रीगुसाईं जी उद्धार करेंगे तब होयगो ।

ता पाछें श्रीगुसाईं जी आप परम कृपाल कृष्णदास के ऊपर दया आई जो अब तौ बहुत दिन भये हैं ताते अब उद्धार होय तौ भलौ । तब श्रीगुसाईं जी ध्रुवघाट ऊपर आय कें कृष्णदास को करम करवाय उद्धार कीयौ । तव कृष्णदास को उद्धार भयौ और लीला में प्राप्ति भयौ । और श्रीगुसाईं जी कहैं जो कृष्णदास ने तीन बात आछी करी । एक तौ अधिकार कीयौ सो ऐसो कियौ जो फेरि ऐसौ न करौ, दूसरे कीर्तन कियै सो अद्भुत कीयै, और तीसरे श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक होयकें सेवाहू ऐसी करी जो कोऊ न करेगौ । ताते वे कृष्णदास श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं ताते इनकी वार्ता को पार नाहीं । ताते इनकी वार्ता कहाँ ताईं लिखियै ॥ वैष्णव ॥ ८१ ॥

इति श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक परम कृपापात्र चौरासी मुख्य वैष्णवन की वार्ता स० ॥

---

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# अथ परमानंददास कनोजिया ब्राह्मण तिनकी वार्ता

—:०:—

## प्रसंग १

सो परमानंददास जी परम भगवल्लीला मयख्याती[1] श्रीठाकुर जी के परम सखा हैं। सो जब श्रीआचार्य जी महाप्रभू आप भूतल पर प्रगट भयै तब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी की आज्ञा ते दैवी जीवन के उद्धारार्थ और तैसेंई श्रीआचार्य महाप्रभून कों श्रीठाकुर जी कों परकार सब प्रगट भयौ और आप श्रीगोवर्द्धन पर्वत में प्रगट भये। सो गोपालदास जी वल्लभाख्यान में गाये हैं जो अनेक जीव कृपा करें "वादेशांतर परवेस"। ताते परमानंददास जी कौ जन्म कन्नोज में हैं कनोजिया ब्राह्मण के घर भयौ। सो वे परमानंददास जी बहुत योग्य भये और कवि भये, भगवदकृपा के पात्र भये। कीर्तन बहुत आछै गावते ताते परमानंददास जी के संग समाज बहुत रहतो। आप स्वामी कहावते आप सेवक करते।

सो भगवद इच्छा ते एक समय परमानंददास जी कन्नौज ते आप प्रयाग[2] कों आये सो प्रयाग में उतरे। सो वहाँ कीर्तन बहुत आछें

---

१ मध्य याती। २ प्राग।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



गावते ताते बहुत लोग कीर्तन सुनिवे कों आवते। और अडेल
कार्यार्थ लोग बहुत आवते सो इनके कीर्तन सुनिकें पार अडेल
जाय कहते जो परमानंददास जी इहां प्रयाग में आये हैं सो कीर्तन
बहुत आछें गावत हैं। सो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक
जलघरिया कपूर छत्री, सो उनके राग ऊपर बहुत आसक्ति, परि
वे अवकाश नाहीं पावें जो परमानंददास जी के कीर्तन सुनिवे कों
आवे। सेवा में अवकाश नाहीं जो प्राग जाय सकें।

सो एक दिन एक वैष्णव प्राग ते अडेल में आयौ। सो वाने
कह्यौ जो आज एकादशी है सो परमानंददास जी आज जागरन
करेंगे। सो यह सुनि कें वा जलघरिया नें अपने मन में विचार्यो
जो आज परमानंद जी के कीर्तन सुनिवे कों चलनों। सो वे छत्री
कपूर जलघरिया अपनी सेवा सों पहुँच कें रात्रि कों अपने घर
आये। सो घर आय कें अपने मन में विचार कीयौ जो या बेर
नाव तौ मिलेगी नाहीं ताते कहा कर्तव्य। परि वे पेरवे में भले
निपुन हुते सो मन में विचारी जो पैर कें पार जैये। पाछें अपने
घर ते चले सो श्रीयमुना जी के तीर उपर आय ठाडे भये। तब
पर्दनी पहर कें वस्त्र सब माँथे सों बाँधि कें श्रीयमुना जी में पैर
कें प्रयाग आये। पाछें वस्त्र पहर कें जा ठौर परमानंद स्वामी उतरे
हुते तहां आयै, सो इनको कछू मिलाप तौ परमानंद स्वामी सों
हुतौ नाहीं जहाँ और सब जने बैठे हुते तहां एऊ जाय बैठे। परि
एउ श्रीआचार्य महाप्रभून के सेवक है सो सब कोऊ जानत
हुते। ताते सबन नें इनकों आदर कर कें बैठायो सो ये बैठे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



ता पाछें परमानंद स्वामी नें कीर्तन को प्रारम्भ कीयो। सो परमानंद स्वामी ने विरह के पद गाये। सो विरह के पद काहे को गायै सो प्रथम इनको स्वरूप कहि आये है। कही जो यह लीला मध्यायाती श्रीठाकुर जो के परमानंद स्वामी परम सखा हैं। सो उहाँ सो बिछुरे और इहाँ तो अब ही श्रीठाकुर जी कों दर्शन नाहीं भयौ और श्रीआचार्य जी महाप्रभून को दर्शन अब होयगो। श्रीआचार्य जी महाप्रभून के मार्ग को यह सिद्धान्त है जो भगवदीन[1] को संग होय तौ श्रीठाकुर जी कृपा करें। ताही के लिये श्रीआचार्य जो महाप्रभून ने परमानंद स्वामी के ऊपर अनुग्रह करिकें अपने कृपापात्र भगवदीय के अन्तःकरणन में प्रेरना करिकें परमानंद स्वामी ये इहाँ पठाये। सो ये श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक कैसे हैं जो जिनको श्रीठाकुर जी एक छन हूँ नाहीं छोडत इनको संग ही रहत हैं। काहे तें सूरदास जी गाए है "भक्ति विरह करत करुणामय डोलत पाछें पाछें।" और जगन्नाथ जोसी की हु वार्ता में लिख्यौ है जो जब राजपूत नें तलवार चलाई तब श्रीठाकुर जी नें हाथ पकरयौ तातें श्रीआचार्य जो महाप्रभून के सेवकन के सदा श्रीठाकुर जी निकट ही रहत है। तातें परमानंद स्वामी ने विरह के पद गाये। सो पद।

राग बिहागरौ

ब्रज के विरही लोग बिचारे
विन गोपाल ठगे से ठाड़े अति दुर्बल तन हारे॥ १॥

---

[1] भगवदीयन।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



मात जसोदा पंथ निहारत निरखत साँझ सकारे।
जो कोई कान्ह कान्ह कहि बोलत अंखियन बहुत[1] पनारे॥२॥
यह मथुरा काजर की रेखा जे निकसे ते कारे।
परमानंद स्वामी बिनु ऐसे जैसे चंदा बिनु तारे॥३॥
और पद गायौ सो पद॥

## राग बिहागरौ

सब गोकुल गोपाल उपासी।[2]
जो गाहक साधन के ऊधौ सो सब बचन ईस पुर कासी॥१॥
जद्यपि हरि हम तजी अनाथ करि अब छाँड़त क्यों रति जासी।
अपनी सीतलता तहा छोड़त यद्यपि बिधु राहु है ग्रासी॥२॥
किंह अपराध जोग लिखि पठयौ प्रेम भजन ते करत उदासी।
परमानंद असो को बिरहन मागें मुक्ति गुनरासी॥३॥

## राग कान्हरो

कौन रसिक है इन बातन को।
नंद नंदन बिन कासों कहिये सुनिरी सखी मेरे दुखिया मनको॥१॥
कहा वे यमुना पुलिन मनोहर कहा वह चंद सरद राति कौ।
कहा वे मंद सुगंध अमल[3] रस कहा वे षट् पद जलजातन कौ॥२॥
कहा वे सेज पौढ़िवो बन कौ फूल बिछोना मृदु पातन कौ।
कहा वे दरस परस परमानंद कोमल तन कोमल गात[4] कौ॥३॥

---

१ बहत। २ नोट :—यह पद सूरसागर में सूरदास के नाम से आया है। ३ अमत। ४ गातन।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



राग कान्हरो

माई को मिलिवै नंद किसोरे।
एक वार को नैन दिखावें मेरे मन को चोरे॥ १॥
जागत जाम गनत नहीं खूटत क्यों पाऊँगी भोरे।
सुनरी सखी अब कैसें जी जै सुन तमचर खग रोरे॥ २॥
जो यह प्रीति सत्य अंतर गति जिन काहू वन होरे।
परमानंद प्रभू आन मिलेंगे सखी सीस जिन ढोरे॥ ३॥

अग्रवाल पुस्तकालय

इत्यादिक पद विरह के ऐसे परमानंद स्वामी ने सगरी राति गाये। पाछिली घड़ी चारि रात्र रही तव जो जो जागरन में आये हुते सो सब अपने घर कों गये। तैसेंई श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक एक जलघरिया कपूर हूँ परमानंद स्वामी सों 'जैसी कृष्ण स्मरण' कहि कें चले। और परमानंद स्वामी के कीर्तन सुनि कें बहुत प्रसन्न भये। और परमानंद स्वामी सों कह्यौ जो जैसे हमने सुने हुते तातें अधिक देखे। तुम परम भगवद अनुग्रह पूरण हो। ये जलघरिया क्षत्री कपूर महाप्रभून के परम भगवदीय है। ए जो चलि आये सो परमानंद स्वामी के ऊपर अनुग्रह करिवे कों आये है नातर भगवदीय काहे कों काहू के घर जाय।

और यह ऊपर कहि आये हैं जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू के निकट ही रहत है। सो याको हेत यह जो निकट रहत हैं तो इन जलघरिया क्षत्री कपूर की गोद में बैठिकें श्रीनवनीत प्रिया जी नें

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



परमानंद स्वामी के पद सुने। जो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के मार्ग की मर्यादा है जो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के अनुग्रह बिना श्रीठाकुर जी कृपा न करे। सो उन जलघरिया क्षत्री कपूर ऊपर श्रीआचार्य जी महाप्रभून कौं परम अनुग्रह है। तातें श्री नवनीत प्रिया जी इनकी गोद में बेठि के परमानंद स्वामी के पद काहे कों सुनने पड़े। सो ताको हेत यह जो भगवदीय परमानंद स्वामी के ऊपर श्री नवनीत प्रिया जी अनुग्रह करिबे कों आप पधारे हैं तातें सुने। सो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया क्षत्री परमानंद स्वामी सों जे[1]सी कृष्ण करि के चले। सो श्री-यमुना जी के तीर ऊपर आये। सो वहाँ आय के विचार कीयौ जो नाव की बाट देखै तो अबार होयगी और सेवा छूटेगी और श्रीआचार्य जी महाप्रभू भी खीजेंगे तातें जैसे पैर के आये हुते तैसे ही चले। सो पैर के पार गये। सो पार आवत ही स्नान करिकें अपनी सेवा में तत्पर भये।

पाछें वहाँ प्राग में परमानंद स्वामी की रात्रि कें जागरन के श्रमित सों आँखि लगी, निद्रा आई। सो इतने में स्वप्न आयौ। सो स्वप्न में देखे जो जेसे रात्रि के जागरन में श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया क्षत्री बेठै हैं और उनकी गोद में श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन भये। और स्वप्न में श्रीनवनीत प्रिया जी परमानंद स्वामी सों कहैं और परमानंद स्वामी की निद्रा खुली सो वा

1 जै (जय श्रीकृष्ण)।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



श्रीमुख को कोऊ सौंदर्य कोटि कंदर्पलावण्य परमानंद स्वामी ने देख्यौ। सो स्वप्न में तो हृदय में धरि लीयैा और मन में चटपटी लगी सो यह दर्शन फेरि कब होयगो। तब यह मन में विचार्यौ जो यह दर्शन उन श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक क्षत्री जलघरिया बिना न होयगो, तातें होय तो उनके पास जैयै। जो उनसों मिले तब कार्य सिद्ध होय।

ऐसो परमानंद स्वामी ने अपने मन में विचार कीयो। सो ततकाल प्राग ते अडेल कुं चले। सो श्रीयमुना जी के तीर ऊपर आय ठाडे भये। सो प्रातःकाल को समय भयौ। सो प्रथम नाव चली तापर बैठि कें पार उतरे। तब आगें जाय कें देखें तो श्रीआचार्य जी महाप्रभू जी स्नान संध्या वंदन करत हैं। सो परमानंद स्वामी कों श्रीमहाप्रभू जी को कैसो दर्शन भयौ साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम श्रीकृष्णाचन्द्र सो। श्रीगुसाईं जी वल्लभाष्टक में लिख्यो है "सोवस्तुतः कृष्ण एवच" ऐसो दर्शन भयौ। श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया क्षत्री कपूर की गोद में श्रीठाकुर जी काहे को बेठे यह कारण जिनके माथे ऐसे प्रभू विराजत है। पर परमानंद स्वामी के मन में यह जो क्षत्री कपूर मिले तो आछो। सो काहे ते जो जिनके माथे ऐसे प्रभू और जिनके दर्शन ते श्रीआचार्य जी महाप्रभून कों दर्शन भयौ। ता पाछें श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने अपने श्रीमुख सों कह्यौ जो परमानंद कछू भगवदीय जस वर्णन करि। तब परमानंद स्वामी नें बिरह के पद गाये॥ सो पद॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



## राग सारंग

कोन वेर भई चलेरी गोपाले ।
हों ननसार गई हों[१] न्योते वार वार बोलत व्रज बोले[२] ॥१॥
तेरौ तन को रूप कहाँ गयौ भामिन अरु मुख कमल सुखाय रह्यौ।
सब सौभाग्य गयौ हरि के संग हृदय सों कमल विरह दह्यौ ॥२॥
को बोले को नेन उघारे को प्रति उत्तर देहि बिकल मन।
जो सर्वस्व अक्रूर चुरायौ परमानंद स्वामी जीवन धन ॥३॥

## राग सारंग

जिय की साधन जिय ही रही री।
बहुरि गोपाल देखि नहीं पाए बिलपत कुञ्ज अहीरी ॥१॥
एक दिन सोंज समीप यह मारग वेचन जात दहीरी।
प्रीत के लिये दान मिस मोहन मेरी बाँह गहीरी ॥२॥
बिन देखें घडी जात कलप सम विरहा अनल दहीरी।
परमानंद स्वामी बिन दर्शन नेन न नींद बहीरी ॥३॥

## राग संगम

वह बात कमल दल नैनन की।
वार वार सुधि आवत रजनी बहु ढुरि देनी सेनी सेन की ॥१॥
वह लीला वह रास सरद को गोरज रजनी आवनि।
अरु वह ऊचो टेर मनोहर मिस करि मोह सुनावनि ॥२॥
वसन कुञ्ज में रास खिलाया विथा गमाई मन की।
परमानंद प्रभू सों क्यों जीवे जो पोखी मृदु वेन की ॥३॥

---

१ ही। २ वाले।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



या भाँति परमानंद स्वामी नें विरह के पद गाये। सो सुनिके परमानंद स्वामी सों कह्यौ जो कछू बाललीला वर्णन करि। तब परमानंद स्वामी नें कह्यौ जो महाराज में कछू समझत नाहीं। तब श्रीमहाप्रभून नें कह्यौ जो स्नान करि आउ हम तोकों समझावेंगे। तब परमानंद स्वामी नें श्रीमहाप्रभून सों पूछो जो महाराज आपको सेवक विरक्त कहा हैं। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने कह्यौ जो कछू टहल करत होयगो।

तब परमानंद स्वामी स्नान कों गये। सो तब परमानंद स्वामी आगे जायकें देखें तो यमुना जी की गागर लैकें वह कपूर क्षत्री आवत हैं। तब निकट आये सो साम्हैं मिलै। सो उनको देखकें परमानंद स्वामी बहुत प्रसन्न भये और परमानंद स्वामी नें उनको नमस्कार करी और कह्यौ, जो रात्रि को जागरन में आप पधारे हुते, सो श्रीठाकुर जी नें आपकी गोद में वैठि के मेरे कीर्तन सुने, सो आपकी कृपा ते श्रीठाकुर जी ने मोंसों कह्यौ, जो में श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक जलघरिया क्षत्री गोद में बेठि कें तेरे कीर्तन सुने हैं। और आपकी कृपा ते मेरो भाग्य सिद्ध भयो है सो आवत ही तुम्हारी कृपा ते मोकों दर्शन भयौ। इतनी बात सुनि के उन जलघरिया ने कह्यौ जो ऐसे मति कहैा। जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू सुनेंगे तो खीजेंगे सो सेवा छोड़ के क्यों गये ताते यह बात मति कहैा। तब इतनी सुनिके परमानंद स्वामी कों आश्चर्य भयो और कह्यौ जो ए धन्य हैं जिन ऊपर श्रीठाकुर जी कों ऐसो अनुग्रह है और ये अपनों स्वरूप छिपावत हैं। पाछें परमानंद स्वामी तौ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



स्नान को गये और जलघरिया जल की गागर लेके मंदिर में गयौ।

पाछें परमानंद स्वामी श्रीयमुना जी में स्नान करिकें तत्काल आप श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगे आय ठाड़े भये। तब श्री-आचार्य जी महाप्रभून ने कह्यौ जो परमानंद स्वामी आगे आउ बेठौ[1]। तब परमानंद स्वामी आप आगे आय बेठे। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने परमानंद स्वामी को नाम सुनायौ। पाछें मंदिर में पधार कें श्रीनवनीत प्रिया जी के सन्निधान परमानंद स्वामी को अनुक्रमणिका सुनाई। काहे ते जो प्रथम परमानंद स्वामी सों श्री-आचार्य महाप्रभून तें अपने श्रीमुख सों कह्यौ जो भगवद्यश वर्णन करि सो परमानंद स्वामी ने विरह को पद गायौ। तब श्रीआचार्य महाप्रभून ने कह्यो जो परमानंद स्वामी बाल लीला गाउ तब परमानंद स्वामी ने कह्यौ जो राज में कछू समझत नाहीं। सो परमानंद स्वामी ने काहेते कह्यौ जो ऊपर कहि आये हैं। जो ये श्रीठाकुर जी सो बिछुरे हैं। बिछुरे के दुख की तौ स्फुर्ति रही और संयोग जो सुख भयौ ताको बिसमरन भयौ। जो काहे ते जो सब सब लीला बिशिष्ट पूरण पुरुषोत्तम तौ श्रीआचार्य जी महाप्रभून के घर पधारे हैं।

सो परमानंददास को श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें अनुक्रमणिका सुनाई तब सब लीला की स्फुर्ति भई। और अनुक्रमणिका सुनाई ताको कारण कहा। जो श्रीआचार्य जी महाप्रभू को नाम

१ वेठि।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



है "श्रीभागवत पीयूष समुद्र मथन क्षमः"। सो श्रीभगवत कौ श्रीगुसाईं जी अमृत को समुद्र करिकें वर्णन किये हैं। सो अनुक्रमणिका द्वारा श्रीभागवत रूपी समुद्र श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें परमानंद स्वामी के हृदय में धर्यौ। ताते वाणी तो सव अष्टकाव्य की समान है और ये दोऊ परमानंद स्वामी और सूरदास जी सागर भये। सो याते जो श्रीभागवत रूपी अमृत सागर को स्वरूप इनके हृदय में श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने धर्यौ। सो काहे ते जो सव कोऊ सूरसागर और परमनंदसागर कहते। अब परमानंददास सों श्रीआचार्य जी महाप्रभू श्रीमुख सों कहें जो वाललीला वर्णन करि। सो परमानंद जी ने तत्काल वाललीला के पद करि कें श्रीनवनीत प्रिया जो के सन्निधान गायै॥ सो पद॥

राग सांभरी

माई री कमलनैन श्याम सुन्दर झूलत हैं पालना।
वाललीला गावत सब गोकुल की ललना॥ १॥
अरुण तरुण कमल नख मनि जस जोती।
कुंचित कच मकराकृत[1] लटकत गजमोती॥ २॥
अँगूठा गहि कमलपान मेलत मुख माही।
अपनों प्रतिबिम्ब देखि पुनि पुनि मुसिकाही॥ ३॥
जसुमति के पुन्य पुञ्ज वारं वार लाले।
परमानंद स्वामी गोपाल सुत सनेह पाले॥ ४॥

[1] भवराकृत।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



यह पद सुनि कें श्रीआचार्य जी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये फेरि और पद गायौ ॥ सो पद ॥

राग बिलावल

जसौधा तेरे भाग्य की कही न जाय।
जो मूरति ब्रह्मादिक दुर्लभ सो प्रघटे[1] हैं आय ॥ १ ॥
शिव नारद सनकादिक महामुनि मिलि वे करत उपाय।
ते नंदलाल धूर धूसर वपु रहत गोद लिपटाय ॥ २ ॥
रतन जडित पोढाय पालने वदन देखि मुसिकाई[2]।
झूलौ मेरे लाल बलिहारी परमानंद जस गाई[3] ॥ ३ ॥

राग बिलावल

"मणिमय आंगन नन्द के खेलत दोऊ भैया" सो ऐसें बा लीला के पद परमानंददास ने गाये। सो सुनिकें श्रीआचार्य जी बहुत प्रसन्न भये।

सो परमानंददास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के पा हैं[4]। सो परमानंददास कों अपने कीर्तन की सेवा दीनी सो परमानंददास जी श्रीनवनीत प्रिया जी को नित्य नये प करिकें भाँति भाँति के सुनावते। तब अनोसर होतो तब परम नंददास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगें पदकीर्तन करे श्रीआचार्य जी महाप्रभून नित्य कथा कहते सो परमानंददास जी नित्य सुनते। सो ताही प्रसंग के कीर्तन करिकें परमानंददास जी

१ प्रगटे। २ मुसिकाय। ३ गाय। ४ हे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



सुनावते। सो एक दिन परमानंददास जी नें श्रीठाकुर जी के चरणार्बिंद को महात्म सुन्यौ। सो चरणार्बिंद के महात्म को कीर्तन करि श्रीआचार्य जी महाप्रभून को सुनायौ। सुनि के श्रीआचार्य जी महाप्रभू बहुत प्रसन्न भये॥ सो पद॥

### राग कान्हरौ

चरण कमल वंदौ जगदीश गोधन के संग धाए।
जे पद कमल धूरि लपटाने करि गहि गोपीन के उर लाए॥ १॥

यह पद सम्पूरण करि के परमानंददास जी नें गायौ और श्रीआचार्य जी महाप्रभून के स्वरूप को और प्रार्थना को पद गायौ॥ सो पद॥

### राग कान्हरौ

" यह मांगों गोपी जन वल्लभ "॥

यह परमानंद स्वामी ने सम्पूर्ण करि कें गायौ। सो सुनि कें श्रीआचार्य जी महाप्रभू अपने मन में जाने जो यह मिस कर के परमानंददास जी या पद कों सुनाय कें ब्रज के दर्शन की प्रार्थना कीनी है ताते ब्रज कों अवश्य चलनों॥

### प्रसंग २

श्रीआचार्य जी महाप्रभू यह विचार करें जो ब्रज कों पधारवे कों उद्यम कीयो। सो दामोदरदास हरिसानी कृष्णा मेघन परमानंददास जी और यादवदास हलवाई तथा रसोई की सामग्री



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



संग लेकें चले और सब वैष्णव संग ले आप श्रीआचार्य जी महाप्रभू व्रज को पधारे।

सो व्रज को आवत परमानंददास को गाम कन्नौज आयो तब परमानंददास ने श्रीआचार्य जी महाप्रभून सों वीनती कीनी जो महाराज मेरे घर पधारियै आपके अनुग्रह ते मेरो भाग्य सिधि भयो है अब मेरे घर हू पावन करियै। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभू आप अंतर्यामी कृपानिधान भक्त मनोरथ पूरक आप कृपा करि कें पधारें। सो परमानंददास के घर आछी भांति सों श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें रसोई करि श्रीठाकुर जी कों भोग समर्प्यो। पाछें भोग सराय कें आप प्रसाद लीयौ पाछें आप गादी तकियान के ऊपर बिराजे। तब परमानंददास सों कह्यो जो कछू भगवद्यश गावौ। तब परमानंददास ने मन में विचारी जो या समय श्रीआचार्य जी महाप्रभून को मन तो व्रज में श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के पास है ताते विरह के पद गाऊँ। सो विरह को पद ऐसो गायौ जामें छिन हूँ कलप समान जाय ॥ सो पद ॥

राग सोरठ

हरि तेरी लीला की सुधि आवै ॥
कमल नैन मन मोहनी मूरत मन मन चित्र बनावै ॥
एक वार जाय मिलत माया करि सो केसे विसरावै।
मुख मुसिक्यान वंक अविलोकन चाल मनोहर भावै ॥
कबहुक निवड तिमर आलिगन, कबहुक पिक सुर गावै।
कबहुक संभ्रम कासि कासि कहि संगहीन उठि धावै ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



कबहुँक नैन मूदि अन्तर गति मणि माला पहरावै।
परमानंद श्याम ध्यान करि ऐसे विरह गवावै ॥४॥

यह पद परमानंददास ने गायौ। सो सुनि कें श्रीआचार्य जी महाप्रभून को मूर्छा आई। सो जा लीला को पद परमानंददास नें गायौ ता लीला विषै श्रीआचार्य जी महाप्रभू मग्न भये। सो देहानुसंधान न रह्यौ। सो तीन दिन लों श्रीआचार्य जी महाप्रभून कों मूर्छा रही। सो सबरे सेवक दामोदरदास हरसानी प्रभृति श्रीआचार्य जी महाप्रभून के दर्शन करे सो वेसे ही बेठे रहै। चतुर्थ दिन के प्रातःकाल श्रीआचार्य जी महाप्रभू सावधान भयै तब सब वैष्णव प्रसन्न भयै। तब परमानंददास जी मन में डरपै जो फेरि ऐसो पद न गाऊँ। फेरि सूधे पद गाए। सो पद ॥

राग विभाग

माई री हों आनंद गुन गाऊँ।
गोकुल की चिन्तामणि माधौ जो मांगो सो पाऊँ ॥ १ ॥
अब[1] ते कमलनैन व्रज आयै सकल संपदा बाढ़ी।
नंदराय के द्वारे देखौ अष्ट महासिद्धि ठाढ़ी ॥ २ ॥
फूले फले सदा वृन्दावन कामधेनु दुहि दीजै।
मारग मेघ इंद्र वरषा में कृष्ण कृपा सुख लीजै ॥ ३ ॥
कहत जसोधा सखियन आगें हरि उत्तकर्ष जनावै।
परमानंददास को ठाकुर मुरली मनोहर भावै ॥ ४ ॥

---

१ जब।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



और हू पद गायौ। सो पद।

राग गौरी। "बिमल जस बृन्दावन के चंद्र को"

यह पद सम्पूरण करिके गायौ। फेरि और गायौ।

राग सारंग। "चलिरी नंदगाँव जाय बसियै"

यह पद सम्पूर्ण करिकें गायौ। सो पद में यह कह्यौ जं चलरी नंदगाँव जाय बसियै।

सो श्रीमहाप्रभू जी सुनि के व्रज कों पधारे। सो श्रीगोकुल आवत ही श्रीआचार्य जी महाप्रभू श्रीयमुना जी के तीर ऊप छोंकर के नीचे बेठक में तहाँ श्रीआचार्य जी महाप्रभू विराजे और एक वैठक श्रीद्वारिका नाथ जी के मंदिर के पास हैं सं भीतर की वैठक है। सो रात्रि के विश्राम तथा रसोई की ठो है। उहाँ श्रीआचार्य जी महाप्रभून को घर हुतो। जब श्रा श्रीगोकुल पधारते तब उहांई उतरते। सो यह भीतर की बेठक है। पाछें सव वैष्णवन ने श्रीयमुना जी स्नान कीयै और परमा नंददास जी हू श्रीयमुना जी को जस वर्णन कीयै॥ सो पद॥

राग रामकली

श्रीयमुना जी यह प्रसाद हौं पाऊँ।
तिहारे निकट रहौं निसवासर रामकृष्ण गुन गाऊँ॥ १॥
मंजन बिमल पावन जल चिंता कुलख वहाऊँ।
तिहारी कृपा भान की तनया हरि पद प्रीत बढ़ाऊँ॥ २॥
बिनती करौं यही वर मागौं अधम संग बिसराऊँ।
परमानंददास फलदाता मगन गोपाल लडाऊँ॥ ३॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



राग रामकली । "श्रीयमुना जी दीन जान मोहि दीजै[1]"

सो ऐसे पद सम्पूरण करिकें परमानंददास जी नें बहुत गाये । श्रीआचार्य जो आगें तोर विषें गाये ।

ता उपरांत श्रीमहाप्रभू जी नें परमानंददास कों बाललीला विशिष्ट श्रीगोकुल के दर्शन करवायै । सो परमानंददास को ऐसा दर्शन भयौ सो सब व्रज भक्त श्रीयमुना जल की गागरि भरि ले जाते हैं और श्रीठाकुर जी मार्ग में खेलते हैं और व्रज भक्तिन कों जल की गागरि उठाय देते हैं और उनकी कचु[2]तोरे हैं या भांति सो दर्शन भयै । सो तेसोंई पद श्रीआचार्य जी महाप्रभून के आगें गायौ ॥ सो पद ॥

राग बिलावल

जमुना जल घर भरि चली चंद्रावलि नारी ।
मारग खेलत मिलि घनश्याम मुरारी ॥ १ ॥
नैनन सों नैना मिले मन रह्यौ है लुभाई ।
मोहन मूरत जिय वसी पग धरो न जाई ॥ २ ॥
तब की प्रीति प्रगट भई यह पहली भेट ।
परमानंद ऐसी मिली जेसी गुड में चेंट ॥ ३ ॥

राग सारंग

लाल नेक टेको मेरी वैयां ।
श्रोघट घाट चल्यौ नही जाई रपटत हों कालिन्दी महियां ॥ १ ॥

---

१ लीजै । २ कंचुकी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



यह पद संपूरण करकें ऐसे पद गाये। ता पाछें परमानं नें बाल लीला के पद बहुत गायै और श्रीगोकुल कों स्व जामें आवै ऐसो पद गायौ ॥ सो पद ॥

राग कान्हरौ

गावत गोपी मधु व्रज बानी ।
जाके भुवन वसत त्रिभुवनपति राजा नंद यसौधा[1]रानी ॥१
गावत वेद भारती गावत गावत नारदादि मुनि ज्ञानी ।
गावत गुन गंधर्व काल शिव गोकुल नाथ महातम जानी ॥२
गावत चतुरानन जदुनायक गावत शेष सहस्र मुखरास ।
मन क्रम बचन प्रीत यह अम्बुज अब गावत परमानंददास ॥३

यह पद परमानंददास नें गायौ। पाछें और पद गायौ सं पद ॥

राग कान्हरौ

जसुमति अह आवत गोपी जन ॥
वासर ताप निवारन कारन वारंवार कमल मुख निरखन ॥१
चाहत पकरि देहरी उलंघन किलक किलक हुलसत मन ही मन
लोंन उतार दोऊ करि वारी फेर वारत[2] तन मन धन ॥
लेन उठाय चापत हीयौ भरि प्रेम दिवस[3] लागै दृग ढरकन
चली लै पलना पोढावन को अरुकसाय[4] पोढे सुन्दर घन ॥
देत असीस सकल गोपी जन चिरजीवो लोग गज मुन
परमानंददास को ठाकुर भक्त वत्सल भक्त मनरंजन ॥

१ जसोधा । २ डारत । ३ वसवि । ४ अरकसाय ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



राग हमीर। "चितै चितै चित वारचौ री माई"

यह पद संपूरण करि कें गायै। सो ऐसे पद परमानंददास ने बहुत गायै।

ता पाछें श्रीगोकुलनाथ जी के दर्शन करि कें परमानंददास श्रीगोकुल ऊपर बहुत आसक्ति भये। सब ऐसे पद गायै जा में श्रीआचार्य जी महाप्रभून की प्रार्थना कीनी मोकों श्रीगोकुल में आय कें चरणारबिंद के नीचे राखो। नितप्रति प्रभून के दर्शन करौं[1] सर्व लीला विशिष्ट पूरन पुरुषोत्तम हैं। और यह पद गायौ ॥ सो पद ॥

राग कान्हरौ

यह मागौ जसोदानंदन ॥

चरण कमल मन मन मधुकर या छवि नेनन पाऊँ दर्शन ॥१॥
चरण कमल की सेवा दोऊ तन राजत बिजैलता घन नंदन।
वृषभानु नंदिनी मेरे उर बसु[2] प्रान जीवन घन ॥२॥
वृज बसिवो जमुना अचिवो श्रीवल्लभ को दास यही पन[3]।
महाप्रसाद पाऊँ हरि गुन गाऊँ परमानंददास जीवन धन ॥३॥

राग कान्हरौ

"जब लगि जमुना गाय गोवर्द्धन।
तब लग गोकुल गाँव गुसाईं" ॥

यह पद सम्पूर्ण करिकें प्रार्थना के पद गाये। तब कितनेक दिन श्रीआचार्य जी महाप्रभू गोकुल में विराजै। ता पाछें

१ करूँ। २ सर्वसु। ३ मन।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



सब वैष्णवन कौं संग लेकें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन कों पधारे ॥

## प्रसंग ३

अब श्रीआचार्य जी महाप्रभू स्नान करि कें पर्वत ऊपर पधारे। सो आवत ही परमानंददास नें श्रीनाथ जी कौं श्रीमुख देखि कें वहाँ के वहाँ रहे। तव श्रीमहाप्रभू जी नें श्रीमुख सों कह्यौ जो परमानंददास कछू भगवत लीला गावो । तब परमानंददास अपने मन में विचारे जो कहा गाऊँ। तब ऐसे विचारौ जो जामें प्रथम अवतार लीला, पाछें चरणाविंद की बंदना, पाछें भगवद्वर्णन को स्वरूप, ता पाछें वाल क्रीडा, ता पाछें श्रीठाकुर जी को महात्म । ऐसौ पद परमानंददास नें गायौ ॥ सो पद ॥

राग कान्हरौ

मौहन नंदराय कुमार।
प्रगट ब्रह्म निकुंज नायक भक्त हित अवतार ॥१॥
प्रथम चरण सरोज बन्दो श्याम घन गोपाल।
मकर कुंडल गंड मंडित चारु नेन विसाल ॥२॥
बलिराम सहित विनोद लीला से कर हेत।
दास परमानंद प्रभू हरि निगम बोलत नेत ॥३॥

और असक्ति को पद गायौ ॥

राग पूरवी

मेरौ माई माधो सों मन लाग्यौ।
मेरौ नेन और कमल नैन कौ इकठौरौ करि मान्यौ[1] ॥१॥

---

१ सान्यो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



लोक वेद की कानि तजी में न्योती अपने आन्यौ।
एक गोविंद चरण के कारण वैर सबन सो ठान्यौ ॥ २ ॥

अबको[1] भिन्न होय मेरी सजनी दूध मिल्यौ जेसे पान्यौ।
परमानंद मिली गिरधर सों है पहली पहचान्यौ ॥ ३ ॥

ऐसे पद परमानंददास ने गाये ता पाछें श्रीआचार्य जी महाप्रभू सेन[2] आरती करि श्रीनाथ जी कौं पोढाये। तब अनोसर करि आप नीचे पधारे। तब परमानंददास हू नीचे आय बैठे। तब रामदास भीतरिया नें परमानंददास को महाप्रसाद दूध पठायौ। सो दूध परमानंददास जी लेवे लागे तब तातो लाग्यौ तब परमानंददास जी नें सीरो करि कें लीयौ। ता पाछें रामदास नें पूछौ जो तुमको महाप्रसाद दूध पठायौ हो सो आयौ। तब परमानंददास ने कही जो हाँ आयौ परि दूध वहुत तातो हुतो सो ऐसो दूध श्रीठाकुर जी केसें आरोगत हें ताते दूध तो सुहावतो भलौ। तब रामदास ने कह्यौ जो वहुत आछौ आप भगवदीय हौ जैसे आज्ञा करोगे तेसे करेंगे। तब सकारें सब सेवक ध्यान करि कें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी की सेवा में तत्पर भये। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभू स्नान करि कें श्रीगिरिराज ऊपर पधारे तब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी कौं जगाये। तब वा समय परमानंददास जी जाय कें श्रीठाकुर जी के जगायवे को पद गायो। सो पद।

---

१ क्यों। २ सैन।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



## राग विभास

जागो गोपाल लाल मुख देखों तेरौ।
पाछें ग्रह काज करों नित्य नेम मेरौ॥ १॥
विगसत निसा अरुण दिसा उदित भयौ भानु।
गुंजत अंग पंकज वन जागियै भगवान॥ २॥
द्वारे ठाड़े वंदीजन करत हैं पुकार।
वंस प्रसंग गावत हरिलीला सार॥ ३॥
परमानंद स्वामी दयाल जगत मंगल रूप।
वेद पुराण पठत महिमा लीला अनूप॥ ४॥

यह पद परमानंद ने गायौ। फिर कलेऊ को पद गायौ। सो पद।

## राग रामकली

पिछवारे ह्वै ग्वालन टेर सुनायौ।
कमल नेन प्यारो करत कलेऊ कोटन सुख लों आयौ॥
अरी मैया गैया एक वन व्याय रही हैं बछरा उहाँहीं बसायौ।
मुरली लई न लकुटिया न लीनी अरबराय कोउ सखा न बुलायौ॥
चकृत भई नंद जू को रानी सत्य आय किधों अपनों पायौ।
फूलो न अंग समात रसवर त्रिभुवन पति सिर छत्र जो छायो॥
मिलि बेठे संकेत सघन वन विविध भाँति कीयौ मन भायौ।
परमानंद सयानी ग्वालनि उलटि अंग गिरधर पिय प्यायौ॥ ४

ऐसे पद परमानंददास ने गायौ। ता पाछें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के मंगला के दर्शन खुले तब परमानंददास नें श्रीगोवर्द्ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



नाथ जी सों पूछी जो आप तातौ दूध क्यों आरोगत है। तब श्रीनाथ जी ने कह्यौ जो ये हमको समर्पत है सौ आरोगत है। ता पाछें परमानंददास जी नित्य कीर्तन करिकें सुनावते।

तब ता समय एक राजा दर्शन कों आयो सो श्रीगोवर्द्धन नाथ जी कें दर्शन करे तब फेरि आयकें रानी सों कही जो श्रीगोवर्द्धन नाथ जी ठाकुर बहुत सुंदर हैं ताते तू जायकें दर्शन करि आउ। तब रानी नें कही जो जैसे हमारी रीति है सो होय तो दर्शन करें। तव राजा नें कही जो श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन में काहे को परदा है तब रानी ने मानी नहीं। तव राजा ने श्रीआचार्य जी महा प्रभून सों बीनती कीनी जो महाराज में तो रानी सों बहुत कहत हो परि वह आवत नाहीं ताते आप कृपाकरिकें दर्शन करवावौ तो वह करै। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने कही जो यहाँ ले आवो जो प्रथम वाकों एकांत में दर्शन करवावेंगे ता पाछें और लोग दर्शन करेंगे। तब राजा अपनी रानी कों लिवाय कें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करवाये सो सब लोग सरकि गये। तब रानी दर्शन करिवे लागी तब इतने में श्रीगोवर्द्धन नाथ जी ने सिंह पौर के किवाड़ खोल दिये। सो सब भीर दौर के रानी के ऊपरि परी सो रानी के सब वस्त्र निकस परे और बहुत लज्जित भई। तब राजा ने रानी सों कही जो मेने तोसों पहिले ही कह्यौ हुतो जो श्रीठाकुर जी के दर्शन में काहे कों परदा है। ये ब्रज के ठाकुर हैं इननें काहू को परदा राख्यौ नाहीं। तब वा समय परमानंददास जी ने पद गायौ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



राग देवगंधार

"कोनि यह खेलवे की वानि ॥
मदन गोपाल लाल काहू की राखत नाहि न कानि" ॥ १॥

यह एक तुक परमानंददास जी नें गाई हुती। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें कह्यौ जो परमानंददास एसे कहै जो 'भली यह खेलवे की वानि'। तव परमानंददास जी नें एसौ ही पद गायौ। सो पद ॥

राग देवगंधार

भली यह खेलवे की वानि ॥
मदन गोपाल लाल काहू की नाहिन राखत कानि ॥ १॥
अपने हाथ ले देत है चनवर दूध दही घृत सानि॥
जो वरजो तो आँख दिखावै पर धन कों दिन दान ॥ २॥
सुनि री जसोधा सुत के करतब पहले माँट मथानि॥
फोरि डारि दधि डारि आजर[1] में कोन सहै नित हानि ॥ ३॥
ठाडी देखत नंद जू की रानी मूंदि कमल मुख हानि॥
परमानंददास जानत हैं बोलि बूझि धों आनि ॥ ४॥

यह पद परमानंददास ने गायौ। ता पाछें कितेक पद गाये जो जो लीला श्रीठाकुर जी ने करी सो ता ता लीला के पद परमानंददास नें गायौ।

सो एक दिन भगवदीय रामदास जी कुंभनदास जी सब वैष्णव मिलि कें परमानंद जी जहां रहत हुते तहां आयै। सो

१ अजर।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



भगवदीय आये जानि कें परमानंददास जी बहुत प्रसन्न भये जो आज मेरे घर भगवदीय आये हैं सो मेरो बडौ भाग्य है और आज मेरो भाग्य सिद्धि भयौ है। सो काहे ते श्रीठाकुर जी भगवदीय के हृदय में सदा सर्वदा विराजत हैं। ताते भगवदीय की कृपा होय तौ श्रीठाकुर जी अनुग्रह करें। जो ये सब भगवदीय मेरे घर पधारे हैं सो प्रथम भगवदीय की न्यौछावरि करौ। जब यह विचार कें परमानंददास ने ऐसे ही पद कह्यौ। सो पद।

राग हमीर

आये मेरे नंद नंदन के प्यारे ॥
माला तिलक मनोहर बानो त्रिभुवन के उजियारे ॥ १ ॥
प्रेम सहत वसत मन मोहन नेकहु टरत न टारे ॥
हृदय कमल के मध्य बिराजत श्रीव्रजराज दुलारे ॥ २ ॥
कहा जानों कौन पुराय प्रगट भयौ मेरे घर जो पधारे ॥
परमानंद प्रभु करी न्योछावर वारंवार हों वारे ॥ ३ ॥

यह पद भगवदीयन की भेट करि अपने आयै भगवदीयन कों विदा कियै। ता पाछें ऐसी रीति सों परमानंददास नें श्रीनाथ जी की भली भाँति सों सेवा कीनी। सों वे परमानंददास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे कृपापात्र भगवदीय है सो इनकी वार्ता कहां ताईं लिखियै ॥ प्रसंग ॥ ३ ॥ वैष्णव ॥ ६६ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# अथ कुम्भनदास गोरवा तिनकी वार्ता

—:०:—

## प्रसंग १

सो वे कुंभनदास जी श्रीगोवर्द्धन पर्वत के पास जमुनाव गाँव है तामें रहते। सो जमुनावतौ नाम वा गाँव को काहे ते जो जमुना जी को प्रवाह सारस्वत कल्प में याके निकट हुते ताते जमुनावतौ नाम वा गाँव को है। तामें कुंभनदास जी रहे और परासोली चंदसरोवर के ऊपर उन कुंभनदास जी धरती हुती सो वहाँ खेती करते। सो कुंभनदास जी श्रीगोवर्द्ध नाथ जी के परम सखा हुते और कृपापात्र हुते। सो अब श्री गोवर्द्धन नाथ जी प्रगट होय के श्रीमहाप्रभू जी को बुलावें तब ये भगवदीय प्रसिद्ध होयंगे।

सो एक समय श्रीआचार्य जी महाप्रभू पृथिवी परिक्रमा क झारखंड में पधारे। सो झारखंड में श्रीगोवर्द्धन नाथ जी आज्ञा दीनी जो हम गोवर्द्धन में तीन दमन हैं नागदमन, इन्द्रदम देवदमन। तिनके मध्य में हम देवदमन हैं सो मेरो नाम है। ता तुम आयके हमको पधरावैा और हमारी सेवा को पुकार प्र करैा। तब श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें पृथ्वी परिक्रमा उहां राखि कें वेग पधारे। तब दामोदरदास हरसानी, कृष्णदा मेघन, गोविंद दुबे, जगन्नाथ जोसी, रामदास ये पाँच वैष्णव सं हुते। सो श्रीआचार्य जो महाप्रभू श्रीगोवर्द्धन की तरहटी आ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



कैं सद्दू पाँडे के चोतरा ऊपर विराजै। सो आगें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के प्रागट्य में यह सद्दू पाँडे भवानी नरो श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक भये हुते तिनको श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी की सेवा सोंपो। और ब्रजबासी ब्रज में श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक बहुत भये। और कुंभनदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून की शरण आयै।

सो श्रीआचार्य जी महाप्रभून श्रीगोवर्द्धन नाथ जी को एक छोटो सो मंदिर सिद्धि करवायौ। तामें श्रीनाथ जी कों पधराये और रामदास चोहान कों सेवा की आज्ञा दीनी। और सब ब्रज-बासी लोग दूध दही माखन लावते सो श्रीगोवर्द्धन नाथ जी आरोगत हुते। और रामदास कों जो भगवदीच्छा तें जो आप प्राप्त होय सो भोग धरते और आप प्रसाद लेते। और जो ब्रज-बासी लोग श्रीआचार्य जी महाप्रभून के सेवक भये हुते तिनकों श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने आज्ञा दीनी जो यह मेरो सर्वस्व है सो तुम सब बातन सों यत्न राखियौ और सेवा में तत्पर रहियौ। और कुंभनदास कों और सब सेवकन कों श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने आज्ञा दीनी जो तुम देवदमन के दर्शन कियै बिना महाप्रसाद मति लीजियौ। तब या भाँति सों आज्ञा करि कें श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें पृथ्वी परिक्रमा झारखंड में राखी हुती। अब कुंभनदास जी नित्य श्रीआचार्य जी महाप्रभून की कृपा तो श्रीगोवर्द्धन नाथ के दर्शन कों आवते। सो कुंभनदास कीर्तन बहुत नीके गावते। जो श्रीआचार्य जी महाप्रभून नें

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



कुंभनदास जी कों नाम सुनायौ और ब्रह्म संबंध करवायौ। त
कुंभनदास जी नित्य नये पद करि कें श्रीनाथ जी को सुनावते
और श्रीनाथ जी कुंभनदास जी के घर पधारते, और बहुत क्री
करते, खेलते वार्ता करते और बहुत कृपा कुंभनदास जी के ऊ
करते। अब राम दास जी श्रीगोवर्द्धन नाथ जी की सेवा कर
लागे।

सो एक समय मलेच्छ को उपद्रव भयौ। सो यहाँ मानिकचं
पांडे, सद्‌ पांडे, रामदास चौहान, कुंभनदास सब मिलि कें विचा
कियौ जो यह मलेच्छ आयौ है सो यह धर्म को द्वेषी है सो कह
कर्तव्य है। तब सब ने ही कही जो यामें कहा कर्तव्य कहा पूछ
अपनो विचार्यौ कहा होत है, ताते श्रीनाथ जी को पूछौ जो मह
राज कहा करें। तब श्रीनाथ जी ने आज्ञा दीनी जो हमको य
ते ले चलों हम यहाँ ते उठेंगे। तब सवन नें पूछौ जो महारा
कहाँ पधारोगे। तव आपनें श्रीमुख सों कह्यौ जो टोड के घने
चलेंगे। तब एक भेसा मंगायौ ता पर श्रीगोवर्द्धन नाथ जी क
बेठाये। तब एक ओर ते तौ रामदास पकरें रहे और एक ओ
ते कुंभनदास पकरे रहे और सव सेवक संग चलें जात हैं। त
घने में काँटे वहुत हुते सो उहाँ काँटेन में बेठे सो बस्त्र सवन
फटि गये और सरीर में काँटे लगे दुःख वहुत पायौ। सो घने
एक तालाव हुतौ तहाँ रूखन को एक चौक है तहाँ बड़े रूख नी
श्रीनाथ जी बिराजे। सो कछूक सामग्री संग्रह हुती सो रामदा
ने भोग धरि जल को करुआ भरि कें आगे धरि कें सब वैष्ण

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



बेठे । तब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी नें कुंभनदास सों कह्यौ जो कुंभनदास जी कछू गावौ। तव कुंभनदास जी तौ मन में कुढ रहे हुते तव एक पद नयो करि कें गायो ॥ सो पद ॥

### राग सारंग

भावत है तोय टोड को घनौ ॥
कांटे लगे गोखरू बूढे फट्यौ जात यह तनौ ॥१॥
सिहों कहा लोकटी को डर यह कहा बानक बन्यौ ॥
कुंभनदास प्रभू तुम गोवर्द्धनधर वह कोन रांड ढेडनीको जन्यौ ॥२॥

यह पद कुंभनदास ने गायौ । सो सुनि के श्रीनाथ जी मुसिक्याय कें चुप करि रहै। इतने में श्रीगोवर्द्धन ते समाचार आये जो यह मलेच्छ की फोज आई हुती सो पाछी फिर गई। तव श्रीगोवर्द्धननाथ जी पर्वत ऊपर मंदिर में पधारे ॥

## प्रसंग २

अब श्रीनाथ जी पर्वत ऊपर मंदिर में पधारे। सो ब्रज के लोगन कों बहुत हर्ष भयौ जो धन्य देवदमन जो ऐसो उपद्रव आयो हुतो सो इनके प्रताप ते सब मिटि गयौ। तव कुंभनदास जी प्रसन्न होय के पद गाये सोपद श्रीगोवर्द्धन नाथ जी को सुनायै । राग श्रीचर्चरी ॥ "जयति जयति हरिदास सर्वधर नें" ॥ यह पद सम्पूरण करि कें गायौ पाछें और पद गाये सो पद ॥ राग सारंग "कृष्ण तंनतरया तीर" यह पद सम्पूरण करि



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



कें कुंभनदास ने गायौ। पाछें नित्य ऐसे पद कुंभनदास जी दमन को सुनावते।

तब कुंभनदास जी के पद सब जगत में प्रसिद्ध भये सो लोग इनके पद गावने। तब इनको पद काहू कलामत ने सीख सो फतेपुर सीकरी में देशाधिपति के आगें कुंभनदास जी को कीयो भयौ पद वा कलामत ने गायौ। सो सुनि के देशाधिपति चित्त वा पद में गड़ गयौ और माथौ धुनौ जो ऐसेहू महापु ह्वै गये हैं जिनकों ऐसे दर्शन परमेश्वर के होत हैं। तब कला ने कह्यौ जो अजी साहब अब हूँ हैं। सो सुनि कें देशाधिपति प्रसन्न भयौ और वा कलामत से कह्यौ जो वे कहां हैं। वा कलामत ने कही जो श्रीगोवर्द्धन के पास जमुनावतौ गां तहाँ वे रहत हैं। तब देशाधिपति ने कही जो यहाँ बुलावौ उन्सों मिलेंगे। तब देशाधिपति ने मनुष्य और असवारी कुंभ दास के बुलायवे कों भेजे। तब कुम्भनदास जी तो परासोली में बेठे हुते सो मनुष्यन ने उहाँ बताय दीये। कुम्भनदास जी घर तो हुते नाहीं पातसाह ने याद कीये हैं तब कुम्भनदास ने कही जो भैय्या में कछू देशाधिपति को तौ नाहीं मेरो देशाधिपति सों कहा काम है। तब देशाधि मनुष्यन ने कही जो बाबा हम तौ काम कछू समझत परि हमको देशाधिपति को हुकम है जो कुम्भनदास कों ले ताते यह पालकी है यह घोडा है जापर चाहौ ता पर

१ तब कुम्भनदास सों कह्यौ जो तुमकों पातसाह नें याद कीयो है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



चलियै, हम तो आये हैं सो आपको ले जायेंगे। तब कुम्भनदास नें मन में विचार कीयौ जो बिन जाये तौ निर्वाह न होयगौ सो कुम्भनदास जो तत्काल उहाँ ते पनहिं पहिर के चले।

तब कुम्भनदास जो कों लेवे को आये हुते तिनने कही जो बाबा सवारी में बेठियै। तब कुम्भनदास ने कह्यौ जो भैय्या में तौ कबहूँ बेठ्यौ नाहीं। पाछें ऐसे ही चले। सो फतह[1] पुर सीकरी आय पहुँचे। सो देशाधिपति के डेरा हुते तहाँ गये। तब मनुष्यन नें देशाधिपति सों कह्यौ जो कुम्भनदास जो आये हैं। तब देशाधिपति ने कुम्भनदास सो कही जो कुम्भनदास जो आवो बेठो। सो आय बेठे। सो वह स्थल कैसा है जामें जडाव की रावटी, तामें मोतीन की झालरी लगी है ऐसो स्थल है, तामें बेठे। तब मन में बहुत दुःख लाग्यौ और कह्यौ जो यासो तौ हमारे ब्रज के हींसन के रूख आछे हैं सो जिनमें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी खेलत हैं। तब इतने में देशाधिपति बोल्यौ जो कुम्भनदास जो तुमने विसनपद बहुत कीये हैं सो मेने तुमको बुलायो है ताते तुम कछू विसनपद गावो। तब कुम्भनदास जो तौ मन में कुढे हुते जो विचारें जो कहा गाऊँ मेरी वाणी के भक्ता तौ श्रीगोवर्द्धनधर हैं और कछू गाये बिना मेरौ काम चलेगौ नाहीं ताते ऐसो गाऊँ जो कबहूँ मेरो नाम न लेय। काहे ते जो याके संग ते मेरे प्रभू छूटे हैं ताते कठोर वचन कहूँ जो बुरो मानेगौ तो कहा करेगो। तब यह मन में आई " जो जाको मन मोहन संग करे एको के सब से नहीं

[1] फ़ते।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


सिरने जो जग वैर परे" यह विचारि के ता समय कुम्भनदास ने एक नयौ पद करि कें गायौ ॥ सो पद ॥

राग सारंग

भक्तन कौ कहा सीकरी काम ।
आवत जात पन्हैया टूटी बिसर गयो हरि नाम ॥ १॥
जाको मुख देखे दुख लागै ताको करन परी परनाम ।
कुंभनदास लाल गिरधर विन यह सब झूठौ धाम ॥ २॥

यह पद गायौ सो देशाधिपति अपने मन में बहुत कुढ़्यो[1] और कह्यौ । जो इनको काहू बात को लालच होय तां मेरां गावें इनकों तो अपने परमेश्वर सों साँचो सनेह है । इतनों कें देशाधिपति नें कुंभनदास कों सीख दीनी । तब कुंभनदास जी उहाँ ते चले सो मार्ग में आवत अति क्लेश जो कब हों प्रभु कों श्रीमुख देखों । सो ऐसो विचार के कुंभनदास जी आवत ही समय पद गायौ । सो पद ॥

राग धनाश्री

कबहू देख हों इन नैननु ।
सुंदर श्याम मनोहर मूरत अंग अंग सुख देननु ॥
वृन्दावन बिहार दिन दिन प्रति गोप वृन्द संग लैननुं ।
हँसि हँसि हरखि पतौवन पावन बाँटि बाँटि पय फेननु ॥
कुंभनदास किते दिन बाते किये रेणु सुख सेननु ।
अब गिरधर बिन निस और वासर मन न रहत क्यों चेननु ॥

१ कुढ़्यो ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



यह पद मार्ग में गावत आये। सो आयकें श्रीगोवर्द्धन नाथजी के दर्शन कियै। और दोय दिन लों दर्शन न भये सो कुंभनदास जी कों दोय जुग की बराबर बीतो। सो श्रीमुख देखते ही सब दुःख विसर गयौ। तब एक पद गायौ। सो पद॥

राग धनाश्री

नैन भरि देखौ नंदकुमार।
ता दिन ते सब भूलि गयौ हों बिसरयौ पन परवार॥ १॥
बिन देखे हों विकल भयों हों अंग अंग सब हारि।
ताते सुधि है सावरी मूरति की लोचन भरि भरि वारि॥ २॥
रूप रास पैमित[1] नहीं मानों कैसें मिले लो कन्हाई।
कुंभनदास प्रभू गोवर्धन धन मिलियै बहुर री माई॥ ३॥

राग धनाश्री

हिलगिन कठिन है या मन की।
जाके लियै देखि मेरी सजनी लाज गई सब तन की॥ १॥
धर्म जाउ अरु लोग हँसो सब अरु गावो कुल गारी।
सो क्यों रहे ताहिं बिन देखे जो जाको हितकारी॥ २॥
रस लुब्धक निमख न छाँड़त ज्यों आधीन मृग गानों।
कुंभदास सनेह परम श्रीगोवर्द्धन धर जानों॥ ३॥

ऐसे पद बहुत कुंभनदास जी नें गाये। सो सुनि के श्रीनाथ जी बहुत प्रसन्न भये और कह्यौ "यह मो बिन रहत नाहीं"।

---

1 परिमित।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



## प्रसंग ३

और एक समय राजा मानसिंह सब ठौर ते दिग्विजय करि अपने देश कूं चले। तब मन में विचारे जो बहुत दिन में आ हैं ताते मथुरा वृन्दावन होयकें चलनों। सो यह विचार आगरे ते चले सो मथुरा आये। तब विश्रांत स्नान करिकें श्री सोराय जी के दर्शन करिकें वृन्दावन चले। सो उष्णकाल दिन हुते तब वृन्दावन के सब महंतन ने जानी जों आज राजा मानसिंह दर्शन को आवेगो। सो यह जानि के श्रीठाकु जी कों आछे आछे जरी के वागे बहुत आभरण पहराये पिछ चंदोवा सब जरीन के बाधें। इतने राजा मानसिंह दर्शन आयौ। सो भीतरि मंदिर के आय कें श्रीठाकुर जी के दर्शन कि सो उष्णकाल के दिन हुते सो बहुत गरमी पड़े। सो ता सम राजा मानसिंह पै ठाडौ न रह्यौ गयौ। सो ऐसे दर्शन चार पां जगह खड़े हुते। सो तहां सब ठौर दर्शन करि सब ठौर ते वि होयकें अपने डेरा में आये। सो डेरा आय कें मन बिचारे अवही कूंच करें।

सो वहां सो असवार होय कें चले सो तीसरे पहर गोवर्द्ध गांव आये। सो मानसी गंगा ऊपर डेरा कीये। सो तहाँ श्रीहर जी के दर्शन किये। सो वहां वृन्दावन के महंतन ने वड़े ठा बनाये हैं तेसोंई यहां ठाठ बनाय राख्यौ हुतौ। सो राजा मानसि तहाँ ते दर्शन करि के चले। तव काहू न कही जों महाराज य श्रीगोवर्द्धननाथ जी बहुत सुन्दर ठाकुर हैं तहाँ आप दर्शन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



चलो। तब राजा मानसिंह ने कह्यौ जो यहाँ तो अवश्य चलनो ये ठाकुर सब व्रज के राजा हैं ताते इनके दर्शन तो अवश्य करने। तब तहाँ ते चले। सो गोपालपुर गाँव आये। तब आयकें पूछी जो दर्शन को कहा समय है तब काहू ने कही जो उत्थापन के दर्शन तो होय चुके हैं अब भोग के दर्शन होयंगे। तब यह सुनि कें राजा मान सिंह श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन कों गिरराज ऊपर आये। सो उष्णाकाल के दिन, मार्ग के श्रमित, दूर के चले आयै, सो गरमी में राजा बहुत व्याकुल भयौ हुतो। इतने में भोग के दर्शन खुले सो राजा मानसिंह को मणिकोठा में ले गये।

तिन दिनन में श्रीनाथ जी की सेवा वैभव सों होत हुती। बड़ौ मंदिर सिद्धि भयौ हुतो। श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के आगें गुलाब जल को शृङ्गार भयौ हुतो। निज मंदिर मणि कोठा तिवारी सब जल मय होय रहे हुते। सो ता समय राजा मानसिंह दर्शन कों गये हुते सो श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करिकें साष्टांग दंडवत कीनी और गरमी में राजा व्याकुल भयो हुतौ सो सीतलताई भई। बड़ो चेन भयो। और श्रीगोवर्द्धन नाथ जी कौ श्रीमुख देख कें राजा बहुत प्रसन्न भयौ और कह्यौ जो साक्षात पूरण ब्रह्म श्रीकृष्ण वृन्दावन चन्द्र श्रीगोवर्द्धन नाथ जी हैं। आगें श्रीभागवत में सुन्यौ हुतो सो आज देखे। आज को दिन है सो धन्य है और आज मेरै बड़ौ भाग्य हैं। और मन में कह्यौ जो यह भोग को समय है सो तौ प्रभून की राजधानी को समय है। सो वे प्रभू विराजे हैं आगे ताल मृदंग बाजत हैं कीर्तन होत है। सो कुंभनदास

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



जी ठाड़े ठाड़े मणि कोठा में दर्शन करत हैं और कीर्तन गावत हैं सो राजा मानसिंग को मन वा पद में गड गयौ हुतो। तैसें कोटि कंदर्प लावण्य स्वरूप और तेसौई कीर्तन कुंभनदास जी करत हुते। सो पद ॥

राग नट

रूप देख नेना पल लागै नाहीं।
गोवर्द्धन के अंग अंग प्रति निरखि नेन मन रहत तहीं ॥१॥
कहा कहौं कछू कहत न आवै चित्त चोरचो[1] माँगवै दहीं ॥
कुम्भनदास प्रभू के मिलन की सुन्दर बात सखियन सों कही ॥२॥

राग धनाश्री

आवत मोहन मन जु हरचौ है ॥
हों ग्रह अपने सचु सों बेठी निरखि वदन अहवरा विसरचौ है ॥१॥
रूप निधान रसिक नंदनंदन निरखि वदन धीरज न धरचौ है ॥
कुम्भनदास प्रभू गोवर्द्धन धर अंग अंग प्रेम पियूष भरचौ है ॥२॥

ऐसे पद कुम्भनदास जी गावत है। इतने में राजभोग के दर्शन होय चुके। तब राजा मानसिंग दंडौत करि कें अपने डेरा में गयौ। तब कुम्भनदास जी संध्या आरती के दर्शन करि कें अपनी सेवा सों पहुँच कें अपने घर कों गये। तब राजा मानसिंह अपने डेरा में जाय कें अपने पास के मनुष्य हुते तिनमें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के सिंगार की वार्ता करन लागे और कह्यौ जो यह

---

१ चारयौ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के आगें कोन गावत हुतो। इनने ऐसे विसनपद गाये हैं जो कछू कहिवे में नाहीं आवत। तब काहू ने कही जो महाराज एक ब्रजवासी है कुंभनदास नाम है, सो आपने सुने ही होयँगे देसाधिपति सों मिले हुते सो है। तब राजा मानसिंघ ने कही जो हम हू इनसों मिलै तौ आछौ।

तब राजा मानसिंघ सवारे उठे सो श्रीगिरिराज की परिक्रमा को निकसे जो परासोली आयै। सो परासोली में कुम्भनदास जी न्हाय कें वैठे। इतने में श्रीगोवर्द्धन नाथ जी पधारे। श्रीमुख सों कहै जो कुम्भनदास जी हों तो एक बात कहूँगो। तब इतने में राजा मानसिंग आयौ सो कुंभनदास जी को प्रणाम करि कें वैठौ और श्रीनाथ जी तौ उहाँ ते दूर जाय ठाडे भये। सो श्रीनाथ जी तौ एक कुम्भनदास जी को देखे है और इनकी भतीजी को देखे हैं। तब कुंभनदास जी की दृष्टी तौ श्रीनाथ जी के संग ही गई सो श्रीनाथ जी वैठे हैं तहाँ कुम्भनदास जी देखवो करे। तब भतीजी बोली जो बाबा राजा वैठे हैं। तब कुंभनदास जी ने कही जो में कहा करूँ जो वैठे हैं। तो जा[1] बात कहत हुते सो तो भाजि गये सो अब कहेंगे। तब दूर ते श्रीनाथ जी कहैं जो कुम्भनदास में बात कहूँगो। तब कुंभनदास जो प्रसन्न भयै और भतीजी सों कह्यौ जो अमुकी आरसी लाउ तिलक करों। तब भतीजी ने कही जो बाबा आरसी तो पडिया पी गई। तब राजा नै कुम्भनदास जी की भतीजी सों कही जो अरी छोरी पडिया

[1] जो।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



कहा पी गई। तब वह कठौठी में पानी लाय के कुंभनदास जी के आगें धर्‌यौ तब कुम्भनदास जी वा में देखि कें तिलक करन लागे।

इतने में राजा मानसिंग ने अपनी सोने की आरसी कुंभनदास जी कें आगें धरी। और कह्यौ जो बाबा यामें देखि कें तिलक करिये। तब कुंभनदास जी बाले जो अरे भैय्या याको हों कहा करूँगो, हमारे तौ यहाँ आनि के घर हैं ताते कोऊ या के पाछें हमारो जीव लेयगो ताते हमें तौ यह नाहीं चाहियत है। तब राजा मानसिंग ने इनको आगें सोने की थैली धरी। तब कुंभनदास ने कह्यौ जौ हमकौ धन तौ चाहियै नाहीं हमारे तौ यह खेती है ताको धन आवत है सो खात हैं। तब राजा मानसिंग ने कह्यौ जो भलौ आपको गाम है ताको लिखौ है[1] करि देउ। तब कुम्भनदास ने कह्यौ जो भैया हा तों ब्राह्मण नाहीं जो तेरो उदक लेउं। तब फेरि राजा मानसिंग ने कह्यौ जो बाबा कछु तौ आज्ञा करौ। तब कुंभनदास ने कह्यौ जो हमारौ कह्यौ करौगे। तब राजा मानसिंग नें हाथ जोर कह्यौ जो महाराज आप कहौगे सो करूंगो। तब कुम्भनदास नें कह्यौ जो फेरि मेरे पास तुम मति आइयौ। तब राजा मानसिंग नें कह्यौ जो महाराज धन्य है, या माया के भक्त तौ सगरी पृथ्वी में फिरौ सो बहुत देखे परि भगवद्भक्त तौ एक एही देखे। यह कहि कें राजा मानसिंग कुंभनदास कों दंडौत करि कें उठि चल्यौ। तब फेरि आय कें कुम्भनदास सों

१ हौं।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



श्रीनाथ जी ने यह बात कही और बहुत प्रसन्न भयौ। तब फेरि कुम्भनदास जी श्रीगिरिराज ऊपर आय कें श्रीनाथ जी की सेवा में तत्पर भयै।

## प्रसंग ४

और एक समय कुंभनदास जी कों मिलिवे कों वृन्दावन के महंत हरिवंश भृत आयै। सो यह जानि कें आयै सो महापुरुष है; इनसों श्रीठाकुर जी बोलत हैं, बातें करत हैं और काव्य इनकी सुनी सो कीर्तन बहुत सुन्दर कीयै, ताते ऐसे पद श्रीठाकुर जी के साक्षात्कार बिना न होय। यह जानि कें कुम्भनदास सो मिलवै आयै। सो कुंभनदास जी सों मिलि कें बहुत प्रसन्न भये और कह्यौ जो कुम्भनदास जी तुमने विसनपद बहुत कीयै सों हमनें आप कें सुने हैं, और आप को पद श्रीस्वामिनी जी कौ नाहीं सुन्यौ ताते आप कोइ स्वामिनी जी कौ पद सुनावौ। तब कुम्भनदास जी नें श्रीस्वामिनी जी कौ पद करि कें गायौ॥ सो पद॥

राग रामकली
ताल चरचरी

कुमरि राधिका के तुव सकल सौभाग्य
की वा वदन पर कोटिस[1] चंद्रवारौ॥
खंजन कुरंग सत कोटि जंघन ऊपर
सिंह सत कोटि उपरि न्योंछावर उतारौ।

---

[1] कोटिसत।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



मत्त सत कोटि चालि पर कुम्भसत
कोटि इन कुचन परि वारि डारो ॥१॥
कीर दश कोटि दशनन परि कहिन वारौ
पंक कंदूरवह्न कसत कोटि अधरन ऊपर वारि रुचिर गर्भ टारो।
नाग सत कोटि वैनी ऊपर कपोत सत कोटि
करि जुगल पर वार ने नाहिन कोऊ लोक उपमा जुधारौ ॥२॥
दासकुंभन स्वामिनी सुनखसिख
अति अद्भुत सुठान कहा लगि समारौ ॥
लाल गिरधर कहत मोहितौ
हिलौजी[1] वह रूप छिन छिन निहारै ॥३॥

यह पद कुम्भनदास ने गायौ सो सुनि के महंत बहुत ही रीझे और कहैं जो हमने श्रीस्वामिनी जी के पद बहुत किये हैं परि यहाँ उपमा दीनी ही और वारि फेरि डारी ताते कुंभनदास जी आप बड़े महापुरुष हौं आपकी सराहना कहाँ ताँई करियै। या महंत नें कुम्भनदास की बड़ी बड़ाई करी बहुत रीझे। ता पाछें वे महंत आदि सब कुंभनदास जी सो बिदा होयकें अपने घर गयै।

## प्रसंग ५

और एक समय श्रीगुसाईं जी श्रीगोकुल में अपने घरते श्री-नवनीत प्रिया जी सों आज्ञा माँगि के विदेसार्थ[2] द्वारिका कों

---

१ तोहिलोंजी। २ विदेशार्थ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


पधारे। सो श्रीगुसाईं जी नाथ जी द्वारि पधारे। सो श्रीनाथ जी कों सेवा सिंगार किये ता पाछें आप भोजन करिकें गादी ऊपर बिराजे। तब सब सेवक दर्शन कों आये। तब बात चलत में कुम्भनदास की बात चली। तब काहू वैष्णव नें कह्यौ जो महाराज कुंभनदास जी कों द्रव्य को बहुत संकोच है सात बेटा हू हैं और उपजत तौ एक खेती की है ताको धन आवत है तासों निरबाह करत हैं। सो यह बात श्रीगुसाईं जी ने अपने मन में राखी। ता पाछें उत्थापन के समय कुम्भनदास जी दर्शन कों आये तब श्रीगुसाईं जी अपने श्रीमुख सों कहै जो कुंभनदास हम श्रीद्वारिका रणछोड़ जी दर्शन को पधारेंगे और विदेसहू होयगो। वैष्णव नें बहुत करिके लिख्यौ है ताते जो तुम संग चलो तौ विदेस में भगवदीय कौ ग्रहकाल बाधा न होय। तब भगवदीय को काल व्यतीत हो जाय कछु जान्यौ न परै। और में सुन्यौ है जो कछू तुम्हारें द्रव्य कौ संकोच है सो वहां सिद्धि होयगौ ताते सर्वथा तुमकौ चल्यौ चाहियै। तब कुंभनदास जी नें कही जो आज्ञा। इतने में दर्शन कौ समय भयौ सो श्रीगुसाईं जी आप स्नान करिकें श्रीनाथ जी के मंदिर में पधारे। श्रीनाथ जी की सेवा सों पहुँचिकें श्रीनाथ जी कौ पौढाय कें बेठक में पधारे और कुम्भनदास जी कौ सीख दीनी जो कुंभनदास जी तुम सेवा सौं पहुँचि कें वेग आईयौ हम कालि आरती करिकें अपछरा कुण्ड ऊपर जाय रहेंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



तब कुंभनदास जी श्रीगुसाईं जी कों दंडोत करिकें अपने घर कों आये। सवारे सेवा सों पहुँच कें श्रीनाथ जी के दर्शन करिकें अपछरा कुण्ड ऊपर आयै और श्रीगुसाईं जी श्रीनाथ जी सों सीख मांगि कें आप नीचे आयै। पाछें आप भोजन किये और सब सेवकन कों महाप्रसाद लिवायौ। ता पाछें समयें ताही कौ¹ महूर्त हुतौ सो श्रीगुसाईं आप पर्वत नीचे आयै। सो अपछरा कुण्ड ऊपर आये। सो तहाँ अपछरा कुण्ड ऊपर डेरा करे हुते। सब सेवक अगारु सो ठाड़े हुते। सो श्रीगुसाईं जी डेरा पधारि कें पोढ़े। इतने में सब सेवक सामान लेकें वेऊ आये। सो कुम्भनदास उहाँ बेठि के विचारत हुते। कहियै जो कहिवे कों होय प्राननाथ बिछुरन की बिरियाँ जानत नाहि न कोऊ। यह विचार करत उत्थान को समय भयौ। तब आप गुसाईं जी आप भीतर डेरा में जागे। और कुंभनदास जी कूं दर्शन की सुधि आई सो वहाँ पुंछरी की ओर कोनें में जाय कें वैठि कीर्तन गावत हैं और आखिन में ते जल को प्रवाह बहत है। सो कुम्भनदास ने एक पद गायौ॥ सो पद॥

### राग सारंग

केते है जुग रो विन देखें।
तरुण किशोर रसिक नंदनंदन कछुक उठति मुख रेखें॥१॥
वह शोभा वह कांति वदन की कोटिक चंद विसेखें।
वह चितवन वह हास्य मनोहर वह नटवर वपु भेषें॥२॥

---

१ ताही समय को।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


श्याम सुन्दर संग मिल खेलन की आवत जिये अपेखें।
कुंभनदास लाल गिरधर विन जोवन जन्म अलेखें॥ ३॥

यह पद कुम्भनदास नें गायौ। सो श्रीगुसाईं जी आप डेरा के भीतर सुनों। सो कुंभनदास जी कों कलेश श्रीगुसाईं जी सों सह्यौ न गयौ। सो श्रीगुसाईं जी आप डेरा के बाहर पधारें और श्रीमुख ते कह्यौ जो कुम्भनदास अब तुम बेगि जाउ तुम्हारौ विदेस होय चुक्यौ। और जो तुम्हारी अवस्था है ऐसी उनकी अवस्था है। कैसें जानिये। जो श्रीअक्का जी नें गज्जन धावन कों पान लेवे कों पठायौ। सो गज्जन कों तों भगवद् आसक्ति देखें विना एक क्षण हू न रह्यौ जाय। सो गज्जन धावन पान लेवे कों बाहिर गये। सो थोरी सी दूर गये और ज्वर चढ़ि आयौ। सो मूरछा खायकें गिरें और श्रीअक्का जी ने श्रीनवनीत प्रिया जी कों भोग समर्प्यो। तब श्रीनवनीत प्रिया जी नें गज्जन धावन को बोल न सुन्यौ तब श्रीनवनीत प्रिया जी नें अपने श्रीमुख सों कह्यौ जो मेरो गज्जन धावन कहाँ है। तब श्रीअक्का जी नें कह्यो जो वह तौ पान लेवे को गयौ है। तब श्रीनवनीत प्रिया जी नें कह्यौ जो मेरौ गज्जन धावन आवेगो तब आरोगूंगो। सो श्रीहस्त खेंच कें बेठ रहे। तब वेगि गज्जन धावन कों बुलायो। तब गज्जन धावन नें कही जो बाबा आरोगौ तब श्रीनवनीत प्रिया जी आरोगे हैं। यह श्रीआचार्य जी महाप्रभू की मर्यादा है जो जितनों सेवक को स्वामी ऊपर स्नेह होय। और भगवद्गीता में भगवान कहें हैं। श्लोक॥ ये यथा मां प्रपद्यंतेस्तांस्तथैव भजाम्यहं॥ यह आधौ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



श्लोक कह्यौ। ताते श्रीमुख सों कहैं जो इहां तुम्हारी विषस्था और उनकी विवस्था है। सो ऐसैा कुंभनदास कों और श्रीनाथ जी कों बिरह हुतो। ताते श्रीगुसाईं जी कुम्भनदास कों सीख दीनी। तब कुंभनदास नें श्रीनाथ जी के दर्शन कीयै। तब कुम्भनदास ने एक पद गायैा। सो पद॥

राग सारंग

जो ये चौंप मिलन की होय॥

तैा क्यों रहै ताहि बिन देखें लाख करैा जिन कोय॥
जो ये बिरह परस्पर व्यापै जो कछू जीवन वनै॥
लौक लाज कुलकी मर्यादा एकौ चित्त न गनै॥
कुम्भनदास प्रभू जाय[1] तन लागी और न कछू सुहाय॥
गिरधर लाल तौहि बिन देखे छिन छिन कलप विहाय॥

सो यह पद कुम्भनदास ने श्रीनाथ जी के सन्निधान गायै। सो सुनि कें श्रीनाथ जी बहुत प्रसन्न भयै। सो कुंभनदास श्रीनाथ जी कों देख कें प्रसन्न भयै॥

## प्रसंग ६

और एक समय कुम्भनदास जी श्रीगुसांई जी के पास बैठे हुते। तब कुम्भनदास नें श्रीगुसाईं जी सों कह्यौ जो महाराज बेटा डेढ है और हे तो साथ[2]। तब श्रीगुसाईं जी नें कह्यौ जो कुम्भनदास डेढ कौ कारन कहा। तब फेरि कुम्भनदास जी कहैं जो महाराज आखो बेटा तौ चत्रभुजदास और आधौ बेटा

१ जाहि। २ सात।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



कृष्णदास है। सो श्रीनाथ जी की गायन की सेवा करत है तासों आधौ है। कुंम्भनदास जी कृष्णदास सों आधौ क्यों कहैं ताको हेत यह जो श्रीआचार्य जी महाप्रभून ने पुष्टि मार्ग प्रगट कीयौ है। सो पुष्टि मार्ग कहा है जो ब्रज भक्तन को हेंत यह मार्ग प्रगट कीयो है। सो भगवदीय गाये हैं 'जो सेवा रीति प्रीत ब्रज जन की जन हित जग प्रगटाई'। सो ब्रज भक्तन को कहा रीति है जो श्रीठाकुर जी के सन्निधान तौ सेवा करै और श्रीठाकुर जी बन में पधारे तब गुणगान करें। जो ये बस्तु होय तौ आखौ और इनमें एक होय तौ आधौ। ताते चत्रभुजदास सेवा और गुणगान है ताते आखौ और कृष्णदास में एक सेवा है सो आधौ। तब श्रीगुसांईं जी श्रीमुख ते कहैं जो भगवदीय है तेई बेटा हैं और बहुत भये तौ कौन काम के। चत्रभुजदास की वार्ता में लिखे हैं॥ वैष्णव ६०॥

(कुम्भनदास के पुत्र कृष्णदास की वार्ता)

सो वे कृष्णदास श्रीनाथ जी की गायन के ग्वाल[1] हुते। श्रीगुसांईं जी ने इनको गायन की सेवा दीनी हुती। सो कृष्णदास श्रीनाथ जी की गायन की सेवा करते। सवारे खिरक सेवा सों पहुँच कें फेर गायन चरायवे को जाते। सो सगरे दिन कृष्णदास गायन की सेवा करते। सो एक गाय चराय कें पूछरी के पोर[2] कृष्णदास गायन के संग आवत हुते। सो सगरी गाय तौ खिरक में आई और गाय बड़ी हुती ताकों औन[3] बहुत भारी हुतौ सो

१ ग्वार। २ पूछरी की ओर। ३ ऐन।



आम्नाय-ग्रन्थालय, ...लिपि, कशौली

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



वह गाय बहुत हरवे हरवे चलती। सो वा गाय कों आ
अँधियारो परि गयौ। सो तहाँ पर्वत के नीचे अधियारे में
नाहर निकस्यौ सो गाय पै दोरयौ। तब कृष्णदास कहैं जो
अधर्मी यह श्रीनाथ जी की गाय हैं तू भूखौ हो तौ मेरे
आऊ। तब इतने में गाय तौ भाजि खिरक में गई और नाहर
कृष्णदास को अपराध कीयौ।

और ऊपर कहि आये है जो गाय सब खिरक में आई।
श्रीनाथ जी आप गाय दुहिवे कों आये। सो सब गाय
दुहत हैं और वह बड़ी गाय खिरक में आई सो वह गाय
श्री[1] दुहिवे कों बैठे और कृष्णदास बछरा थामें हैं और वह
वत्तरा[2] कों चाटत है। सो ऐसे दर्शन कुंम्भनदास जी को
ता पाछें गोदुहन करि कें श्रीनाथ जी गिरिराज ऊपर मंदि
पधारे। तब श्रीगुसाईं जी ने भोग समर्प्यो और कुम्भनदास
खिरक में से आयै सो दंडौती सिला पास ठाडे भयै। इत
समाचार आयै जो कृष्णादास को नाहर ने मारयौ। सो सुनि
कुंभनदास कों मूर्छा खाय के गिरे। सो ऐसे गिरे जो देहानुसं
भूल गये। तब कुंभनदास जी कौ सब कोऊ बुलावे परि
नाहीं। तब यह समाचार काहू नें श्रीगुसाईं जी सो कहें
महाराज कृष्णादास को नाहर नें मारयो और गायकों कृष्णदा
बचाई सो कृष्णादास उहाँ ही परे हैं। तब गुसाईं जी कहें
गाय कबहू न छोडि आवै। अंत समय गाय संकल्प करत है

१ श्रीनाथजी २ बछरा।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



गाय उत्तम लोक कों ले जात है और कृष्णदास नें तौ श्रीनाथ जी की गाय बचाई हैं ताते कृष्णदास कों गाय केसें छोड़ि आवैगी। और गुसाईं जी ने कह्यौ कुंभनदास जो कहां है। तब काहू वैष्णवनें कही जो महाराज कुम्भनदास जी कों कलेश बहुत बाधा कियौ है। जो कुम्भनदास जी ऊपर आवत हुते, सो कुम्भनदास जो के आगे काहू ने कृष्णदास के समाचार कहैं, सो सुनत ही कुम्भन दास जी मूर्छा खाय कें गिरे। सो लोग बहुत ही बुलावत हैं परि आवत नाहीं।

तब श्रीगुसाईं जी ने अपने श्रीमुख सों कह्यौ जो फेरि कुम्भन-दास जी की खबर लावै जो कुम्भनदास जी की देह केसें हैं। सो वे आय के कुम्भनदास जो कों पुकारें। तब यह समाचार श्रीगुसाईं जी सों कहैं जो महाराज कुम्भनदास जी तौ कछू सम-झत नाहीं। तब श्रीगुसाईं जी तौ सेन भोग के दर्शन करि कें श्रीनाथ को पेढ़ाय के आप नीचे पधारे। सो देख कें मार्ग के साम्हैं कुम्भनदास जी परे हैं और लोग चारयौ ओर ठाडे हैं सो कहत हैं जो कुंभनदास जी केसे भगवदी हैं परि पुत्र को सोक बहुत बुरे होत है, या पीरा सों कोई बच्यौ नाहीं, काहे ते जो अपनी आतमा है। तब यह बात लोगन की सुनिकें श्रीगुसाईं जी मन में विचारे जो यहां तौ कारण कछू और है और लोगन कों तौ कछू और भाखत है। ताते भगवदीय को स्वरूप करिवे के लिये श्रीगुसाईं जी अपने श्रीमुख सों कही जो कुम्भनदास जी सवारे तुम वेगी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



आईयौ तुमको श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करावेंगे[1] तुम मैं खेद मति करौ। इतनो श्रीगुसाईं जी श्रीमुख सों कहैं कुम्भनदास जी उठि ठाड़े भये और प्रसन्न भये। तब श्रीगु जी कों दंडौत करिकें कुम्भनदास को जो कार्य करनों हो सो कीयौ।

पाछें सवारे कुम्भनदास जी दर्शन कों आयै। श्रीनाथ कों सिंगार करिके श्रीगुसाईं जी सों कह्यौ जो प्रथम कुम्भन जी कों दर्शन कराउ देय। सो कुम्भनदास जी वैष्णवन के यह कार किये जो सूतकी को कोंन मंदिर में जान देतो। कुम्भनदास जी के अनुग्रहते सब कोउ दर्शन करत हैं सो कुं दास जी नित्य एक वेर दर्शन करिकें परासोली में जाय बैठे सो वहाँ बैठे बैठे विरह के पद गावते। सो पद॥

राग धनाश्री

तुम्हारे मिलन बिन दुखित गुपाल।
अति आतुर ब्रज सुन्दर प्यारे बिरही बेहाल॥
सीतल चंद नयन भयो दाहत किरण कमल जनु जाल।
चंदन कुसुम सुहाय घनसार लगन वदी[2] ज्वाल॥
कुम्भनदास प्रभूनवधन तुम बिन कनकलता मानों सूषी जीव मा[3] काल।
अधरामृत वंशी सीचि लेउ तुम गिरि गोवर्द्धन लाल॥

१ करामेंगे। २ वडी। ३ मां।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



राग धनाश्री

अब दिन रात्रि पहार से भये ।
तब ते निघतट नाहिनि जबते हरि मधुपुरी गयै ।
यह जानियै विधाता जुग सम कीने जाम नयै ।
जागत जाग विहातन के ऐसें प्रीत पठयै[1] ।
व्रजवासी अतिपरम दीन भये व्याकुल सोच लयै ।
उन प्राण दुखित जलरुह गन दारुण हेम पयै ।
कुम्भनदास बिछुरत नंदनंदन बहुत संताप करे ।
अब गिरधर विन रहत निरंतर नौत न नीर छयै ॥

राग केदारो

औरन कों समीप बिछुरनों आयौ मेरी हिसा ।
अब को जसोवे सुख अपने आली मोकों चाहत रिसा ॥
ना जानों यह बिधाता की गति मेरे आंक लिखे ऐसौ कोन रिसा ।
कुम्भनदास प्रभू गिरधर कहत निस दिन रह ज्यों चातक घन त्रिसा ॥

ऐसे पद गाय गाय कुम्भनदास जी नें सूत ते पद कियें । पाछें शुद्ध हाय कें कुंभनदास जी भगवत्सेवा में आये। ऐसी जिनकों दर्शन की आरति सो वे कुम्भनदास जी श्रीआचार्य जी महाप्रभून के ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हैं। ताते इनकी वार्ता को पार नहीं ताते इनकी वार्ता कहाँ ताई लिखिये ॥ प्र० १ ॥

---

१ ठ्ये ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# श्रीगुसाईं जी के सेवक नंददास जी तिनकी वार्ता

—:o:—

## प्रसंग १

नंददास जी तुलसीदास के छोटे भाई हते। सो विनकूं न तमासा देखवे को तथा गान सुनवे को शोंक बहुत हतो। वा देश मेंसूं एक संग द्वारका जात हतो। सो नंददास जी विचारे के में श्रीरणछोड जी के दर्शन कूं जाऊँ तो अच्छौ है। विन नें तुलसीदास जी सूं पूँछो। तब तुलसीदास जी श्रीराम जी के अनन्य भक्त हते जासूं विन नें द्वारका जायवे की न कही। जब नंददास जी नहीं माने सो वा संग में चले गये। मथुरा सूधे गये। मथुरा में वा संग कूं बहुत दिन लगे सो नंददास जी संग कूं छोड़कर चल दीने।

सो नंददास जी द्वारका को रस्ता भूल गये सो कुरुक्षेत्र आड़ी सीनंद गाम में जाय पहुँचे। सो वहाँ एक साहुकार रहतो हतो। तब नंददास जी वाके घर भिक्षा लेवे गये। वा स्त्री को रूप सुन्दर हतो सो नंददास जी देखकर मोहित हो गये। जब आखो दिन जाय के वाके दरवाजे पें बैठ रहते, जब छत्रानी को मुख देख लेते तब डेरा पे आवते हते। ऐसे करत बहुत दिन बीते।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



जब वा छत्रानी की जात में बहुत चर्चा फैली तब वा छत्रानी को सुसरो तथा पती विनने विचार कीनो गाम में रहनो नहीं। तब उहाँ ते घर के सगरे मनुष्य श्रीगोकुल जी कूं चले कारण कें सब वैष्णव हुते। तब नंददास जी कूं खबर भई तब नंददास जी हूँ विन के पाछें गये। रस्ता में विन से दूर दूर चले जाय और विन सें दूर डेरा करें। ऐसे कितने दिन पीछे व्रज में पहुँचे। सो यमुना जी उतरवे के समय वा छत्री नें कछू मल्लाहन कुं दीनों और ये कही कें या ब्राह्मण कूं मती उतारो ये हमकूं दुःख देत हैं। जब सब उतरके श्रीगोकुल गये। श्री-गुसाईं जी के दर्शन करे। जब श्रीगुसाईं जी नें आज्ञाकरी जो वा ब्राह्मण कूं यमुना जी के पार क्यौं वैठाय आये हो। तब वा क्षत्री के मन में ऐसी आई कोई ने विनकी बात कही है अथवा जान गये हैं। सो क्षत्री मन में बहुत पछतायवे लग्यौ।

जब श्रीगुसाईं जी ने एक मनुष्य पठायके वा ब्राह्मण कूं पार सों बुलाय लीनौ। जब वा नंददास जी नें आयकें श्रीगुसाईं जी के दर्शन करे। साक्षात् कोटिकंदर्प लावण्य पूर्ण पुरुषोत्तम के दर्शन भये। तब नंददास जी नें साष्टांग दंडवत करी और हाथ जोर कें ठाडे रहे और जा स्वरूप के दर्शन वा क्षत्रानी के नेत्रन में नंददास जी कूं होत हते वही स्वरूप के दर्शन श्रीगुसाईं जी के भये। तब नंददास जी को मन वहाँ ते छूटकें साक्षात् श्रीगुसाईं जी के चरणारविंद में लग्यो। तब नंददास जी हाथ जोर कें ठाढ़े रहे। जब श्रीगुसाईं जी नें आज्ञा करी नंददास जी स्नान

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



कर आओ। तब स्नान कर आये। तब श्रीगुसाईं जी नें श्रीन-
नीत प्रिया जू के सन्निधान नाम निवेदन करवाये। पाछे नंददा-
जी ने श्रनवनीत प्रिया जी के दर्शन सब आशयपूर्वक करे।

पाछें श्रीगुसाईं जी भोजन करके जब वैष्णवन कुं पातर धरा-
तब नंददास जी महाप्रसाद लेवे बेठे। तब महाप्रसाद लेत-
नंददास जी कुं देहानुसंधान रह्यौ नहीं। जब पातर पर बै-
रहे। भगवल्लीला में मन मग्न होय गयो। अनेक लीलान-
अनुभव होवै लग्यो। भरे घर के चोर की सो नाई मोहित भये-
ऐसें करते सवारो होय गयो। कछु सुद्धि रही नहीं। तब श्रीगुसा-
जी पधार कें नंददास जी के कान में कही कें नंददास जी श्री-
दर्शन करो। जब नंददास जी उठके ठाढ़े भये। तब नंददास जी
नें उठके श्रीगुसाईं जी के दर्शन करके ये पद गायो। 'प्रात समै
श्रीवल्लभसुत को उठतहिं रसना लीजिये नाम' इत्यादिक प-
गाय के श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन करत मात्र ही भगवल्ली-
की स्फूर्ती भई। जब पालने को पद गायो 'बालगोपाल ललन कं
मोद भरी यशुमति दुलरावत'। इत्यादि भगवल्लीला संबंधी बहु-
नये करिके गाये।

सो नंददास जी के ऊपर श्रीगुसाईं जी नें ऐसी कृपा करी
तब सब ठिकानेन सों विनको मन खीचकें श्रीप्रभुन में लगा-
दीनो। सो वे खत्री की बहू जिनसों नंददास जी को मन लाग्यो
हतो सो वे खत्री की बहू नंददास जी कुं रास्ता में पाँच सात बार
नित्य दीखत हती परन्तु नंददास जी वाकी आडी देखते ही

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



हते। ऐसें श्रीगुसाईं जी की कृपा तें ऐसो मन को निरोध होय गयो हतो। जासूं इनके भाग्य की बड़ाई कहा कहिये।

## प्रसंग २

ता पाछें श्रीगुसाईं जी श्रीजी द्वार पधारे। सो नंददास जी कुं आज्ञा करकें संग ले गये। तब नंददास जी नें जाय कर श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करे। सो साक्षात् कोटिकंदर्प लावण्य पूर्ण पुरुषोत्तम के दरशन भये। सो दर्शन करकें नंददास जी बहुत प्रसन्न भये और नंददास जी कूं किशोरलीला की स्फूर्ती भई। तब उत्थापन को समय हतो। सो श्रीगुसाईं जी की आज्ञा पायकें यह पद गायो, 'सोहत सुरंग दुरंगी पाग कुरंग ललना केसे लोयन लोने'। यह पद गायकें अपने मन में नंददास जी नें बड़े भाग्य माने। फिर संध्या आरती समय दर्शन करे। तब ये पद गाये।

वनते सखन संग गायन के पाछे पाछे
आवत मोहनलाल कन्हाई ॥ १ ॥
वनते आवत गावत गौरी ॥ २ ॥
देख सखी हरि को वदन सरोज ॥ ३ ॥
घर नंदमहर के मिस ही मिस
आवत गोकुल की नारी ॥ ४ ॥

या भांत सूं नंददास जी ने इत्यादि अनेक पद गाये।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



सो नंददास जी कोई दिन श्रीगिरिराज जी रहते कोई दि
श्रीगोकुल आवते। जिनकूं संसार ऐसो फीको लागतो जै
मनुष्य कूं उल्टी देखके बुरो लगे। जासूं वे और ठिकाने जा
नाहीं हुते और श्रीमहाप्रभु जी और श्रीगुसाईं जी और श्रीगि
राज जी और श्रीयमुना जी और श्रीब्रजभूमी इनको स्म
विचारयो करते। प्रभुन के दूसरे अवतारन पर्यंत कोई ठिका
विनको मन नहीं लागतो हुतो। जासूं विननें श्रीस्वामिनी जी
स्वरूप वर्णन में कह्यो है 'चलिये कुंवरकार सखी भेष कीजे'।
पद में कह्यो है 'शिवमोहे जिन वे मोहनीजे कोई। प्यारी के पा
आज आन परे सोई,। ऐसी दृष्टी जिनकी ऊँची हती।

## प्रसंग ३

सो वे नंददास जी व्रज छोड़ के कहूँ जाते नहीं हुते।
नंददास जी के बड़े भाई तुलसीदास जी काशी में रहते हुते
सो विननें सुन्यो नंददास जी श्रीगुसाईं जी के सेवक भये हैं
तब तुलसीदास जी के मन में ये आई कें नंददास जी नें पतिव्र
धर्म छोड़ दियो है आपने तो श्रीरामचंद्र जी पती हुते।
तुलसीदास जी नें ये विचार कें नंददास जी कुं पत्र लिख
जो तुम पतिव्रता धर्म छोड़कें क्यों तुमनें कृष्ण उपासना करी
ये पत्र जब नंददास कुं पहुँचो तब नंददास जी ने वाँच के
उत्तर लिख्यो। जो श्रीरामचन्द्र जी तो एक पत्नीव्रत हैं सो दूसरी
पत्नीनकुं कैसे संभार सकेंगे। एक पत्नी हुँ बरोबर संभार

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



सके। सो रावण हर ले गयो। और श्रीकृष्ण तो अनंत अवलान के स्वामी हैं और जिनकी पत्नी भये पीछे कोई प्रकार को भय रहे नहीं है। एक कालावच्छिन्न अनंत पत्नीन कुं सुख देत हैं। जासूं मैंने श्रीकृष्ण पती कीने हैं। सो जानोगे।

ये पत्र जब नंददास जी को लिख्यो तब तुलसीदासकुं मिल्यो। तब तुलसीदास जी नें बाच के बिचार किया कें नंददास जी को मन वहाँ लग गयो है। सो वे अब आवेंगे नहीं। सो उनकी टेक हमसूं अधिकी है। हम ताे अयुध्या छोड़ के काशी में रहे हैं और नंददास जी ताे ब्रज छोड़ के कहीं जाय नहीं हैं। इनकी टेक हमारी टेक सूं बड़ी है। सो वे नंददास जी ऐसे कृपापात्र भगवदीय हुते।

## प्रसंग ४

सो एक दिन नंददास जी के मन में ऐसी आई जो जैसे तुलसीदास जी नें रामायण भाषा करी है सो हमहूँ श्रीमद्भागवत भाषा करें। ये बात ब्राह्मण लोगन नें सुनी तब सब ब्राह्मण मिल कें श्रीगुसाईं जी के पास गये। सो ब्राह्मण ने बीनती करी, जो श्री मद्भागवत भाषा होयगो तो हमारी आजीविका जाती रहेगी। तब श्रीगुसाईं जी ने नंददास जी सुं आज्ञा करी जो तुम श्रीमद्भागवत भाषा मत करो और ब्राह्मणन के क्लेश में मत परो, ब्रह्मक्लेश आछो नहीं है और कीर्तन कर कें ब्रजलीला गाओ। जब नंददास जी ने श्रीगुसाईं जी की आज्ञा मानी, श्रीमद्भागवत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



भाषा न कर्यो । ऐसे श्रीगुसाईं जी की आज्ञा को विश्वास हुते ऐसे परमकृपापात्र भगवदीय हुते ।

## प्रसंग ५

सो नंददास जी के बड़े भाई तुलसीदास जी हुते । सो काशी जी ते नंददास जी कूं मिलवे के लियें ब्रज में आये । सो मथुरा में आयके श्रीयमुना जी के दर्शन करे, पाछे नंददास जी की खबर काढ कें श्रीगिरिराज जी गये । उहाँ तुलसीदास जी नंददास जी कुं मिले । जब तुलसीदास जी नें नंददास जी सुं कही कें तुम हमारे संग चलो, गाम रुचे तो अयोध्या में रहो, पुरी रुचे तो काशी में रहो, पर्वत रुचे तो चित्रकूट में रहो, वन रुचे तो दंडकारण्य में रहो, ऐसे बड़े बड़े धाम श्रीरामचंद्र जी ने पवित्र करे है । तब नंददास जी ने उत्तर देवे कुं ये पद गायो । सो पद ॥

जो गिरि रुचे तो वसो श्रीगोवर्द्धन,
गाम रुचे तो वसो नंदगाम ।
नगर रुचे तो वसो श्रीमधुपुरी,
सोभासागर अति अभिराम ॥१॥
सरिता रुचे तो वसो श्रीयमुनातट
सकल मनोरथ पूरण काम ।
नंददास कानन रुचे तो
वसो भूमि वृन्दावन धाम ॥२॥

यह पद सुनके तुलसीदास जी बोले जो ऐसो कोन सो धाम है जो श्रीरामचंद्र जी के नाम सूं न जाय । जासूं तुम श्रीरामचंद्र

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



कूं भजो। तब नंददास जी नें एक कीर्तन में उत्तर दियो। सो पद।

कृष्ण नाम जब तें में श्रवण सुन्योरी आली
भूली री भवन हों तो बावरी भई री।
भरभर आवें नयन चितहुँ न परे चैन
मुखहुँ न आवै वैन तनकी दशा कछु और रही री॥१॥
जेतेक नेमधर्म व्रत कीने री मैं
बहुविध अंगो अंग भई मैं तो श्रवण मई री।
नंददास प्रभु जाके श्रवण सुने यह गति
माधुरी मूरत केधों कैसी दई री॥२॥

ये पद सुनके तुलसीदास चुप रहे।

जब नंददास जी श्रीनाथ जी के दर्शन करवे कूं गये तब तुलसीदासहुँ उनके पीछें पोछें गये। जब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी के दर्शन करे तब तुलसीदास जी नें माथो नमायो नहीं। तब नंददास जी जान गये जो ये श्रीरामचंद्र जी विना और दूसरे कूं नहीं नमे है। जब नंददास जी नें मन में विचार कीनो यहाँ और श्रीगोकुल में इनकुं श्रीरामचंद्र जी के दर्शन कराऊँ तब ये श्रीकृष्ण को प्रभाव जानेंगे। तब नंददास जी ने गोवर्द्धन नाथ जी सों बीनती करी सो दोहा।

आज की सोभा कहा कहूँ, भले विराजो नाथ।
तुलसी मस्तक तब नमें, धनुष बाण लेओ हाथ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



ये बात सुनकें श्रीनाथ जी कों श्रीगुसाईं जी की कान
विचार भयौ जो श्रीगुसाईं जी के सेवक कहें सो हमकुं मा
चाहिये। जब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी नें श्रीरामचंद्र जी को
धर के तुलसीदास जी कुं दर्शन दिये, तब तुलसीदास जी
श्रीगोवर्द्धन नाथ जी कुं साष्टांग दंडवत करी।

जब तुलसीदास जी दर्शन करके बाहिर आये। तब नंददा
जी श्रीगोकुल चले जब तुलसीदास जी हूँ संग संग आये।
आयके नंददास जी ने श्रीगुसाईं जी के दर्शन करे। साष्टांग दं
वत करी और तुलसीदास जी नें करी नहीं। और नंददास
कुं तुलसीदास जी नें कही कें जैसे दर्शन तुमनें वहाँ कराये
ही यहाँ कराओ। जब नंददास जी नें श्रीगुसाईं जी सों विन
करी ये मेरे भाई तुलसीदास है, श्रीरामचंद्र जी बिना और
नहीं नमें है। तब श्रीगुसाईं जी नें कहीं कें तुलसीदास जी बैठो
जब श्रीगुसाईं जी के पाँचमें पुत्र श्रीरघुनाथ जी वहाँ ठाढे
और विन दिनन में श्रीरघुनाथ जी को विवाह भयो हतो।
श्रीगुसाईं जी नें कही रघुनाथ जो तुम्हारे सेवक आये हैं, इन
दर्शन देवो। तब श्रीरघुनाथ लाल जी नें तथा श्रीजानकी बहू
नें श्रीरामचंद्र जी को तथा श्रीजानकी जी को स्वरूप धरकें दर
दिये। साक्षात् दर्शन भये। तब तुलसीदास जी नें साष्टांग दंड
करी। याही तें श्रीद्वारकेश जी नें मूलपुरुष में गायो है, "
निज अभिधान प्रकटे तात आज्ञा मानके।" और तुलसीदा
जी दर्शन करके बहुत प्रसन्न भये और पद गायो "वरणों आव

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



गोकुल गाम" ये पद गाय कें तुलसीदास जी विदा होय के अपने देशकुं गये ।

सो वे नंददास जी श्री गुसाईं जी के ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते जिनके कहेतें श्रीगोवर्द्धन नाथ जी कुं तथा श्रीरघुनाथ जी कुं श्रीरामचंद्र जी को स्वरूप धरके दर्शन देणे पडे। जासूं इनकी वार्ता कहाँ ताईं लिखिये। वार्ता संपूर्ण ॥ वैष्णव ॥ ४ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# श्रीगुसाईं जी के सेवक चतुर्भुजदास कुम्भनदा के बेटा तिनकी वार्ता

—:०:—

## प्रसंग १

सो वे कुम्भनदास जी श्रीनाथ जी के संग खेलत हुते। एक दिन कुम्भनदास कुं श्रीगोवर्द्धननाथ जी नें चार भुजा धरि दर्शन दिये। वाही दिन बेटा को जन्म भयो जासूं वा बेटा नाम चतुर्भुजदास धरयो। ये बात कुम्भनदास जी की वार्ता लिखी है।

सो वे चतुर्भुजदास जी ग्यारह दिन के भये ताही स कुम्भनदास जी नें श्रीगुसाईं जी के पास ले जायके नाम सुनवा और चतुर्भुजदास जब इकतालिस दिन के भये तब कुम्भनद जी नें श्रीगुसाईं जी पास ले जाय निवेदन करवाये। वा दि चतुर्भुजदास में श्रीनाथ जी ने इतनी सामर्थ्य धरी जब इ आवे तब मुग्ध बालक होय जाय और इच्छा आवे तो बो चलावे सब अलौकिक बातें करवें लग जाय। जब कुम्भनद जी एकांत में बैठे तब चतुर्भुजदास कुम्भनदास को भगवद करें और पूछें और पद गावें और जब लौकिक मनुष्य जाय तब चतुर्भुजदास मुग्ध बालक बन जाय। ऐसी सा श्रीनाथ जी चतुर्भुजदास में धर दीनी।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



सो जब श्रीनाथ जी इच्छा करते तब चतुर्भुजदास कुं साथ खेलवेकुं ले जाते। और जैसी लीला के दर्शन करते तैंसे पद गावते। सो ये चतुर्भुजदास ऐंसे भगवत्कृपापात्र हते।

## प्रसंग २

सो एक दिन श्रीनाथ जी एक व्रजवासी के घर माखन चोरी करवेकुं पधारे और चतुर्भुजदास जी कुं संग ले पधारे। और उहाँ एक व्रजवासी की बेटी के चतुर्भुजदास नजर आये और श्रीनाथ जी तो नजर नाहीं पड़े। और चतुर्भुजदास पकड़ाय गये सो विननें मार खाई। पाछें चतुर्भुजदास श्रीनाथ जी के पास गए। जब चतुर्भुजदास जी नें कही जो महाराज मोकुं तो आछी मार खवाई। श्रीनाथ ने कही जो तेरे में सामर्थ्य आछी नहीं हती जब तू क्यौं न भाग आयो। सो वें चतुर्भुजदास श्रीनाथ के अंतरंग लीलामध्यपाती हते। तातें इनकी वार्ता कहा कहिये।

## प्रसंग ३

और जा दिन चतुर्भुजदास जीकुं प्रथम लीला को अनुभव भयो वा दिनतें सर्व व्यापी वैकुंठ सम्बन्धी लीला सर्वत्र दर्शवे लगी। सो ये सामर्थ्य इनके भीतर श्रीगोवर्द्धननाथ जी नें कृपा करिके धरी। जब कुम्भनदास जी कूं पोढवे के दर्शन होते हते तब कुम्भनदास जी कीर्तन गायवे लगे। सो पद। "वे देखो बरन झरोखन दीपक, हरि पोढे ऊँची चित्रसारी"। सो इतनी तुक जब



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



कुम्भनदास जी नें गाई तब चतुर्भुजदास जी गाय उठे। "सु
बदन निहारन कारन, बहुत यतन राखे कर प्यारी"। ये सुनि
कुम्भनदास जी ने निश्चय कर्‌यो जो इनकुं श्रीगुसाईं जी की
सों संपूर्ण अनुभव भयो। सो बड़ी दया मान के वहोत प्र
भये। जा दिन तें चतुर्भुजदास कहुँ जाते अथवा नहीं
अथवा अवार सवार आवते सो कुम्भनदास जी कछू कहते नहीं
ऐसो जानते जो श्रीनाथ जी संग खेलत होएँगे। सो चतुर्भु
दास ऐसे भगवत्कृपापात्र भगवदीय हुते।

## प्रसंग ४

और एक दिन श्रीगोवर्द्धननाथ जी के श्रृङ्गार के द
चतुर्भुजदास जी ने कीने और श्रीगुसाईं जी आरती दिखा
हते। ता समें चतुर्भुजदास जी नें ये पद गायो।
"सुभग श्रृङ्गार निरख मोहन को ले दर्पण कर पियहि दिखा
आपुन नेक निहारिये बलिजाऊँ आज की छवि कछू कहत न आ

ता पीछे गोविंदकुण्ड ऊपर श्रीगुसाईं जी पधारे। तब जो
वैष्णव नें पूछ्यो जो महाराज चतुर्भुजदास जी नें "आज
छवि कछु बरनि न जावै" ऐसे गायो और आपतो नित्य श्रृ
करे हैं और आरसी दिखावें है। सो आज को अभिप्राय
समझ में नहीं आयो। जब श्रीगुसाईं जी ने कही सो चतुर्भुज
सों पूछियो। तब वा वैष्णव नें चतुर्भुजदास सो पूंछी।
चतुर्भुजदास जी नें और भी पद गायो। सो पद। "माई री

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



और काल और छिन छिन प्रति और और।" ये पद सुनिके वा वैष्णव ने श्रीगुसाईं जी सो पूछ्यो जो भगवल्लीला तो नित्य है और सर्वत्र है। जब चतुर्भुजदास जी ने और और क्यों कही।

तब श्रीगुसाईं जी ने आज्ञा करी। भगवल्लीला में विलक्षण पणो येई है जो नित्य है और क्षण क्षण में नूतन लागत है और लीलास्थ जीवन कूं और लीला के दर्शन करवे वारेन कूं क्षण क्षण नूतन लगत है और नूतन रुचि उपजे है। सो गोपालदास जी नें गायो है। चौथे आख्यान में पांचमी तुक। "एक रसना किम कहूँ गुण प्रकट विविध विहार। नित्य लीला नित्य नूतन श्रुति न पामे पार।" ऐसो भगवल्लीला है। ये सुनके वो वैष्णव बहोत प्रसन्न भयो। और वे चतुर्भुजदास ऐसे कृपापात्र हुते जो जिनको नित्य लीला को अनुभव सर्वत्र होय गयो।

## प्रसंग ५

एक दिन श्रीगुसाईं जी श्रीगोकुल विराजते और श्रीगिरिधर जी सों लेके सब बालक श्रीजी द्वार विराजते हुते। तब उहाँ रास-धारि आये। तब श्रीगोकुलनाथ जी नें श्रीगिरिधर जी सों पूंछ के आरासोली में रास करायो। और रास में खूब गान भयो। जब चतुर्भुजदास जी सुं श्रीगोकुलनाथ जी ने आज्ञा करी जो तुम कछु गावो। तब चतुर्भुजदास जी नें कही जो मेरे सुनवे वारे श्रीनाथ जी नहीं पधारे हैं जा सूं मैं कैसे गाऊँ। जब श्रीगोकुल-नाथ जी ने कही जो श्रीनाथ जी अबी पधारेंगे।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



ये बात श्रीगोकुलनाथ जी की सत्य करवे के लियें श्री
जी जाग के और श्रीगिरिधर जी कुं जगाय के श्रीनाथ जी
खोली पधारे और श्रीगिरिधर जी पधारे और चतुर्भुजदास
और श्रीगोकुलनाथ जी कूं दर्शन भये। और कोई कुं दर्शन
नहीं। तब श्रीनाथजी के दर्शन करकें चतुर्भुजदास जी
लगे। जब अधिक सुख भयो रातहुँ बढ गई और चतु
दास जी नें गायो सोपद। "अद्भुत नट भेख धरे यमुना
श्याम सुंदर गुण निधान गिरिवर धरन रास रंग राचें।"
दूसरो। "प्यारी ग्रीवा भुजमेलत नृत्यत प्रिया सुजान" ऐसें
चतुर्भुजदास जी नें बहुत पद गाये। जब रास भयो तब
आनंद भयो।

फेर श्रीगिरिधर जी नें श्रीनाथ जी कुं रात के जगे जान
सवारे जगाये नहीं। इतने में श्रीगुसाईं जी गोकुल तें प
और पूँछी जो कहा समय है। जब श्रीगिरिधर जी नें कही
श्रीनाथ जी जागे नहीं है। रात कुं रास में जगे हते। जब
गुसाईं जी नें कही जो श्रीनाथ जी तो सदैव रास करें हैं
सदैव जगें है जासूं शंखनाद करावो। जब शंखनाद कराय
श्रीनाथ जी कुं जगाए। फेर श्रीगोकुलनाथ जी कुं श्रीगुसाईं
ने आज्ञा करी। जो ऐसो आग्रह करिके श्रीनाथ जी कुं पधरा
नहीं। एतो सदैव अपनी इच्छा तें रास करत है जासूं बं
करिके पधरावने नहीं। वे चतुर्भुजदास जी ऐसे कृपापात्र है
श्रीनाथ जी के विना दूसरे ठिकानें नहीं करत हते।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



## प्रसंग ६

एक दिन श्रीगुसाईं जी नें चतुर्भुजदास सो आज्ञा करी जो अपछराकुंड ऊपर जाय के रामदास भीतरीया कुं बुलाय लावो और तुम फूल ले आवो। तब चतुर्भुजदास जाय के रामदास जी कुं बुलाय के आप फूल वीनके आवते हते। जब श्रीगोवर्द्धन पर्वत की कंदरा सूं बाहेर श्रीनाथ जी श्रीस्वामिनी जी सहित पधारे और श्रीस्वामिनी जी नें मन में ये विचार कर्यौ जो यह लीला कोई जाने नहीं हैं। इतने में चतुर्भुजदास जी नें दर्शन करिके ये पद गायो। "गोवर्द्धन गिरि सघन कंदरा रैन निवास कियो पिय प्यारी।" और दूसरो पद गायो। "रजनी राज कियो निकुंज नगर की रानी।" ये पद सुनके श्रीस्वामिनी जी प्रसन्न भई। फेर चतुर्भुजदास जी फूल लेके श्रीगुसाईं जी के पास गए। सो वें चतुर्भुजदास जी ऐसे कृपापात्र हते जो श्रीनाथ जी के तथा श्रीस्वामिनी जी के मन की जानवे वारे भये।

## प्रसंग ७

सो चतुर्भुजदास की वहू एक दिन श्रीनाथ जी के चरणारविंद में पहुँच गई जब चतुर्भुजदास जी कुं सूतक आयो। सूतक में चतुर्भुजदास जी बन में वैठके नित्य कीर्तन करते। तब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी विनके चारौ और दूर दूर खेलै करते। जब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी नें आज्ञा करी जो चतुर्भुजदास तुम दूसरो विवाह करौ। जब चतुर्भुजदास नें कही जो जात में कन्या नहीं मिले है जब

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

.CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



श्रीनाथ जी ने कही जो तुम घरेजा करौ। जब चतुर्भुजदा ने घरेजा कर्यो। तब श्रीगोवर्द्धन नाथ जी नित्य चतुर्भु जी ऐसे अंतरंग भगवदीय हते।

## प्रसंग ८

एक समय श्रीगुसाईं जी परदेस पधारे हते। तब श्री घर जी की ऐसी इच्छा भई जो श्रीनाथ जी कुं मथुरा में घर पधरावें तौ ठीक। जब श्रीनाथ जी की आज्ञा लैके फ वदी षष्ठी के दिन सैन पीछे श्रीनाथ जी कुं मथुरा पध और फागनवदी ७ के दिन बडो उत्सव मान्यो और जो कछु हतो सो सर्वस्व अर्पण कर्यौ। और बेटी जी ने एक बांट राखी हती। बेटी जी बालक हते जासूं समझते नहीं हते चिटी हूँ श्रीनाथ जी ने माँग लीना। कारण जो श्रीगिरधर सर्वस्व अर्पण करवे की प्रतिज्ञा करी हती सो प्रतिज्ञा सत्य के लिये श्रीनाथ जी ने चोटी माँग लीनी।

और नित्य चतुर्भुजदास गिरिराज जी ऊपर बैठके वि पद और हिलग के पद गायो करते। और श्रीनाथ जी नित्य संध्या समें गायन के संग पधारते दर्शन देते। सो वैशाख त्रयोदशी के दिन चतुर्भुजदास जी नें ये पद संध्या समें "श्रीगोवर्द्धन वासी साँवरेलाल तुम बिन रह्यौ न जाय या पद की छेली तुक श्रीनाथ जी नें पधारतें ही सुनि तब व्याकुल भये और मन में ये विचार कर्यो जो सर्वथा का

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



पधारूँगो जासूं भक्त को दुःसह दुःख देखके श्रीनाथ जी से रह्यो न गयो।

जव रात्र एक प्रहर रही तव श्रीनाथ जी ने वैशाख सूदि चौदस के दिन श्रीगिरिधर जी कुं आज्ञा करी जो आज गोवर्द्धन पर्वत ऊपर राजभोग अरोगुंगो जव श्रीगिरिधर जी नें मंगला करायके श्रीनाथ जी कुं पधराए। और पहेले मनुष्य पठाय कें मंदिर खासा करायो और श्रीनाथ जी कुं पधारते अवार होय गई। जासूं राजभोग तथा शयनभोग एक समय में आरोगे। वा दिनकूं आज दिन पर्यंत नृसिंघ चतुर्दशी के दिन श्रीनाथ जी दोय समें राजभोग अरोगें हें। एक तो नित्य के समें और एक शयन-भोग के संग। वे चतुर्भुजदास श्रीनाथ जी के ऐसे कृपापात्र हते जो तिन विना श्रीनाथ जी सों रह्यों न गयो।

## प्रसंग ९

एक समय चतुर्भुजदास श्रीगुसाईं जी के संग श्रीगोंकुल गए और श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन करे और वाललीला के तथा पालने के कीर्तन करे। और दर्शन करके फेर गोपालपुर आए जव कुम्भनदास नें पूंछ्यो जो कहाँ गयो हतो। तव विननें कही श्रीगोकुल गयो हतो।

जव कुम्भनदास जी नें श्रीगुसाईं जी सों पूछी जो प्रमाण प्रकर्ण की लीला और प्रमेय प्रकर्ण की लीला में कितनो भेद है। जव श्रीगुसाईं जी नें कही जो भगवल्लीला सव एक समान है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



कुम्भनदास जी कुं किशोर लीला में बहोत आसक्ती है आ
ऐसे बोले भगवल्लीला में भेद समझनो नहीं और श्रीठाकुर
विरुद्ध धर्म आश्रय हैं। एक कालावाच्छिन्न श्रीप्रभु सर्वत्र
लीला करत हैं। ये सुनके चतुर्भुजदास जी बहोत प्रसन्न भए।
चतुर्भुजदास श्रीगुसाईं जी के ऐसे कृपापात्र हते। जिनसूं श्री
गुसाईं जी कछू गुप्त नहीं राखते हते।

## प्रसंग १०

और चतुर्भुजदास जी के पाछें चतुर्भुजदास जी के
राघोदास हते। सो विनकूं भगवल्लीला को अनुभव भयो
राघोदास जी ने धमार गाई। सो धमार। "ए चल जाएँ ज
हरि क्रीडत गोपिन संगा।" ये धमार की जब दस तुक भई
राघोदास की देह छूटी। सो भगवल्लीला में प्रवेश भयो। राघोद
जी की बेटी ने डेढ़ तुक धर के धमार पूरी करी। वे चतुर्भु
दास तथा विनके बेटा विनकी बेटी ये सब ऐसे कृपापात्र ह
ताते इनकी वार्ता कहाँ ताईं लिखिये ॥ प्रसंग ॥ १० ॥ वा
संपूर्ण वैष्णव ॥ ३ ॥

---

नोट :—चतुर्भुजदास की वार्ता में तथा दो सौ बावन वैष्णवन की वा
में अन्य स्थलों पर भी गोकुलनाथ का नाम इस तरह आया है कि इस
के गोकुलनाथ कृत होने में सन्देह होने लगता है। 'चौरासी वार्ता में
उल्लेख नहीं मिलते।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# श्रीगुसाईं जी के सेवक छीत स्वामी चौबे तिनकी वार्ता

—: ० :—

## प्रसंग १

सो वे छीत स्वामी मथुरा में रहते हते। और मथुरा जी में पाँच चौबे बडा गुंडा हते। और ठगाई करते और छीत चौबे बिन पाँचन में मुख्य हतो। सो विनने विचार करयो जो कोई गोकुल में जाय है सो श्रीविट्ठल नाथ जी के वस होय जाय है। जासूं ऐसो दीसे है जो श्रीविट्ठल नाथ जी जादू टोना बहोत जाने हैं। परन्तु हमारे ऊपर चले तब साँची मानें। ये विचार पाँचौ चौवेन नें करयो।

तब एक खोटो नारियल और खोटो रुपैया लैके पाँचों चौबे श्रीगोकुल आये। तब चार चौबे तो बाहरे बैठ रहै और मुख्य जो छीत चौबे हतो विनकुं भीतर पठायो। सो वे छीत चोबा नें खोटो नारियल तथा खोटो रुपैया जायके भेट धरयो। तब श्रीगुसाईं जी नें खवास सूं आज्ञा करी जो या रुपैया के पैसा ले आव। जब रुपैया के पैसा आए और नारियल फोड्यो तब सुफेद गरो निकसी। तब छीत स्वामी देखिके मन में विचारी जो ये तो साक्षात् ईश्वर हैं। जब छीत स्वामी नें कही जो महाराज मोकुं शरण लेओ। जब श्रीगुसाईं जी नें छीत स्वामी कुं नाम सुनायो। पाछे श्रीनवनीत प्रिया जी के दर्शन करवे कुं गये।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



भीतर देखें तो श्रीगुसाईं जी बिराजे और बाहेर आयके देखे विराजे हैं। जब छीत स्वामी नें विचारी जो श्रीगुसाईं जी ईश्वरता जीव सों जानी नहीं जाय है।

जब वे चार चोबे बाहर बेठे हते विनने छीत स्वामी कुं बुला तब श्रीगुसाईं जी नें आज्ञा करी जो तुमारे संगी बाहेर तु बुलावत हे सो तुम जाओ। तब छीत स्वामी नें बाहर आ चारौ चौवान से कही मोकुं टोना लग गयो हे तुम भाग जा नहिं तो तुम को लग जायगो। ये सुनके चारौ चौबे भाग ग छीत स्वामी नें एक पद करिके गायो।

राग नट

भई अब गिरधर सों पहेचान।
कपट रूप छलवे आयो पुरुषोत्तम नहि जान॥ १॥
छोटो बड़ो कछू नहि जान्यो छाय रह्यो अज्ञान।
छीत स्वामि देखत अपनायौ श्रीविठ्ठल कृपानिधान॥२॥

ये पद सुनि के श्रीगुसाईं जी प्रसन्न भए। और छीत स्वामी साक्षात् कोटि कंदर्प लावराय पूर्ण पुरुषोत्तम के दर्शन भये। भगवल्लीला को अनुभव भयो और श्रीगुसाईं जी तथा श्री जी के स्वरूप में अभेद निश्चय भयो, दोनों स्वरूप एक हैं जानन लागे।

तब छीत स्वामी गोपालपुर श्रीनाथ जी दर्शन कुं गये। श्रीनाथ जी के पास श्रीगुसाईं जी कुं देखे। जब बाहेर नि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



पूँछी जो श्रीगुसाईं जी कब पधारये है। तब उहाँ के लोगन नें कही जो श्रीगुसाईं जी तो गोकुल बिराजे है। जब छीत स्वामी उहाँ ते श्रीगोकुल में आयके श्रीगुसाईं जी के दर्शन किये। जब छीत स्वामी नें ये निश्चय किये जो श्रीनाथ जी तथा श्रीगुसांई जी एक ही स्वरूप है। जब सूं छीत स्वामी जी नें "गिरिधरन श्रीविट्ठल" ऐंसी छाप के बहुत पद गाए। सो वें छीत स्वामी ऐंसे कृपापात्र भगवदीय हते।

## प्रसंग २

सो वे छीत स्वामी बीरबल के पुरोहित हते सो वे बीरबल के पास वर्सोंधी लेवे कुं गए। तब सवार के समें छीत स्वामी नें यह पद गाये।

"जे वसुदेव लिये पूरण तप, सोई फल फलित श्रीवल्लभ देह।"

ये पद सुनिके बीरबल बोले जो मैं तौ वैष्णव हूँ परन्तु ये बात देशाधिपति सुनेंगे तो तुम कहा जबाब देओगे वे तो मलेच्छ है। तब छीत स्वामी बोले जो देशाधिपति पूछेंगे तो मैं नीके जबाब देउँगो और मेंरे मन सूं तो तूही मलेच्छ है। आज पीछे तेरो मुख न देखूंगों ऐसे कहेके छीतस्वामी स्वामी चले गए।

जब ये बात देशाधिपती नें सुनी तब बीरबल सूं पूँछो जो तुमारे पुरोहित क्यों रिसाय गए। तब बीरबल नें सब बात देशाधिपति आगे कही। ब्राह्मण लोग वृथा रिस बहुत करे है। तब देशाधिपती नें कही जो तुम और हम नाव में बेठे हते जब

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



दीक्षित जी नें मोकुं आशीर्वाद दियो हतो। तब मैनें मणी के करी हती। वे मणी कैसी हती जो पाँच तोला सोना नित्य दे हती। सो वे मणी दीक्षित जी ने श्रीयमुना जी में फटक दीनी जब मेरे मन में बड़ो गुस्सा लग्यो तब मैनें मणी पाछी मांगी तब दीक्षित जी नें श्रीयमुना जी में सुं खौच भरिके मणी काढ़ तब हमकुं कही तुमारी होय सो पहिचान लेओ। जब हमकुं निश्चय भयो ये साक्षात् ईश्वर है ईश्वर विना ऐसो कारज नहीं होयगो। ये बात विचार करतें तुमारे पुरोहित की सब बात साची है सो तुमनें क्यों विचार कर्‌यौ। ये बात सुनिके बीरबल बहोत खिसातो भयो। और कछू बोल्यों नहीं।

और ये बात श्रीगुसाईं जी नें सुनी तब लाहोर के वैष्णव आये हते विनसों आज्ञा करी जो छीत स्वामी की खबर राखें रहियौ। जब छीत स्वामी बोले जो मैंने वैष्णवधर्म विक्रय करके लियौ नहीं है। मेरो तो विश्रांत घाट है सो आपकी कृपा सों सब चलेगो। यो बात सुनके श्रीगुसाईं जी बहोत प्रसन्न भये।

## प्रसंग ३

और एक दिन बीरबल देशाधिपती सों रजा लेके श्रीगोकुल में जन्म अष्टमी के दर्शकुं आयो। पाछे वेष पलटाय के देशाधिपती हूँ छाने छाने आयो। तब जन्माष्टमी के पालना के दर्शन के मनुष्य की भीड़ में। तव देशाधिपती कुं श्रीगुसाईं जी बिना और कोई नें पहिचान्यो नहीं। तब छीत स्वामी कीर्तन करते

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



और श्रीगुसाईं जी श्रीनवनीत प्रिया जी कुं पालना झुलावते हते। तब छीत स्वामी नें ये पद गायो।

प्रिय नवनीत पालनें झूले श्रीविट्ठलनाथ झुलावै हो।
कबहुँक आप संग मिल झूलै कबहुँक उतर झुलावै हो॥ १॥
कबहुँक सुरंग खिलोना लै लै नाना भाँति खिलावै हो।
चकई फिरकनी ले विंगीटु झुणझुण हात बजावैं हो॥ २॥
भोजन करत थाल एक झारी दोउ मिल खाय खवावैं हो।
गुप्त महारस प्रकट जनावे प्रीति नई उपजावैं हो॥ ३॥
धन्य (ध) न्य भाग्य दास निज जनके जिन यह दर्शन पाए हो।
छीत स्वामी गिरधरन श्रीविट्ठल निगम एक कर गाएं हो॥ ४॥

ऐसे दर्शन छीत स्वामी कुं भए। और देशाधिपतीकुं हूँ ऐसे दर्शन भए। और मनुष्यनकुं साधारण दर्शन भए। तब देशाधिपतिकुं महाप्रसाद दिवाये।

तब देशाधिपती आगरे आये। फेर दूसरे दिन बीरवल हूँ आए। तब देशाधिपती नें वीरबल सूं पूछी जो कहा दर्शन किये। तब बीरवल ने कही श्रीनवनीत जी पालना झूलते हते और श्रीगुसाईं जी झुलावते हते। तब देशाधिपती नें कही ये बात झूठी है। श्रीगुसाईं जी पालना झूलते हते और श्रीनवनीत प्रिया जी झुलावते हते मोकुं ऐसे दर्शन भए हैं। और छीत स्वामी तुमारे पुरोहित ऐसे कीर्तन गावते हते। और मैं तेरे पास ठाड़ो हते। तब वीरबल नें कही मोकुं ऐसे दर्शन क्यूं नहीं भये। तब

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



देशाधिपति नें कही तुमकुं गुरू के स्वरूप को ज्ञान नहीं है औ तुमारे पुरोहित छीत स्वामी जिनकुं इन बात को अनुभव है ऐसे सों तुमारी प्रीती नहीं है। जब तुमकूं ऐसे दर्शन काहेकुं होवें सो वे छीत स्वामी ऐसे कृपापात्र हते। वार्ता संपूर्ण। वैष्णव ॥२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# श्रीगुसाईं जी के सेवक गोविंद स्वामी सनाढ्य ब्राह्मण महावन में रहते तिनकी वार्ता

—:०:—

## प्रसंग १

प्रथम गोविंददास आंतरी गाम में रहते। तहां गोविंद स्वामी कहावते। और आप सेवक करते। गोविंददास परम भगवद्भक्त नित्य याही रीती सो रहते। जो श्रीभगवत् चरणारविंद की प्राप्ति कैसें होय याही बात की तलासी करत रहते हते।

एक समय गोविंददास आंतरी गाम ते व्रज कों आये। और महावन में आयके रहे। काहे तें यह व्रजधाम है। इहां भगवत् चरणारविंद की प्राप्ति होयगी। और गोविंददास कवि हते। सो आप पद करते। सो जो कोऊ इनके पद सीख कें श्रीगुसाईं जी के आगें आय कें गावें। तिनके ऊपर श्रीगुसाईं जी प्रसन्न होते। सो गावनहारे गोविंद स्वामी के आगे आयकें कहते। जो तुमारे पद सुनके श्रीगुसाईं जी बहुत प्रसन्न होंत हें। ये वार्ता सुनि गोविंद स्वामी नें ऐंसो विचार कियो जो श्रीगुसाईं जी कूं मिलें तो ठीक।

तव एक समय श्रीगुसाईं जी को सेवक महावन गयो हतो। सो भगवदिच्छा ते श्रीगुसाईं जी के सेवक को और गोविंद स्वामी को मिलाप भयो। वा वैष्णव की गोविंद स्वामी को आपस में

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



बातचीत भई। जब गोविंद स्वामी नें कही कें श्रीठाकुर जी अनुभव कैंसे होय। जो मोकुं बहुत दिन सों या बात की आतुरता है तातें कहो। तब वा वैष्णव नें गोविंद स्वामी की आतुरता देखिके कह्यो। जो आजकल श्रीठाकुर जी कुं श्रीविट्ठल श्रीगुसाईं जी नें बसकर राखें हैं। तातें श्रीठाकुर जी और कहुँ जाय सकत नहीं। श्रीठाकुर जी तो श्रीगुसाईं जी के हाथ सो यह सुनके गोविंद स्वामी कुं अति आतुरता भई। तब गोविंद स्वामी नें उन वैष्णव सों कही। जो मोकुं श्रीगोकुल में श्रीगुसाईं जी के पास ले चलो। तब उहाँ से उठे सो श्रीगोकुल आये।

तब श्रीगुसाईं जी ठकुरानी घाट ऊपर संध्या तर्पण करत हते। वा वैष्णव नें गोविंद स्वामी कुं श्रीगुसाईं जी को दर्शन करायो। गोविंद स्वामी दर्शन करिके मन में समझे ये मार्गीय दीखत हैं। सो कहा कारण होयगो। तब गोविंद स्वामी कुं देखके श्रीगुसाईं जी बोले जो आवो गोविंद स्वामी दिन सूं देखे। तब गोविंद स्वामी नें कही महाप्रभु अब ही आवत हूँ। तब गोविंद स्वामी नें अपने मन में विचार किये की मोकुं कोई दिन देख्यो नहीं हें सो कैसे जान गये। यामें कारण दीसत है।

जब श्रीगुसाईं जी मंदिर में पधारे। तब गोविंद स्वामी बीनती करी हे महाप्रभु मोकूं कृपा करिके शरण लेओ। श्रीगुसाईं जी नें कही न्हाय आवो। तब वे न्हाय आये।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



श्रीनवनीत प्रिया जी के संनिधि में नाम निवेदन करायो। तब गोविंद स्वामी कुं साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम कोटिकंदर्प लावराय के दर्शन भये। और सब लीलान को अनुभव भयो। श्रीगुसाईं जी श्रीनवनीत प्रिया जी की सेवा करके बाहिर पधारे। तब गोविंद स्वामी नें बीनती करी। जो आपनो कपट रूप दिखावत हो। साक्षात् पूर्ण पुरुषोत्तम रूप होय के वेदोक्त कर्म करत हो। सो हम जैंसेन कूं मोह होय है, जब श्रीगुसाईं जी ने आज्ञा करी। जो भक्ति है सो फूल को वृक्ष है, और कर्म मार्ग है सो कांटन की वार है। तासूं कर्म मार्ग की वार बिना भक्ति मार्ग जो फूल को वृक्ष वाकी रक्षा न होय। ये सुनके गोविंद स्वामी बहुत प्रसन्न भये। गोविंद स्वामी ऐसें कृपापात्र भगवदीय भये।

## प्रसंग २

सो गोविंददास महावन के टेकरा पर रहते हते। और नये कीर्तन करके गावत हते और उहाँ श्रीठाकुर जी सुनवेकुं पधारते हते। जब उहाँ मदनगोपालदास कायथ कीर्तन लिखिवेकुं आवते हते। सो एक दिन श्रीठाकुरकुं गोविंदस्वामी नें कही। इहाँ ताँई आप नित्य श्रम करो हो। सो आपको गान सुनवे की बहुत इच्छा रीखे हैं। आपकुं गान को अभ्यास है। यातें आपकुं कछु गायो चहिये। तब आपनें कछु गान कियो। तब गान सुनके श्रीस्वामिनी जी पधारी। जब ताल स्वर बरोबर बजावे लगे तब गोविंदस्वामी धन्य धन्य कहन लगे। और आपनें भाग्य की सराहना करन लगे।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



जब मदनगोपालदास कायथ बोले। जो इहाँ कोई आ... तो दिसे नहीं है। तुम कौनसूं बात करत हो। तब गोविंदस्वा... कछु बोले नहीं। बात गुप्त राखी। पाछे एक दिन श्रीगुसाईं जी... पूछी जो श्रीठाकुर जो कैसे गावें हैं। तब गोविंदस्वामी नें... श्रीठाकुर जो बहोत आछे गावें हैं। परंतु ताल स्वर श्रीस्वा... जी बहोत आछो देत हैं। ये सुनके श्रीगुसाईं जी मुसकाय के... होय रहे।

## प्रसंग ३

सो गोविंदस्वामी जब श्रीगोकुल में रहते हुते। सो... आंतरिगाम में पहले गोविंदस्वामी के सेवक हते सो श्री... आये। सो पूछत पूछत विनके पास गये। जायके पूछे... गोविंदस्वामी कहा हैं। तब विननें कही गोविंदस्वामी मर... तब तिनमें सूं एक पहेचानतो हतो जब वानें कही आप... हमारी हाँसी करो हो। जब गोविंदस्वामी नें कही हमने स... पनो छोड़ दियो। जासुं तुम ऐसे समझो जो मर गये हैं... विननें बीनती करी जो अब हम सेवक कौनके होंय। जब ... स्वामी नें विनकुं ले जायके श्रीगुसाईं जी के सेवक कराये... गोविंदस्वामी के संग सो विनकुं भगवत्प्राप्ती भई। जिनके... ते सहज भगवत्प्राप्ती होवै विनकी कृपातें कहा न होवै स... विनिकी बात कहा कहिये।

## प्रसंग ४

सो वे गोविंदस्वामी श्रीगोकुल में रहते। परन्तु श्रीय...

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



में पाँव नहिं देते । श्रीयमुना जी कुं साक्षात् श्रीस्वामिनी जी अष्टसिद्धी के दाता जानते । जैसो स्वरूप श्रीमहाप्रभू जी नें यमुनाष्टक में वर्णन कियो है। वैसे श्रीगुसाईं जी की कृपा से गोविंदस्वामी जानते हते जासुं श्रीयमुना जी में पाँव नहीं धरते हुते। और श्रीयमुना जी के दर्शन करते, और दंडवत करते, और पान करते ।

सो एक दिन श्रीबालकृष्ण जी और श्रीगोकुलनाथ जी गोविंद-स्वामीकुं पकड़ के श्रीयमुना जी में नहायवे लगे। जब गोविंद-स्वामी नें वीनती करी जो ये मल मूत्र को भर्यो देह श्रीयमुना जी के लायक नहीं है। श्रीयमुना जी साक्षात् स्वामिनी हैं। जासूं अधम देह स्पर्श करवे योग्य नहीं है। श्रीयमुना जी कुं तो उत्तम सामग्री चहिये। ये सुनके श्रीबालकृष्ण जी और श्रीगोकुल नाथ जी चुप कर रहे। सो वे गोविंदस्वामी ऐसो स्वरूप श्रीयमुना-जी को जानत हते।

## प्रसंग ५

गा गोपकैरनुवनं नयनो सदार
वेणुस्वनैः कलपदैस्तनुभृत्सूसख्यः।
अस्पंदनं गतिमतां पुलकस्तरूणां
नियोगपाश कृत लक्षणयोर्विचित्रं॥

या श्लोक को व्याख्यान श्रीगुसाईं जी गोविंदस्वामी के आगे कहवे लगे। जब कहते कहते अर्धरात्र बीती तब श्रीगुसाईं जी उठे। गोविंदस्वामी घरकूं चले। तब श्रीबालकृष्ण जी तथा

आर्यभाषा-पुस्तकालय, ... बनारस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



श्रीगोकुलनाथ जी तथा श्रीरघुनाथ जो तीनो भाई वैष्णव मंडल में विराजत हते।

जब गोविंद स्वामी नें जायके दंडवत करी। तब श्रीगो नाथ जी नें पूछे जो श्रीगुसाईं जी के इहाँ कहा प्रसंग च हतो। जब गोविंद स्वामी नें ये श्लोक की सुबोधिनी प्रसंग कह्यो। फिर कह्यो आपको व्याख्यान आप करें याम केहेनो। जाके स्वरूप को वेद हूँ नहीं जान सकें वाको व्या वे आप ही करें तब होय। जब ऐंसो कह्यौ तब श्रीगोकु जी नें दोनौ भाइन सों कही जो गोविंद स्वामी नें श्रीगुसा को स्वरूप कैंसो जान्यो है। और इनके ऊपर आपनें कैंसी करी है सो इनके भाग्य को कहा वर्णन करिये ये कहिके श्री नाथ जी चुप होय रहे॥

## प्रसंग ६

सो गोविंद स्वामी श्रीनाथ जी के संग खेलते हते। दिन अपछरा कुण्ड सों गोवर्द्धन पर्वत ऊपर होंय कें श्री नाथ जी के संग गोविंददास आवते हते। उहाँ से राजभे आरती भई ऐंसी आवाज सुनी। जब गोविंद स्वामी नें श्रीनाथ जी तो अबी आवत हैं। राजभोग कौन नें अ श्रीगुसाईं नें दूसरो राजभोग सिद्ध कराय के धरायो।

और गोपालदास भीतरिया नें श्रीगुसाईं जी सों करी। जो एक दिन पूंछरी की औरतें गोविंददास श्रीनाथ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



संग आवते मैंने देखे हते। जब श्रीगुसाईं जी नें कही। जो कुम्भनदास तथा गोविंद स्वामी तथा गोपिनाथ दास ग्वाल ये तीनो श्रीनाथ जी के एकांत के सखा है। सो इनकुं अधिकार श्रीमहाप्रभू जी नें दियो है। ये बात सुनके गोपालदास जी बहुत प्रसन्न भये और अपने मन में कहेवे लगे। जो हम भितरिया भये तो कहा भयो। सो वे गोविंद स्वामी ऐंसे भगवदीय कृपा-पात्र हते।

## प्रसंग ७

सो एक दिन गोविंद स्वामी उत्थापन के समें श्रोनाथ जी के दर्शन कुं गये। जब देखें तो श्रीनाथ जी के पाग के पेच खुल रहे हते। तब गोविंद स्वामी नें कहो कें पाग के पेच क्यौ खोल डारे हें। जब श्रोनाथ जो नें कही तूं पाग के पेंच संवारि दे। तब गोविंद स्वामी नें भीतर जाइके पाग के पेंच संवार दिये। तब भीतरिया नें श्रीगुसाईं जी सों कहो जो गोविंददास नें अप-रस छिवाय दीन्ही है। पाछें श्रीगुसाईं जी नें आज्ञा करि जो गोविंददास सें श्रीनाथ जी नहीं छुआय जाय। ये तो श्रीनाथ जी के संग सदैव खेलें हैं। सो गोविंद स्वामी ऐंसे कृपापात्र हते।

## प्रसंग ८

एक दिन श्रीगुसाईं जी श्रीनाथ जी को श्रृङ्गार करत हते। तब गोविंदस्वामी जगमोहन में कीर्तन करत हते। तब श्रीनाथ जी नें गोविंददास कुं आठ कांकरी मारी। जब गोविंदस्वामो नें

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



एक कांकरी मारी। तव श्रीनाथ जी चमक उठे। जब श्रीगुसांई जी नें कही गोविंददास यह कहा कियो। तब गोविंदस्वामी नें कही। हे महाराज आपको तो पूत और को मूली कर। जो आप वखत मोकुं कांकरी मारी जब आप कछु नहीं बोले। ये सुनके श्रीगुसाईं जी चुपकरि रहे। सो गोविंददास जी कुं ऐसो सख्य भाव सिद्ध भयो हतो।

## प्रसंग ९

एक दिन गोविंददास की बेटी देस में सो आई। परन्तु गोविंदस्वामी कोई दिन वा बेटी सुं बोले नहीं। जब कान्हबाई नें कही जो बेटी सुं एक दिन तौ बोलो। तव विननें कही जो मन तो एक है इनको लगाऊँ के उनको लगाऊँ। फेर कछू दिन रहिके बेटी देसकुं जावे लगी। जब वहु बेटिन नें साड़ी चोली पठाई तव गोविंद स्वामी के मन में दया आई। जो गुरु के घर की अनप्रसादी लेवेगी तो याकौ बिगार होयगो। वे गोविंद स्वामी कोई दिन बेटी से बोलते न हते। तो परन्तु दया के लियें बोले जो तूं ये लेवेगी तो तेरो बुरो होयगो। जब वेटी नें कही मोकुं समज नहीं हती। तो मोकुं तुमनें बड़ी कृपा करिके रस्ता बतायो। तव वे सब कपडा पाछें पठाय दिये। बेटी अपनें घर कों गई। सो वे गोविंद स्वामी गुरु की अंश सो ऐसे डरपत हते।

## प्रसंग १०

और फागन के दिन हते। सो सेन भोग सरायकें श्रीगुसांई जी बीडी अरुगावत हते। तव गोविंद स्वामी धमार गावत हते।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



सो धमार श्रीगोवरधनराय लाला। ये धमार पूरी करे बिना गोविंद स्वामी चुप कर रहै। जब श्रीगुसाईं जी ने श्राज्ञा करी गोविंददास धमार पूरी करौ। तब गोविंद स्वामी नें कही महाराज धमार तौ भाज गई है। वे तो घर में जाय घुसे। खेल तो बंद भयो अब कहा गावूं। ये सुनके श्रीगुसाईं जी चुप कर रहे। पाछे वैठक में पधारे। जब एक तुक आपनें बनाय के गोविंद स्वामी के नाम की वा धमार में धरी। वा दिन सूं गोविंद स्वामी की धमार लोक में साढ़े बारह कही जाय है। सो गोविंद स्वामी ऐसे कृपापात्र हते। जो लीला के दर्शन करिकें गान करते हते॥

## प्रसंग ११

सो वे गोविंद स्वामी महाबन के टेकरा पर नित्य गान करते हते। श्रीनाथ जी नित्य सुनिवे कुं पधारते हते। और श्रीनाथ जी संग गानहूँ करते हते। और वे गोविंद स्वामी भगवल्लीला में अष्ट सखान में हते। सो कोई समें श्रीनाथ जी चूकते सो गोविंद स्वामी भूल काढते। और गोविंद स्वामी चूकते जब श्रीनाथ जी भूल काढते। श्रीनाथ जी तथा गोविंद स्वामी के गान सुनिवे के लिये श्रीगोकुलनाथ जी नित्य पधारते और एक मनुष्य बैठाय राखते। जो श्रीगुसाईं जी भोजन करवें कुं पधारें तब मोकुं बुलाय लीजो।

एक दिन वा मनुष्य के मन में ऐसी आई। जो श्रीगोकुलनाथ जी नित्य श्रीगुसाईं जी सों छाने पधारते है। एक दिन जो

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



मैं न बोलाओं तो गुसाईं जी सब जान जाएंगे। जब श्रीगोकुल नाथ जी तौ नित्य जाते बंद होय जाएंगे। समझके वे मनुष्य एक दिन बुलायवे न गयौ। जब श्रीगुसाईं जी भोजन को पधारें लगे। तब सब लाल जी आए। श्रीगोकुल नाथ जी न आए। तब श्रीगुसाईं जी नें दूसरे मनुष्य कुं आज्ञा करी जी गोविंद स्वामी के पास बल्लभ जी वैठें हैं तिनको बुलाय लाव।

जब दूसरो मनुष्य लायो तब वे मनुष्य जो जान के बोलावे नहीं गयो हतो सो पश्चात्ताप करने लग्यो। जो श्रीगुसाईं जी तो सब जानते हैं मैंने काहे को श्रीगोकुल नाथ जी सों कुटिलता करि ऐंसो पश्चात्ताप भयौ। सो वे गोविंद स्वामी ऐंसो कृपापात्र हते। जो तिनके संग श्रीनाथ जी छण छण आयके बिराजते हते।

## प्रसंग १२

वे गोविंद स्वामी पाग आछी बाधते हते। सो टूक टूक पाग होती तब कोई कुं खबर न हती। जब एक दिन एक व्रजवासी नें गोविंद स्वामी की पाग आछी जान के उतार लीनी। तब गोविंद स्वामी नें कही सारे यें टूक संभार के धर राखियो कालतें घर कुं आयके ले जाऊँगो। वे व्रजवासी नें पाँव पर के पाग पाछी दीनी। वे गोविंददास कुं पाग बाधवे को ऐंसी चतुराई हती।

## प्रसंग १३

सो गोविंददास नित्य जसोदा घाट पर जाय वैठते। सो उहां एक दिन एक वैरागी गायवे लग्यो। सो राग ताल स्वर हीन

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



हतो। जब गोविंद स्वामी नें कह्यो जो तुं मत गावै या गायिवे सों कहा होत है। तब वा वैरागी नें कही मैं तो मेरे राम को रिझावत हों। जब गोविंद स्वामी नें कही राम तौ चतुर शिरोमणी है सो कैंसे रीझेंगे। जो तेरो साचो भाव होय तौ मन में नाम लिये सो रीझेंगे। सो वे गोविंद ऐंसे निःशंक हते।

## प्रसंग १४

सो एक दिन श्रीनाथ सामढाक के ऊपर चढिके विराजते हते और मुरली बजावत हते, और गोविंददास दूर सों टेकरा के ऊपर वैठे देखते हते। और वाही समय श्रीगुसाईं जी न्हाय कें उत्थापन करवे के लिये श्रीगिरिराज ऊपर पधारे। श्रीनाथ जी ने सामढाक पैं सुं देखे और उतावल सों कूदे और वागा को दावन फट गयो और लीर झाड पैं रहि गई। तव श्रीगुसाईं जी नें केवार खोलि के उत्थापन करे देखें तो वागा को दांवन फट्यो है। जब मनुष्यन सों पूछी जो इहाँ कोई आयो तौ नहीं हतो। तव सवनें नाहीं कही। जब आप विचार करवे लगे।

तव गोविंददास नें कही जो आप या वात को विचार कहा करे हें। लरिका को सुभाव जाने नहीं हे। जो बहुत चंचल है स्याम ढाक पैं सूं कूदि के वागा को दांमन फाड्यो है। सो आप चलो तो दिखाऊँ ऐंसे लीर लटक रही है। जब श्रीगुसाईं जी पधार के वा लीर उतारि लाये। तब श्रीगुसाईं जी श्रीनाथ जी सों पूछी जो आपने उतावल काहें कों करी। तव श्रीनाथ जी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



नें कही जो उत्थापन को समय भयो हतो। और आप न्हाय के पधारे हते जासूं उतावल भई। वा दिन तें ऐसौ बंदोबस्त कर्‍यौ जो तीन वेर घंटानाद तथा तीन वेर शंखनाद करि के और बीस पल रहिके मंदिर के किंवार खोल के उत्थापन करनें। सो वे गोविंददास ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते।

## प्रसंग १९

एक दिन आगरे में अकबर पातशाह नें सुन्यो जो गोविंद स्वामी बहुत आछे गावत हैं और निरपेक्ष हैं और निःशंक हैं। जब इनके मुख को राग कैसे सुन्यो जाय। ये विचार करिके पातशाही वेष पलटके श्रीगोकुल में इकेले आए। जब गोविंददास जसोदा घाट पर भैरव राग अलापत हते तब वा पातशाह नें वाहवा वाहवा करी। जब गोविंददास नें कही ये राग छी गयो। जब वानें कही जो मैं पातशाह हूँ। जब विनने कही जो तुम पातशाह हो तो पातशाही करौ। परन्तु ये राग तो तुमारे सुनबे सूं छिवाय गयो। जब पातशाह नें विचार कर्‍यो एक देस को मैं राजा हूँ और इनको तो त्रिलोकी को वैभव फीको लगे है। जासूं ये काहे कूं आपने हुकुम में रहेंगे। ये विचारिके पातशाह चले गये। और गोविंद स्वामी नें वा दिन सूं भैरव राग गायो नहीं। वे गोविंद स्वामी ऐसे टेकी भगवदीय हते।

## प्रसंग १६

और वे गोविंद स्वामी के संग श्रीनाथ जी नित्य वन में

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



खेलते। और कोई दिन गोविंददास को घोडा करते और कोई दिन हाथी करते। ऐसे नित्य क्रीडा करते। सो एक दिन श्रीनाथ जी ने गोविंद स्वामीकुं घोडो कर्‌यो हतो और ऊपर आप असवार भये हते। सो गोविंद स्वामी नें घोडा की सी न्याईं लघुशंका करी। ये वातें एक वैष्णव नें देखी। सो श्रीगुसाईं जी सों जाय के कही। जब श्रीगुसाईं जी नें आज्ञा करी जब गोविंद स्वामी हाथी घोडा होते है सो हाथी घोडा को स्वांग पूरा न करें तो कैसे होवै। और इन बातन में तुम मत पडो। ये बात सुनके वे वैष्णव चुप करि गयो। सो वे गोविंद स्वामी ऐसे कृपापात्र हते।

## प्रसंग १७

एक दिन गोविंददास श्रीगुसाईं जी के संग मथुरा जी में केशवराय जी के दर्शन कूं गये। तब उष्णकाल हतो। और सब जरी को वागा जरी की ओढ़नी देख के गोविंददास नें केशवराय जी सों पूँछो जो नीके तो हो। सो सुनकें केशवराय जी मुसकाये। जब श्रीगुसाईं जी नें कही जो गोविंददास ऐसे न बोलिये। तब गोविंददास नें कही महाराज मांदो मनुष्य को पोसाक पहेर्‌यो है जब कैसे न पूँछो जाय। ये सुनिके श्रीगुसाईं जी चुपकर रहै।

## प्रसंग १८

और एक दिन श्रीनाथ जी के राजभोग आवते हते। तब भीतरिया सों गोविंददास स्वामी नें कही जो राजभोग धरे पहिले

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



मोकुं प्रसाद लेवाव। जब भीतरिया नें थार पटिक दियो और श्रीगुसाईं जी कूं पुकार करि। जब श्रीगुसाईं जी ने गोविंददास सों पूछी यह कहा। जव गोविंद स्वामी ने कही जो आप संग में मोकुं खेलवे कूं ले जाए हैं। और जो पाछे प्रसाद लेवेकूं रहि जाऊँ तो वन में पाछे मोकुं श्रीनाथ जी मिले नहीं हैं जब कैसे करूँ। ये सुनके श्रीगुसाईं जी नें ऐसी बंदोबस्त करी जो राजभोग आवे के समय गोविंददासकुं प्रसाद लेवावनो ऐसी भंडारी सो आज्ञा करि। सो वे गोविंद स्वामी ऐसे कृपापात्र हुते जिन विना श्रीनाथ जी रहि नहीं सक्के ॥

## प्रसंग १९

एक दिन श्रीनाथ जी गोविंद स्वामी संग खेलते हुते। तव श्रीनाथ जी के ऊपर दाव आयो। तब उत्थापन को समय भयो। तव श्रीनाथ जी भाग के मंदिर में घुस गये। मंदिर में भीतर जायकें श्रीनाथ जी कुं गीली मारि। तब सेवक टहेलवान नें गोविंददास कुं धक्का मार के वहेर काढ दिये और उत्थापन भोग धरयो। तब गोविंद स्वामी जाय के रास्ता में बेठे और कहे जो अबि गायन के संग श्रीनाथ जी ये रास्ता पर आवेंगे और याको मार देउंगो।

पीछे श्रीगुसाईं जी न्हात के मंदिर में पधारे। देखें तो श्रीनाथ जी अनमने होय रहे हैं और उत्थापन कि सामग्री अरोगें नाहीं है। तव श्रीगुसाईं जी ते श्रीनाथ जी सों पूछे जो कैसे हो। तव

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



श्रीनाथ जी नें कहि जो जहाँ सुधि गोविंददास कुं नहिं मनावोगे तहां सुधि मोकु आवेगो नहीं, काहे ते मोकुं रस्ता चले विना और वाके संग खेले विना सरेगो नहिं। अबि रस्ता में जाउं तो आनगिनतीन कि मार देवगो। या चिंता के लिये मोकुं कछू भावै नहिं है। गोविंददास आवेगो जव कछु भावगो।

ये वात सुनके और श्रीनाथ जी की भक्त वत्सलता देखके श्रीगुसाईं जी को हृदय भर आयो। तव गोविंददास कुं बुलाय के और मनायके श्रीनाथ जी सुं बीनति करि जो ये हाजिर है अव आय गये है। तब श्रीनाथ जी आरोगे। सो वे गोविंददास ऐसे कृपापात्र हते। प्रसंग ॥ १९ ॥ वार्ता संपूर्ण ॥

---

Printed by Ramzan Ali Shah at the National Press, Allahabad.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मोहिनी

# वाणी

## श्री श्री गदाधरभट्टजी की

श्रीश्रीनित्यानन्द गौरचन्द्रौ

जयतः

( सर्वाधिकारसुरक्षित हैं )

हरि मोहन प्रिंटिंग प्रेस, जयपुर।

सम्वत् २००० बसन्त पंचमी | मूल्य ॥) | प्रकाशकः— कृष्णदास कुसुमसरोवर (गोवर्द्धन)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# दो शब्द

श्री श्री गदाधरभट्टजी का स्थान ब्रजरसमाधुरी में छके हुए अनन्य रसिक भक्तों तथा कवियों में बहुत ऊँचा है। आप परोपकार की मूर्त्ति और श्रीमद्भागवतग्रन्थ के अनूपम रंगीले रसीले वक्ता थे। आप श्री गौड़ेश्वरसम्प्रदायानुयायी थे। आपका परिचय, भक्तमाल ग्रन्थकर्ता श्री नाभाजी ने इस प्रकार दिया है।

गुन निकर "गदाधरभट्ट" अति सबहिन को लागे सुखद॥
सज्जन, सुहृद, सुशील, बचन आरज्ज प्रति पालय।
निर्मत्सर, निहकाम, कृपा करुणाको आलय॥
अनन्य भजन दृढ़ करनि धरयो बपु भक्तनि काजै।
परम धरम को सेतु, बिदित वृन्दाबन गाजै॥
भागौत सुधा बरषे बदन काहू को नाहिन दुखद।
गुन निकर "गदाधर भट्ट" अति सबहिनको लागे सुखद॥

तथा भक्तमाल के टीकाकार प्रियादासजीने कवित्तछन्दोंमें विस्तार पूर्वक श्रीभट्टजूकी रहनी गहनी पर इस प्रकार प्रकाश डाला है।

कवित्त-"श्याम रंग रंगी" पद सुनि के गुसाईजीव पत्र दे पठाये उभै साधु वेगि धाये हैं, रैनि बिन रंग कैसे चढयो अति सोच बढयो कागद में प्रेम मढ्यो तहाँलेके आये हैं।

पुर ढिग कूप तहाँ वैठेरस रूप लगे पूछवेको, तिन्ही सों नाम ले बताये हैं. रहो कौन ठौर सिरमोर वृन्दावन, नाम सुनि, मुरछाह्वै गिरे प्रान पाये हैं॥ काहू कही "भट्ट श्रीगदाधरजू" एई जानो मानौ वही पाती चाह फेरि कै जिवाये हैं। दियो पत्र हाथ लियो,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri


सीस सौं लगाय चाय, बाँचत ही चले बेगि वृन्दावन आये हैं। मिले श्री गुसाईं जू सों, आँखें भरि आईं नीर सुधि न शरीर धरि धीर वहीं गाये हैं। पढ़े सब ग्रन्थ संग नाना कृष्ण कथा रंग रस की उमंग, अंग अंग भाव छाये हैं॥

आपने प्रथम अपने घर में ही 'सखी हो श्याम रंग रंगी। देख बिकाय गई यह मूरत सूरत माहि पगी" यह पद बनाया। श्री वृन्दावन में इसको किसी साधुमुख से सुनकर श्री श्रीजीव गोस्वामीपाद ऐसे चकित और मोहित हुए कि आपने एक पत्र लिखा अनाराध्य राधापदाम्भोजरेणु मनाश्रित्य वृन्दाटवीं तत्पदांकाम्। असम्भाष्य तद्भावगम्भीरचित्तान् कुतः श्यामसिन्धो रसस्यावगाहः।

भाव यह है कि जिसने श्री राधिका के चरण कमल रज की आराधना नहीं की, तथा श्री राधाचरणकमलांकित श्री वृन्दावन के आश्रित नहीं हुआ और राधाभावरस जानने वाले रसिकों का संग नहीं किया तो वह कैसे श्री श्यामरस रूप समुद्र में गोता लगा सकता है। इस पत्र को लेकर दो साधु श्री भट्टजी महाराज के पास आए जो एक कूप के ऊपर बैठे दाँतुन कर रहे थे श्री भट्टजी से पूछने लगे कि गदाधर भट्टजी कहाँ पर रहते हैं। श्री भट्टजी महाराज ने पूछा कि "आप कहां रहते हैं?" सन्तों ने उत्तर दिया "शिरमोर वृन्दावन धाम में" श्री वृन्दावनधाम का नाम सुनते ही भट्टजी प्रेम से मूर्छित हो गिर पड़े। आपकी दशा देख उन सन्तों से किसी ने कहा कि आपही गदाधरभट्ट हैं। तब उन सन्तों ने कहा कि हम आपके लिये पत्र लेकर आये

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizaqtion by eGangotri

है। यह सुनकर वे उठे। पत्र ले शीश और नेत्रों से लगाया। प्रेमानन्द से पढ़ा और सीधे श्रीवृन्दावन को चल दिये। श्रीजीव गोस्वामीजी के साथ मिलकर आपने श्री भागवतरसका आस्वादन किया। आपके मधुर भाषण का श्रोताओं पर बड़ा प्रभाव पड़ता था। बहुत लोग संसारी सुख को तुच्छ समझ कर भागवत रंग में रंग जाते थे और सहज में ही मूर्छादिक अष्ट सात्विक भाव उदय हो जाता था एक बार आपके यहाँ एक चोर आया, घर की सब संपत्ति लेकर एक बहुत बड़ी गठरी बांधो, जिसको उठाने में वह असमर्थ हुआ। भट्टजी महाराज जो यह सब लीला देख रहे थे चोर के पास आये और चुपचाप गठरी उठादी। चोर पर आपकी दया का बड़ा भारी प्रभाव पड़ा चरणों में लोट गया और आपका शिष्य हो गया। सच है महानुभावों के चरित्र लोकोत्तर होते हैं। आज उनहीं श्री भट्टजी महाराज की परम रसीली मोहिनीवाणी रसिक महानुभावों के आस्वादनार्थ मुद्रित हो गई है। जिसका श्रेय श्री कुसुम सरोवर निवासी श्रीबाबजी महाराज श्रीकृष्णदासजी को है आपका दुष्प्राप्य ग्रंथों की खोज निकालना और उनका प्रकाश करना और कराना मुख्य काम है। भिंड (ग्वालियर) निवासी भक्त शिरोमणि मुंशी गोपालसहाय आत्मज गौरनिष्ठप्राण बाबू जगमोहन लालजी जज हाई कोर्ट को अनंत कोटि धन्यवाद है कि जिन की परम उदार आर्थिक सहायता से इस ग्रंथ का मुद्रण ऐसे समय में हो सका जब "महँगाई" का पूर्ण साम्राज्य है। इस उदारता के लिये वैष्णव

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


जगत आपका आभारी रहेगा। भगवान ऐसे उदार चरित्र प्रेमी सज्जनों को अपनी अनुपम कृपा का भाजन बनाये रक्खें।

विनीत:—

गोविन्दप्रसाद श्रीवास्तव

प्रोफेसर, महाराजा कालेज (जयपुर)

## ❀ शुद्धि पत्रम् ❀

| अशुद्धि | शुद्धि | पृ० | पं० |
|---|---|---|---|
| फाग | फगु | १८ | १० |
| स्तुत्तु | स्मत्त | १६ | ४ |
| हंस। | हंस | १८ | १० |
| जलक | झलक | २३ | ११ |
| नाप | ताप | २३ | ९ |
| बार | बर | २३ | २० |
| कंटकि | कराठकी | २५ | ७ |
| बत्र | बर | ३७ | १६ |
| रास | रस | ३६ | ३ |
| मिटयो | मिटयो | ४८ | ११ |
| बिंगी | बिरंगी | ५५ | १ |
| गुन | गन | ६१ | १ |
| गाविन्द | गोविन्द | १२ | १६ |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# निवेदन

यह शुष्कायित सुकण्टकित ज्ञानकर्मादिरहित शुद्ध भक्ति विवर्त्तं महाप्रेमरसमदिरापानोन्मत्त, शुद्धसत्व, बलरामतत्व, श्री श्री नित्यानन्दप्रभुजीके कृपासे- कलिपावनावतार करुणावरुणालय ब्रह्मरुद्रादिसुदुर्ल्लभ प्रेमभक्ति महाधनप्रदानासक्तचित्त, महाभाव रसराज स्वरुप श्री राधा राधाकान्त मिलिततत्व, " कृष्णवर्णं त्विषाकृष्णं सांगोपांगास्त्रपार्षदम् । यज्ञैः संकीर्त्तन प्रायैर्यजन्तिहि सुमेधसः ।" इति भागवतीय पद्य से तथा आगमनिगमकृतप्रमाणितअवतारसत्व, श्रीव्रजेश्वरी व्रजेश्वर अवताररुप श्रीशचीदेवी जगन्नाथमिश्र पुत्र, कलिकाल कवलित सर्व्व साधन रहित जीवों के उद्धारार्थ सर्वसाधन तिरस्कृत प्रकाशित नाममहासत्र, लक्ष्मीकान्त, श्रीमन्महाप्रभु गौरचन्द्रजू के-कृपापात्र तथा परम पार्षदख्यात, तन्मतप्रचार परमोद्भट श्रीरघुनाथ भट्टजू के कृपापात्र श्रीगदाधर भट्टजू के हृदय सरोवर में भाव रूपी सूर्य्य किरण से प्रफुल्लित बाणी रुपी कमलों का शतशत मकरन्दधारा रसिकभ्रमर परिपोषणार्थ प्रकाशित है। अतः सरस भावुक प्रेमी रसिकजन जिह्वारुपी चषकपात्र में रख कर सदा आस्वादित करें। भावार्थ यह है आज श्रीगदाधरभट्टजी का रचित सरस सानुप्रास युक्त बाणीयां प्रकाशित हुई है। भट्टजू के जो कुछ फुटकरपद यहाँ वहाँ हस्त लिखित पुस्तकों से मिले वे सब एकत्र संचय करके धारानुयायी रक्खे गये है। हृदय में

Dr. Urmila Sharma-Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri


आशा यह है कि भट्टजी का विशाल जीवनचरित्र भी समयान्तर में प्रकाशित हो। इस अभिलाषा की श्रीभट्टजी के स्थान वा गद्दी पर (वृन्दावन पुराणेशङ्कर अटखम्भा श्रीराधाबल्लभजी। मन्दिर के पास) विराजित श्रीगौरचन्द्रनिष्ठ श्रीगोवर्द्धन भट्टजी उपनाम छोट्टनलालजू के कृपा से पूर्ती होगी। यहाँ पर गदाधरभट्टजी के प्रकाशित तथा आराधित सर्वस्व श्री श्री मदनमोहन जू की श्री मुर्ति विराजित हैं। उनके श्री चरण कमल में शत २ कुसुमाञ्जलि अर्पण पूर्वक प्रार्थना यह है कि आप अपने कृपा पात्र भट्टजू के सरस वाणी रुपी सुधा जो कि हृदयाकाश में रखे हुए है उसको भक्त रसिक हृदय क्षेत्र में सदा के लिये अखंडित भाव से सरस बरसावें।

इति:—

वैष्णव दासानुदास

कृष्णदास

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

श्री श्री गौरहरिर्जयति ।

# अथ योगपीठ

श्री गोविन्द पदारविन्द सीस सिरनाऊं ।
श्री वृन्दावन विपिन मौलि वैभव कछु पाऊं ॥ १ ॥
कालिन्दी जहां नदी नील निर्मल जल भ्राजै ।
परमतत्व वेदान्त वेद्य इव रूप विराजै ॥ २ ॥
रक्त पीत सित असित लसित अम्बुजवन सोभा ।
टोल टोल मदलोल भ्रमत मधुकर मधुलोभा ॥ ३ ॥
सारस अरु कलहंस कोक कोलाहल कारी ।
अगनित लखन पच्छि जात कहि नहि मति हारी ॥ ४ ॥
पुलिन पवित्र विचित्र रचित नाना मनि मोती ।
लज्जित ह्वै शशि सूर निरखि निसिबासर जोति ॥ ५ ॥
कंचन कलित गिलाइ लाइ बांधे मनि कूलन ।
तीर तीर चतुर सुचारु नाना द्रुम मूलनि ॥ ६ ॥
नव नग सोभा विविध भांति नव पल्लव पत्रा ।
रंग रंग के फूल मनहुं विधि निर्म्मित चित्रा ॥ ७ ॥
कल कलधौत लता प्रतान तिनसौं लपटाने ।
वर पराग के पुंजकुंज परत न पहिचाने ॥ ८ ॥
कहूं कर्पूर पराग कहू कुंकुम के पंका ।
कहुं फटिक स्थल बिमल मनहुं अकलंक मयंका ॥ ९ ॥
कहुं अमृत जलभरे विपुल पद्माकर ओडे ।
मरकत घसी किरन मनौ दुर्बाकुंर बौडे ॥ १० ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


इहि विधि चिंतामनिन भूमि संतत तहं सोहै ।
षटरितु सेवत निच्च कहत उपमाको को है ॥११॥
जहां केकी कुल निर्त्त तहां पिक पंचमगावत ।
परत भृंग उपंग सबद उघटत पारावत ॥१२॥
कीर प्रशंसा करत झरत निर्झर मृदंग धुनि ।
रीझ रीझ सिर धुनत वृच्छ संगीत रीत सुनि ॥१३॥
थिरचर मन उल्लास विलास विविध तंह दरसे ।
मंद पवन वस परसि लता कुसुमांजुलि वरसै ॥१४॥
नित्यानन्द कदम्ब केलि वृन्दावन सोभा ।
कोटि कोटि सुरराज रंक ह्वै लागत लोभा ॥१५॥
कल्पद्रुमनकी छांह माह मनि मंडप भारी ।
जगमग २ जोति होति सोभा सुखकारी ॥१६॥
ता मंडप मह योगपीट पकंज रुचिलागि ।
ताके मन में उदय होत जो कोऊ बडभागि ॥१७॥
ताके पत्र विचित्र सहस्र मध्य किंजल्कै ।
पद्म राग की भांति अग्र मुक्ता मणि झलकै ॥१८॥
कनक वरन कनिंका कील वज्रन की सोहै ।
मन्त्र दसाच्छर रूप कहन महिमाको को है ॥१९॥
वनिताजनगन कोटि कोटि संतत ता माहीं ।
उपमाको रति रमा उमा रुक्मादिक नाहीं ॥२०॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri


वरन वरन अम्बर सुरंग कञ्चुकि तन गाढ़ी ।
मंजन अंजन तिलक हार सोभा सुठि वाढ़ी ॥२१॥
अंग अंग सोभा समूह श्रेणि रुचिवाढ़ी ।
मनहुं माधुरी सिंधुद्रुते अवहीं मथिकाढ़ी ॥२२॥
सुन्दर नव युवराज बिराजत तिनहि मंझारी ।
रुप अनुपम कथन काज सुरसुति पचिहारी ॥२३॥
नील जलदतन स्याम धाम अभिराम पीत पट ।
सिखि सिखंड सेखर ललाट रहीं छुटि अलकलट ॥२४॥
विविध सुदेस सुन्दर सुरंग कुंकुम तमाल दल ।
ललित लोल डोलत कपोल विंवित मनि कुंडल ॥२५॥
भृकुटि भंग लघु लघु तरंग लोचन सुकोकनद ।
चपल चारु चितवनि चिताइ गत होत मदनमद ॥२६॥
शुकनासा मुक्ता प्रकाश उपमा मन मेरे ।
मनहु असुर गुरु आय अंकवैठ्यो विधुकेरे ॥२७॥
अधर मधुर अरुनिमा जोर वंधुक न पावै ।
विद्रुम विंव जवा प्रसून ऊनता जनावै ॥२८॥
मुक्ता हीर अनार कुंद दंतनपर वारौं ।
कंवुकंठ कौस्तुभमयूख रुचि कहत न पारौं ॥२९॥
गज सुंडाकृति वाहुदंड केयूर रहे वन ।
मधि हीरा पट कौन कौन मनि कहै औरगनि ॥३०॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


पहोचनि पहोंची बर जराय मुद्रिका रही फवि।
करपल्लव नख जोति जात नक्षत्र पंक्ति द्रवि ।।३१।।
कुंददाम बनदाम दामगुंजा मनिको उर ।
तार हार बिस्तार चारु सुभ ढ़रत हिये पर ।।३२।।
स्तन दच्छिण श्रीवत्स वाम सोहै श्रीरेखा ।
मधि चौकीकी चमक छाहि गृह थके असेष ।।३३।।
त्रिवली वलित रोमावलि नाभि आवर्त्त समाना ।
चक्रदल दल आकार उदर घटना मन माना ।।३४।।
चित्रित अंग पटीर कटीतट घटी सुहाई ।
मंद पवन बस थरहराति प्रमुदा मधि आई ।।३५।।
मनि किंकिनि गुन तड़ित दामसम बनी नितंबन ।
उरु जानु जंघा सुगुल्फ सोभा अवलम्बन ।।३६।।
नूपुर रव जन झननकार गुरु सिक्ष्य हंसकुल ।
वार वार अभ्यास करत हारे न लही तुल ।।३७।।
जल कमल स्थलकमल जीति श्री वस करि राखी ।
कविवर बचन प्रमाण मानि बोलत है साखी ।।३८।।
मुरलीधर वरअधर धर मुरली अति नीकी ।
नादामृत वरसाय हरत सुधि बुधि सबही की ।।३९।।
वाम भाग सौभागसीम श्रीराधा रमनिमनि ।
ताके नवनव प्रीति राग रहे पियतन मनसनि ।।४०।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


अहिकुल अलिकुल बरहिकुल केस वेस लखिलाजि ।
रहे रसामहि कमलमहि निरजन बन मह भाजि ॥४१॥
मदन सदन आनन्द चंद चारुता लजानी ।
नैन मैन सर पैन भौंह धनुहीं जनु तानी ॥४२॥
मृगमद तिलक ललाटपट ताटंक श्रवनवनि ।
खुलि खुटिला झुल झुलो अलक झलमलत महामनि ॥४३॥
नासा मोती अधर भासता सित थरहरई ।
दसन दाडिमी बीज मंजिता बोल मुखरई ॥४४॥
चिबुक चारु रुचिरुचिर चकित प्रीतमछवि जो है ।
स्यामबिंदु सुखकन्दनदनंदन मन मोहै ॥४५॥
नील सारसोभा अपार बेनी बनी भारी ।
गौरगात गाती सुजात मोहित रतनारी ॥४६॥
कंठश्री मुक्तान माल चौंकी चमकती ।
भुज मृणाल नवलाल वलित वलयनकी पंक्ती ॥४७॥
मनिमुद्रिक केयूर कमल करपल्लव राते ।
नखरसिखर मानिक्य स्याम अन्तर अरुझाते ॥४८॥
रसना रसद निनाद बाद मनमथसौं ठान्यो ।
रंभाखंभ समान जंघ सुन्दर मनमान्यो ॥४९॥
चरन कंज मंजीर हंस कूजित समवाजे ।
नखमानिक मद जीति रागतल अधिक विराजै ॥५०॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


यह विधि युगलकिशोर जोर संवत्त तँह सोभै ।
भावसहित भावना करत कहि को नहि लोभै ॥५१॥
जोइहि विधि निसि द्योस चलत वैठे अरुठाढे ।
करहि विचार विकार और तौवत मनवाढ़े ॥५२॥
ध्यानानन्द मकरन्दसार जिनके मनमाते ।
भवदव दहन समूह तिनहि लागत नहिं ताते ॥५३॥
श्री वृन्दावन योगपीठ गोविन्द निवासा ।
तहा श्री गदाधर चरन सरन सेवाकी आसा ॥५४॥

इति श्री गदाधरभट्टजी कृत योगपीठ वर्णन सम्पूर्णम्

॥ उपदेश ॥

मुंचरे मुंच माया सुखे यत्नं ॥
मृगय गोकुलकुलाधीशकुलरत्नं ॥ १ ॥
मूढ मायात दुराशा पिशाची वशे ।
मित्र मज्जय मनः कृष्णलीलारसे ॥ २ ॥
किं लब्धं त्वया कृपण जन रंजने ।
किमिति रमसे न निजभक्त भयभंजने ॥ ३ ॥
हरिविमुखसंगमे किं भजसि रागं ।
वरय हरिदासपदपंकजपरागं ॥ ४ ॥
कलय चेतसि चिरं नीलघनसुन्दरं ।
पीतवसनं सुभगनागरपुरन्दरं ॥ ५ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri


गोपगणवेष्टितं नैचिकीचारकं ।
सुरसुखद चेष्टितं दनुज कुल मारकं ॥ ६ ॥
द्विषामपि मुक्तिदं मुक्तिसेवित पदं ।
वंशिकाविवशगोपीजनानन्ददं ॥ ७ ॥
मावृथा चिन्तनं मा वृथालापं ।
कुरुगदाधर जहिहि मनसि परितापं ॥ ८ ॥

॥ रागविभास ॥

कबै हरि, कृपा करिहौ सुरति मेरी ।
और न कोऊ काटन कौं मोह बेरी ॥ १ ॥
काम लोभ आदि ये निर्दय अहेरी ।
मिलि कै मन मति मृगी चहूँघा घेरी ॥ २ ॥
रोपी आइ पास पासि दुरासा केरी ।
देत वोही में फिरि फिरि फेरी ॥ ३ ॥
परी कुपथ कंटक आपदा घनेरी ।
नैक हो न पावति भजि भजन सेरी ॥ ४ ॥
दंभ के आरंभ ही सतसंगति डेरी ।
करै क्यों गदाधर बिनु करुना तेरी ॥ ५ ॥

॥ विनय के पद ॥

कहा हम कीनो नरतन पाइ ।
हरि परितोषण एको कबहुँ बनि आयो न उपाइ ॥ १ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


हरि हरिजन आराधि न जानें कृपण विप्र चित लाइ।
वृथा विषाद उदर की चिंता जनमहि गयो विताइ ॥ २॥
सिंह त्वचाको मढ्यो महापशु खेत सवनको खाइ।
एसे ही धरि भेष भक्तको घरघर फिरयो पुजाइ ॥ ३॥
जेसें चोर भोर के आयें इत चितवत वितताइ।
एसे ही गति भई गदाधर प्रभुकि न करहु सहाइ ॥ ४॥

व्रजजनसम्बन्धिपर ॥ रामकली ॥

दधि मथति नंद नरिंद रानी करति सुत गुन गान।
नील नीरद अंग दिव्य दुकूल वर परिधान॥
केस कुसुमनि किरनि मणि ताटंक झलकत कान।
स्वेद कन गन वदन बिधु पर सुधा बिंदु समान॥
नेत करषत हरष बरषत बलय किंकिनि कान।
पय पयोधर श्रवत चातक कृष्ण पिवत निदान॥
सहसु आनन कहि सकै नहिं जासु भाग्य बखान।
जगतवंद्य गोविंद माता गदाधर करि ध्यान॥ ४।

———

वन्दो जशोदा पदकमल।
जिनहि चिंतत जाहि मिटि कलिकालके सब समल॥
ज्ञान अरु विज्ञानयुत मिनि ध्यानहूँते दूरि।
ताहि जो लैं गोद बैठाति अंगधूसर धूरि॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


सभामैं कुरुराजकी रिषिराज कियो बखान ।
कमलभव कमलालया भव नहिन महिमसमान ॥
जगतबंध विमोचकारण जासु नामाभास ।
सोइ डोलतुभजे जाके बांधिबेके त्रास ॥
कृष्णचातकहेत जाकी पयोधर पयवृष्टि ।
गदाधर बलिजातु चाहत कृपा कोमल दृष्टि ॥ ५ ॥

जय श्रीगोकुलदेवि यशोदे । जीवातुकहरिबालविनोदे ॥
बन्धविमोचनबन्धनदचे । कृतलोकत्रयरचकरचे ॥
सततविहितविश्वंभरभरणे । कृतकलिमलहरतनुमलहरणे ॥
स्तन्यामृतसन्तर्पितकृष्णे । कृष्णाननमधुरिमणि सतृष्णे ॥
उत्संगारोपितजगदयने । अंजननिचितनिरंजननयने ॥
दिव्यदुकूलावृतमृदुदेहे । रुचिरञ्जितगोकुलपतिगेहे ॥
अपराधिन्यपि कोपविहीने । करुणामृतवर्षिणि मयिदीने ॥
कमलभवादिसुदुर्लभभाग्ये । त्रिभुवनविदितमहासौभाग्ये ॥
वितरगदाधरमनुनिजदास्यं । भावय मे श्रुतिततिभिरुपास्यं ॥ ६ ॥

॥ नन्दजी को पद ॥

बन्दो नन्दजूके पाइ ।
अखिललोक आधीस जाकी हैं चरावत गाइ ॥
निगमसार विचारदुर्गम उमापति विश्राम ।
कह्यौ जाके नामतो तिंहि नन्दनन्दननाम ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


पवन पावक इन्दु अनिमिष सूर अज्ञाकरत ।
सुप्रभु जाकी पीठि पादुक लैलै आगै धरत ॥
जासुके सनमंधतें भवबन्धते निस्तार ।
तासुके कटिदामको नहि और छोरणहार ॥
नटति मायानटी भृकुटी भाँइ सकति न टारि ।
ताहि जाकै गांमडकी चुटकनि नचावहि नारि ॥
और मम सम दीन उनि सम नहि और उदार ।
क्यों न करत गदाधर हि निजद्वारको परिचार ॥ ६ ॥
बन्देनंदव्रजजनवृन्दं । कृष्णप्रेमलतामृदुकन्दं ।
कर्त्तुं कृष्णकलानिधिधयनं । चारुचकोरीकृतनिजनयनं ॥
कृष्णगुणानुकथनमविरामं । विदधदपारसुखैगंतयामं ।
जीवातुकनिमनन्दतनूज । आगमतंत्रप्रकाशितपूजं ॥
दनुतनुजानामपिभवतरये । प्राणधनादियदीयंहरये ।
हरिरपिदृष्ट्वा त्रिषमासारं । अकृत यदर्थं शैलाधारं ॥
अपिवदनलमपि कृततरकदनं । प्राविशदघदनुजाधमवदनं ।
यत्पदरजसामभिषेकायं । लिप्सासमजन्यधिकाकायं ॥ ८ ॥

॥ बधाई के पद (राग मारु) ॥

आज कहूँ ते या गोकुलमें अद्भुत बरखा आई हो ।
मणिगण हेमहीर धाराकी व्रजपति अति झर लाई हो ॥
बानी वेद पढ़त द्विज दादुर हिये हरखि हरियारे हो ।
दधिघृत नीर चीर माना रंग बहि चले खार पनारे हो ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


पटह निसान भेरि सहनाई महा गरजकी घोरें हो ।
मागध सूत वदत चातक पिक बोलत बंदी मोरे हो ॥
भूषन वसन अमोल नंदजू नरनारिन पहराये हो ।
शाखा फल दल फूलन मानों उपवन झालर लाये हो ॥
आनन्दभरी नाचत ब्रजनारी पहरे रंग रंग सारी हो ।
वरन वरन बादरन लपेटो विद्युत न्यारी न्यारी हो ॥
दरिद्र दावानल बुझे सबनके जाचक सरोवर पूरे हो ।
बाढी सुभग सुजसकी सरिता दुरित तीर तरु चूरे हो ॥
उन्हयो ललित तमाल बाल एक भई सबन मन फूल हो ।
छाया हित अकुलाय गदाधर तक्यो चरनकी मूल हो ॥ ७ ॥

॥ ध्रुपद ॥

श्री गोविंद पदपल्लव सिर पर विराजमान,
कैसे कहि आवै या सुख को परिमान ।
ब्रज नरेस देस बसत कालानल हू न त्रसत,
बिलसत मन हुलसत करि लीलामृत पान ॥
भीजे नित नयन रहत प्रभु के गुण ग्राम कहत,
मानत नहिं त्रिविध ताप जानत नहिं आन ।
तिनके मुख कमल दरस पावन पद रेनु परस,
अधम जन गदाधर से पावैं सनमान ॥ ४ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


॥ धनाश्री ॥

हौं व्रज मागनोंजू । व्रजतजि अनत न जाऊंजू ॥
बड़े बड़े भूपति भूतलमें दाता सूर सुजानजू ।
कर न पसारों सिर न नवाऊं या व्रजके अभिमानजू ॥
सुरपति नरपति नागलोकपति राजा रंकसमानजू ।
भांति भांति मेरी आसा पुजवत ए व्रजजनयजमानजू ॥
में वृतकरिकरि देवमनाये अपनी घरनि संयुतजू ।
दियो है विधाता सबसुखदाता गोकुलपतिकै पूतजू ॥
हौं अपनों मनभायो लैहौं कत वारावत बातजू ।
औरनकों धनघनज्यों बरषत मोचितवत हसिजातजू ॥
अठसिधि नवनिधि मेरे मन्दिर तुवप्रताप व्रजईसजू ।
कहि कल्यान मुकुन्दतात करकमलधरो मम सीसजू ॥ ५ ॥

॥ दण्डक ॥

जय महाराज व्रजराज कुल तिलक,
गोविन्द गोपीजनानन्द राधारमन ।
नंदनृपगेहिनी गर्भ आकर रतन,
सिष्ट कष्टद धृष्ट दुष्ट दानव दमन ॥
बल दलन गर्ब पर्वतविदारन,
व्रज भक्त रच्छा दच्छ गिरिराज धरधीर ।
विविधखेला कुसल मुसलधर संग लै,
चारु चरणांक चित तरनि तनया तीर ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


कोटिकंदर्पदर्पापहर लावन्यधन्य

वृन्दारन्यबन्यभूषनमधुर ।

मुरलिका नाद पीयूषनिर्झर महानंदन

विदित सकल ब्रह्म रुद्रादि सुर ॥

करु गदाधर विषै वृष्टि करुना दृष्टि

दीन को त्रिविध संताप ताप तपन ।

मैं सुनी तुव कृपा कृपन जन गामिनी

बहुरि पैहै कहा मो बराबर कवन ॥ ४ ॥

गोकुलानंद गोपीजनानंद श्रीनन्दानन्द नयनानन्द प्यारे ।
गिरिराजउद्धरन सुरराजमदहरन वदनपरदुजराजकोटिवारे ॥
गोपनृपगेहिनीगर्भआकररतन राधिकाकंठभूषणविलासी ।
असुरलोचनअगोचरमहामहिम निजजनकरामलपरब्रह्मरासी ॥
गजराजधीरगति मृगराजविक्रमी रसराज रसरसिक बनविहारी ।
भक्तजनभयहरनचरन अशरणशरण सकलसुखकरण दुखदोषहारी ॥
रूपबलकोटिकन्दर्पदर्पापहरहरध्यातपदकमलविश्वबंधो !
नामआभासअघरासिविध्वंसकर सकलकल्याणगुनग्रामसिन्धो ॥ ४ ॥

नामके पद ( भैरवी )

अघ संहारिनि अधम उधारिनि,

कलिकाल तारिनी मधु मथन गुन कथा ।

मंगल विधायिनी प्रेम रस दायिनी,

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


भक्तिअनपायिनी होइ जिय सर्वथा ॥

मथि वेद गथि ग्रंथ कथि व्यासादि,

अजहुँ आधुनिक तन कहत हैं मति जथा।

परमपद सोपान करि गदाधर पान,

आन आलाप तें जात जीवन वृथा ॥२॥

आसावरी

है हरि तें हरिनाम बड़ेरो। ताकों मूढ़ करत कत भेरो ॥ ध्रुं ॥

प्रगट दरस मुचकुन्दहिं दीन्हों, ताहू आयुसु भो तप केरो।

सुत हित नामअजामिल लीनों, या भव में न कियो फिरि फेरो॥

पर अपवाद स्वाद जिय राच्यौ, वृथा करत बकवाद घनेरो।

ताको दसयों अंस गदाधर, हरि हरि कहत जात कह तेरो ॥३॥

करि है कृष्ण नाम सहाइ ।

अधमता उर आनि अपनी मरत कत अकुलाइ ॥

अधम अगणित उधरे तब कहत संसार ।

कब न उद्यम आपनें करि सकयों निजु निस्तार ॥

नैंकु ही धों करिभरोसो बसत जाके गांउ ।

क्यौं सु ममता छाडि है लै जियत जाको नांउ ॥

विरद विदत बुलाइ बहुत कहरि नधरि हैं लाजु ।

तो गदाधर निगम आगम सब बकत बेकाजु ॥ ४ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri


सारंग

हरि हरि हरि हरि रट रसना मम ।

पीवति खाति रहति निधरक भई, होत कहा तांकों स्रम ॥
तैं तो सुनी कथा नहिं मोमे, उधरे अमित महाधम ।
ग्यान ध्यान जप तप तीरथ व्रत, जोग जाग बिनु संजम ॥
हेम हरन द्विज द्रोह मान मद, अरु पर गुरु दारागम ।
नाम प्रताप प्रबल पावक के, होत जात सलभा सम ॥
इहि कलिकाल कराल व्याल विष, ज्वाल विषम भोये हम ।
बिनु इहि मंत्र गदाधर के क्यों, मिटिहै मोह महातम ॥ ४ ॥

जमुनाजी के पद (सारँग)

जमुना देवी को न भलाई ।

नाम रूप गुन लै हरिजू को, न्यारी अपनी चाल चलाई ॥
उदबस देश कियो भ्राता को, उनहिं परसि कोउ तहाँ न जाई ।
जे तन तजत तीर तुम्हरे ते, तात किरन में गैल लगाई ॥
मुक्ति वधू को करि दूत पन, अधमनि कों लै आनि मिलाई ।
आपुन स्याम आन उज्वल करि तात तपत अपु सीतलताई ॥
बलको छल करि अनल अघन को, यह सुन कै कोउ क्यों पतिआई ।
निसदिन पच्छपात पतितनको, तदपि गदाधर प्रभु मन भाई ॥ ४ ॥

भैरवी

मेरे कलिकल्मष कुल नासे, देखि प्रवाह प्रभाकर कन्या ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


वह देखो पाप जात जित तित बहे, ज्यों मृगराज देखि मृग सैन्या॥
दै पय पान पूत लौं पोषति जननि कृतारथ धनि बहु धन्या।
दीनो वहति गदाधरजू पै, चरन सरन अति प्रीति अनन्या ॥२॥

---

जगति यमुनाभिधा जयति जगदम्बा ।
पुण्यपयसा न पावयति किल कं वा ॥
सुभगनवसुजलजलदाभजलपूरा ।
निखिलकलिकलुषौघनिर्दलनशूरा ॥
धर्म्मधनकामादिकामितविधायिनी ।
तीरसुवितनुमुचेपरमपददायिनी ॥
कल्पतरुनिकरसंकुलितमनिकूला ।
स्वच्छसैकततिरस्कृतमृदुलतूला ॥
स्नानकृन्निजसहस्रभयतिरस्कारिणी ।
पानकारिणि मनः शुद्धिविस्तारिणी ॥
सुकृतकृतिसुकृतचयसंचयविवर्द्धिनी ।
कृष्णचरणाम्बुजे रतिरससंवर्द्धिनी ॥
कमलकुललोचना मधुपरुचिकज्वला ।
हासनिभहंसगणसततसमुज्वला ॥
तट निकटफुल्लवनचित्रपटधारिणी ।
कोकरवजागमलफेनवरहारिणी ॥
विशदवृन्दावनपरागभरजिता ।
वहुविहगरम्यरणिताभरणसिंजिता ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



भंगभृकुटीभृंगसूचितानुग्रहा ।
परमवत्सलतया सर्वजनसुग्रहा ॥
सारसनिनादनिभसारसनिनादिनी ।
सुखदशिकरभरस्पृग्जनाह्लादिनी ॥
सप्ताब्धिभेदिनोसप्तसप्त्युद्भवा ।
हरिचरनरतगदाधरविरचितस्तवा ॥ १२ ॥

वंसी पटरानी भई । ( वंशी के पद )
उपजी सरस सुबस जानि करि हरि गहि पानि लई ॥
सोवत श्याम लगाई हृदैसों छिन छिन प्रीति नई ।
याहीसों नित मती करत प्रिय दृष्टि न अनत गई ॥
पीवति अधर करति रति कूजित गति बिपरीति ठई ।
वारवार मुंह लावत इहि सब मर्जादा वितई ॥
करे हैं अधीन त्रिलोक लोक याकी कीरति जगत छई ।
रसवस भए गदाधर प्रभु यह करी जगत विजई ॥
विनसारजेतोभारहैहो या मुरली मैं ।
एतोतो न देख्यौ वा महागिरवर में ॥
वाएही उचाइ रहे सातद्योस करमें ।
जबहि संभारि हरिधरतहु हुकरनि कैसेहु र आइलागति अधर में।
एकसुहाग याहि दीनो है गदाधर प्रभु राख्यो अभिमान इहि
घिर मै नचर मैं ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


### राग मारु

गोपाल लालकी बांसुरी माई बिधिहू तें प्रबल प्रवीन।
याने जगत कियो आधीन ॥ टेक ॥
चारि बदन उपदेश बिधाता, थापी थिर चर नीति।
आठ बदन गर्जंति गर्बीली, क्यों चलिये यह रीति ॥
विपुल विभुति लई चतुरानन, एक कमल करि थान।
हरिकर कमल जुगल पर बैठी, बाढ्यो यह अभिमान ॥
एक बेर श्रीपति के सिखये, उन लिय सब गुन गन गान।
याके तो नँदलाल लाड़िलो, लग्यो रहत नित कान ॥
एक मराल पीठि आरोहन, बिधि भयो प्रबल प्रसंस।
इनतौ सकल बिमान किये, गोपी जन मानस हंसा ॥
श्रीवैकुंठनाथ उर बासिनी, चाहत जा पद रैन।
ताको मुख सुखमय सिंहासन, करि बैसी यह ऐन ॥
अधर सुधा पी कुल ब्रत टार्यो, नहीं सिखा नहिं ताग।
तदापि गदाधर नन्द सुवन को, या ही सौं अनुराग ॥२४॥

### स्मरण तथा वन्दना के पद

चिन्तय चित्त ! चिरं हरिचरणम् । गोपवधूजनहृदयाभरणम् ॥
स्वांकालंकृत वृन्दारण्यम् । निजदयिताकुचकुंकुमधन्यम् ॥
कालियविषधरफणिमणिदलनम् । स्तुतिविधुपरिस्कृतपन्नगललनम् ॥
तरुणारुण कमलोदितकान्तम् । नखदीधितिहृतहृदयध्वान्तम् ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri


प्रणयिसु कामं ददतं सततम् । वनभुवि गोगणमनुगच्छन्तम् ॥
वृन्दारकवरवृन्दैर्वन्द्यम् । वेदान्तार्थविदामभिनन्द्यम् ॥
कमलासनमनसापरिमेयम् । श्रुत्यागेयं गिरिशध्येयम ॥
संपदि विपदि कदापि न हेयम् । स्तुत्तुस्तेमतती रिह देयम् ॥
स्मर नर शश्वत्पकंजनाभम् । विद्युद्वसनं नीलघनाभम् ॥
मौलिमिलन्मणिमञ्जुलवेशम् । स्निग्धश्यामलकुंचितकेशम् ॥
रत्नमयातुलकर्णाभरणम् । कमलदलायत चचंलनयनम् ॥
सुरभयहरणं व्रजजनशरणम् । धन्याध्याताम्बुजनिभचरणम् ॥
भालमिलद्वरकुकुंमतिलकम् । चन्दनचित्रितवक्षःफलकम् ॥
स्फुरदरुणाधरविनिहितवेणुम् । मुनिदुर्ल्लभचरणाम्बुजरेणुम् ॥
कण्ठतटे मणिराजमरीचीम् । बिभ्राणं शुभशोभावीचीम् ॥
तारावलिनिभमौक्तिकहारम् । संभृतसौन्दर्यामृतसारम् ॥
विततोरसिविलसद्वनमालम् । कटितटघटितसुकिंकिणिजालम् ॥
वलयांगदसंगतभुजदण्डम् । दनुजकुलान्तविधावतिचण्डम् ॥
चरणरणितमणिमयमंजीरम् । सच्चित्सुखघनसुभगशरीरम् ॥
त्रैलोक्याद्भुतशोभारुचिरम् । गोपतनुं नर चिन्तय सुचिरम् ॥
दुर्गतबन्धुं करुणासिन्धुम् । विश्वहितं हृदिकुरु जनबन्धुम् ॥
वनभुविसततं खेलानिरतम् । गोगणसहितं सुरमुनिमहितम् ॥
क्रीडन्तं निजसखिभिः साकम् । गोपवधूजनपुण्यविपाकम् ॥
अशरणशरणं भवभयहरणम् । प्रणमगदाधरगिरिवर धरणम् ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


राग भैरवी

सुमिरहु वरनागर वर सुन्दर गोपाललाल ।
सब दुख मिटि जैहै वैचित लोचन विशाल ॥ ध्रुं ॥

अलकनिकी झलकनि लखि पलकनि गति भूलिजाति
भुवविलास मन्दहास रदनछदम अतिरसाल ।
निन्दितरवि कुंडलछबिगंडमुकरझलमलात
पिच्छगुच्छ कृतवंतस इन्दुविमल विन्दुभाल ॥
अंग अंग जित अनंगमाधुरी तरंग रंग विमद
मंद गयंद होत देखत लटकीलीचाल ।
रतन रसन पीतवसन चारुहारवरसिंगार
तुलसीरचित कुसुमखचित पीनउर नवीनतमाल ॥
व्रजनरेशवंसदीप वृन्दावनवरमहीप
श्रीवृषभान नाम पात्र सहज दीन जन दयाल
रसिक रुप भूपरासि गुन निधान जान राय
गदाधर प्रभु युवतीजन मन मानसर मराल ॥ ३ ॥

जैति श्री

मोहि तुम्हारी आस । जिनि करहु न निरास ॥
मन मेरो वंध्यो मोहपास । स्वारथ पर सौंधो कैसो दास ॥
मोहि अपनी करनी के त्रास । निसि वीतति भरि भरि लेत स्वांस ॥
रचि रचि कहिये वाते पचास । मनकी मलिनता को कहु न नास ॥
जौ चितवैं नेकु श्रीनिवास । गदाधर मिटहि दोषदुख अनायास ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



( देव गन्धार )

अहो गोपाल कृपालय प्यारे ।
सुमिरत हियो भरयौई आवत गुनगुन मधुर तिहारे ॥
कहांवह बकी कहा जननी गति कहा अहि कहा पदअंक ।
करत प्रनाम छिमे सुरपतिके वे अपराध निसंक ॥
पावक पान दुसह नहि लागत ज्यौं निजु जनकी पीर ।
बच्छबाल जब व्याल गिले तब ह्वै ही गये अधीर ॥
ऐसे तुमसौं कपटु दिवानिसि यह मेरो अति दोष ।
एते पर हौं मनमत जानत करत जितौ परिपोषु ॥
तजि तुमसे अतिहितू गदाधर डहकायो बहु ठौर ।
अबजिनि होइ कबहु या कृपनहि तुम छाड़े गति और ॥

( राग श्री )

नमो नमो जय श्रीगोविंद ।
आनँद मय ब्रज सरस सरोवर, प्रगटित विमल नील अरविंद ॥
जसुमति नीर नेह नित पोषित, नवनव ललित लाड़ सुखकन्द ।
ब्रजपति तरनि प्रताप प्रफुल्लित, प्रसरित सुजस सुवास अमन्द ॥
सहचरि जाल मराल सङ्ग रँग, रसभरि नित खेलत सानन्द ।
अलि गोपीजन नैन गदाधर, सादर पिवत रूप मकरन्द ॥ ५ ॥

॥ दण्डक ॥

जयति श्री राधिके सकल सुख साधिके
तरुनि मनि नित्य नवतन किसोरी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


कृष्ण तनु लीन घन रूप की चातकी
कृष्ण मुख हिम किरन की चकोरी ॥
कृष्ण दृग भृंग विश्राम हित पद्मिनी
कृष्ण दृग मृगज बन्धन सुडोरी ।
कृष्ण अनुराग मकरंद की मधुकरी
कृष्ण गुन गान रस सिंधु बोरी ॥
एक अद्भुत अलौकिक रीत मे लखी,
मनसि स्यामल रंग अंग गोरी ।
और आश्चर्य कहूं मै न देख्यो सुन्यो,
चतुर चौषठिकला तदपि भोरी ॥
विमुख परचित ते चित्त जाको सदा
करत निज नाह की चित्त चोरी ।
प्रकृति यह गदाधर कहत कैसे बनै,
अमित महिमा इतै बुद्धि थोरी ॥११॥

गौरी

नन्द-कुल-चंद वृषभानु-कुल-कोमुदी
उदित वृन्दाविपिन विमल आकासे ।
निकट वेष्टित सखी वृन्द वर तारिका
लोचन चकोर तिन रूप रस प्यासे ॥
रसिक जन अनुराग-उदधि तजि मरजाद
भाव अगनित कुमुदिनी गन विकासे ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri


कहि गदाधर सकल विस्व असुरनि बिना

भानु भव ताप अग्यान न विनासे ॥६॥

राग सोरठ

मोहन बदन की सोभा ।

जाहि देखत उठति सखि आनंद की गोभा ॥
नैन धीर अधीर कछु कछु असित सित राते ।
प्रिया आनन चंद्रिका मधु पान रस माते ॥
बंसिका कलहंसिका मुख कमल रस राची ।
पवन परसत अलक अलिकुल कलह सी माची ॥
ललित लोल कपोल कुंडल मधुर मकराकार ।
जुगल शिशु सौदामिनी जनु नचत नट चटसार ॥
बिमल जलक सुढार मुक्ता नासिका दीनों ।
ऊँच आसन पर असुर-गुरु उदौ सौ कीनों ॥
भौंह सौहनिका कहौं अरु भाल कुमकुम बिंदु ।
स्याम बादर रेख परि मनु अबहिं ऊग्यौ इन्दु ॥
लग्यौ मन ललचाइ तातें टरत नहिं टारयौ ।
अमित अदभुत माधुरी पर गदाधर वारयौ ॥४॥

भूपाली

मद गजराज कीसी चाल ।

बार भुज दण्ड सुंडकी सोभा हरि लीनी नन्दलाल ॥टेक॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


चूरन कच कुंचित अनंग अकुंस से लटकत भाल ।
और चारु अवतंस मंजरी मद कन श्रम जल जाल ॥
गन्ध अंध आवत अलिघेरे गुंजत मंजु मराल ।
मोरपंख फरहरत वात वस जनु ढलकति है ढाल ॥
घनन घनन घंटिका रटित कटि सुन्दर सुखद सुताल ।
खनन खनन खनन नूपुर शृंखलसे बाजत लजतमराल ॥
युवती हृदै सरस सरसी में खेले हैं चिरकाल ।
न्याइनि अंग अंग अरुझाने उनके मन सैवाल ॥
धातु बिचित्र चित्र तन शोभा कल कलदाबन माल ।
हठिकुल धर्म ढीह ढाहत है रदन कटाक्ष विसाल ॥
मुरली रव गुंजार सुनतही कंपति चित वृजवाल ।
रिसरुसनें गदाधर ह्वै गये बन बेली बेहाल ॥

( गौरी ) देखिरी आवत गोकुल चंद ।
नखसिख प्रति वनबेस विराजत हरत दुखदंद ॥
आपुनहीजु बनाइ बनाए गायन के पद छंद ।
तेई मुरली माझ बजाव मधुर मधुर सुरमंद ॥
अगनित वृज युवतीन मन बांधत दुहूं भौंह दृढ़ फन्द ।
पोषतनैन मधुपकुल एकहि बदन कमल मकरन्द ॥
सहज सुवास पास नहि छाडत गोपगाई अलि वृन्द ।
अंग अंग बलिजाइ गदाधर मूरति मे आनन्द ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



## अनुराग के पद

सखी, हौं स्याम रंग रँगी ।
देखि बिकाइ गयी वह मूरति, सूरति माहिं पगी ॥
संग हुतो अपनो सपनो सो, सोइ रही रस खोई ।
जागेहु आगे दृष्टि परै सखि, नेकु न न्यारो होई ॥
एक जु मेरी अँखियनि में निसिद्योस रह्यो करि भौन ।
गाइ चरावन जात सुन्यो सखि, सोधौं कन्हैया कौन ।
कासो कहौं कौन पतियावै, कौन करै बकवाद ।
कैसे कै कहि जात गदाधर, गूँगे को गुरु स्वाद ॥

बिहाग— जो मन स्याम-सरोवर न्हाहि ।

बहुत दिनन को जरयो बरयो तूँ, तबही भले सिराहि ॥
नयन बयन कर चरन कमलसे, कुंडल मकर समान ।
अलकावली सिवाल जाल तहँ, भौंह मीन मो जान ॥
कमठ पीठ दोउ भाग उरस्थल, सोभित दीप नितंब ।
मनि मुकुता आभरन बिराजत, ग्रह नछत्र प्रतिबिंब ॥
नाभि भँवर त्रिवली तरङ्ग, झलकत सुंदरता वारि ।
पीत बसन फहरानि उठी जनु, पदुम रेनु छवि धारि ॥
सारस सरिस सरस रसना रव, हंसक धुनि कलहंस ।
कुमुद दाम बग पङ्गति बैठी, कविकुल करत प्रसंस ॥
क्रीड़ा करति जहाँ गोपी जन बैठि मनोरथ नाव ।
बार बार यह कहत गदाधर, देह सँवारौ दाँव ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri


## अथ रूप माधुरी

गिरिधरलाल जू अतिराजैं।
देखत अंग अंग की शोभा कोटिमकरधुज लाजै॥
उन्नत वाम भाग बाहु कर पल्लव मनि मुद्रिका बिराजै।
जनु सुरराज गर्व पर्वत भेदन कौं चमकै गाजै॥
जननी जनक को हियो हुलसावत चल आडम्बर साजै।
गोपी बदन कमल वनमें दृग भ्रमर भ्रमत भ्राजै॥
हसि हसि कहत सखन सौं बातें तब जु दसन छबि छाजै।
प्रगट उदोत गदाधर मन में दीख तिमर भय भाजै॥

सोरठ

राधे, रूप अद्भुत रीति।
सहज जे प्रतिकूल तो तन, रहे छाँड़ि अनीति॥
कचनि रचना राहु ढिगही, मुदित वदन मयंक।
तिलक बान कमान दृग मृग, रहैं निपट निसंक॥
रतन जतननि जटित जुग ताटंक रबि रहे छाज।
तदपि दूनी जोति मोतिन, मण्डली उडुराज॥
अधर सुधर सुपक्व विम्बा, सुभग दसन अनार।
धीर धरिकै कीर नासा, करत नहिं संचार॥
नील पट तम जोन्ह तन छबि, संग रङ्ग रसाल।
कोक जुगल उरोज परसत नाहिं भुजा मृनाल॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

निकट कटि केहरी पै, गज गति न मैटी जाति ।
प्रगट गज गति जहां जंघा, कदलि रुचि हुलसाति ॥
गदाधर बलि जाइ बूझत, लगत है मन त्रास ।
इति संपति सहित क्यों पिय, देत नाहि मवास ॥

( सोरठ ) राधेजूके बदन की शोभा ।

जाहि देख मयंक थाक्यो कृष्ण मन लोभा ॥
सीस फूल सिर उपर सोहे भाल कुमकुम विंदु ।
मानो गिरि सुमेरु उपर वस्यो रवि अरु इंदु ॥
दिये आड कुरंगमदकी मलय केसर सींच ।
मानो सुरगुरु उदय कीनो हेमगिरि के बीच ॥
तनक तरोना श्रवन सोहे कनक रत्न जराय ।
मानों रविकी किरण पसरी रही भूपर छाय ॥
चंचल नयन कुरंग मानों सजल जलद जल एन ।
चिते बांकी चितवनीमें उभय मारे मेंन ॥
सुभग नासावेसर सोहे स्वाति सुत राजें ।
निरख मुक्तन येही शोभा असुर गुरु लाजें ॥
अधर दशन तंबोल राजत सहज विहसत बाम ।
मानों दामिनी दशोदिशकी बसत एक ही धाम ॥
निरख प्रिया तनकी यह शोभा चिवुक शांवल विंद ।
मानों छबिकी जालमें पर्यो अलिसुत फंद ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


अंग अंगसो प्रेम बरखत सकल सुखकी मूरि।
राधेजूके चरणकी रज गदाधर सिर भूरि ॥

राग सारंग

लाडिली गिरिधरन पिया पिय नैंननि आनन्द देतिरी।
अति अनुपम गुन रुप माधुरी बरबस सरबसु लेतिरी ॥ ध्रु॥
वदन सदन सोभा को सोहै उपमाको कोऊ नाहिरी।
चन्द अमन्द लाज अर चितापरी कलंक मिसि छांहरी ॥
कच रचना में मांगा मोतिन की उपमा कहो विचारिरी।
अपनेहि वल मनहु निसाकर करत राहु बिदारिरी ॥
कनक दण्ड केसरि कोटि को लटकति लट भलि भांतिरी।
मानहु सुभग सुहाग भागकी बिजै धुजा फहरातिरी ॥
भौह मोहनी यन्त्र लिखि लिपि कबि काहू वन बखानिरी।
जाके निरखत मन मोहन कर मुरली गिरत न जानरी ॥
अंजनरञ्जित नैंन सलोंने सोभा हरिमन लागीरी।
स्याम रुपके पिवत पिवत नित सरस स्यामता लागीरी ॥
नासारुचिर रवारी सोहै उपमा अन अव रेखिरी।
लरत चकोर चंपल लोचन ढिग पाचक कनका देखिरी ॥
हसन-लसन अधरण अरुणाइ अति छबि बढ़ी अपाररी।
मनहुं रसाल मृदल पल्लव पर वगरायो घन साररी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


रचि अवतंस रसाल मञ्जरी फवी कपोल सुजातरी ।
मानहुं मैन मूर बैठ्यौ करि हरि मन मृग की घातरी ॥
खुटिला खुभी जराइ जग मगत मो पै जात न भाखिरी ।
मनहु मार हथियार आपनें एक ठोर धरि राखेरी ॥
कंठ कपोत पोति पुंजनि मे मनि मनि आं रंग रातेरी ।
मानहुं उतरि धरनि सुत यमुना नीर अन्हातेरी ॥
कंटकी सिरी दुलरी वरग्रीवां अति सुख सोभा साररी ।
नलिनी दलके जलज्यौं झलकत गज मोतिन के हाररी ॥
चौंकि चमक कचुंकी सारी कारी राते रंगरी ।
अरुन किरनि रही छाइ उदधिते निकसत प्रात पतंगरी ॥
अंगद बलय मुद्रिका नख छवि सोभित भुजा सुढाररी ।
जनु आचूल मूलत फूली कनक लता की डाररी ॥
पीन उरोज कुंभ रोमावलि राजति ता अति सुंडरी ।
मानहु मदन मतुंग धस्योहै नाभि अमृत के कुंडरी ॥
उपमा एक ओर मन आवत बुधिबल करत विचाररी ।
मानहु सैल सिंधुतें निकिसी नील यमुन जल धाररी ॥
गुरु नितम्ब किंकिनी कनककी रुनझुन रावरी ।
मानहु मिले करत कोलाहल कलबिंकनिके सावरी ॥
सुनियति मनि मंजीर धीर धनि उपमा न आवै हाथरी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



मन मोहन मोहनकों जनु गुनियत मोहन गाथरी ॥
अरुण चरण पंकज नख दीपति जावक चित्र विचित्ररी ।
फूली सांझ माझ मानौ जे झलकत विमल नक्षत्ररी ॥
अद्‌भुत अखिल लोककी सोभा रोमरोम रहि पूरिरी ।
गति विलास हिय हारिमानि गजडारत सिरपर धुरिरी ॥
करि साहस यह कहत गदाधर सहि कविकुल उपहासरी ।
आपनें प्रान नाथ मिलि स्वामिनि मोमन करहु निवासरी ॥

गौरी—आजु ब्रजराज को कुँवर बनते बन्यो,
देखि आवत मधुर अधर रंजित बेनु ।
मधुर कल गान निज नाम सुनि स्रवन पुट
परम प्रमुदित बदन फेरि हूँकति धेनु ॥
मद विघूर्णित नैन मंद बिहँसनि बैन
कुटिल अलकावली ललित गोपद रेनु ।
ग्वाल बालनि जाल करत कोलाहलनि
सृंग दल ताल धुनि रचत संचत चैनु ॥
मुकुट की लटक अरु चटक पटपीत की
प्रगट अंकुरित गोपी मनहिं मैनु ।
कहि गदाधर जु इहि न्याय व्रज सुंदरी
विमल बनमाल के बीच चाहतु ऐनु ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



## मानके पद

आजमाई रिझाई सारंग नैंनी ।

अतिरस मीठी ताननि काननि काननिमें अमृत सो बरसत
अखिया जल झलमलाइ आई भई तन पुलकनि श्रेणी ॥
आपु तकति करता लदेत दीनो न जाइ मुरझाइ भाइ मीनी गजगैनी
प्रेमपागि उरलागि रही गदाधर प्रभुके पिय अंग अंग सुखदैनी

मानिनी की जियै मानु नहि स्यामसों ।

सकलकिनकरहि निज दिब्यदामिनिप्रभा नीलनवजलद अभिरामसों
देखि उर आपनें ज्यों बिम्ब जीत इंदुनीलमनिकलधौत दामसों
सुख सखीजन जुगल जगमगात जोइजि होइ अति आरति कामसों
लाल गोपाल मन ध्यान तेरो धरें रसन रट प्रगट तव नामसों ।
अनुख यह मोहि दत्तन विचल नाहु नेह नागरि प्रकृति वामसौं ॥
कहत बडी वेर भई अर्धजामिनि गई आइ रह्यो भोर युग यामसौं ।
अब धरनि धर पाइ चूले गदाधर जाइ मानि रुचि कुंज नव धामसौं ॥

भज भामिनी कमल लोचन कुवर आजु ।

कमल कोमल दलनि सहज सज्जा रची साजि तकत नव पंथ युवराजु ॥
मान बलिहार करिडारि नंदलाल पर आनमन मिलन को साजु ।
लाल तमाल रति राज गज बस परे अब नहीं बिलंबसों काजु ॥
सुनत सखि वचन मन प्रेम बिभ्वल भई उठिचली तन सुरति बाजु ।
मिलत नव कुंज मंदिर गदाधर भयो हंस हंसी सुख समाजु ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


कल्याण

यातें हो कहत करण केलि ।
शुनिरी सखी तेरे मन मंडप बोंडी यौवन वेलि ॥
प्रीति कुसुम आनन्द मकरन्द हरही आलि अलि झेलि ।
गदाधर प्रभु अंग संग सुफल फलि तुसखिसुमुखि सहेली ।

दानके पद ( राग सूहो )

जौन चले कुलकर्म्म कहा यह रीति गानि ।
कनककूट द्वै दै अपने वबा ज्यौं और गाइनिके टोल बोलि द्विज
ऐसे कहांऊ दानी ॥ १ ॥ याहा धन गहनौ पहि रैंगी सुत
की संपति व्रजपतिजूकी रानी । भलैं हो भलैं गदाधर के प्रभु
प्रभु जीयकी बात मै जानी ॥ २ ॥

अथ रासकेपद

नचत गोपाल फणिफणारंगे । मनहु मनि नील के खंभ ऊपर
सिखी नृत्य आरम्भ किय अति उतंगे ॥ ध्रु ॥ प्रथम तरुतुंग
चढ़ि झंप यमुना लई सुभग पट पीत कटि तट लपेटे ।
एक घनतें निकासि और घनकौं चल्यौ श्याम घन मनहु
चपलाहि भेटे ॥ १ ॥ बहुरिफिरि झगारि चढ़ि सीस तंडव
रच्यौ परसि पदतलनि मनि रंगु सुहायो । चरण पट ता
विष झार झरहत जतु ते लतपतेक हू नीरनायो ॥ २ ॥ दुस

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



हरि भारतें कंठ आये लटकि परसि करै कवि सकल उपमा विचारा। मनहु नखचन्द्र की चन्द्रिका त्रासते उरपि नीचीधसी तिमिर धारा ॥ ३ ॥ गगन गुणगननि गुण गान गंधर्व करै जै करै देव मुनि पहुप वरषै। तरनिजा तीर भरभीर आभीर कुल धीरमन मोझ धरि अधिक हरषै ॥ ४ ॥ विवश भूषण वसन सिथिल रसना कसन शरण आई जबहि नागनारी। कान्ह करुणा करी चिन्ह पद सिर धरे मेटि खगराज की त्रास मारो ॥ ५ ॥ पूजि हरि कों चल्यौ नाग रमणकदीप श्यामजू मुदित जल तीर आये। कहि गदाधर जु आनन्द कुलाहल भयौ सकल व्रजजन निकिरि प्राण पाये ॥ ६ ॥

## राग सारंग

संगीत रस कुशल नृत्य आवेस यश लसति राधा रास मंडल विहारणी। दिव्यगति चरण चारण चक्रवर्त्तिनी कुवर श्यामल मनोहरण मन हारिणी ॥ १ ॥ लोचन विलास मृदुहास मन उल्लास नन्द नन्दन मनसि मोद विस्तारिणी। मृदुल पदविन्यास चलति वलयावली किंकिणी मंजु मंजीर झन कारिणी ॥ २ ॥ रुप अनूपम कांति भांति जाति न बरनी पहिरि आभरण षोडश सुश्रृंगारिणी। मृदंग बीना तारस्वर पंच संचार चारुता चातुरी सार अनुसारिणी ॥३॥ उघटमुख सबदपीयूष वर्षित मनौ सींचि पीय श्रवणतन पुलक

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri


कुल कारिणी । कहि गदाधरजु गिरिराज धरतैं अधिक विदित रस ग्रंथ अद्भुत कला धारिणी ॥ ४ ॥

---

करत हरि नृत्य नवरंग राधासंग लेत नव गति भेद चर्च्चरी तालके । परस्पर दर्श रसमत्त भये तत्त थेई वचन रचना सुसंगीत सुरसालके ॥१॥ फरहरत वर्हिवर दूर हरत उरहा भर हरत भ्रमर वर विमल बन माल के । खिसत सित कुसुम शिर हसत कुंतल मनौ हुलस कल झलमलनि स्वेदकण भालके ॥ २ ॥ अंग अंगनि लटक मटक भंगुर भ्रुकुटि पट कपट ताल कोमल चरण चालके । चमक चल कुंडलनि दमक दशनावली विविध व्यंजित भाव लोचन विशाल के ॥ ३ ॥ बजत अनुसार द्रमि द्रमि मृदंग निनाद झमकि झंझंकार किंकिणी जाल के । तरल ताटंक तडकित तडित नील नव जलदपै यौं विराजति प्रिया पाम गोपाल के ॥ ४ ॥ बृजयुवती जूथ अगणित वदन चन्द्रमा चंद भये मन्द उदचोत तिहिं कालके । मुदित अनुराग वस राग रागिनि तान गान गत गन्ध्रवं रंभादि सुरबाल के ॥ ५ ॥ गगन चर सघन रस मग्न वर्षत फूलवारि डारत रत्न यत्न भरिथाल के । येक रसना गदाधर न वरनत बनै चरित अद्भुत कुवर गिरिधरन लालके

## केदार

आजु मोहन रची रासरस मंडली । उदित पूर्ण निशानाथ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


निर्मल दिशा निरखि दिनकरसुता सुभग पुलिनस्थली ॥ध्रु॥ बीच हरि बीच हरिणाक्षि माला बनी, तरुण तापिच्छ तरु मनु कनक कदली रली। पवन वश चपल दल ढुलनिसी देखियति चारु हस्तक भेद भांति भारी भली ॥ १ ॥ चरण विन्यास कर्पूर कुंकुम रेणु पूरि रही दिश विदिश कुंजवन की गली। कुन्द मन्दार अरविन्द मकरंद मर कुंज पुंजनि मिले मजु गुंजत अली ॥ २ ॥ गान रस तानके बाणवेध्यौ विश्वविषधानजानि अभिमान मुनि ध्यान रति दलमली। अधर गिरिधरण कैं लागि अनुराग की जगत बिजई भई मुरलिका काकली ॥ ३ ॥ रसभरे मण्डराजत खरे देखि दोऊ नंदनन्दन कुवर वृषभानकी लली। देखि अनिमेष गदाधरजू लोचन युगल लेखि जीय अपनी भागमहिमा फली

राग बिलावल

निर्त्तत राधानन्दकिशोर।

ताल मृदंग सहचरी बजावत बिच बिच मोहन मुरली कलघोर ॥ उरप तिरप पग धरत धरणिपर मंडल फिरत भुजन सुजजोर। शोभा अमित बिलोक गदाधर रीझ रीझ डारत तृण तोर ॥

विवाह केपद ( रागजैतश्री )

दुलह सुंदर श्याम मनोहर दुलहिनि नवल किशोरी जू। मंगल रूप लोकलोचनकौं रचो विधाता जोरी जू ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



रास विलास ब्याह विधि नित्य प्रति थिरचरमनआनन्दाजू।
शारद निशा दिशा सब निर्मल डहडहे पूरण चन्दाजू॥
यमुना पुलिन नलिन रासरंजित सुभग संचारी चौरीजू।
बोलत मधुर वेदवाणी सी मिले मौर अरु मौरी जू॥
गोपीजूरी जनु कंजनि कलिनिको आभर मोर बनायो जू।
झलकत विमल नक्षत्र मुक्तासे गगन वितान तनायौजू॥
मधुर कंठ कोकिला सवासिनि गीत सरस स्वर गावैजू।
बाजेद्वार पर सकल देव मुनि बहु बाजंत्र बजावैजू॥
आस पाश लहलही बनबेली जुरी जानौ कौतुक हारीजू।
कुसुम नैन अलि अंजन दीनो नव पल्लव तन सारीजू॥
सारस हंस कपोत कीर द्विज शाखागोत्र उचारैंजू।
नाचत मयूर नौछावरि करिकरि द्रुमनिज फुलनि डारैंजू॥
फूले द्रुम कुसुमन की शोभा असीत पीत सितराते जू।
चोवा चंदन वंदन केसरि छिरके मानौ वरातेजू॥
इहिं विधि सदा विलासरासरस अगणित कल्पवितायेजू।
ते सुख शुक शिव शारद नारद शेष सहस्र मुख गायेजू॥
और कहां कहि सकै गदाधर मोहन मधुर विलासाजू।
रसना सहज शुद्ध करिवेकौं गावत हरिके दासा जू॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


## काफी

सुन्दर सेहरो बन्यों । लालजूको सेहरो बन्यों ॥ टेक ॥
सेहरो हरि दुलह के कुसुम भांति भांति ।
जाहि देख लघुलागत बने मोतिनकी कांत ॥
श्रवणन हरि दूलहके बने हैं करणफूल ।
छवि रवीकी जग मगाति जोति न समतूल ॥
कुंकुम को तिलक बन्यों हे ललाट ।
मानो यहां विधि सवारी मनसिजकी बाट ॥
मुक्ताफल नासाको सबको चित चोरें ।
हसन दसन रसन ज़्योति अधर रंग तंबोरें ॥
दुलरी गज मोतिनकी मध्य माणिक दमके ।
मानो नक्षत्र पंक्तिमें मंगलकी चमके ॥
भुज भुजंग अंगकी छबि कहा कहुं ।
मानो पहुंची रुचिर रचि रीझ रीझ रहुं ॥
वरण वरण फूलन की माला मन मोहे ।
रति पति के झुलनासों झुलना उर सोहे ॥
कटितट पर किंकिणी रुण झुण राव ।
कूजत कल हंसन कों नूपुर सुभाव ॥
श्री वृन्दावन भूमि मंडप बच कुंज ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


बदत बेदबाणी सी मधुपन के पुंज ॥
दुलह ब्रजराज कुंवर दुलहनि ब्रजनारी ।
शरद निशारास बिलास सबही सुखकारी ॥
कोकिल कल गावत हैं मंगल कल गीत ।
बाजे द्वार देव मुनि पूजी सबरीत ॥
फूली द्रुमलता बेली श्वेतपीतराती ।
चंदन बंदन केसर सो चरचे बराती ॥
यह सुख जो हृदय रहे तो मिटे मन दाहु ।
कहत हैं गदाधर चित इत उत नहिं जाहु ॥

विहागरो

प्रथम ग्रथ व्याह विधि ह्वै रही अब कंकन चारु विचार ।
हँसि हँसि कसिकसि ग्रन्थिबनावें नवल निपुन ब्रजनारि ॥
ना छूटै मोहन डोर नाही बलिबांध्यो लडैती के पांनि ॥ध्रु॥
बडे हौहुतौ छोरि औहौ सुनहु घोकके राइ ।
करजोरो विनती करौ कै छुवहि प्रियाजू के पाई ॥
यह न होइ गिरिको धरिबौ हो सुनहु कुंवर गोपीनाथ ।
बहुत कहावत हे आपुन अब काहे कांपन लागे हाथ ॥
स्वेद सिथिल कर पल्लव हरिलीनो छोरि सम्हारि ।
किलकि कहैं सखि स्याम की अब तुम छोरहु सुकुवारि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


ना छूटै लडैती डोर नाहो तुमकत करति सहाउ छाडहु निपट सयानु
औरन देहु कुंवरि को कंकन कै बोलहु वृषभानु ॥
कमल कमल करि वरनही हो पानि पिया के लाल ।
अवकविकुल सोचे भए जए है कटीले नाल ॥
ज्यौं ज्यौं छूटै डोरना हौ त्यौं त्यौं बंधे प्रेमकी डोरि ।
देखि दुहुन की रीति सखि सब हसहि मुदित मुख मोरि ॥
लीला ललित मुकुन्द चन्दकी कर रसिक रस पान ।
अविचल होंहु सदा युगयुग यह जोरी बलि कल्यान ॥

राग बिहाग

युगल वर आवत हें गठ जो रें ।
संग सोभित वृषभान नन्दिनी ललितादिक तृणतो रें ॥
सीस सेहरो वन्यौं लालकें निरख हसत मुख मो रें ।
निरख निरख बल जाय गदाधर छबिन बढ़ी कछु थो रें ॥

बिलावल

दिन दूलह मेरो कुँवर कन्हैया ।
नित्य प्रति सखा सिंगार सम्भारत नित आरती उतारत मैया ॥
नित प्रति गीत वादित्र मंगल धुनि नित सुर मुनिवर विरद कहैया ।
सिरपर श्री व्रजराज विराजत तैसेई ढिग वलनिधि बल भैया ॥
नित प्रति रास विलास व्याह विधि नित सुर तिय सुमनिनि बरषैया ।

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


नित नवनव आनन्द वारनिधि नितही गदाधर लेत बलैया ॥

## ज्योनार के पद

### ( सारंग )

श्री वृषभान सदन भोजनकौं नन्दादिक सब आयेजू ।
तिनके चरण धरणकौं कोमल पट पावडे बिछायेजू ॥
रामकृष्ण दोऊ वीर वीराजत गौर श्याम युग चंदाजू ।
जिनकौ रुप अनूप माधुरी मुनिजन मनको फंदाजू ॥
चंदन घसि मृगमद केसरिसौं भोजन भूमि लिपाईजू ।
अत्युज्वल कर्पूर चूर करि रचना चौक पुराईजू ॥
मंडप छायौ कमल कोमल दल सीतल छांह सुहाईजू ।
आसपास परदा फूलनि के माला जाल गुहाईजू ॥
सीतल स्वच्छ सकुंकुमके जलसों सबके चरण पखारेजू ।
करि आदर करजोरि सबनिसौं कनक पीट बैठारेजू ।
राजत गोपराज भूपति संगविमल बेष आभीराजू ॥
मानो समाज राज हंसनिकौ मानसरोवरतीराजू ।
धरे आनिकैं फटिक कटोरा अरु कंचन की थारीजू ॥
ढ़िग ढ़िग धरी सबनिकै सुन्दर भरि सीतल जल भारीजू ।
परोसन लागे पुरोहित हितसों जिनकी विदित बडाईजू ।
जिनकैं दर्श स्पर्श संभाषण जनौ सुरसरिता आईजू ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri


गावन लगी गीत गारीनिके सुकुमारी ब्रजनारीजू ।
अत्यनुपम अनुराग परस्पर वह सुख शोभा न्यारीजू ॥
ओदनकी उज्वलता मानऊँ स्वयशरुपधरि आयौ जू ।
पीतप हित प्रीति जनु इनिको प्रकट ही आय जनायौजू ॥
वरी वरा अरु खरल बिजौरा पापर पीत बनायेजू ।
वर्ण कनकके वेसनकेजु प्रकार न जात गणायैजू ॥
आम्ल वेल आंब इंदुक निबू फल भले संधानैंजू ।
सद सिरा सुरभि रस और घृत सौरभ घ्राण अघानैंजू ॥
सौंधाग्रासित खोहा सिखरनि अंबरस रसना तोषेजू ।
आम्लरस तीक्ष्णरस कटुरस लौनमिले रस पोषेजू ॥
फीनिसुभग जलेबी मोदक घेवर बहु बिस्ताराजू ।
मानहु भये प्रकट भूतलपर अमृत के ये अवताराजू ॥
शीतल सुभग सुजात सुकोमल विविध भांति पक्वान्ना जू ।
तेउ प्रकार परे नही कबंहु सुरपतिहूके कानाजू ॥
और बहुत विधि षटरस व्यञ्जन परसन बारेहारेजू ।
यदयपि ये सरस्वतीकीसी मति तदपि न जात संभारेजू ॥
करि आचमन उठे सब बृजजन मनमें अति सच पायेजू ।
भूषण पट सौंधे बीरनिसौं पूजित सदन पधारेजू ॥
वह सोभा वह संपति वह सुख कापैं जात बखान्यौजू ।
जूठनि जाय उठाय गदाधर भाग्य आपनौ मान्यौजू ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri


( शीतवर्णन ) यह रीतुनीकी लागत सीतकी।
अंशन भुजधर पोढ़े पियप्यारी बात करत रसरीतकी॥
बन गई एक रजाई भीतर राधामोहन मीतकी।
गदाधर प्रभु हँसत सरसरितु चाह परस्पर जीतकी॥

अथ बसंत ऋतु वर्णन

देखोऊ प्यारी कुंजबिहारी मूरति बंत बसंत।
भोरी तरुण तरुलता तनमैं मनसिज रस बरसंत॥
अरुण अधर नव पल्लव शोभा बिहसनि कुसुम बिकाश।
फूले बिमल कमल से लोचन सूचित मनको हुलास॥
चल चूर्ण कुन्तल अलिमाला मुरली कोकिल नाद।
देखीयति गोपीजन बनराई मुदित मदन उनमाद॥
सहज सुवास स्वास मलयानिल लागत सदानि सुहायौ।
श्री राधामाधवी गदाधर प्रभु परसत सुखपायौ॥

---

अद्भुत शोभा वृन्दाबनकी देखो नन्दकुमार।
कंत बसंत जान आवत बन बेलिन कियो शृंगार॥
पल्लव बरण बरण तन पहरे बरण बरण फल फूल।
येतो अधिक सुहाये लागत मनो आभरण समतूल॥
बालक बिहग अनंग रंग भरि बाजत मनो बधाई।
मंगलगीत गायबेको जानो कोकिल बधू बुलाई॥
बहत मलय मारुत परिचारक सबको मन संतोषे।

Dr. Urmila Sharma Collection; Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्विज भोजन सो होत अलिन के मधु मकरन्द परोसे ॥
सुनि सखि वचन गदाधर प्रभुके चलो प्रीतम पै जैये ।
नव निकुंज महल मंडप में हिलमिल पंचम गैये ॥ ५ ॥
तेरी नवल तरुणता नव बसंत । नव नव विलास उपजत अनन्त ॥
नव अरुणाधर पल्लव रसाल । फूले विमल कमल लोचन विशाल ॥
चल भृकुटी भंग भृंगनि की पांति । मृदु हसनि लसनि कुसुमनिकी कांति
भई प्रकट अल्प रोमावलि मौर । स्वास सुरभिमलय पवन झकोर ॥
फले फूल उरोज सुन्दर सुठान । मधु मधुर बोलनि कोकिला गान ॥
देखत मोहे ब्रज कुंवरराय । बाढ़्यौ मनमन्मथ चौगुनौ चाय ॥
तोहि मिलि विलस्यौ चाहत हैं स्याम । जाहि देखत लज्जितकोटिकाम
तब चलीचरणमंथरबिहार । रन झनन झनन नूपुर झंकार ॥
पुलकित गोकुल कुलपति कुमार । मिलि भयौ गदाधर सुख अपार

श्री श्री महाप्रभु गौरचन्द्र जीके होरी के पद

खेलत फाग रंग रह्यो सजनी नागर गौर गोपाल ।
जूट लटक छन्दक चटकारे शिर घुंघरारे बार ॥
ता पर माल मालती मधुकर मधुकरि करत गुंजार ॥ध्रु॥
अलकन झलक तिलक ललकत चमकत श्रुति कुंडल युगगंड ।
अमलकमल लोहित लोचन घन बरखत धार अखंड ॥
भौंह नटन नासिका निकाई बन्धु अधर सुरंग ।
दमकनदसन हसन आनन छवि बलिबलि कोटि मयंक ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


कराठी कराठ माल उर ऊपर पचरंग हार समेत ।
बीच उर बसी जटित लालकल उदित अरुण छबि देत ॥
भुज गजराज सुराडपर मंडित अंगद वलय सुठौन ।
पहुंचि मुदिरिन करनख मिलि शोभा वरने कविकोन ॥
कटि केहरि पहिरे पट झीनों पटुका बांधि अमेठ ।
चन्दन चरचि ओढ़ि उपरैना दरसत सरस अंगेठ ॥
अरुण चरण नखरावलि रंजन गजंन पल्लव राग ।
जुगल जलजदल शेखर मानों राकेश भये दश भाग ॥
बलि पैंजनिध्वनि सुनि सज्जित अति लज्जित चटक मराल ।
कबहु चपलगति चलत ललित अति मत्तगयंदकी चाल ॥
नित्यानन्द राम सुन्दर पुरुषोत्तम आदिक संग ।
उडत अबीर गुलाल घुमड में उपजत भावतरंग ॥
अद्वैत साज समाज कुसुम जल छिरक करत किलकार ।
निरख सगण श्रीवास माधुरी रहत अपनपो हार ॥
दामोदर नरहरि सहचर मिलि गावत केलि धमार ।
मुख माढ़त झक झोरत बोरत अरगजा सहज संभार ॥
निरखि गदाधर आवेशित चित पुलकित नखसिख अंग मुरार ॥
होरी रंग भर गावें सोई खिलार डफलिये बजावें ।
गाय गाय के रंग उपजावे जोई रीझे वाकों फेर सुनावें ॥
तब अरगजे मरगजे वागे नयन सेन दें रस उपजावे ।
कहियत नायक दक्षण लक्षण आप गदाधर नाम कहावे ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

## काफी रायसौ

सकल कुंवर गोकुलके निकसे खेलन फाग ।
हरि हलधर मध्य नायक अंतर अति अनुराग ॥
ओलन बूका बंदन रोरी हरद गुलाल ।
बाजति मधुर महुवरि मुरली अरु डफ ताल ॥
कनक कलश केसरि भरि कावरि किंकर कंध ।
औरु कहां लगकहीये भाजन भरे सुगंध ॥
लै कुंसुमनिकी गेंदुक करत परस्पर मार ।
छूटति फैंट लटपटी बिखरि परत घनसार ॥
हँसत हंसावत गावत छिरकत फिरत अबीर ।
भीजि लगे तन शोभत रंगरंग रंजित चीर ॥
कोलाहल ग्वालनकौ सुनि गोपिका अपार ।
टोलनिटोलनि निकसी करि सोल्हे शृंगार ॥
रूप माधुरी जिनकी कवि पैं कही न जाय ।
जिनहि सची रति रंभा पगहू परति लजाय ॥
अति ही सरस स्वर गावत कोऊ झील कोऊ घोर ।
जिनही सुनत नही भावै वीणा नाद कठोर ॥
ललित गली गोकुल की होत विविध रंग खेल ।
अगर सहित कुंकुम के चली धरनि पर रेल ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


गयौ गुलाल गगन चढ़ि भयौ व्रज सदन सुरंग ।
मनौ खुर खेह उड़ी है सेना सजी अनंग ॥
सींचत हरि नानारंग भाजत गोपिनि गात ।
मानों उमगि बसन तैं अन्तर प्रेम चुचात ॥
लगे वनिता वदननिसौं कृष्णा गरके पंक ।
परि पूर्ण चंदनिते मनौ ल्वै चल्यौ कलंक ॥
बोलत ग्वाल वराती हमारे हरिकौं है ब्याह ।
दुलहिनि गोपकिशोरी मोहन सबकौ नाह ॥
सुनि सब गोपी कीपी हलधर पकरे जाय ।
अंजन लै दृग आंजि मुख मृगमद लपटाय ॥
पुनि सबमिलि जुरिआंई पकरे मदन गोपाल ।
कनक कदलि मंडलमै शोभत तरुण तमाल ॥
जब वृषभान दुलारी हरि भरिलीनी अंक ।
कही न जाय ता सुखकी जानौ निधिपाई रंक ॥
कहि न सकै कौऊ हरि के अगणित चरित विचित्र ।
जिहि तिहि भांति गदाधर रसना करऊ पवित्र ॥ १७ ॥

राग कान्हरौ

हो हो हो सब खेलत होरी । मध्य हलधर गिरिधर की जोरी ॥
तैसो यै परी पूर्ण पूर्णमासी । निमल जोन्ह वर्ष सुखरासी ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


खोरिनि खोरि निकरत कलोलैं । हसत हसावत गावत टोलैं ॥
इत ये वदत मनोहर गारी । उत झुमक गावति वृजनारी ॥
उडि गुलाल छाई नभवीच । मची अगरसतकुंकुम कीच ॥
चिरजीवऊ सुंदर युवराज । युगयुग नन्दराय को राज ॥
कहे न जाहि गोकुल के चाय । देखि गदाधर बलि बलि जाय ॥

राग काफी

श्री गोकुल राजकुमार लाल रंगभीनैं हैं ।
खेलत डोलत फाग सखा संग लीनै है ॥
चित्र विचित्र सुवेष सबै अनुकूलैं हैं ।
राजत रंग सुरंग सरोजसे फूले हैं ॥
एकनिकैं करकंज हैं जोरी जराय की ।
एकनिकैं पिचकारी हैं हेम भरायकी ॥
कुंकुम घोरि भरे घट हाटकके घनैं ।
पकंज पुंज पराग मृगमदसौं सनै ॥
ढोलक ढोल नीसान मुरुज रुंज बाजहीं ।
मैनके मेघ मनौ रस वृष्टिसौं गाजही ॥
ध्वनि सुनिकैं अकुलाय चली वृजनागरी ।
एकते एक महागुण रूपकी आगरी ॥
श्रीराधाकैं संग सुहाई अनेक सहेली हैं ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri


कामके कानन की मानों कंचनवेली है ॥
वेष वनायेकी भांति न जाति बखानी है ।
जेती केती उपमा मनमैं बिलखानी है ॥
कोकिल कूर कहा स्वर भेदहि जानई ।
कुंजर कायर कौन कहा गति ठानई ॥
कदलिनि कौ जु स्वभाव परयौ अति कंपकौ ।
हेम लयौ हठ नेम सुपावक झंपकौ ॥ १० ॥
खंजन कंजसों लागि रहे गति लासतैं ।
केहरि कंदर मन्दिर मै दुरे त्रासतैं ॥
पंकमे पकंज मूल रहे छिपि लाजतैं ।
नित्य प्रकास बिलास मिट्यौ द्विजराजतैं ॥
ताल पखावज आवज बाजत जंत्र है ।
गान मनोहर मैनके मोहन मंत्र है ॥
सो इतकी उतकी ध्वनि लागैं सुहाई हैं ।
मानौ अनंगके आंगन बाजे बधाई है ॥
गोकुल खोरीनि गोरीनि खेल मचायौ हैं ।
रंग सुरंग अबीरसौं अंबर छायौ हैं ॥
दृष्टिकरी पिचकारी भरी अनुरागसौं ।
जाय लगी बृजराज लला बडभागसौं ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



मंजुल हाल कपूरकी धूरि उडांवंही ।
सुन्दरश्याम सुजान के नैन जुडावंही ॥
लाल गोपाल कौ घूंघरी में मुखथौ लसै ।
प्रात पतंग प्रभा मधि कंचन कंजसै ॥
आइ घिरी अबला सबलाल गोपाल कौं ।
हेमलता लपटी मनौ श्याम तमाल सौं ॥
गावति गारीनि नारीन ही झुकि प्रीतकी ।
बात बनावति आपनो आपनी जीतकी ॥
कोऊ गहैं पट पीत कोऊ बन दामकौं ।
कोऊ निशंक ह्वै अंक भरै घनश्याम कौं ॥
श्यामके सीसते स्यामाजू केसरि ढोरी है ।
दै करतारी हसैं सब हो हो होरी हैं ॥
ऐसोई ध्यान सदा हरिकौ हीयैं जौ रहै ।
तौपे गदाधर वाके भागकी को कहै ॥

---

बाढ्यो अति आनन्द खेलत फाग हरी ।
संग सकल आभीर अरगजा माट भरी ॥
ताल मृदंग उपंग मुरज डफ बेन धुनि ।
जग मोहन मुरली भई छुड़ावत ध्यान मुनि ॥
बाजत पटह निसान अरु कण्ठ ताल धरी ।
बीच मृदुल मुख चंग उपंगन सुरति करी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


रतन जटित पिचकारी केसर घोरि भरी ।
उडत अमित गुलाल अंवरगति अरुनकरी ॥
बोले सुवल श्रीदामाश्रीमुख स्याम कह्यो ।
चलि वरसानें जांय श्री राधा जायगहो ॥
गावत अगणित गोप चले सब रंग भरे ।
बोलत हो हो होरी श्रीराधा द्वारखरे ॥
श्रवण सुनत सब नारी द्वारन झुंड भई ।
अनेक अरगजा घोरि सनमुख स्याम रही ॥
धाय गहे बलवीर धीर मन कछु न रही ।
चंदन वंदन रोरी कपोल न लाय गही ॥
दृगसों कज्जल लावति गावति गारीखरी ।
मृगमद चंदन कुंकुम डारत माट भरी ॥
वेनी बनावत सीस हरिजू के हाथ गये ।
श्री राधा वदन निहारत वारत प्रानदये ॥१०॥
मोहन दीनी सेन बलदाऊ जाय गये ।
फगुवा देहु मंगाय युवतिनथोंजु कहें ॥
मोहन मनहिं विचारिकें बलिहि बचाय लये ।
जो मांग्यो सो दीनों मोहन मगन भये ॥
ब्रजही चले ब्रजराज गावत रंग भरे ।
देत परस्पर गारि द्वारें जाय खरे ॥ ११ ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


यह लीला रस सिन्धु को कवि वरनि सके ।
दास गदाधर जाय निरखत नयन थके ॥ १४ ॥

---

ग हो हो हो होरी खेले लाडिली वृषभान की ।
गोरे गात समात न शोभा मोहनी स्याम सुजान को ॥
अरगजा भरी फबी सारी अति कचुंकी परम सुहावनी ।
वेणी सरस गुही मृगनयनी प्रीतम हित उपजावनी ॥
वारों मृग खंजन अंजन युत नयन बने अनियारे ।
जिनकी तनक कटाक्ष भये वश्य गिरिधर रूप उजारे ॥
विद्रुम अधर मधुर मृदु मुसकन बोलन हित रसभीना ।
गोल कपोल अमोल अलक झलकत पुलकित अति झीनी ॥
श्री मोहनजूके सुखके हित नखसिख भूषण कीनें ।
कंचन मणि रत्ननसों खचित शोभा प्रति अंगन दीनें ॥
व सिंगार सुकुमार कुंवरि खेलन निकसी अति सोहे ।
न भई सहचरीयां कहत लख सुरवनितान के मनमोहे ॥
ग अलि रस रंगरली एक एकते रूप उजारी ।
सी कौन तरुणी त्रिभुवनमें जिन देख न देह बिसारी ॥
क भरी शोभा सुख विलसत फूलनकी गेंदुक लीनें ।
क लीने फूलन की छरी मृगमद केशरसों पटभीनें ॥
क भरी अनुराग फागलीने पोहोप पराग सुहाई ।
क लीये है गुलाल बहुबरण बरण एकदाई ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



कंचनके कलशन केसररंग संगलीयें बहुदासी ।
और विविध रंगलिये सोहत मोहन जहां कमलासी ॥
गावत मिल मधुरेस्वरसों शिवक्रोधदग्धसुनमदन जियो ।
दाणी हूं धरणी धरयो बीणा थकित भई गयो मोहि हियो ॥
हसत लसत दरसत मुख शोभा बरषत सुखकी रासी ।
हरि मुखचन्द्र चकोर भई व्रज युवतिनकी अखियां प्यासी ॥
सुन ध्वनि श्रवण लाल मन मोहन सखन सहित खेलनकूं आये ।
बाढ़यो अतिरसरंग परस्पर भयोहे सबनके मन भाये ॥
दुहुं दिशतें भरभर रंगन छूटी छबिसों बहु पिचकारी ।
भीज लगे बागे अंग अंगन उत भीज लगी अंगनसारी ॥
तब आलीन झारिन भरभर बहु अबीर गुलाल उडायो ।
व्है रही धूंधर सुगन्ध महा भई धरणी अरुण अम्बर छायो ॥
बाजत विविध पखावज आवज बहुरुंज मुरज डफ ताल घने ।
लटक लटक अंसन भुज धरधर नाचत गावत ग्वाल बने ॥
भरत भगावत रस उपजावत भाजत राजत भांत भले ।
मार करे नवला कमलासी भांमिनि अंह नचाइ चलें ॥
छिरकत नवल वधू नव रंगन नवल लाल तन मन हुलसे ।
मानो नवलप्रेम वेलिनपर नवलनीर नीरद वरषे ॥
मगमदभर पिचकारी लाल भरप्यारीजू सरससनेह नए ।
भीजेचीर लागे अंगन अंगन अवलोक सरससुख नयन लए ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


तब दौरि गुलाल घूंधर कर जे चितवत चित्त विचित्र करखे ।
घेर लिये घनश्याम भामिनी दामिनीसी तन मन हरखे ॥
एक अरगजा मांडत मुख सुख भर आंजत लोचन छविसों ।
एक मांगत फगुवा भुजगहगहसों छवि कहि न परत कविसों ॥
रहिन परे उर अति सनेह भयो प्रकट कुसुमजल विमल लियो ।
केसर घोर प्रिया पिय ऊपर डारत उठ्यो हुलस हीयो ॥
विहस उठी देताल सखी सब कहत भई हो हो होरी ।
गदाधर प्रभु यह सदा विराजौ गौरस्याम सुंदर जोरी ॥

---

चलोरी होरी खेलें नंदके लालसों ।
रंग रंगीलो छेल छबीलो मोहन मदनगोपालसों ॥
मृगमद अबीर अरगजा केसर फेंट जुभरी हे गुलालसों ।
रुंज मुरज आवज बाजें रंग रह्यो करतालसों ॥ २ ॥
छिरकत भरत परस्पर सब मिल लाल हसत ब्रजलालसों ।
चंद्रावलि बलि रामसुख मांड्यो लटकत गजगति चालसों ॥
राधाजू अचानक आयगहे हरि वेंदी लागी भालसों ।
विप्र गदाधर मुख सुख निरखत सुख पायो दीनदयालसों ॥

राग पंचम

देखो देखो ब्रजकी वीथनि वीथनि खेलत हें हरि होरी ।
गीत विचित्र कोलाहल कौतुक संग सखा लख कोरी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


आईं झुमि झुमि झुंडन जुरि अगनित गोकुल गोरी।
तिनमें जुवती कदम्ब सिरोमनि राधा नवल किसोरी॥
छिरकत ग्वालबाल अवलन पर बूका वंदन रोरी।
अरुन अकास देखि संध्या भ्रम पुनि मनसा भई बौरी॥
रपटत चरन कीच अरगजाकी केसरि कुंकुम घोरी।
कही न जाय गदाधर पे कछु बुधिबल मति भई थोरी॥

काफी

मिलिखेले फाग वनमें वल्लव वाला।
संगखरे रसरंगभरे नवरंग त्रिभंगी लाला॥
वाजत वांसरि चंग उपंग पखावज आवज ताला।
गावत गारी देदे व्रजनारि मनोहर गीत रसाला॥
सींचत रंगनि अंग भरे वढ्यो प्रेम प्रवाह विसाला।
मेन सेन खुररेन उडी नभ छायो अवीर गुलाला॥
कंचन वेलि करे जनु केलि परी वीच श्यामतमाला।
धाई धरे हँसि अंक भरे छुटे केश टूटी ऊरमाला॥
देखि थकी भँवरी सवरी मृगि मोरि चकोरि नि जाला।
राधिका कृष्ण विलास सरोज गदाधर मानो मराला॥

---

रगमदे स्यामल अंग रगमगी कुंकुम खौरी।
रगमगी पाग सुरंग रगमगी पीत पिछोरी॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


पवन परसि फहरात चन्द्रिका रंग बिरंगी ।
दृष्टि नहीं ठहराति देखत अतिहु बिचंगी ॥
बदन सदन आनन्द कहुं उपमा नहि पैयै ।
वारत कोटिक चंद मनमैं अधिक लजैयै ॥
झलकत अलकत ललाट तिय जियकी फंदवारी ।
तिलक काम की बाढ़ जनु बिधि आप संवारी ॥
सोहैं भौहें अराल मैं अलि पंगति जानी ।
लोचन लोल बिसाल सुन्दरताकी रजधानी ॥
कुंडल मकराकार जगमग जगमग जोती ।
सुन्दर सजल सुढार सोहत नासाको मोती ॥
दसन वसन सुरसाल हसनि लसनि सुखदाई ।
दसन वसन सुरसाल उपमतउनपाई ॥
दुलरी कनक सुकान्तिता तर चंपकली है ।
उर पदकनिकी पांति राजत भांति भली है ॥
गज मोतिन को हार सोभा सुखद सुहाई ।
नील धरापर धार सुरसलिता की जनु आई ॥
भुज भुजंग अंगद छबि पोंचिनि के फूंदन ।
करि बिचार हारे कबि जे सब उपमाके षूंदन ॥
कटि पट कनक किंकिनी रन झन रन झन बाजैं ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



पग नूपुर धुनि सुनि सुनि कलहंसनि कुल लाजैं ॥
अंग अंग अनुपम भांति बान कछनी चटकीली ।
मद गयंद दुरिजात देखत गति लटकीली ॥
उपजत अगनित भांई व्रजजन नेंन सुखदीनों ।
मुरली मधुर बजाइ सब जगु बसकरि लीनों ॥
ऐसो रुप अनूप नेंननि देख्योई भावै ।
सकल फनीगनभूप वरनत अन्त न पावै ॥
मेरी मति अतिथोरी वरनत अतिहि अपार ।
तदपि गदाधर गावत उपजत आनन्द की धार ॥

राग—गारी

सुन्दर स्याम सुजान सिरोमनि देऊँ कहा कहि गारीजू ।
बड़े लोगके औगुन वरनत सकुच होत जिय मारीजू ॥
को करिसके पिताको निर्णय जाति पांति को जानेंजू ।
जिनके जिय जेसी बनि आवे तेसी भांति बखानेंजू ॥ २ ॥
माया कुटिल नटी तन चित यो कोन बडाई पाईजू ।
उन चंचल सब जगत विगोयो जहां तहां भइ हंसाईजू ॥
तुम पुनि प्रकट होइ बारे ते कोन भलाई कीनीजू ।
मुक्ति वधू उत्तम जन लायक ले अधमन कों दीनीजू ॥
बसि दस मास गर्भ माता के उन आसा करि जायेजू ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



सो घर छांडि जीभ के लालच व्है गये पूत परायेजू ॥
बारहीते गोकुल गोपिन के सूने गृह तुम डाटेजू ।
है निसंक तहां पैठि रंकलौं दधिके भाजन चाटेजू ॥
आपु कहाय बडेके ढोटा भात कृपनलौं माग्योंजू ।
मान भंगपर दूजैं जाचत नैंकु सँकोच न लाग्योंजू ॥
लरिकाईते गोपिनके तुम सूने भवन ढँढोरेजू ।
जमुना न्हात गोप कन्यन के निपट निलज पट चोरेजू ॥
बेन बजाय विलास कियो बन बोलि पराई नारीजू ।
वे बातें मुनिराज सभामें व्है निसंक विस्तारीजू ॥
सब कोउ कहत नन्दबाबा को घर भर्यो रतन अमोलेजू ।
गरेगुंजा सिरमोर पंखौवा गायनके संग डोलेजू ॥ १० ॥
राज सभा को बैठन हारो कोन त्रियन संग नाचेजू ।
अग्रज सहित राजमारग में कुबिजा देखत राचेजू ॥
अपनी सहोद्रा आपुही छलकरि अर्जुन संग भजाईजू ।
भोजन करि दासी सुत के घर जादों जाति लजाईजू ॥
लैलै भजे राजन की कन्या यह धों कोन भलाईजू ।
सत्य भामाजू गोत में ब्याही उलटी चाल चलाईजू ॥
बहिनि पिताकी सास कहाई नैंकहु लाज न आईजू ।
एते पर दीनीजु विधाता अखिल लोक ठकुराईजू ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


मोहन वसीकरण चट चेटक जंत्र मंत्र सब जानैंजू ।
तातें भले भले करि जाने भलें भलें जगमानैंजू ॥
वरनौं कहा यथामति मेरी वेदहू पार न पावैंजू ।
भट्ट गदाधर प्रभुकी महिमा गावत ही उर आवैंजू ॥

अथ वर्षा ऋतु वर्णन—राग मलार

हरिकी नवघन करत आरती ।
गर्ज्जनि मंद शंख ध्वनि सुनियति दादुरवेद भारती ॥
पचरंगपाट वाति सुर धनुकी दामिनी दीप उज्यारती ।
जल कन कुसुम जाल वरषावत बगगण चमरनि ढ़ारति ॥
घंटा ताल झांझि झालरि पिकचातक केकी कान ।
तातैं भयौ गदाधर प्रभुके श्यामल अंग समान ॥ २ ॥

मलार

देखो हरि पावस वधू बनी ।
साजि सिंगार अंग अंगनि प्रति तुमसों सनेह सनी ॥ टेक ॥
सघन घटा घूंघट में चपला चपल कटाछ विलास ।
ढरकि रहे धुरवा अलकावलि बग पंगति मृदुहास ॥
जलकनधार हारमोतिन के विपिनि वसन पहिराउ ।
ठोर ठोर सुर चाप सुरंग छवि जगमगि रह्यो जराउ ॥
कुसुम कदम्ब सुगन्ध वदन कौ लागत अधिक सुहायो ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


चंद्रवधू रुचि रुचिर विराजत चरण महावर लायौ ॥
दादुर मौर मोर चातक पिक सुनियत भूषन राउ ।
उपजै क्यौंन गदाधर प्रभुकें मन मनसिजरस भाउ ॥

मलार

सुखदवृन्दावन सुखदयमुनातट सुखदकुंज भवन रच्यौ है हिंडोरौ ।
सुखद कलपतरु सुखद फूलफल सुखद बहत सीतल पवन झकोरौ ॥ सुखद रंगीले संग सुखद रंगीली राधा सुखद करत केलि रतिपति जोरौ । सुखद सखी झुलावैं सुखद गीत गावैं सुखद गरज बरसत थोरौ थोरौ ॥ सुखद हरित भूमि सुखद बूंदनि रंग सुखद कोकिला कल सारस चकोरौ। सुखद वजावैं बैंन सुखद सुजस सुनि सुखद गदाधर चितकौ चोरौ ॥ १ ॥

झुलनके पद—राग धन्नासी

झुलहिं कुंवरि गोपरायनिकी मध्य राधा सुन्दरि सुकुमारि ॥ध्रु॥
प्रथमहि ऋतु पावस आरम्भ । श्री वृषभान मंगाये खंभ ॥
काढ़ि भवनतैं रत्न अमोल । रचि पचि रुचिर रच्यो हिंडोल ॥
वर्ण वर्ण चूनरी सुरंग । फवी लौनै सौंनैंसैं अंग ॥
राजत मणि आभरण रमणीय । जुही गुही कवरी कमणीय ॥
ऐक ते एक सुभग सुकुमारि । मनऊ रची विधि कुंकुमगारि ॥
जगमगाति नव यौवन ज्योति । निरखि नैन चक चौंधी होति ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri.



गावति सुघरि सरस स्वरगीत । झुलरावति मनमोहन मीत ॥
प्रेम विवश भई सकति न गाय । उमग्यौ आनन्द उर न समाय ॥
दुरि देखत गोकुल कुलराय । शोभा निरखत मन न अघाय ॥
मुदित गदाधर नन्दकिशोर । लोचन भये भरे के चोर ॥

मलार

रंग हिंडोलना मिलि झुलत ये फूलत दोऊ मनही मन ॥ध्रु॥
अरुणपीत वरवसन विराजत अति गोरें सावरें तन ।
वर्ण वर्ण सारी सुरंग शोभित गावैं आसपास युवती जन ॥
तैसीयैदामिनी दमकति छिनहिंछिन तैसे दिशदिश उमडे घन।
तैसी ये मंदमारुत झकौर मोरपिक चातक चर चरवन ॥
जव हरि हरषि देत झोटा बोलैं विहसि प्रिया हाहा नन ।
संभ्रम सहित गदाधर प्रभु हृदै लाय लई जीवन धन ॥

देवगंधार

झुलत नागरि नागरलाल ।
मंद मंद सब सखी झुलावति गावत गीत रसाल ॥
फरहराति पट पीत नीलकें अंचल चंचल चाल ।
मनहुँ परस्पर उँमगि ध्यान छबि प्रकट भई तिहि काल ॥
सिल सिलाति अति पिया सीसतें लटकति बेनी नाल ।
जनु पिय मुकट वरहि भ्रम वस तहँ व्याली विकल बिहाल ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


मल्ली माल पियाजूकी उरझी पिय तुलसी दलमाल ।
जनु सुरसरि तरुनितनया मिलिके सुख श्रेणीमराल ॥
शामल गौर परस्पर प्रति छवि सोभा विशदविशाल ।
निरखि गदाधर कुंवरि कुंवरकों मन परयौ रस जंजाल ॥

राग—रायसो

श्री वृन्दावनकुंजमे झुलत युगलकिशोर ।
मधुर मधुर स्वर गावही प्रेम सहित व्रजगोरि ॥
कुसुमन लता सुहावनी बोलत कोकिल मोर ।
मधुप मधुर गुंजारत चहुँ दिश दादुर शोर ॥
मन्द वृष्टि जलधर करें मलयज पवन झकोर ।
झूलत अति आनन्द भरि शोभित सुन्दर जोर ॥
रीझ देत वृषभानुजा पिय के प्रान ( उरज ) अकोर ।
शोभा निरखत गदाधर मुदित उभय कर जोर ॥

राग मारु

निज सुख पुंज वितान कुंज हिंडोरना झुलत स्याम सुजान ।
संग स्यामाजू परम प्रवीन, जाकें सदां रसिक आधीन ॥ध्रु॥
कंचन खंभ पेच जगमग जटित जराऊ सगरी ।
पन्ना खचित पिरोजा विच विच कनक कलश जगमगरि
गज मोतिनसों डांडी गूंथी चौंकी चमक सुरंगी ।
रमकत झमकत गहगह लटकत मोहन मदन त्रिभंगी ॥२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



मरुवे वेलन ध्वजा झालरी दयुति गहवर विस्तरणी।
चोकारत झोटनमें मानों कोकिल शब्द उच्चरणी।
चहूं और द्रुम वेली फूलीलता सघन गंभीर ।
जब रमकत दमकत दामिनीसी झलमल यमुना नीर॥
सारस हंस चकोर चातक पिक नेह धरे सब पेठे।
गुल्मलता द्रुम तनक न दीसत ऐसे जुर जुर बैठे॥
विजय सुभाव किये घन संपति उन्हर विपिन पर आए।
गरजत तरजत मधुर राग लिये केकी शब्द सुहाए॥
सहचरी गान करत ऊंचे स्वर श्री वृन्दावन गाजें।
मधुर मंजीर गगन उघटत सम सुभट पखावज बाजें॥
नीलाम्बर पहेरे नव नागरि लालकचुंकी सोहें।
भीज गई श्रमजलसों उज्जन प्रीतम को मन मोहें॥
लट सगमगी सलोल बदनपर सीस फूल उलटानों।
प्रिया की चौकीसों गिरिधर को चंद्रहार अरुझानौं॥
हग रसाल रस भरी भोंह सों हस हस अर्थ जनावे।
दुरन मुरन में चित करषत हे लालची मन ललचावें॥
फेल रह्यो सौरभ सगरें सखी कुंकुम कृष्णागरको।
कहां लों कहों मत्त भयो वरनो भाव गदाधर उरको॥

---

राधेजू झुलत रमक रमक।
मणि कंचनको सुरंग हिंडोरो तामध्य दामिनि चमक चमक॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri


गावत गुण गिरिधरण लालके उठत दशन छबि दमक दमक ।
बाढ्यो रंग गदाधर प्रभु जहाँ गयो है मदन सब तमक तमक ॥

चलोतो देखन जैये नंद के भवन ।
हिंडोरे झुलत प्यारी राधिका रमण ॥

प्रावस प्रबल ऋतु अति सुखदाई ।
थोरी थोरी बूंद बरसें नव घन माई ॥

झुलावत झोटा देदे पग पगसों प्राणेश ।
बाल सुकुमारि डरपे लघु वधूवेश ॥

डरें हरें झूलो हरि बाला बोली आज ।
कुंवरि रीझके देत मुख बीरीपान ॥

यह सुख देख देख सखी सुख पावे ।
कवि को वरण सके गदाधर गावे ॥

राग धनाश्री

हिंडोरना झुलत युगल किसोर । हिंडोरना राजत जोवन जोंर ॥
अगणित मणि माणिक लागे । जाहि निरखि नैंन अनुरागे ॥
ऊपर चन्द्रातप तानें । वे मैं उनए घन जांने ॥
पचरंग पाट झवा तइ झुले । जनु रंग रंग पंकज फूलै ॥
मोतिन के लटकन लटकें । लखि लजित नछत्र गन सटकें ॥
चपल झुलमुली झलकें । देखत नहि लागत पलकें ॥
मनि चौक रचे वर धरनी । वह सोभा जात न वरनी ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


मृदु पवन उड़ति रज रुरी । कुंकुम कपूर कस्तूरी ॥
कुसुमित उपवन चहुँपासा । रस भूले भंवर सुवासा ॥
तह कीर कपोत कलापी । मृदु बोलत मधुरालापी ॥
तह यूथ यूथ व्रजनारी । जनु कुंकुम गारि संवारी ॥
वे मधुर मधुर कलगावैं । कुंवरि कुंवर कौं झुलावैं ॥
दंपति मुख शोभा देखैं । लागति नहिं नैन निमेषैं ॥
जब झूलें थोरें थोरें । आवै सुभग सुगन्ध झकोरैं ॥
पटनील पीत पहराही । जनु घन दामिनी नृत्य करांही ॥
सुरललना फूलनि वरसें । वै ढिग आवन कों तरसैं ॥
रँगु बढ्यौ अति भारी । तन की गति सबनि बिसारी ॥
गुन गाई गदाधर जीजें । मनु प्रेमरंगसों भीजें ॥

मलार

रंग हिंडोरना मन मोह्यो ॥ टेक ॥

सहज वृन्दाविपिन पावस सदा आनन्द केलि ।
जहां सघन द्रुम घटा घन सौदामनि कंचनवेलि ॥
कुसुम किसलय सुरंग सुर धनु मन्द पवन झकोर ।
तहा नदत गह गह कण्ठ भरि कलकंठ चित्रक मोर ॥
मनि नील धरनि किरनि नव तृण निरखि मुदित कुरंग ।
थल कमल कुल छत्राक विच बिच बूट बिद्रुम भंग ॥
भ्रमत अलि मद अंध विविध सुगंध लहरि अपार ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


तहँ कनित ललित हिंडोरना कल कल्पद्रुम की डार ॥
खचे मनि मानिक महाघन रचे चित्र विचित्र ।
देखिवे को किये अनिमिष नैन रसिकन मित्र ॥
झलमलत झलमलनि मोती मनहुं आनँद नीर ।
तिहि निरखि सुर सुनहार कोटिक लजे तजि मन धीर ॥
तहँ कुँवर कुँवरि बिलास सागर झुलत रस आवेस ।
तन बनी सुरँग कसूँभि सारी पीत बसन सुदेस ॥
नवल जोबन जोति जगमग गौर स्यामल इंदु ।
लाड़िली वृषभानु की ब्रज कूँवरवर गोविन्दु ॥
आस पास बिलासनी गन चपल चितवनि चोज ।
मनु मदन वन की लता लहलहि रही फूलि सरोज ॥
वै निपुन बीना बेनु लाल प्रमान गान विधान ।
बलि गदाधर स्याम स्यामा चरन प्रद कल्यान ॥

---

निकसि ठाढे सिंह पौरि । पिय सहचर कर करि ॥
सुरंग पाग बाम भाग रही धसि सुरंग तमोर
बदन सोभा तन बनी है सुरंग कुंकुम की खौरि ॥
पवन झकोर छोर कटिपट के लटकि लटकि लहरें
सीलेत देखे परी तनमन मनसिज की रौरि ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


यदपि चली बचि सकुचि सखी मोही
मुकुंद कहा करौं कल्यान दृग लगी दौरि ॥

## :समाप्तेयं बाणोः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# श्री श्री गुरवे समर्पितेयं वाणी

पं० देवीनारायण मैणावाल द्वारा:—
हरि मोहन प्रिंटिंग प्रेस पुरानी बस्ती, जयपुर में मुद्रित।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# मीरा-पदावली

विपद भूमिका, कठिन शब्दार्थ और अन्तर्कथा सहित

सम्पादिका
श्रीमती विष्णुकुमारी श्रीवास्तव 'मंजु'
हिन्दी प्रभाकर, साहित्य-रत्न

प्रकाशक
हिन्दी भवन
लाहौर

मूल्य ।।।=)

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकाशक
श्री धर्मचन्द्र विशारद
हिन्दी-भवन
लाहौर

दूसरा संस्करण—१९३९

मुद्रक
श्री देवचन्द्र विशारद
एच. बी. प्रेस
लाहौर

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# विषय-सूची

| | |
|---|---|
| दो शब्द ... ... | अ |
| मीरा की जीवनी ... ... | उ |
| मीरा की कविता और उसकी भाषा ... | ज |
| मीरा की कविता के शब्द और उनकी उत्पत्ति | द |
| पद ... ... | १ |
| अन्तर्कथाएँ ... ... | ११५ |
| अनुक्रमणिका ... ... | १२१ |

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# संकेताक्षरों का विवरण

क = मीरा मन्दाकिनी — श्री नरोत्तमदास स्वामी कृत

ख = मीरा, दया, सहजोबाई—श्री वियोगीहरि कृत

ग = मीरा की प्रेम-साधना—श्री भुवनेश्वर नाथ मिश्र माधव--वाणी मन्दिर, छपरा

घ = मीराबाई की शब्दावली — वेलवेडियर प्रेस, प्रयाग

च = मीराबाई के भजन--भारतीय व्यापारिक ग्रंथ प्रकाशक कम्पनी कानपुर

छ = मीराबाई का जीवन-चरित्र--श्री कार्तिक प्रसाद खत्री लिखित लहरी बुकडिपो बनारस

ज = हिन्दी काव्य की कोकिलाएँ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# दो शब्द

सम्वत् १९८९ में पंजाब युनिवर्सिटी की 'हिन्दी प्रभाकर' की परीक्षा देने के उपरान्त मेरा विचार था कि अपनी पंजाबी बहनों की सेवा में मैं हिन्दी साहित्य के कुछ चुने हुए ग्रन्थ उपस्थित करूँ। किन्तु, प्रयत्न करके भी अवकाश, निश्चिन्तता एवं साधनों के सुलभ न हो सकने के कारण मैं कुछ भी न कर पाई। उन्हीं दिनों भाई देवचन्द्र जी ने मुझे मीरा के कुछ पदों का संग्रह देकर कहा कि आप इनका सम्पादन कर दें। मुझे उस समय अवकाश भी था और इच्छा भी थी, अतः सहर्ष यह भार ले लिया, किन्तु "सब दिन नाहिं बराबर जात" के अनुसार मैं पारिवारिक विपत्तियों में ऐसी फँस गई कि मेरी बुद्धि, विचार एवं धारणा सब आकाश-सुमन से टिमटिमा कर लुप्त होने लगे। पुत्र की चिन्ता-जनक बीमारी ने मेरे समस्त उल्लास एवं उत्साह पर पाला डाल दिया। फलतः मीरा का वह संग्रह वैसे का वैसे ही धरा रहा। हाँ, बीच-बीच में यदा-कदा प्रेसों और पुस्तकालयों को मीरा-सम्बन्धी पुस्तकों के विषय में लिखती रही। इतने में मुझे डाक्टरों की सम्मति से बच्चे को लेकर पहाड़ पर जाना पड़ा। वहाँ से वापस आने पर भी डाक्टरी तपस्या और दवाइयों के चक्कर में ही अधिकाँश समय बीता। इधर भाई देवचन्द्रजी के पत्र पर पत्र आने लगे। समस्या टेढ़ी हो गई। बीच-बीच में पदों की भाषा ही शोधी गई थी और कुछ न बन पाया था। साथ ही हाथ में लिये काम को बिना कुछ किये वापस करना भी रुचिकर न जान पड़ा। अतः मैंने 'नागरी-



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रचारिणी' सभा काशी के सुयोग्य क्लर्क महोदय श्री भगवती प्रसादजी श्रीवास्तव को पत्र लिखा। उन्होंने कृपा कर तुरन्त मुझे मीरा पर अब तक की निकली हुई पुस्तकों की सूची तथा पते लिख भेंजे। तब मैंने उक्त प्रकाशकों को उन प्रतियों के भेजने के लिए पत्र भेजे। उनके आने पर मीरा का काम आरम्भ किया गया। वास्तव में प्रस्तुत 'मीरा-पदावली' में मेरा कुछ भी नहीं है मैंने उनका संकलन-मात्र कर दिया है। इस संकलन में मुझे सब से प्रथम और अधिक सहायता श्री भगवती प्रसाद जी श्रीवास्तव से मिली है। यदि वे इतनी जल्दी मुझे पुस्तकों की सूची तथा पते न लिख भेजते तो मैं कुछ भी न कर सकती। इसके लिए मैं उनकी विशेष कृतज्ञ हूँ और हार्दिक धन्यवाद देती हूँ। इनके अतिरिक्त मुझे नीचे लिखी पुस्तकों से भी पर्याप्त सहायता मिली है जो कि मीरा पर निकल चुकी हैं, विशेष रूप से इस पदावली के संशोधन और संवर्धन में मुझे "मीरा-मन्दाकिनी" और "मीरा की प्रेम-साधना" से बहुत अधिक सहायता मिली है। मैं इनके सुयोग्य लेखक श्री नरोत्तमदास स्वामी तथा श्री भुवनेश्वर प्रसाद जी मिश्र 'माधव' की अत्यन्त आभारी हूँ। इनकी प्रतियाँ ही मेरी पथ-प्रदर्शक रही हैं। साथ ही मैं प्रयाग-विश्व-विद्यालय के स्वनाम-धन्य प्रसिद्ध विद्वान श्री धीरेन्द्र वर्म्मा एम. ए. की अतीव कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने अपनी 'परिषद्-निबन्धावली' के दोनों भाग बिना मूल्य मेरे पास भेज कर मुझे उन में से मीरा-सम्बन्धी लेख से सहायता लेने की पूर्ण अनुमति देने की उदारता की है। वर्मा जी की इस महती कृपा के लिए धन्यवाद प्रकट करना उनका उपहास करना है, क्योंकि वे मेरे गुरु तथा धर्म-भाई हैं अतः वे मेरी श्रद्धा और वन्दना के ही अधिकारी हैं।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सहायक पुस्तकें—

(१) मीराबाई के भजन, पं० मनोहरलाल मिश्र, भारतीय व्यापारिक और ग्रन्थ प्रकाशक कम्पनी, कानपुर।

(२) मीराबाई का जीवन-चरित्र, बाबू कार्तिकप्रसाद खत्री, लहरी प्रेस, बनारस सिटी।

(३) मीराबाई, दयाबाई, सहजोबाई का पद्य-संगह श्री-वियोगीहरि, साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग।

(४) मीराबाई की शब्दावली, वेलवेडियर प्रेस, प्रयाग।

(५) मीरामन्दाकिनी, श्री नरोत्तमदास स्वामी, प्रोफेसर डूँगर कालेज, बीकानेर (राजपूताना)।

(६) मीरा की प्रेम-साधना, श्री भुवनेश्वर नाथ मिश्र "माधव" वाणी मन्दिर, छपरा।

इनके अतिरिक्त "मीराबाई के पद" शीर्षक पुस्तक सिद्धेश्वरी प्रेस काशी से निकली है पर इसका पता नहीं लगा। मेरा भेजा पत्र वहाँ से वापस आया।

पं० मनोहर लाल जी वाली प्रति में दिये हुए पदों में दो एक को छोड़ कर बाकी की भाषा आधुनिक है और कई पद मीरा के नहीं जान पड़ते इससे वे छोड़ दिये गये हैं।

खत्रीजी वाली प्रति में दो एक पद मात्र हैं, शेष जीवन-वृत है जो कपोल-कल्पना और अनुमानों से भरा पड़ा है। जिसका हवाला 'मीरा की जीवनी' शीर्षक लेख में दे दिया गया है।

सिद्धेश्वरी प्रेस वाली प्रति अभी तक न मिलने के कारण उसका वृत्त अज्ञात है। इनके अतिरिक्त शेष चारों प्रतियों से मिलाकर ही पद रखे गए हैं और उनकी भाषा यथा-साध्य ठीक कर दी गई है श्री वियोगीहरि वाली प्रति में बहुत थोड़े से पद ही संग्रहीत है।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मीरा की भाषा की जानकारी और उनके डिंगल के रूप तथा संस्कृत और हिन्दी पर्याय, डिंगल भाषा के प्रसिद्ध ग्रन्थ "वेलि-क्रिसन रुक्मणी री, राठोर पृथ्वीराज री कही" से लिये गये हैं। उक्त पुस्तक हिन्दुस्तानी एकेडेमी, यू० पी०, से सन् १९३१ में निकली है। मीरा की जीवन-सम्बन्धी तिथियों तथा वंश आदि का परिचय 'परिषद्-निबन्धावली' से लिया गया है। आशा है इनके सुयोग्य लेखक तथा संकलन-कर्ता आदि इसके लिये क्षमा करेंगे।

जिस रूप में मीरा के पद आजकल मिलते हैं, इसमें बहुत अधिक संदेह का स्थान है, कि वे ठीक इसी प्रकार लिखे गये हों, कारण कि कबीर आदि के पदों की तरह गाने वाले उनमें समय समय पर हेर-फेर करते रहते हैं। प्रस्तुत संकलन के पाठ में स्वामी नरोत्तमदास की 'मीरा मंदाकिनी' का बहुत कुछ आधार लिया गया है। संदेहास्पद स्थानों में 'मीरा की प्रेम साधना' आदि अन्य प्रतियों से मिला कर पाठ को शुद्ध कर लिया गया है। अपनी स्वतंत्र बुद्धि के अनुसार तथा संगीत के व्यतिक्रम आदि का ध्यान रख शब्दों का हेर-फेर भी कर दिया है पर ऐसे स्थान बहुत कम हैं।

सारांश यह कि जहाँ तक सम्भव हो सकता है प्रस्तुत 'पदावली' में शुद्ध पाठ देने का प्रयत्न किया गया है किन्तु भूल कर जाना अनिवार्य है। अतः पाठक तथा पाठिकाएँ एवं समालोचक-गण मुझे क्षमा करेंगे और त्रुटियों की सूचना देने की उदारता करेंगे।

निवेदिका—

लक्ष्मणनिवास
नवाबगंज, कानपुर } विष्णुकुमारी श्रीवास्तव 'मंजु'

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# मीराबाई की जीवनी

**मीरा के जन्मकाल पर भिन्न भिन्न मत**—प्रातःस्मरणीया प्रभुचरणानुरागिनी महारानी मीराबाई के पद आज साहित्य जगत् के अमूल्य रत्न हैं। उनका प्रादुर्भाव जिस समय हुआ था उस समय समस्त भारत में भगवान् की अविरल भक्ति-रूपी सरिता एक ओर से दूसरी ओर तक तरंगें ले रही थी। कबीर, रामानन्द, रैदास, तुलसी तथा सूरदास आदि प्रसिद्ध मत-प्रवर्तक एवं भक्त कवियों की अमर वाणी से उत्तर भारत परिप्लावित हो रहा था। मुसलमानी शासन से ऊबी हुई जनता भगवान का सहारा लेकर जीवन काट रही थी। राजस्थान की भूमि विदेशियों के आक्रमण से जर्जरित हो चुकी थी। मुग़ल राज्य का सुदृढ़ प्रासाद खड़ा करने के लिए वीरवर बाबर दिल्ली में नींव डाल चुके थे। ग्रामीणों के जीवन पद-पद पर पीसे जा रहे थे। ऐसे भयानक समय में उन्हें एक-मात्र भगवान् का ही सहारा था। इन भक्त कवियों ने जनता के समक्ष भगवान् के लोक-रंजन रूप का दृश्य खींच दिया। रावण का संहार करते हुए कवि तुलसी के राम, व्रजवासियों की रक्षा के लिए गोवर्धन धारण करते हुए तथा अत्याचारी कंस का नाश करते हुए भागवान् श्रीकृष्ण जनता के दुख-सुख के समान भागी होते हुए, मानव-हृदय के कोमल भाग में विहार करने लगे। अयोध्या, चित्रकूट, मथुरा और वृन्दावन की पावन-भूमि भक्त कवियों के प्रेमगान से व्याप्त होने लगी। भक्ति के इस प्रबल प्रवाह से



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राजस्थान की मरुभूमि भी अछूती न रही। परिणाम-स्वरूप वहाँ भी एक अद्भुत मनोहर कमल नारी रूप में विकसित हुआ जिसके शुचि सौरभ से आज साहित्य-जगत् एवं नारी-संसार मुखरित तथा सुरभित है।

यह कमल है मीरा। कवयित्री मीरा ने प्रेम का जो रूप अपने पदों में खींचा है, भक्ति की जो दृढ़ता प्रतिपादित की है, वह अमूल्य एवं अनुपमेय है। लगन और त्याग की यह राजस्थानी मूर्ति हमारी ही नहीं अपितु जगत् की चमकती हुए एक मणि है। इनके पदों पर हमें गर्व है और त्याग पर है अभिमान। किन्तु शोक है कि इनके पद जितने ही आकर्षक हैं; इनका जीवनवृत्त उतना ही अन्धकाराच्छादित है। कोई इन्हें जयमल की पुत्री लिखता है तो कोई रत्नसिंह की। कहीं इनको राणा कुम्भा की स्त्री लिखा है तो कहीं कुँवर भोजराज की। इन अनिश्चित लेखों एवं सम्मतियों के कारण इनका जीवन अब तक अनुमान के ही सहारे पर लिखा जाता है, क्योंकि अभी तक इनकी जीवन-सम्बन्धी कोई प्रशस्ति या शिला-लेखादि प्राप्त नहीं हो सके। यद्यपि इनकी जीवन-घटनाओं पर समय-समय पर विद्वानों ने पर्याप्त विचार किया है, तथापि वे अभी तक किसी दृढ़ निश्चय पर नहीं पहुँच सके हैं। अभी हाल ही में प्रयाग विश्व-विद्यालय के हिन्दी-विभाग की ओर से निकली 'परिषद्-निबन्धावली' में इनके सम्बन्ध में श्री कुँवर कृष्णजी बी. ए. ने जो तर्क-पूर्ण विवेचन किया है वह युक्ति-संगत जान पड़ता है—आप के दिये हुए प्रमाण पर ही यह वृत्त उपस्थित किया गया है। आपने लिखा है—

चित्तौड़ में कीर्तिस्तम्भ के पास कुम्भस्वामी के आदि वाराह के दो विष्णु-मन्दिर एक ही ऊँची कुर्सी पर पास-पास बने हैं।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इन्हें देखकर जनता में यह बात प्रसिद्ध हो गई कि बड़ा मन्दिर राणा कुम्भ का तथा छोटा मन्दिर उनकी रानी मीराबाई का बनवाया हुआ है। इसी जन-श्रुति के आधार पर टाड साहब ने मीरा को कुम्भ की रानी लिख दिया है पर यह भ्रमपूर्ण है। सम्भवतः मीरा इस मन्दिर में पूजन-कीर्तन करती होंगी। कुम्भ-श्याम (कुम्भ स्वामी) का मन्दिर जिसे लोग भ्रम से मीराबाई का मन्दिर कहते हैं। सं० १५०५ में महाराणा कुम्भ ने बनवाया था, उसमें उक्त-संवत् की एक प्रशस्ति भी है। यथा—

कुम्भस्वामिन आलयं व्यरचयच्छ्रीकुम्भकर्णो नृपः ॥

इसलिये उस जन-श्रुति को जिस पर टाड साहब का मत निर्भर था वास्तु-कला-विशारदों ने निर्मूल सिद्ध कर दिया है। अपना परिचय देते हुए मीरा ने लिखा है:—

'मेड़तिया घर जन्म लियो है, मीरा नाम कहायो[1]।'

इससे स्पष्ट हो जाता है कि मीरा का जन्म राठौरों की मेड़तिया शाखा में हुआ है। यह मेड़तिया शाखा राव जोधाजी के चौथे पुत्र राव दूदा जी ने चलाई थी। जोधा जी ने ही जोधपुर की स्थापना की है। सं० १४६७ में राव दूदा जी का जन्म हुआ था और १५१८ में इन्होंने अपने पराक्रम से मेड़ते में अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित किया, तथा मेड़तिया शाखा चलाई। सं० १५२५ में राणा कुम्भ अपने पुत्र द्वारा मारे गए। यदि मीरा को महाराणा कुम्भ की रानी माना जाय तो यह मानना पड़ेगा कि ७ वर्ष में ही मीरा के विवाहादि सब कृत्य समाप्त हो गए। तब कुम्भस्वामी का मन्दिर मीरा का बनाया हुआ किस तरह हो सकता है जब कि उसका निर्माण-काल १५०५ है और मीरा के माने जाने वाले पिता-

1. मीराबाई की शब्दावली पृष्ठ ६७ शब्द ३२।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राव दूदा जी का जन्म संवत् १४६७ है। टाड साहब के मतानुसार मीरा को कुम्भ की रानी मानने में और भी आपत्तियाँ हैं। मीरा ने राणा द्वारा कष्ट पाने का उल्लेख भी किया है। पर कुम्भ तो परम वैष्णव और भगवद्भक्त थे, वे मीरा को क्यों कष्ट देने लगे! अतः ये कोई और राणा हैं जिनसे मीरा को कष्ट मिले।

राव दूदा जी का जन्म सं० १४६७ में हुआ था और महाराणा कुम्भ पिता की मृत्यु के बाद सं० १४६० में गद्दी पर बैठे[1]। इस प्रकार मीरा के माने जाने वाले पिता का जन्म उनके माने जाने वाले पति कुम्भ के सिंहासनारूढ़ होने के भी ७ वर्ष बाद ठहरता है, जो असंगत है। कुम्भ के उत्तराधिकारी उनके पुत्र उदयकर्ण (ऊदा) हुए हैं, न कि उनके भाई। और मीरा ने देवर द्वारा कष्ट पाने की बात लिखी है। इससे भी यही सिद्ध होता है कि मीरा के पति कुम्भ नहीं थे। महाराणा कुम्भ ने गीत-गोविन्द की टीका में एक "अपूर्व देवी" का नाम दिया है। यदि मीरा ऐसी भक्तिनी नारी उनकी रानी होती तो कुम्भ अपने किसी न किसी ग्रन्थ में मीरा का उल्लेख अवश्य करते। इसके अतिरिक्त मीरा को कुम्भ की रानी मानने पर, सम्राट् अकबर और तानसेन के साथ उनकी भेंट तथा गुसाईं तुलसीदास को पत्रिका भेजी जाने वाली बातें जिनका भक्त ग्रन्थों में उल्लेख है, असत्य माननी पड़ेगीं क्योंकि इन सब का जन्म कुम्भ की मृत्यु के बाद हुआ है।

श्री कार्तिकप्रसाद खत्री ने मीरा के जीवन-चरित्र पर अनुमान की हद कर दी है। आपने मीरा को कुम्भ की रानी लिखने के साथ-साथ जयमल की पुत्री बनाया है और अकबर के दर्शन कराये

---

१. महाराणा कुम्भ (शारदा)



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हैं *। खत्री जी यह भूल गये कि जयमल का जन्म सं० १५६४ में और अकबर का सं० १५६६ (सन् १५४२) में हुआ था तथा वह सं० १६१३ ( सन् १५५६ ) ई० में गद्दी पर बैठा था। कुम्भ का निधन सं० १५२५ में हुआ। इस प्रकार तो पिता के जन्म के पूर्व ही मीरा का विवाह होना सिद्ध होता है। यह ऐतिहासिक भूल है। मीरा का कुम्भ की रानी होना किसी प्रकार भी सिद्ध नहीं होता।

दूसरा मत राजस्थान के आधुनिक ऐतिहासिक विद्वानों का है जो कि सर्वथा उपयुक्त जान पड़ता है कि मीराबाई राव दूदा जी के चतुर्थ पुत्र रत्नसिंह जी की इकलौती पुत्री व राना साँगा के बड़े पुत्र कुँअर भोजराज की रानी थीं और इनका जन्म सं० १५५५ के आस-पास हुआ था †। इस मत के अनुसार मीरा का जन्म काल ८०-८५ वर्ष आगे बढ़ जाता है। यह मत अब प्रायः सर्व-सम्मत है, किन्तु संवत् १५५५ की अपेक्षा सं० १५६० के आस-पास मीरा का जन्म मानना अधिक युक्ति संगत होगा; क्योंकि रत्नसिंह के बड़े भाई वीरमदेव का जन्म सं० १५३४ में दिया हुआ है ‡। और जब रत्नसिंह चौथे पुत्र थे * तो इनका जन्म सं० १५३६-४० के इधर उधर हुआ होगा। यदि मीरा के जन्मकाल तक इनके पिता की आयु २० वर्ष की मान ली जाय तो सं० १५६० के आस-पास

---

* बा० कार्तिकप्रसाद खत्री लिखित मीराबाई का जीवन चरित्र पृष्ठ १, २, १२।

† उदयपुर राज्य का इतिहास ( ओझा ) पृ० ३५८-३०, मु० देवीप्रसाद कृत मीराबाई का जीवन-चरित्र।

‡ काशी नागरी प्रचारिणी पत्रिका भाग १, पृ० ११४; सरस्वती [ जनवरी १९१५ ]

* सुधा, फाल्गुन सं० १९८४।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इनका जन्म आप ही निकल आता है। मीरा के पति भोजराज की आयु पर विचार करने पर भी यही निष्कर्ष निकलता है। भोज के पिता राणा साँगा का जन्म सं० १५३९ में हुआ था। यदि उनके पिता की आयु उस समय २० वर्ष की भी होगी तो भोज का जन्म १५५९ के लगभग होना चाहिए † और यदि ये पत्नी से एक या दो वर्ष भी बड़े होंगे तो भी मीरा का जन्म सं० १५६० के लगभग निकलता है।

मीरा के विषय में यह प्रसिद्ध है कि इनकी सास और ननद से अनबन हो गई थी और इन्होंने सास की आज्ञा का उल्लंघन किया था। इस कथन को लेकर यह अनुमान किया जाता है कि विवाह के समय मीरा की आयु १७-१८ वर्ष की रही होगी। पर यह मानने में एक आपत्ति होती है और वह यह कि यदि भोजराज मीरा से एक दो वर्ष बड़े होंगे तो इस अनुमान के अनुसार उनका जन्म सं० १५५३ के आसपास होना चाहिए, जिसका अभिप्राय यह हुआ कि राना सांगा की १४ वर्ष (१५५३—१५३९ = १४) की आयु ही में भोजराज का जन्म हुआ होगा। १४ वर्ष की अवस्था में ही किसी का पिता बन जाना साधारणतया देखने में नहीं आता। मीरा का जन्म १५५६ के आसपास मान लेने से यही एक आपत्ति है। इसके अनुसार मीरा की आयु विवाह के समय १७-१८ वर्ष की तथा पुत्र जन्म होने पर साँगा की केवल १४ वर्ष निकलती है, और मीरा का जन्म सं० १५६० मान लेने पर विवाह के समय मीरा की आयु १३ वर्ष की तथा भोज के पिता की १९-२० वर्ष की होगी। हमारे विचार में सं० १५६० ही के आसपास मीरा का जन्म मानना ठीक होगा; क्योंकि १३ वर्ष की अवस्था में कन्या का विवाह होना

† महाराना साँगा, नागरी प्रचारिणी पत्रिका भाग १ पृ० ११४।

औ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

युक्ति-संगत है और प्रथम सन्तान के उत्पन्न होने पर पिता की आयु का १४ वर्ष होना आश्चर्य-जनक है। प्रत्युत कई लेखकों ने मीरा का विवाह ११ वर्ष में होना लिखा है †। कदाचित् इसीलिए मेकालिफ़ ने इनका जन्म सं० १५६१ (सन् १५०४) के लगभग माना है ‡। श्रद्धेय पं० रामचन्द्र शुक्ल, मिश्रबन्धुओं तथा ग्रीव्ज़ ने विवाह तिथि १५७३ को भूल से जन्म-तिथि माना है *। भोजराज सं० १५८० के लगभग संसार छोड़ चुके थे ¶ तो विवाह किस आयु में और कब हुआ होगा? अतः मीरा का जन्म १५६० के लगभग ही मानना चाहिए।

मीरा को भोज की पत्नी मान लेने से उनके सास, ससुर देवर और ननद, सबके उल्लेखों का समाधान हो जाता है।

**जन्मस्थान**—मीरा का जन्म-स्थान कुड़की या चौकड़ी है। इनके पिता रत्नसिंह को कुड़की बाजोली आदि १२ गाँव मेड़ता की ओर से जागीर में मिले थे। प्रियादास जी ने भक्तमाल की टीका में इनकी जन्मभूमि मेड़ता लिखी है। स्वयं मीरा ने भी इसी का उल्लेख किया है—

**"मेड़तिया घर जनम लियो है, मीरा नाम कहायो"**

ये ससुराल में मेड़तणी जी के नाम से पुकारी जाती थीं। इसका

---

† Mira Bai, her life and songs by Anath Basu, Indian Antiquary 1903.

‡ Indian Antiquary 1903 "The Legends of Mirabai" by M. Mocouliffe.

* हिन्दी साहित्य का इतिहास ( पं० रामचन्द्र शुक्ल ) पृ० १२२; मिश्रबंधु विनोद पृ० २८२; ग्रीव्ज़ पृ० ४६।

¶ उदयपुर का इतिहास (ओझा) पृ० ३५९।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कारण सम्भवतः यह है कि इनकी माता का बाल्यकाल में देहान्त हो गया था जिसके कारण अधिक काल ये अपने दादा के यहाँ मेड़ता में ही रहीं। कुड़की भी जोधपुर राज्य के अन्तर्गत मेड़ता के इलाके में ही है अतः इनका जन्म-स्थान या पितृ-स्थान मेड़ता मानने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

**बाल्यकाल**—ऊपर लिखा जा चुका है कि बाल्यावस्था में ही माता का स्वर्ग-वास हो जाने के कारण मीराबाई को इनके दादा राव दूदा जी ने मेड़ता बुला लिया था। दूदा जी परम वैष्णव थे। अतः उनके लालन पालन और संरक्षण में मीरा के हृदय में भगवद्भक्ति का बीजारोपण हो गया जो अंकुरित होते-होते आगे चल कर प्रगाढ़ भक्ति एवं अनन्य प्रेम में परिवर्तित हो गया। कहा जाता है कि इनके दादा जी के यहाँ एक बार एक अतिथि साधु आया। उसके पास गोपाल जी की मूर्ति थी। मीरा इसे देखकर मुग्ध हो गई और उसे पाने के लिए मचल गईं। निरुपाय साधु ने वह मूर्ति मीरा को दे दी। अब से मीरा अन्य गुड्डा-गुड्डियों के उत्सवों के साथ गिरिधर लाल जी के त्यौहार भी मनाने लगीं। बचपन का यही खिलौना इनके भविष्य जीवन का प्राणाधार और सर्वस्व बन गया।

**विवाह**—राव दूदा जी की मृत्यु के एक वर्ष बाद सं० १५७३ में वीरमजी ने इनका विवाह राना साँगा के बड़े पुत्र कुँवर भोज-राज के साथ कर दिया। विदा के समय अन्य सामग्रियों एवं खिलौनों के साथ ये अपने गिरिधर जी को भी ससुराल लेती आईं। प्रियादास जी ने लिखा है कि ससुर के घर में देवी-पूजन पर इनकी सास से अनबन हो गई थी और इनके पति ने असंतुष्ट हो कर इनको एकान्तवास का दंड दिया

अः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

था *। मीरा के दो एक पद भी इस सम्बन्ध में शब्दावली में मिलते हैं, ‡ पर ये सब दन्त-कथाएँ नितांत भ्रमपूर्ण जान पड़ती हैं क्योंकि एक तो यह युग ही साम्प्रदायिक झगड़ों का था। कहीं शैव और वैष्णव सम्प्रदायों की प्रधानता स्थापित

---

* देवी के पुजाइबे को कियो लै उपाय सासु,
 बर पै पुजाय पुनि वधू पूजि भाखिये।
बोली जू बिकायो माथ लाल गिरधारी हाथ,
 और कोन नवै इक वाहि अभिलाखिये॥
बढत सुहाग यांके पूजे, ताते पूजा करो,
 जिनि हठि निज सीस पाँयनि पै राखिये।
कही बार-बार तुम यही निरधार जानो,
 वही सुकुमार जापै वारि वारि नाखिये॥
तब तो खिसानी भई अति जरि बरि गई,
 गई पति पास यह बधू नहीं काम की।
अब हीं जवाब दियो कियो अपमान मेरो,
 आगे क्यों प्रमान करे भरे श्वास चाम की॥
राना सुनि कोप करयो धरयो हिये मारिबोई,
 दई ठौर न्यारी देखि रीझी मति वामकी।
 भक्तमाल रस-बोधिनी टीका छंद ४७३, ४७४

‡ म्हाँना गुरु गोविन्द री आण, गोरल ना पूजाँ।
सास—ओरज पूजै गोरज्या जी, थे क्यूँ पूजो न गोर ?
 मन बंछत फल पावस्यो जी, थे क्यूँ पूजो ओर ?
मीरा—नहिं हम पूजाँ गोरज्या जी, नहिं पूजाँ अनदेव।
 परम सनेही गोबिंदों, थे काँई जानों म्हाँरो भेव।
 शब्दावली पृ० ३७ शब्द १०



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

की जाती थी तो कहीं शाक्तमत की प्रामाणिकता सिद्ध की जा रही थी। परिणामस्वरूप दक्षिण भारत के शिवकाँची और विष्णुकाँची आदि पृथक पृथक मन्दिर स्थापित किये गये, और इसी प्रकार वैष्णवों और शैवों का झगड़ा चलता रहा। दूसरे विवाह के समय मीरा की अवस्था कुल १३ वर्ष की थी। विचारने की बात है कि एक १३ वर्ष की किशोरी जिसकी शिशुता का चापल्य तक छुटा नहीं होता, जो स्वामी या पति के पूर्ण अर्थ तक नहीं समझ सकती वह एक नितान्त अपरिचित परिवार में पहुँचते ही देवी-पूजन के विषय को लेकर सास आदि से वादविवाद कर सकेगी और पति को कटु-वाक्य तक कहेगी ? फिर चित्तौर और जोधपुर का राज-परिवार परस्पर वंशानुगत कृत्यों और रीति-नीति से पूर्ण रूप से परिचित था तथा उनमें पहले से बराबर वैवाहिक सम्बन्ध होते आए थे। यदि दोनों राज-परिवार एक दूसरे के मत के इतने कट्टर विरोधी थे तो मीरा का विवाह ही वहाँ क्यों किया जाता।

चित्तौड़ का राज्यवंश शैव अवश्य था पर उसी वंश में राणा कुम्भ परम वैष्णव हो गये हैं इसका ज्वलन्त प्रमाण उनका बनवाया हुआ विष्णु-मन्दिर है। ऐसी दशा में यह विश्वास कर लेना कि देवी-पूजा के लिए मीराबाई की सास से अनबन हो गई होगी भारी भ्रम ही नहीं वरन् मीरा के पवित्र चरित्र पर लांछन लगाना है। कहा जाता है कि मीरा का पति पर प्रेम न था। इसके विषय में यह कहा जा सकता है कि पति-पूजा ईश्वर-पूजा की आज भले ही बाधक साबित हो क्योंकि आधुनिक उन्नति काल में बहुधा स्त्रियाँ परिपाटी के देवी-देवता मानने और पूजने वाली होती हैं और उनके पतिदेव ठीक इसके विपरीत धर्म और भाव के मानने



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तथा रखने वाले होते हैं, ऐसी परिस्थिति में उनकी परस्पर पट्टी नहीं बैठती, जिस से एक दूसरे से कुछ रूठे और उदासीन से रहते हैं, पर यह बात उस समय तो न थी। उस समय तो प्रायः प्रत्येक हिन्दू किसी न किसी धर्म को मानने वाला था। वह शैव, शाक्त, वैष्णव, कबीर, रैदास आदि किसी भी संप्रदाय का मानने वाला क्यों न हो पर मानता अवश्य था। अतः यह कैसे माना जा सकता है कि गिरधारीलाल जी के पीछे मीरा को पति-प्रेम न प्राप्त हो सका हो। जान पड़ता है यह दन्त-कथा साम्प्रदायिकता के रंग को विशेष प्रधानता देने के लिए गढ़ी गई, अथवा ये सब घटनाएँ कुँवर भोज-राज की मृत्यु के उपरान्त घटित हुई हों। हिन्दू विधवा का जीवन कितना करुण और परमुखापेक्षी होता है यह आज २० वीं शताब्दी में किसी से छिपा नहीं है। उनके जीवन की घड़ियाँ उपेक्षा और और लांछनाओं से पददलित होती हुई व्यतीत होती हैं। सम्भव है मीरा के साथ भी पति के अभाव में उनके कुटुम्बियों ने मनमाना अत्याचार किया हो और वे इस प्रकार अपमानिता और परित्यक्ता हो कर घर छोड़ने के लिए बाधित हुई हों।

विवाह के कुछ वर्षों के बाद इनको भारी विपत्तियों का सामना करना पड़ा। सास-ससुर की मृत्यु हो गई, किन्तु इतना ही पर्याप्त न था; पति-देव भी चल बसे। इसके दो वर्ष बाद १५८४ में इनके पिता रत्नसिंह खानवा के युद्ध में बाबर से लड़ते हुए मारे गये। इन अपशकुनों का कारण मीरा ठहराई गई,। इधर मीरा ने पति के अभाव में संसार का मोह त्याग कर गिरिधर के चरणारविन्दों को अपना शेष अवलम्ब बनाया और तभी से इन्होंने साधु-सत्संग किया—



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"आज म्हाँरे साधू जन नो संग रे, राणा म्हाँरा भाग भल्याँ।
साधू जन ने संग जे करिये, चढ़ेते चौगुणो रंग रे।"

शब्दावली पृ० ६१, शब्द २२

कहा जाता है कि इनके दीक्षा-गुरु महात्मा रैदास जी थे। इनके तीन-चार पदों में रैदास जी का नाम भी आया है† परन्तु प्रियादासजी ने भक्तमाल में लिखा है कि रैदास रानी झाली के गुरु थे‡। रानी झाली राना साँगा की माँ थी। इस दृष्टि से देखा जाय तो रैदास जी राना साँगा की माँ के समकालीन थे न कि मीरा के, फिर मीरा के जन्म के पर्याप्त समय पूर्व ही रैदास जी शरीर छोड़ चुके थे। इसलिए यह कैसे माना जा सकता है कि मीरा रैदास की चेली थी। अनुमानतः ये पद रैदास जी का माहात्म्य बढ़ाने के लिए किसी ने मीरा की कृति में जोड़ दिए होंगे। एक बात और विचारणीय है। मीरा ने अपने कई पदों में एक जोगी का स्पष्ट उल्लेख किया है और उन पदों में जो क्रियाएँ प्रयुक्त हुई हैं उनसे ज्ञात होता है कि वह 'जोगी' मीरा का समकालीन था। यथा—

१—तेरो मरम नहिं पाया रे जोगी,
आसण माँडि गुफा में बैठो, ध्यान हरी को लगायो।

---

† रैदास संत मिले मोंहिं सत्गुरु, दीन्हा सुरत सहदानी।

शब्दावली पृ० २०, श. ४१।

गुरु मिलिया रैदास जी दीन्ही ज्ञान की गुटकी।

शब्दावली पृ० २५, शब्द ५७।

‡ "बसत चितौर माँझ रानी एक झाली नाम नाम बिन काम खाली आनि शिष्य भई है।"

भक्तमाल (प्रियादास कृत टीका) कवित्त २६६।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विरहजन्य व्याकुलता मीरा ने जो प्रदर्शित की है वह बहुत ही सजीव और स्वाभाविक है। उनके पदों में हृदय की मर्म-स्पर्शी वेदना, वियोगिनी की अनुभूति और दिल की बेकली की कली ऐसी खिली हुई मिलती है कि वह हृदयंगत हुए बिना नहीं रहती।

पपइया रे पिव की बाणी न बोल।
सुणि पावेली बिरहणी रे थाँरी राखेली पाँख मरोड़
चोंच कटाऊँ पपइया रे ऊपरि कालार लूण
पिव मेरा मैं पीव की रे, तू पिव कहै स कूण ?

मीरा की कविता भक्ति-प्रधान है। अतः इसमें शान्तरस का ही आधिक्य कहा जाता है। परन्तु उनका उपास्य-देव कृष्ण है। उपासना पत्नी-भाव से की गई है, अतएव उसमें शृंगारवर्णन आवश्यक है। परन्तु शृंगार होने पर भी उसमें मस्ती न होकर शान्ति ही प्रकट होती है। अपने प्रभु गिरिधर को पाने के लिए उसमें बेकली है, प्रेम-दीवानी विरहिणी की व्यथा का अद्भुत चित्र भी है, परन्तु उस विरहिणी में और बिहारी आदि शृंगारी कवियों की विरहिणी में उतना ही अंतर है जितना कि प्रभु-भक्ति में तल्लीन प्रेमावतार महाप्रभु चैतन्य में और साँसारिक वासनाओं से ग्रस्त एक कामी में। उतना ही अंतर है जितना ईश-प्रेम में और साँसारिक वासना में। दोनों ही मादक हैं—पर दोनों के परिणाम में अंतर है, पहला मानसिक विकारों का नष्ट करने वाला है। तथा दूसरा उनको बढ़ाने वाला। बिहारी आदि अन्य कवियों का विरह-वर्णन यदि दूसरे ढंग का है तो मीरा का विरह-वर्णन पहले ढंग का। तभी तो विरहिणी मीरा कहती है।

म्हारो जनम मरण को साथी,
थाँने नहिं बिसरूँ दिन-राती।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तुम देख्याँ बिन कल न पड़त है, जारत मेरी छाती।
ऊँची चढ़-चढ़ पंथ निहारूँ; रोय-रोय अँखियाँ राती।
यो संसार सकल जग झूठो, झूँठा कुलरा नाती।
दोउ कर जोड़्याँ अरज करत हूँ, सुण लोज्यो मेरो बाती।
यो मन मेरो बड़ा कुचाली, ज्यूँ मदमातो हाथी।
सतगुर दस्त धरयो सिर ऊपर, आँकुस दे समझाती।
पल पल तेरा रूप निहारूँ निरख निरख सुख पाती।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर हरिचरणाँ चित राती।

मीराबाई की सारी कविता गेय है। भक्ति के आवेश में आकर गिरिधर गोपाल के सामने नाचते हुए इन्होंने जो अनूठे पद गाये, उनमें महात्मा सूरदास आदि अन्य भक्तों की तरह पुनरुक्ति चाहे भले ही हो पर वे इतने मर्मस्पर्शी और हृदयहारी हैं, कि अरसिक को भी एक बार रसलीन कर देते हैं, साथ ही संगीत की सुर और लय में बँधे होने के कारण वे पद अत्यधिक प्रभावोत्पादक हो गये हैं। गीति-काव्य होने के कारण उनकी कविता में छंदों की विभिन्नता नहीं परन्तु अनेक तरह की राग-रागनियाँ हैं। इस तरह उनके पदों में कवित्व, संगीत और रस इन तीनों का सामंजस्य है। और इस पर तल्लीनता ने उनमें अनूठा रंग भर दिया है। अतएव अलंकारों का बाहुल्य न होने पर भी, भाषा के लालित्य और सजावट की ओर ध्यान न दिये जाने पर भी वे पद साहित्य की अनूठी संपत्ति कहे जा सकते हैं। एक वास्तविक विरहिणी को भाषा की बाहरी सजावट का ( अलंकार आदि का ) ध्यान भी कब रह सकता है ? इतने पर भी इनकी कविता में कई स्थानों पर स्वाभाविक रूप से अलंकार प्रयुक्त हुए हैं, कई जगह लोकोक्तियों और मुहावरों का सुंदर प्रयोग पाया जाता है।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

त्याग! अभागिनी हिन्दू-विधवा के लिए कहीं स्थान नहीं, पर उसने अपने लिए सदा के लिए हम लोगों के हृदयों में बरबस स्थान बना लिया है।

मीरा की उपासना पत्नी-भाव की है। उन्होंने भगवान् कृष्ण को सदा स्वामी रूप में ही स्मरण किया है। कबीर की भाँति राम की बहुरिया होकर, राम से पृथक् होकर वे उन के सगुण रूप की अवहेलना नहीं कर सकीं। जिस प्रकार दम्पती में कोई भेद-भाव नहीं रहता उसी प्रकार उनका कृष्ण से कोई दूरत्व नहीं रहा। जिस प्रकार पत्नी अपने स्वामी की बाट उत्सुक हो कर जोहती है उसी प्रकार वे अपने गिरिधर के आगमन की प्रतीक्षा में व्याकुल होकर कहती हैं—

आवो मनमोहना जी जोऊँ थाँरी बाट।
खान पान मोहि नेक न भावे नैण न लगे कपाट।
तुम आया बिन सुख नहिं मेरे दिल में बहोत उचाट॥

प्रियतम से साक्षात्कार होने पर कहती है—

पिया जो म्हाँरे नैणाँ आगे रहज्यो जी।
नैणाँ आगे रहज्यो, म्हाँने भूल मत जाज्यो जी।

प्रियतम रूठा है—बुलाने पर न बोलता ही है न आँख ही उठाता है—कितना स्वाभाविक वर्णन है, कितना क्षोभ हो रहा है—

तनक हरि चितवौ जी मेरी ओर,
हम चितवत तुम चितवत नाहीं; दिल के बड़े कठोर।
मेरे आसा चितवनि तुमरी; और न दूजी दोर।

मीरा ने पर्याप्त स्थानों पर रहस्यवाद को भी अपनाया है जो कि कबीर आदि निर्गुण भक्त कवियों की प्रचलित परम्परा का संस्कार है; किन्तु इनका रहस्य-वाद कोरा रूखा-सूखा ब्रह्मवाद ही


Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नहीं है। इन्होंने रहस्यवाद में हृदयवाद को इतने कोमल तन्तुओं से जोड़ दिया है कि निराकार ब्रह्म साकार आत्मवाद के अत्यन्त निकट आ जाता है। हृदय उल्लसित होकर उसे पाने के लिए छटपटा उठता है—देखिए,

नैनन बनज बसाऊँ री; जो मैं साहिब पाऊँ री
इन नैनन मेरा साहिब बसता; डरती पलक न लाऊँ री
त्रिकुटी महल में बना है झरोखा; तहाँ से झाँकी लगाऊँ री
सुन्न महल में सुरति जगाऊँ; सुख की सेज बिछाऊँ री।

× × × ×

तेरो कोई नहिं रोकन हार ( मगन होय मीरा चली )
लाज सरम कुल की मरजादा, सिर से दूरि करी
मान-अपमान दोउ घर पटके निकसी हूँ ज्ञान गली
ऊँची अटरिया लाल किवड़ियाँ, निरगुन सेज बिछी।
पँचरंगी झालर सुभ सोहै, फूलन फूल कली।

× × × ×

सेज सुखमणा मीरा सोवे सुभ है आज घरी।

× × × ×

फागुन के दिन चार रे, होली खेल मना रे।
बिन करताल पखावज बाजै, अणहद की झनकार रे।
बिन सुर राग छतीसूँ गावै, रोम रोम रंग सार रे।
सील सँतोष की केसर रोली, प्रेम प्रीत पिचकार रे।
उड़त गुलाल लाल भये बादर, बरसत रंग अपार रे।
घट के सब पट खोल दिये हैं, लोक-लाज सब डार रे।
होली खेल प्यारी घर आये, सोइ प्यारी पिय प्यार रे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण-कँवल ब्यौहार रे।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चित्तौर भी आपद-ग्रस्त था। अतः जान पड़ता है इसी समय इन्होंने गुसाईं तुलसीदास जी को पत्र लिखा जो १६१६ के बाद उन्हें मिला। इसके बाद वे द्वारावती गईं और अनुमानतः १६२०-३० के बीच में वहीं देवत्व को प्राप्त हुईं।

प्रियादास जी ने लिखा है कि चित्तौर में विपत्तियों के आने का कारण मीरा का गृहत्याग समझा गया। इससे राणा ने मीरा को फिर चित्तौर वापस ले आने के लिए कई ब्राह्मण द्वारावती भेजे। उनके आग्रह करने पर मीराबाई रणछोड़ जी से विदा लेने के लिए मंदिर में गईं और वहीं मूर्ति में समा गईं।

इनके निधन-काल का अभी ठीक से पता नहीं चला। मुं० देवीप्रसाद जी ने इनका अन्त-काल १६०३ माना है। बहुत सम्भव है ये उस काल तक अपने पीहर मेड़ता में रही हों, किन्तु इतने थोड़े समय में इतनी घटनाओं का घटित होना यदि असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य जान पड़ता है। इनके पदों से जान पड़ता है कि ये काफी समय तक द्वारावती में रही हैं और रणछोड़ जी के सामने प्रेम-मुग्ध होकर पद गान तथा नृत्य करती रही हैं। गुजरात में मीरा के पद उसी प्रकार घर-घर में प्रसिद्ध और प्रचलित हैं जिस प्रकार यहाँ गुसाईं जी के दोहे चौपाई। इस से जान पड़ता है कि मीरा पर्याप्त समय तक गुजरात में रही होंगी; अन्यथा उनकी इतनी ख्याति न होती। यही ख्याति सुन कर सम्भव है अकबर उनके दर्शनों का उत्सुक होकर मिलने गया हो। इस कथन के अनुसार मीरा का मृत्युकाल १६३० के लगभग आता है जो कि असंभव नहीं जान पड़ता। ७०-७२ वर्ष तक जीवित रहना कोई असंभव बात नहीं है। उनके पदों का उनके जीवन-काल में इतना प्रसिद्ध होना भी यही प्रमाणित करता है कि वे दीर्घ आयु भोग कर परम धाम सिधारी होंगी। भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र जी ने मीरा का मृत्यु-काल १६२०-३० के बीच का समय माना है जो संगत जान पड़ता है। ❀

❀ परिषद-निबन्धावली के आधार पर।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# मीरा की कविता और उनकी भाषा

देवी मीरा के पद हिन्दी साहित्य का गौरव और भाषा-सुन्दरी का जगमगाता हुआ रत्नहार हैं। मीरा केवल भक्त ही न थीं वरन् एक उच्चकोटि की कवि भी थीं। एक कवि के लिए जिन विशेष गुणों की आवश्यकता होती है वे सब उनमें स्वभावतः विद्यमान थे। क्या भाव, क्या उमंग एवं उत्साह, क्या भावुकता तथा तल्लीनता किसी भी वस्तु की उनमें कमी न थी। मीरा का काव्य भाषा का काव्य नहीं अपितु हृदय का काव्य है; जिस पर प्राण झुक-झुक जाते हैं। कान जिस को पी-पी कर अतृप्त रहते हैं। जो प्रेम का पावन प्रवाह बहा कर श्रोताओं को परिप्लावित कर देता है। नाभाजी ने भक्तमाल में मीरा का जो परिचय दिया है, वह मीरा की अनन्य निष्ठा एवं स्वर्गीय प्रेम का ज्वलन्त उदाहरण है।

सदरिस गोपिन प्रेम प्रगट कलजुगहिं दिखायो।
निरअंकुस अति निडर रसिक-जस रसना गायो।
दुष्टन दोष विचारि मृत्यु को उद्यम कीयो।
बार न बाँको भयो गरल ज्यों अमृत पीयो।
भक्ति निसान वजाय के काहू ते नाहीं लजी।
लोक-लाज, कुल सृंखला तजि मीरा गिरधर भजी।

संसार में सब से प्रिय वस्तु हैं आत्म-गौरव एवं पारिवारिक आदर। मीराने इन्हीं को ठुकराकर अपने जीवन का सब से महत्त्वपूर्ण त्याग किया है। लोगों ने तालियाँ बजाई, राणा ने विष पिलाया, किन्तु इससे क्या वे अपने प्रियतम को भूल सकती थीं? स्थान-स्थान में उन्हें मारे-मारे फिरना पड़ा पर गिरिधर की बाल-मूर्ति उनके वक्ष से पृथक न हो सकी। यह है प्रेम, और यह है



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२—जोगी मत जा मत जा मत जा, पाइ परूँ मैं चेरी तेरी,
३—जावा दे जावा दे जोगी किसका मीत।
मैं जाणूँ या पार निभेगी, छाँडि चला अधबीच।
४—जोगिया से प्रीत किया दुख होई॥

प्रश्न यह है कि यह योगी कौन था जिसके लिए मीरा ने इतनी स्पष्ट व्याकुलता प्रदर्शित की है और वह दुबारा फिर नहीं आया।

कोई योगी अवश्य उनका गुरु था पर वह रैदास जी नहीं हो सकते। प्रथम तो रैदास जी रामानन्दी थे और मीरा कृष्णोपासिका, दूसरे जब मीरा ने जीव गुसाईं की सेविका बनना अस्वीकृत कर दिया तब वे कैसे किसी का शिष्यत्व स्वीकार कर लेतीं। यदि किसी को उन्होंने गुरु बनाया भी तो उसके विषय में अभी पूरा पता नहीं चल सका है अथवा यें पद क्षेपक हैं। सम्भव है आगे चलकर इस सम्बन्ध में कुछ तथ्य मिल सके। जो हो इस प्रकार मीरा अपने अनन्य देव गिरिधर के प्रेम में मुग्ध होकर जीवन व्यतीत करने लगी। मीरा की प्रेम-कथा सुन कर दूर दूर के साधु-सन्त दर्शनार्थ चित्तौर आने लगे। यह राजकुल की मर्यादा के विरुद्ध था। इससे परिवार वालों ने मीरा को रोकना चाहा। प्रथम तो मीरा को समझाने के लिए चम्पा और चमेली नाम की दो सखियाँ भेजी गईं पर मीरा पर इनका कुछ भी प्रभाव न पड़ा। तब इसका भार राणा ने बहन ऊदाबाई को सौंपा। ये ऊदाबाई किसकी पुत्री थीं यह अभी पता नहीं लगा, क्योंकि राना साँगा की पुत्रियों में इनका नाम नहीं मिलता। अतः सम्भव है ये चाचा आदि किसी सम्बन्धी की कन्या हों। ऊदाबाई का प्रयत्न भी निष्फल गया। मीरा के ऊपर तो प्रेम का नशा पूर्ण-रूप से चढ़ गया था अतः उन्होंने कह दिया—

राज पाट भोगो तुम्हीं, हमें न तासूँ काम।

इधर राना साँगा के बाद विक्रमादित्य उत्तराधिकारी हुए।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इनकी दुष्टता इतिहास-प्रसिद्ध है। इन्होंने मीराबाई को हर प्रकार से कष्ट पहुँचाने आरम्भ किये। विष का प्याला चरणामृत कह के दयाराम पाण्डेय के हाथ मीरा के पास भेजा गया। मीरा इसे पी गईं पर उसका कुछ प्रभाव न हुआ। तब विषधर नाग पिटारे में रख कर भेजा गया, पर खोलने पर वह मीरा के लिए शालिग्राम की मूर्ति बन गया। इस प्रकार विपत्ति की कसौटी पर कसी जाकर मीरा का भगवत्-प्रेम और भी दृढ़ और उज्ज्वल हो गया। उन्होंने राणा से कह दिया—थारी मारी ना मरूँ मेरो राखणहारो और"। इस पर भी राणा को चेत न हुआ। उधर वीरमजी को मीरा के कष्टों का पता लगा तो उन्होंने इनको अपने पास बुला लिया। मीरा पीहर के आदमियों के साथ तीर्थ-यात्रा को चली गई।

**तीर्थ-यात्रा**—मीरा वृन्दावन में जीव गुसाईं से मिलने गईं तो उन्होंने कहला दिया कि मैं स्त्रियों से नहीं मिलता। इस पर मीरा ने कहला भेजा कि आज तक मैंने गिरिधर को छोड़कर सब को सखी-रूप में ही जाना था पर मुझे आज ही यह मालूम हुआ कि उनके और भी पट्टीदार हैं। इस पर जीव गुसाईं लज्जित होकर नंगे पाँव आकर मीरा से मिले और उन्होंने मीरा का बहुत आदर सत्कार किया। यहाँ कुछ दिन ठहर कर मीराबाई मेड़ता चली गईं, पर वहाँ भी उन्हें शान्ति न मिली। सं० १५९६ में मेड़ता में उपद्रव होने लगे। वीरमदेव जी से मेड़ता छीन लिया गया और अन्त में १६०० में उनका परलोक-वास हो गया। यहाँ तक ही मीरा का ऐतिहासिक वृत्त मिलता है। सम्भव है, ये यहाँ से वृन्दावन चली गई हों और कुछ दिन वहाँ रही हों, क्योंकि इन के पदों से उनका वृन्दावन में पर्याप्त समय तक रहना जान पड़ता है। सं० १६१२-१३ में ब्रजभूमि में मुग़लों के उपद्रव होने लगे थे इससे यह भी हो सकता है ये चित्तौर वापस गई हों क्योंकि मेड़ता उस समय विपत्ति में था, पर उस समय (राणा उदयसिंह के राजत्व काल) में



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गिणि—गिन कर।

भ्रमिया (डिं०)—सं०—भ्रमण, घूमना

उदौ (डिं०)—सं—उदय, प्राकृत-उदअ, उदय होना।

उहास (डिं०)—हिन्दी उजास, प्रकाश।

खीण (डिं०)—सं०—क्षीण, कृश, पतला, दुबला।

घणी (डिं०)—सं०—घनत्व, राजस्थानी भाषाओं में अब तक इस शब्द का क्रिया-विशेषण अव्यय की भाँति बहुधा प्रयोग होता है।

जेहवी (डिं०)—सं०—यादशी, जैसी।

ओपति—सं०—ओप, चमक, क्रिया प्रयोग, हिन्दी—'आनन ओप उजास'—बिहारी।

साँभलि (डिं०)—सं०—संभार, हिन्दी—संभालना, स्मरण करके।

वेसासौ (डिं०)—सं०—विश्वास।

आइस (डिं०)—सं०—आयुष, हिन्दी आयसु, आज्ञा।

नीसाण (डिं०)—हिन्दी—निशान, देशीय नगाड़ा।

जोइ (डिं०)—जो, जो भी।

साँवल (साँवर डिं०)—सं०—श्यामल।

घुरै (डिं०)—सं०—घुर, शब्द करना घहराना।'घुँघरू घुरास्याँ हो''मीरा'

कोरण (डिं०)—हिन्दी—कोर, छोर, प्रांत भाग।

कागल (डिं०)—अरबी शब्द कागज़, हिन्दी कागज़, कागद कागर।

दीठि (डिं०)—सं—दृष्टि।

परणौं (पराण डिं०)—सं०—परिणयन, ब्याहना (डिं०परणानौं क्रिया)
"माई मोहि सपने में परण गयो गोपाल"—मीरा

ऊधरी (डिं०)—सं०—उद्धरण, उद्धार किया, बचाया।

किण (डिं०)—किसने।

सहु (डिं०)—सभी।

पिण (डिं०)—सं०—पुनः, प्राकृत-पुण, फिर यद्यपि, परन्तु तो भी।

सीखावि (डिं०)—गुजराती क्रिया का प्रेरणार्थक रूप इस प्रकार



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

'आवि' लगाकर बनता है राजस्थानी में और गुजराती में बहुत से समान प्रयोग देखे जाते हैं।

ऊभा (डिं०)—सं०–उत्+भू, खड़ा होना, खड़े हुए, स्त्री,—ऊभी, "ऊभी, ठाढ़ी अरज करत हूँ"—मीरा।

परसण (डिं०)—सं०–स्पर्शनम्, स्पर्श करना, आलिंगन करना।

वेधियो (डिं०)—सं०–वेधन। "वेधि आर को पार होइगो"—मीरा

धरिया (डिं०)—सं०–धारिता, धारण किये हुए।

"धरतो रूप नवा नव धरिया इंद्र मिलण के काज"—मीरा

तँबोल (डिं०)—सं०–ताम्बूल, पान।

बीड़ौ (डिं०)—सं०–वीटकः, प्राकृत-वीडअ; पान की बीड़ी।

सिणगार (डिं०)—सं०–शृंगार।

पाँख (डिं०)—सं०–पक्ष, हिन्दी पंख, पर, डैना।

"सुनि पावेलो विरहणी रे थारी राखेलो पाँख मरोड़"—मीरा।

बीसरियाँ (डिं०)—सं०–वि+स्मरण, भूलना।

बछल (डिं०)—सं०–वत्सल।

दाधा (डिं०)—दग्ध, प्राकृत–दाधा, जला हुआ।

लूण (डिं०)—नोन, नमक।

"चोंच कटाऊँ पपइया रे, ऊपर कालर लूण"—मीरा।

जासी (डिं०)—जायगी।

नीपायो (डिं०)—सं०–निष्पद्यते, प्राकृत निपज्जई, हिन्दी निपजै, प्रेरणार्थक हिन्दी निपजायौ। डिंगल में इसो प्रेरणार्थक का रूपांतर नीपायौ है। यहाँ 'ज' का लोप हो गया है।

जोवै (हिं०)—जोतना, देखना†

---

† प्रिथीराज कृत बेलि क्रिसन रुक्मणी से उद्धृत।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
यह वाक्य-विन्यास के सम्बन्ध में गुजराती का अनुकरण करती है। पश्चिमी हिन्दी में बोलने का अर्थ देने वाली क्रियाओं के सम्बन्ध में जिससे बोला जाय उसका रूप अपादान कारक में होता है जैसे—"राम गोविन्द से कहता है", पर गुजराती में इसका रूप सम्प्रदान कारक सा होता है—"राम गोविन्द ने कहे छे।"

पश्चिमी हिन्दी में जब सकर्मक क्रिया सामान्य-भूतकाल में प्रयुक्त होती है और कर्म सप्रत्यय रखा जाता है तब उसका रूप पुँल्लिंग का-सा होता है, पर गुजराती में कर्म के अनुसार लिंग होता है यथा—(पश्चि० हि०) 'उसने स्त्री को मारा', [गुजराती] 'तेणे स्त्री ने मारी' राजस्थानी में दोनों प्रकार के होते हैं।

सारांश यही है कि राजस्थानी भाषा पर गुजराती का बहुत प्रभाव पड़ा है। संज्ञाओं के कारक-रूपों में यह गुजराती से बहुत मिलती है, पश्चिमी हिन्दी से नहीं। इसकी विभक्तियाँ अलग ही हैं। जहाँ कहीं समानता है वहाँ गुजराती से अधिक है, पश्चिमी हिन्दी से कम! *

## मीराबाई की रचनाएँ

१. नरसी जी रो माहेरो—यह ग्रथ पदों में हैं और मीरा की मिथुला नामक सखी को संबोधित करके लिखा गया है। श्री नरोत्तमदास जी स्वामी एम. ए. ने लिखा है कि उनको इसकी एक प्रति मिली है।

२. गीत गोविंद की टीका—यह ग्रंथ अप्राप्य है, संभवतः महाराणा कुंभ की लिखित टीका मीरा की मान ली गई है।

३. राग गोविंद ४. राग सोरठ के पद—मीरा के जो प्रकीर्णक पद मिलते हैं वे संभवतः इन्हीं दोनों ग्रंथों के हैं।

* शब्द-सागर प्रस्तावना पृ० २८ । २९



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# मीरा की कविता के शब्द और उनकी उत्पत्ति

जेणि—सं०–येन–सर्वनाम यत्, कर्तृवाच्यप्रयोग
हूँ (डिं०)—सं०–अहम्, मैं
जाणे—(डिं०)—सं०–जाने, उत्प्रेक्षा का चिह्न—जनु।
बाउलौ (डिं०)—सं०–वातुलक:, प्राकृत-वाउलऊ; हिन्दी बावला स्त्रीलिंग—बावरी, बावली।
सरिसौ—(डिं०)—सं०–सदृश, प्राकृत-सरिस, समान।
नवनव—सं०–नवीन, नया।
तिणि—(डिं०)—सं०–तत्-तेन, जिण-तिण अपेक्षित सर्वनाम
वचण—(डिं०)—सं०–वचन, प्राकृत-वयण, बोली।
तूझ—(डिं०)—सं०–तुभ्यम्, प्रकृत तुज्झ, तूझ, हि० तुझ।
कुण—(डिं०)—सं०–क:, अवधी-कवन, हिन्दी-कौन
करि—(सं०) सप्तमी विभक्त्यन्त "कर" हाथ।
सरै (डिं०)—सरना, पूजना, पूरना।
जिवडा या जिवडी (डिं०)—सं०—जीव, आत्मा।
हेत (डिं०)—सं०–हित, स्नेह, प्रेम।
विसेख (डिं०)—सं०–विशेष।
वेस— (डिं०)—सं०–वयस, उम्र आयु।
अम्ब (डिं०)—सं०–अम्बर, आकाश।
जोवण—(डिं०)—सं०–यौवन, प्राकृत–जोव्वण, हिन्दी–यौवन।
होइसै—(डिं०)—सं०—भविष्यत्, प्राकृत-होइस्सइ, होइस्सदि।
बीछड़ती (डिं०)—सं०–विच्छेद, अलग होते हुए।
सँघाती (डिं०)—सं०–संघ, संघात+ई, साथी।
काज (डिं०) सं०–कार्य्य, के लिए, वास्ते 'इन्द्र मिलण के काज'–मीरा



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पंजाबी, फ़ारसी आदि के शब्द भी कहीं-कहीं प्रयुक्त हुए हैं। पूर्वी (बिहार आदि की) भाषा का भी कहीं-कहीं रूप मिलता है। पूर्वी में दो एक पद भी कहे हैं यथा--

कहँ गइलें बछरू, कहँ गइलीं गाय
कहँ गइले धेनु चरावन राय
कहँ गइलीं गोपी, कहँ गइलें बाल
कहँ गइले मुरली बजावण हार
मीरा के प्रभु गिरिधरलाल
तुम्हरे दरस बिनु भईल बेहाल*।

यह पद 'शब्दावली' में है, परन्तु इसके बारे में पूरा निश्चय नहीं है, अतएव हमने प्रस्तुत 'पदावली' में नहीं दिया। फिर भी यह कहना पड़ेगा कि मीरा की कविता में बहुत सी भाषाओं का सम्मिश्रण पाये जाने पर भी उनकी कविता की भाषा राजस्थानी है जो पश्चिमी हिन्दी की एक प्रधान शाखा है।"

मीराबाई की कुछ कविता गुजराती में भी बताई जाती है। कई लोगों ने इस पर संदेह किया है, परन्तु इसमें संदेह करने की कोई बात नहीं, जिस तरह बंगभाषा वाले मैथिल-कोकिल विद्यापति को अपनी ओर खेंचते हैं, और हिन्दी वाले अपनी ओर। वही हाल मीरा का है। हम पहले लिख चुकी हैं कि मीरा के पद गुजरात में घर-घर उसी तरह प्रसिद्ध हैं जिस प्रकार यहाँ गुसाँई जी के दोहे और चौपाई। उसका कारण यह है कि उस समय गुजराती और राजस्थानी में इतना भेद न था। डा० टेसीटरी का मत है कि पंद्रहवीं शताब्दी तक पश्चिमी राजपूताना और गुजरात में एक ही भाषा बोली जाती थी, इसे वे प्राचीन राजस्थानी भाषा कहते हैं, यही भाषा गुजराती और मारवाड़ी की जननी थी।

* परिषद निबंधावली से।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बाबू श्यामसुन्दरदास जी ने भी हिन्दी भाषा के विकास में लिखा है कि "राजस्थानी भाषा की चार बोलियाँ हैं—मारवाड़ी जयपुरी, मेवाती और मालवी। मारवाड़ी का पुराना साहित्य डिंगल नाम से प्रसिद्ध है। जयपुरी और मारवाड़ी गुजराती से मेवाती व्रज-भाषा से और मालवी बुन्देलखंडी से बहुत मिलती जुलती है।"

संज्ञा शब्दों के एकवचन रूप प्रायः समान होते हैं, पर बहुवचनों में अन्तर पड़ जाता है, जैसे—एकवचन—घर, घोड़ा, घोड़ी, पर बहुवचन में इनके रूप घरयाँ, घोड़ाँ, घोड्याँ हो जाते हैं।

व्रजभाषा में सर्वनाम एकवचन का मूलरूप मो, मुज, मे, या तो, तुज्ञ, ते है पर राजस्थानी में हुँ, ते, तू, है जो गुजराती से मिलता है। बहुवचन में 'हम' का 'म्हां' और 'तुम' का 'थाँ' हो जाता है। राजस्थानी में एकवचन के पहले व्यंजन को हकार मय कर देते हैं जैसे "म्हा"। सारांश यह है कि राजस्थानी में व्यक्ति-वाचक सर्वनामों का कहीं गुजराती से और कहीं व्रजभाषा अथवा बुंदेलखंडी से साम्य है और कहीं इससे सर्वथा भिन्न।

राजस्थानी भाषाओं की क्रियाओं में एक बड़ी विशेषता है। उनमें कर्मणि-प्रयोग बराबर मिलता है, जो पश्चिमी हिन्दी में बहुत ही कम होता है। इनकी क्रियाओं में विशेषता इतनी ही है कि वर्तमान काल में उत्तम पुरुष बहुवचन का प्रत्यय 'आं' होता है पर प्रथम पुरुष बहुवचन का प्रत्यय विशेषण के समान 'आ' होता है।

राजस्थानी में क्रियाओं के रूप प्रायः पश्चिमी हिन्दी के समान होते हैं। भविष्यत् काल में इसके दो रूप होते हैं—

[१] प्राकृत के अनुरूप, चलिस्सामि, चलिहामि, चलस्यूँ, चलह्यूँ।

[२] 'गा' या 'ला' प्रत्यय लगाकर, चलूँलो, चलाँला, चलूँला, चलूँगो, चलाँगा।

त

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

"नाचन लगी जब घूँघट कैसो लोक लाज तिणका ज्यूँ तोर्यो
नेकी बदी हूँ सिर पर धारी मन हस्ती अँकुस दे मार्यो ।"

कविता की दृष्टि से मीराबाई का हिन्दी-साहित्य में क्या स्थान है इस पर दो शब्द कहना भी यहाँ अनुचित न होगा। ऊपर हम देख चुके हैं कि मीरा की कविता प्रत्येक दृष्टि से उच्चकोटि की है, अतएव इनकी गणना हिन्दी के उच्चकोटि के कवियों में की जा सकती है, विशेषतः कृष्ण-भक्त कवियों में इनका स्थान बहुत ऊँचा है। जिस प्रकार पुरुष कृष्ण-भक्तों में महात्मा सूरदास जी सर्व-प्रधान माने जाते हैं। वैसे ही स्त्री-समाज में मीरा को प्रधान स्थान प्राप्त है, अपितु कइयों के मत में तो "हिन्दी के शुद्ध भक्ति-मय गीति-काव्य में तो मीरा का पद कदाचित् ही सूर से उतर कर हो। सूर तथा मीरा का आधार क्रमशः श्रीमद्भागवत तथा गीतगोविन्द है; परन्तु मीरा में एक विशेषता है। इष्टदेव को अपनी भक्ति-पुष्पांजलि अर्पण करने के लिए सूर ने गोपियों का आश्रय लिया है; परन्तु मीरा को किसी मध्यस्थ की आवश्यकता नहीं। उनका हृदय ही उनकी वीणा है, सुननेवाला कहीं मथुरा अथवा द्वारका का वासी नहीं वह तो उनके हृदय में ही निवास करता है इसी से मीरा की कविता में व्यक्तित्व की गहरी छाप लगी हुई है। हृदय के सच्चे उद्गार होने के कारण उनकी कविता भावुकतामयी है। उनके पदों की वाणी वनितातुल्य ललित, कोमल तथा मधुर रसपूर्ण है। कविता में स्वाभाविकता, सरलता, प्रेमपरता का यथोचित सामञ्जस्य है। हृदय वाद्ययंत्र है, रसना रोड़ है, इच्छा उंगली है और भाषा झङ्कार। आनन्द-विह्वला मीरा की तंत्री की झङ्कार देखिए, कैसे कोमल सुरों में सुनाई पड़ती है!—

"बसो मेरे नैनन में नँदलाल।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मोहनी मूरति, साँवरि सूरति, नैना बने विसाल।
अधर सुधारस मुरली राजति, उर बैजंती माल॥
छुद्र घंटिका कटितट सोभित, नुपुर शब्द रसाल।
'मीरा' प्रभु संतन सुखदाई, भक्तबछल गोपाल॥"

इस पद के पढ़ने मात्र से हमारी आँखों के सामने कृष्ण की साँवली मूर्ति, गुलाबी होठों पर वंशी की तान सुनाते दिखाई पड़ने लगती है, तो उस समय मीरा के हृदय की क्या दशा होगी होगी, जब वह स्वयं हाथों में करताल ले इस भजन को "देवगांधार" में, प्रातःकाल, अनन्य भाव से, अपने गिरिधर नागर के सम्मुख गाती होगी। मीरा के हृदय-कुञ्ज में से काव्य के फ़व्वारों से उत्पन्न होनेवाली प्रेमोर्मियाँ सचमुच अन्तःकरण को अत्यन्त प्रशान्त और सुखमय कर देती हैं।" *

यह हुआ मीरा की कविता का अत्यन्त संक्षिप्त विवेचन क्योंकि स्थान और समयाभाव से विशेष कुछ नहीं लिखा जा सकता। पाठक एवं पाठिकाएँ पदों के अनुशीलन द्वारा स्वयं मीरा की कविता से अवगत हो जायँगी।

अब विचारणीय यह है कि मीरा की भाषा कौन-सी है। यदि ध्यान-पूर्वक देखा जाय तो मीरा के पदों में कई प्रकार की भाषाओं के शब्द मिलेंगे। इसका मुख्य कारण है उनका तीर्थाटन और साधु-सत्संग। भगवत्-प्रेमी सन्त-समुदाय मीरा के दर्शनार्थ आया करता था जिससे उनके शब्द मीरा के पदों में आ गये। इसके अतिरिक्त मीरा का सम्बन्ध चार विभिन्न प्रदेशों से रहा है, मारवाड़, मेवाड़, गुजरात और ब्रज। यद्यपि इनकी भाषा राजस्थानी है तथापि उसमें ब्रजभाषा के शब्द अधिक प्रयुक्त हुए हैं। गुजराती,

* परिषद-निबन्धावली से।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# मीरा-पदावली

## ( १ )

मन रे परसि हरि के चरण +

सुभग सीतल *कँवल कोमल, त्रिविधि[1] ज्वाला हरण
जिण चरण प्रहलाद परसे[2], इन्द्र पदवी धरण
जिण चरण ध्रुव अटल कीणे, राखि अपनी सरण
†जिण चरण ब्रह्मांड भेटचो, नख सिखौ सिरी भरण
जिण चरण प्रभु परसि लीणो, तरी गोतम घरण
जिण चरण ‡काली नाग नाथ्यौ, गोप-लीला करण
जिण चरण धारचो गोवरधन, गरव मघवा[3] हरण
दासि मीरा लाल गिरधर, अगम तारणतरण

+ टिप्पणी—यों तो मीराबाई का प्रत्येक पद सहज स्नेह से स्निग्ध है किन्तु पुस्तक के मंगलाचरण के लिए यह पद ही मुझे विशेष रुचिकर प्रतीत हुआ है। साथ ही संगीत की स्वर-लहरी का ध्यान रखते हुए जो शब्द विशेष उचित जान पड़े हैं उन्हीं का प्रयोग किया गया है।

१. तीनों प्रकार के ताप—अर्थात् आधिदैविक, आध्यात्मिक और आधिभौतिक। २. स्पर्श करके, छूकर। ३. देवराज इंद्र।

* 'ख' तथा 'ग' प्रति में कँवल के स्थान पर "कमल" पाठ है

† 'ख' प्रति में इस पंक्ति के स्थान पर, "जिन चरण त्रयलोक नाप्यो, छलन बलि उद्धरन' है।

‡ 'ख' और 'ग' प्रति में 'कालीहि नाथ्यौ' है। ( ? )



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

*जब से मोहि नन्द नन्दन दृष्टि[1] पड़यो माई,
तब से परलोक, लोक कछू न सोहाई ॥
मोरन की चन्द्रकला[2] सीस मुकुट सोहै।
केसर को तिलक भाल[3] तीन लोक मोहै ॥
कुंडल की अलक[4] झलक[5] कपोलन[6] पर छाई।
मनो[7] मीन[8] सरवर[9] तजि मकर[10] मिलन आई ॥
कुटुलि[11] भृकुटि[12] तिलक भाल, चितवन में टोना[13]।
खंजन[14] अरु मधुप[15] मीन भूले मृग-छौना[16] ॥
सुन्दर अति नासिका सुग्रीव[17] तीन रेखा।
नटवर[18] प्रभु भेष धर, रूप अति विसेखा ॥

---

१. दिखाई पड़ा। २. श्रीकृष्णचंद्र मोर पंख की कलगी का मुकुट धारण करते थे, मोर पंख में जो गोल-गोल चमकदार आँख जैसे घेरे होते हैं वे ही चन्द्रकला हैं, मोर-चन्द्रिका, मुकुट के किरीटि। ३. मस्तक, ललाट। ४. अलकें, जुल्फें। ५. आभा, छाया। ६. गाल। ७. मानो। ८. मछली। ९. तालाब। १०. मगर। ११. टेढ़ी, बक्र। १२. भ्रू-युगल, भौंहें। १३. जादू। १४. पक्षी विशेष, यह श्वेतश्याम और भूरे रंग का होता है। शरद ऋतु (क्वार मास) में बहुधा दिखाई पड़ता है। नेत्रों की उपमा इसकी कविप्रसिद्ध है। १५. भौंरा। १६. मृग-शावक, हरिण का बच्चा। १७. सुन्दर कंठ में। १८. नटों का सा विशेष वेष धारण करने वाले (श्रीकृष्ण का विशेषण)।

---

* 'ज' प्रति में ऊपर की दो पंक्तियाँ नहीं हैं। 'घ' में मीरा की निजी भाषा नहीं है, आधुनिक रूप दे दिया गया है।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अधर[1] बिंब अरुन[2] नैन मधुर मंद हाँसी[3] ।
दसन[4] दमक[5] दाड़िम[6] दुति[7] चमके चपला[8] सी ॥
+छुद्र-घंट किंकिनी,[9] अनूप[10] धुनि सोहाई ।
गिरधर के अंग अंग, मीरा बलि जाई ॥

( ३ )

अब तो निभायाँ[11] बनेगा, बाँह गहे[12] की लाज ।
समरथ सरण तुम्हारी साइयाँ[13] सरब सुधारण काज ॥१॥
भव-सागर संसार अपरबल[14], जा में तुम हो जहाज ॥२॥
निरधारा[15] आधार[16] जगत गुरु, तुम बिन होय अकाज ॥३॥
जुग-जुग भीर[17] करी भक्तन की, दीन्हीं मोच्छ[18] समाज ॥४॥
मीरा सरण गही[19] चरणन की, पेज[20] रखो महाराज ॥५॥

१. ओंठ । २. अरुण, लाल । ३. हँसी, मुसकान । ४. दशन, दांत । ५. चमक । ६. अनार के दाने । ७. आभा प्रकाश ८. बिजली । ९. कटि का आभूषण विशेष, घुंघुरुदार करधनी । १०. अनुपमेय, अनोखा । ११. निर्वाह, निबाहे । १२. हाथ पकड़ने । १३. साँई, स्वामी । १४. अगम, जिसका आर पार न हो । १५. आधारहीन, बिना सहारे वाला । १६. अवलम्ब, सहारा । १७. सहायता करके भीड़ लगा ली । १८. मोक्ष, निर्वाण, तार दिया । १९ पकड़ी । २०. लज्जा-लाज ।

+ 'ग' प्रति में नीचे की पंक्तियाँ नहीं हैं ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( ४ )

अब मैं सरण तिहारी जी, मोंहि राखो कृपा-निधान।
अजामील अपराधी तारे, तारे नीच सदान।
जल डूबत गजराज उबारे, गणिका चढ़ी विमान।
कुबजा नीच भीलनी तारी, जानै सकल जहान।
और अधम तारे बहुतेरे, भाखत संत-सुजान।
कहँ लगि कहूँ गिनत नहिं आवै, थकि रहे वेद पुरान।
मीरा कहै मैं सरण रावली[1], सुनियो दोनों कान॥

( ५ )

अब नहिं विसरूँ, म्हारे हिरदे लिख्यो हरि नाम।
म्हारे सतगुर दियो बताय, अब नहिं विसरूँ रे॥
मीरा बैठी महल में रे, ऊठत बैठत राम।
सेवा करस्याँ साध की, म्हाँरे और न दूजो काम॥
राणो जी बतलाइयाँ[2] कइ[3] देणो जवाब।
पण लागो हरि नाम सूँ, म्हारें दिन-दिन दूनो लाभ॥
सीप भरयो पानी पिवे रे, टाँक[4] भरयो अन्न खाय।
बतलायाँ बोलो नहीं रे, राणो जी गया रिसाय॥

---

१ श्रीमान की, आपकी। २. पूछा। ३. कहना। ४. चार माशा भर।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विष रा प्याला राणो जी भेज्या, दीजो मेड़तणी के हाथ।
कर चरणामृत पी गई, म्हाँरा सबल धणी[1] का साथ॥
विष को प्यालो पी गई, भजन करे उस ठौर।
थारी मारी न मरूँ, म्हाँरी राखणहारो और॥

( ६ )

अच्छे मीठे चाख-चाख, बेर लाई भीलणी।[2]
ऐसी कहा अचारवती, रूप नहीं एक रती,
नीच कुल ओछी जात, अति ही कुचालणी॥
झूठे फल लीन्हे राम, प्रेम की प्रतीत जाण,
ऊँच नीच जाने नहीं रस की रसीलणी॥
ऐसी कहा वेद पढ़ी, छिन में विमाण चढ़ी,
हरि जी सूँ बाँध्यो हेत, वैकुँठ में झूलणी॥
ऐसी प्रीति करे सोइ, दास तरे मीरा जोइ,
पतित-पावन प्रभु, गोकुल अहीरणी॥

---

१ अधिपति, पति।

२ टिप्पणी—रामवतार में, किष्किन्धा जाते समय श्रीरामचन्द्र जी की शबरी भीलनी से भेंट हुई थी। उस अवसर पर शबरी ने चख चख कर मीठे-मीठे बेर राम को अर्पण किए थे।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( ७ )

अपणे करम को वो छै दोस काकूँ दीजै रे ऊधो।
सुणियो मेरी बगड़[1] पड़ोसण, गेले[2] चलत लागी चोट।
पहली ग्यान मान नहिं कीन्हौ, मैं ममता की बाँधी पोट।
मैं जाण्यूँ हरि नाहिं तजेंगे, करम लिख्यो भलि पोच[3] ॥
मीरा के प्रभु हरि अविनासी, परो[4] निवारो[5] नी सोच ॥

( ८ )

अब नहिं मानूँ राणाँ थारी, मैं बर पायो गिरधारी ॥
मनि कपूर की एक गति (गती) है, कोऊ कहो हजारी।
कंकर कंचन एक गति (गती) है, गुंज[6] मिरच एक सारी ॥
अनड़ धणी को सरणो लीनो, हाथ समिरनी धारी।
जोग लियो जब क्या दिलगीरी, गुरु पाया निज भारी ॥
साधू संगत यह दिल राजी, भई कुटुम्ब सूँ न्यारी।
क्रोड़ बार समझावो मोकूँ, चालूँगी बुद्ध हमारी ॥
रतन जड़ित को टोपा सिर पै, हार कंठ को भारी।
चरण घूँघरू धमस पड़त है, म्हें कराँ स्याम सूँ यारी ॥
लाज सरम सब ही मैं डारी, यौ तन चरण अधारी।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, झख मारो संसारी ॥

१. पास रहने वाली। २. गैल-मार्ग, रास्ता। ३. बुरा। ४. दूर (अलग) पृथक। ५. दूर न करो। ६. घुँघची।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( ९ )

असा प्रभु जान न दीजै हो।
तन मन धन करि वारणै, हिरदै धरि लीजै हो।
आव सखी मुख देखिए, नैणाँ रस पीजै हो॥
जिहि जिहि विधि रीझै हरी, सोई विधि कीजै हो।
सुन्दर स्याम सुहावणा, मुख देख्याँ जीजै हो।
मीरा के प्रभु राम जी, वड़ भागण रीझै हो।

( १० )

आवत मोरी गलियनमें गिरधारी, मैं तो छुप गई लाज की मारी
कुसुमल[1] पाग केसरिया जामा, ऊपर फूल हजारी।
मुकुट ऊपरे छत्र विराजै, कुंडल की छवि न्यारी॥
केसरी चीर दरियाई को लेंगो[2], ऊपर अँगिया भारी॥
आवते देखी किसन मुरारी, छुप गई राधा प्यारी।
मोर मुकट मनोहर सोहै, नथनी की छवि न्यारी।
गल मोतिन की माल विराजै, चरण कमल बलिहारी।
ऊभी[3] राधा प्यारी अरज करत है, सुण जे किसन मुरारी।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल पर वारी॥

१. कुसम के रंग की। २. लँहगा। ३. खड़ी।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( ११ )

आवो मन मोहना जी मीठा थाँरा बोल ।
बालपने की प्रीत रमइया जी, कदे[1] नहिं आयो थारो[2] तोल[3] ॥
दरसन विन मोंहिं जक[4] न परत है, चित मेरो डाँवाडोल ॥
मीरा कहै मैं भई रावरी[5], कहो तो वजाऊँ ढोल ॥

( १२ )

आवो मन मोहना जी, जोऊँ थारी बाट ।
खान पान मोहि नेक न भावे, नैण न लगे कपाट ।
तुम आया विन सुख नहिं मेरे, दिल में वहोत उचाट ।
मीरा कहे मैं भई रावरी, छाँड़ो नाहि निराट[6] ॥

( १३ )

आवो सहेल्या[7] रलीं[8] कराँ[9] हे, पर घर गवण[10] निवारि[11] ।
झूठा माणिक[12] मोतिया[13] री, झूठी जगमग जोति ।
झूठा सब आभूखण री, साँची पियाजी[14] री पोति[15] ॥

---

१. कभी । २.तुम्हारा । ३. पता-खोज । ४. चैन,कल । ५.तुम्हारी । ६. अकेला, असहाय । ७. सहेलियो । ८. आनन्द, उत्सव । ९. करें । १०. गमन । ११. छोड़कर । १२. एक मणि । १३. मोती । १४. परमात्मा रूपी प्रेमी । १५. पोति, माला ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

झूठा पाट पटंबरा[1] रे, झूठा दिखणी चीर[2]।
साँची पिया जी री गूदड़ी, जामे निरमल रहे सरीर।
छप्पन भोग बुहाइ[3] दे हे, इन भोगिन[4] में दाग़।
लूण अलूणो[5] ही भलो हे, अपणे पिया जी को साग।
देखि विराणे[6] निवाँण[7] कूँ हे, क्यूँ उपजावे[8] खीज[9]।
कालर[10] अपणो ही भलो हे, जामें निपज्वै[11] चीज़[12]।
छैल[13] विराणो लाख को हे, अपणे काज न होइ।
ताके संग सिधारताँ[14] हे, भला न कहसी कोइ।
वर हीणो अपणो भलो हे, कोढ़ी कुष्ठी होइ।
जाके सँग सिधारताँ हे, भला कहे सब कोइ।
अविनासी सूँ बालवा हे, जिनसूँ साँची प्रीति।
मीराँ कूँ प्रभु मिल्या हे, ए ही भगति की रीती॥

---

१. रेशमी वस्त्र। २. एक विशेष प्रकार का बहुमूल्य वस्त्र, यह दक्षिण (विजयनगर) में बनता था। ३. बहा दे। ४. व्यंजनों (भोजन के भेद)। ५. नमक या बिना नमक का, अलोना। ६. पराये। ७. नीची अतएव उपजाऊ भूमि। ८. मन में उत्पन्न करता है। ९. खीझ, ईर्ष्या, द्वेष। १०. कल्लर, नोनी मिट्टी, बंजर। ११. उत्पन्न होती है। १२. उत्तम वस्तु। १३. रसिक, युवक। १४. जाते हुए।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( १४ )

आली म्हाँने लागे वृन्दावन नीको ।
घर घर तुलसी ठाकुर पूजा, दरसण गोविंद जी को।
निरमल नीर बहत जमना में, भोजन दूध दही को।
रतन सिंघासण आप विराजै, मुगट धरचो तुलसी को।
कुंजन कुंजन फिरत राधिका, सबद सुणत मुरली को।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, भजन विना नर फीको ॥

( १५ )

आली रे मेरे नैणाँ बाण पड़ी ।
चित्त चढ़ी मेरे माधुरी मूरत, उर विच आन अड़ी।
कब की ठाढ़ी पंथ निहारूँ, अपने भवन खड़ी।
कैसे प्राण-पिया विन राखूँ, जीवन मूरि जड़ी।
मीरा गिरधर हाथ बिकानी, लोग कहै बिगड़ी ॥

( १६ )

इक अरज सुनो पिय मोरी, मैं किण संग खेलूँ होरी।
तुम तो जाय बिदेसाँ छाये, हम से रहे चित चोरी।
तन आभूषण छोड़े सब ही, तज दियो पाट[1] पटोरी[2]।
मिलन की लग रही डोरी ॥१॥ इक अरज०

१. रेशमी वस्त्र। २. रेशमी चादर या साड़ी।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आप मिल्याँ बिन कल न पड़त है, त्यागे तलक[1] तमोली[2] ।
मीरा के प्रभु मिलज्यो माधो, सुणज्यो अरजी मोरी ।
रस बिन बिरहन दोरी ॥२॥ इक अरज०

( १७ )

ऐसी लगन लगाए कहाँ तू जासी[3] ।
तुम देख्याँ[4] बिन कल न परति है, तलफि तलफि जिव[5] जासी ।
तेरे खातिर[6] जोगण[7] हूँगी, करवत[8] लूँगी कासी ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण कँवल की दासी ॥

( १८ )

ऐसे पियै जान न दीजै हो ।
चलो, री सखी ! मिलि राखि कै, नैना रस पीजै हो ।
स्याम सलोनो साँवरो, मुख देखे जीजै[9] हो ।
जोइ जोइ भेष सों हरि मिलैं, सोइ सोइ कीजै हो ॥
मीरा के गिरधर प्रभू, बड़भागन रीझै हो ।

---

१. तिलक, बिंदो । २. ताम्बूल, पान इत्यादि । ३. जाते हो । ४. देखे । ५. जीवन अथवा प्राण । ६. कारण, लिए । ७. जोगिन, संन्यासिनी । ८. आरी, प्राचीन साधु और महात्माओं में यह प्रसिद्ध है कि काशी में एक स्थान पर आरो (करवत) लगी थी जिस पर गला कटा देने से, लोग समझते थे, कि तुरन्त मुक्ति हो जाती है । ९. मुख देखकर जीवित रहूँ ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( १९ )

कर परम सनेही राम की, नित ओलूँड़ी आवे।
राम हमारे हम हैं राम के, हरि बिन कछु न सुहावैं।
आवन कहो अजहूँ न आये, जिवड़ो अति अकुलावैं।
तुम दरसण की आस रमय्या, निस दिन चितवत जावैं।
चरण कँवल की लगन लगि अति ! बिन दरसण दुख पावैं।
मीरा कूँ प्रभु दरसण दीन्हा आनंद बरणो न जावैं।

( २० )

करम गति टारे नाहिं टरै
सतवादी हरिचंद से राजा, सो तो नीच घर नीर भरे।
पाँच पांडु अरु सती *द्रौपदी, हाड़ हिमालय गरे।
जग्य कियो बलि लेण इन्द्रासन, सो पाताल धरे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, विख से अम्रित करे॥

---

* तृतीय पंक्ति में क, ग और घ प्रति में 'कुन्ती' पाठ है, ख में 'सती' है, मेरे विचार में 'सती' ही ठीक है क्योंकि पाण्डवों की महायात्रा में द्रौपदी ही साथ गई थी, कुन्ती का कहीं उल्लेख नहीं है।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( १३ )

करणा[1] सुणि[2] स्याम मोरी,
मैं तो होइ रही चेरी तेरी ।
दरसण कारण भई बावरी[3], बिरह बिथा तन घेरी[4] ।
तेरे कारण जोगण हूँगी दूँगी नग्र[5] बिच फेरी ।
कुँज सब हेरी हेरी[6] ।। करणा० ।
अंग भभूत गले म्रिगछाला[7], यो तन भसम करूँगी ।
अजहूँ न मिल्या राम अविनासी, वन-बन बीच फिरूँगी ।
रोऊँ नित टेरी टेरी ।। करणा० ।
जन[8] मीरा कूँ गिरधर मिलिया, दुख मेटण[9] सुख भेरी ।
रूम रूम साता भई उर में, मिटि गई फेरा फेरी ।
रहूँ चरननि तेरि चेरी ।। करणा० ।

( २२ )

किण संग खेलूँ होली, पिया तज गये अकेली ।।
माणिक मोती सब हम छोड़े, गल में पहनी सेली ।
भोजन भवन भलो नहिं लागै, पिया कारण भई गैली[10] ।
मुझे दूरी क्यो म्हेली[11] । किण० ।।

---

१. करुणा, प्रार्थना । २. सुनो । ३. पगली । ४. घेर लिया, छा लिया, व्याप्त कर लिया । ५. नगर । ६. खोज कर । ७. मृगचर्म, मृगछाला । ८. भक्त । ९. मेटने वाले । १०. बावली । ११. रखी ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अब तुम प्रीत ओर सों जोड़ी, हम से करी क्यूँ पहिली ।
बहु दिन बीते अजहुँ नहिं आये, लग रही तालाबेली[1] ।
किण विलमाये हेली[2] ।। किण० ।
स्याम विना जिवड़ो मुरझावै, जैसे जल विन बेली[3] ।
मीरा कूँ प्रभु दरसण दीज्यो, जनम जनम की चेली ।
दरसण विन खड़ी दुहेली[4] ।। किण० ।।

( २३ )

कुण[5] बाँचै[6] पाती[7], प्रभु विन कुण बाँचै पाती ।
कागद[8] ले उधो जी आयो, कहाँ रहा[9] साथी[10] ।।
आवत जावत[11] पाव[12] घिस्योरे[13] (वाला) अँखियाँ भई राती[14] ।।१
कागद ले राधा बाँचण[15] बैठी, भर आई[16] छाती ।
नैण नीरज[17] में अंब[18] बहे रे (वाला) गंगा बहि जाती । २।।
पाना[19] ज्यूँ पीली पड़ी री (वाला), अन्न नहिं खाती ।
हरि विन जिवड़ो[20] यूँ जलै रे(वाला) ज्यूँ दीपक संग वाती[21] ।३।

---

१. बेकली, व्याकुलता । २. सहेली, सखी । ३. बेलि, लता । ४. दुखी । ५. कौन । ६. बाँचे, पढ़े । ७. पत्रिका, पत्र, चिट्ठी । ८. कागज़, पत्रिका । ९. रहे । १० मित्र, साथी । ११. आते जाते हुए । १२. पैर । १३. घिस गए । १४ राती, लाल । १५. पढ़ने । १६. उमड़-आई,हृदय करुणा से उमड़ आया । १७. कमल । १८. अम्बु, जल, आँसू । १९. पान । २०. जीवन, प्राण । २१. बत्ती ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

×साँचा कुछ चकोर चंदा, झीलै[1] वहि जाती ।
व्रज नारी की विनती रे (वाला) राम मिले मिल जाती ॥४॥
म्हाने[2] भरोसो राम को रे (वाला), डूबत तर्यो[3] हाथी ।
दास मीरा लाल गिरधर, साँकड़ोरा[4] साथी[5] ॥५॥

( २४ )

कैसे जिऊँ री माई हरि विन कैसे जिऊँ री ॥
उदक[6] दादुर[7] पीनवर्त[8] है, जल से ही उपजाई ।
पल एक कूँ मीन[9] विसरै, तलफन मर जाई ॥
पिया विना पीली भई रे (वाला) ज्यों काठ घुन खाई ।
औषध[10] मूल न संचरै रे (वाला) वैद फिर जाई ॥
उदासी होय वन वन फिरूँ रे, विथा[11] तन छाई ।
दास मीरा लाल गिरधर, मिल्या है सुखदाई ॥

---

१. झोंका । २. मुझको । ३. तार दिया । ४. संकट में भक्त जनों ।[?] ५. साथी, सहायक । ६. जल । ७. मेंढक । ८. मोटा, हरा ताजा । [९.] मछली । १०. ओषधि । ११. दर्द ।

× चौथा पद केवल घ प्रति में है ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( २५ )

कोई कहियो रे प्रभु आवन की।
आवन की मनभावन की कोई ॥
आप न आवै लिख नहिं भेजै, बाँण[1] पड़ी ललचावन[2] की।
ए[3] दोई नैण कह्यौ नहिं मानै, नदियाँ बहै जैसे सावन की।
काह करूँ कछु नहिं बस मेरो, पाँख[4] नहीं उड़ जावन[5] की।
मीरा कहै प्रभु कब र(?), मिलोगे चेरी[6] भई हूँ तेरे दाँवन[7] की।

( २६ )

* कोई कछू कहे मन लागा।
ऐसी प्रीति लगी मनमोहन, ज्यों सोने में सुहागा।
जनम जनम का सोया मनुवाँ[8] सतगुर शब्द सुण जागा।
मात पिता सुत कुटुंब कबीला[9], टूट गया ज्यूँ तागा।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, भाग हमारा जागा ॥

---

१. स्वभाव, आदत। २. लालायित करने को, ललचाने की ३. ये। ४. पक्ष, पंख, पर। ५. उड़ जाने की। ६. दासी, सेविका, ७. दामन, अंचल, पटुके का छोर। ८ जीव-आत्मा, यहाँ मोह-निद्रा से जागने का भाव है। ९. कुटुम्ब।

---

*घ प्रति के अतिरिक्त २६वाँ और २७वाँ पद किसी भी प्रति में नहीं मिले २६वें पद के 'मनुवाँ, कुटुंब' आदि पद कबीर इत्यादि निर्गुण-पंथियों के भाव से प्रकृतिसाम्य रखते हैं। गुरु गोरखनाथ के सम्प्रदाय का मारवाड़ में पर्याप्त प्रभाव पड़ गया था जिससे अमर भक्तिनी मीरा के पद भी



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri

( २७ )

*कोई दिन याद करोगे रमता राम अतीत[1]।
आसण[2] माँड[3] अडिग[4] होय बैठा, याही भजन की रीत।
मैं तो जाणू जोगी संग चलेगा, छाँड गयो अधबीच[5]॥
आत न दीसै[6] जात न दीसै, जोगी किसका मीत[7]।
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, चरणन आवे चीत[8]॥

( २८ )

*कभी हमारी गली आवरे, जिया की तपन[9] बुझाव रे;
म्हाँरे मोहना प्यारे।
तेरे साँवले वदन पर, कई कोट[10] काम[11] वारे[12]।
तेरा खूबी[13] के दरस वै, नैन तरसत हमारे,

---

१. निर्माया, असंग। २. आसन, योगासन। ३. मार, लगा कर। ४. स्थिर, अचल, निश्चल। ५. आधे रास्ते में। ६. दिखाई देता है, दृष्टि पड़ता है। ७. मित्र, साथी। ८. चेतना, ज्ञान। ९. ज्वाला। १०. करोड़। ११. कामदेव। १२. निछावर। १३. चमत्कार, जलवा।

---

अछूते नहीं रह सके हैं। श्री माधव ने अपनी 'मीरा की प्रेम-साधना' नामक पुस्तक में इसका प्रमाण भी दिया है। इससे जब तक कोई विशेष प्रमाण न मिले तबतक यह नहीं कहा जा सकता कि यह मीराकृत नहीं है।

*२७वें पद के जोगी का उल्लेख मीरा ने अन्यत्र भी अपने पदों में किया है। जैसे—

'जावा दे जावा दे जोगी किसका मीत।'

*२८वाँ और २९वाँ पद घ प्रति के अतिरिक्त और किसी प्रति में



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

घायल फिरूँ तड़पती, पीड़[1] जानै नहिं कोई।
जिस लागी पीड़ प्रेम की, जिन लाई[2] जाने सोई॥
जैसे जल के सोखे मीन क्या जिवें बिचारे,
कृपा कीजै दरस दीजै, मीरा नन्द के दुलारे।

( २९ )

कमल दल लोचना[3] तैं ने कैसे नाथ्यों[4] भुजंग[5]।
पैसि पियाल काली नाग नाथ्यो, फण फण निर्त करंत।
कूद परयो[6] न डरयो[7] जल माहीं, और काहू नहिं संक।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, श्री वृन्दावन चंद॥

( ३० )

गली[8] तो चारों[9] बन्द हुई, मैं हरि से मिलूँ कैसे जाइ
ऊँची नीची राह रपटीली[10], पाँव नहीं ठहराय,
सोच सोच पग[11] धरूँ जतन[12] से, बार बार डिग जाय॥गली०

---

१. पीड़ा। २. लगाई हो, प्रेम किया हो। ३. कमल दल के समान नेत्र वाले। ४. छेदकर बाँधा। ५. सर्प। ६. पड़े। ७. भयभीत। ८. मार्ग, रास्ता। ९. सभी ओर। १०. फिसलाने वाली। ११. पैर (सोच विचार कर चलती हूँ) १२. यत्न से।

---

नहीं हैं। २८वें पद की भाषा आधुनिक रूप मिश्रित है अतः ये पद मीराकृत नहीं जान पड़ते किन्तु 'घ' प्रति में होने से उद्धृत कर दिए गए हैं।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

ऊँचा नीचा महल पिया का, हम से चढ़्या[2] न जाय,
पिया दूर पंथ म्हाँरा झीणा[3],सुरत[4] झकोला[5] खाय ।।गली०
*कोस कोस[6] पर पहरा बैठ्या, पैंड पैंड[7] वटमार,
हे विधना कैसी रच दीन्हीं, दूर बस्यों[8] म्हारा शाम।।गली०
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सतगुर दई बताय ।
जुगन जुगन से बिछुड़ी मीरा, घर[9] में लीन्हा आय ।।

( ३१ )

गोविंद कबहुँ मिले पिया मेरा ।
चरण कँवल को हँसि हँसि देखूँ, राखूँ नैणाँ नेरा ।
निरखण[10] कूँ मोंहि चाव[11] घनेरो[12] कब देखूँ मुख तेरा ।
व्याकुल प्राण धरत नहि धीरज, मिलि तू मीत सबेरा ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, ताप तपन[13] बहुतेरा ।।

१. मिलन-स्थान, योगी लोग जहाँ ब्रह्म का दर्शन करते हैं। २. चढ़ा। ३. पतला (यहाँ दुर्गम एवं कठिन से तात्पर्य है)। ४. स्मृति, ध्यान। ५. झोंका, 'सुरत झकोला खाय' स्मृति चंचल हो रही है। परमात्मा तक पहुँचने के प्रयत्न में विचलित हो रही है। ६. स्थान-स्थान पर काम क्रोध मद मत्सर आदि पहरे पर बैठ कर बाधा डाल रहे हैं। ७. पग-पग पर कुभावनारूपी ठग लूटने पर उतारु हैं। ८. अगम्य, अलक्ष्य स्थान पर हमारा गाँव बसा है हमारा स्वामी निवास करता है। ९. अपने अन्तःकरण में ही परमात्मा ने मुझे अपना लिया—आत्मा में परमात्मा के दर्शन मिल गए। १०. देखने का। ११. इच्छा, लालसा। १२. अत्यधिक। १३. जलन।

*अन्तिम दो चरण ध प्रति में अधिक हैं जो मीराकृत जान पड़ते हैं।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri



*घड़ी[1] एक नहिं आवड़े[2], तुम दरसण बिन मोय[3] ।
तुम हो मेरे प्राण जी, कासूँ जीवण होय ।।
घर न भावै नींद न आवै, विरह सतावे मोय ।
घायल सी घूमत फिरूँ, मेरो दरद न जाणे कोय[4] ।।
दिवस[5] तो खाय गमाइयो[6] रे, रैण[7] गमाई सोइ[8] ।
प्राण गमायो झूरता[9] रे, नैण गमाया रोइ[10] ।।
जो मैं ऐसा जाणती रे,प्रीत कियाँ दुख होइ ।
नगर ढंढोरा फेरती रे, प्रीत करो मत कोइ ।।
पंथ[11] निहारूँ डगर[12] बुहारूँ, ऊभी[13] मारग जोइ[14] ।
मीरा के प्रभु कब र मिलोगे, तुम मिलिया[15] सुख होइ[16] ।।

---

१. पल, समय । २. रहा जाता है । ३. मुझको, मुझ से । ४. कोई । ५. दिन । ६. गमाया,गवाँया,बिताया । ७. रात । ८. निद्रा में, सोते हुए, अथवा सोकर । ९. शोक करने में । १०. रोते हुए, रोकर । ११. प्रतीक्षा करती हूँ, राह देखती हूँ । १२. रास्ता साफ करती हूँ, मार्ग बुहारती हूँ । १३. खड़ी हुई । १४. देखती हूँ । १५. मिलने से । १६. होगा, मिलेगा ।

---

*यह पद सूरदास जी के 'प्रीत करि काहू सुख न लह्यो' के भाव से मिलता है ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( ३३ )

घर आँगन न सुहावे, पिया बिन मोहि न भावे।
दीपक जोय कहा करूँ सजनी, हरि परदेश रहावे।
सूनी सेज जहर ज्यूँ लागे, सिसक सिसक जिय जावे।
नयन निद्रा नहि आवे ॥१॥
कब की ऊभी मैं मग जोऊँ, निसि दिन विरह सतावे।
कहा कहूँ कछु कहत न आवे, हिवड़ो[1] अति अकुलावे।
हरी कब दरस दिखावे ॥२॥
ऐसो है कोइ परम सनेही, तुरत सँदेसो लावे।
वा विरियाँ[2] कब होसी[3] मुझ को, हरि हँस कंठ लगावे।
मीरा मिलि होरी गावे।

( ३४ )

घुँघरू बाँध मीरा नाची रे पग घुँघरू।
लोग कहै मीरा होगइ बावरि, सास कहे कुलनासी[4] रे। पग०
ज़हर का प्याला राणा जी ने भेजा, पीवत[5] मीरा हाँसी रे। पग०
मैं तो अपने नाराणा की, हो गई आपहि दासी रे। पग०
मीरा के प्रभु गिरधर नागर वेग[6] मिला अविनासी रे। पग०

---

१. हियरो, हृदय। २. समय, घड़ी। ३. होगी। ४. कुल का नाश। करने वाली। ५. पीते हुए। ६. शीघ्र।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( ३५ )

चलो अगम[1] के देस काल[2] देखत डरै।
वहाँ भरा प्रेम का हौज हँस[3] केला करैं ॥१॥
ओढ़ण लज्जा चीर, धीरज को घाँघरो[4]।
छिमता[5] काँकण[6] हाथ, सुमन[7] को मूँदरो[8] ॥२॥
*काँचो[9] है विस्वास चूड़ो[10] चित ऊजलो।
×दिल दुलड़ी[11] दरियाव साँच को दोवड़ो[12] ॥३॥
*दाँतों अमृत मेख[13] दया को बोलणो।
×उबटन गुरु को ज्ञान, ध्यान को धोवणो ॥४॥
कान[14] अखोटा[15] ज्ञान जुगत[16] को झूठणो।
बेसर[17] हरि को नाम काजल है धरम को ॥५॥

१. अगम परमात्मा । २. मृत्यु । ३. हंस, पक्षी विशेष, योगी लोग आत्मा की हंस से उपमा देते हैं । ४. घाँघरा, एक प्रकार का लँहगा । ५. क्षमा । ६. कंकण, कंकन । ७. सुन्दर मति, अच्छे विचार । ८. मुँदरी अँगूठी । ९. काँच, सीसा जो चूड़ी में जड़ा होता है । १०. बाहों, भुजाओं में पहनने का हाथीदाँत का चूड़ा । ११. दोलड़ की माला, (दिल दुलड़ी दरियाव, उदाराशयता) । १२. द्रोवड़ो, एक गहना । १३. चोंप (जो दाँतों में सुवर्ण का मढाया जाता है ) । १४. कान में । १५. गहना । १६. युक्ति, उपाय उपाय रूपी कान का आभूषण ( झूठणो ) १७. नाक का आभूषण यह

*× क और ग प्रति में निम्नलिखित पाठ है—
दिल दुलड़ी दरियाव साँच को दोवड़ो।
उबटन गुरु को ज्ञान, ध्यान को धोवणों।
"बेसर हरि को नाम, चूड़ो चित ऊजलो।"



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

जीहर[१८] सील सँतोष, निरत[१९] को घूँघरो।
विंदली[२०] गज और हार, तिलक[२१] गुरु ज्ञान को ॥६॥
सज सोलह सिणगार[२२], पहिरि सोने राखड़ी[२३]।
साँवलिया सूँ प्रीति औरों से, आखडी[२४] ॥७॥
पतिवरता की सेज, प्रभू जी पधारिया।
गावे मीराबाई, दासी कर राखिया ॥८॥

---

नथ का छोटा रूप है इस में मोती और रत्न जड़े होते हैं। १८. एक गहना। १९. अनुरक्त। २०. मस्तक का आभूषण, बेंदा, अथवा बेना यह उत्तरी भारत में अब भी विवाहादि में भेजा जाता है। २१. बिन्दी सिंदूर बिन्दी ( टिकुली ) यह शीशे और रंगीन पन्नों की बनी होती है।
२२. अंगशुची मंजन बसन, माँग महावर केश।
तिलक भाल तिल चिबुक में, भूषण मेंहदी वेश ॥१॥
मिस्सी काजल अर्गजा बीरी और सुगंध।
पुहुप कलीयुत होय कै तब नव सप्त निबंध ॥२॥
( हिन्दी शब्द सागर से )

अर्थात् अंग में उबटन लगाना, स्नान करना, स्वच्छ वस्त्र पहनना, केश सँवारना, काजल लगाना, माँग में सेन्दुर भरना, पैरों में महावर देना, भाल पर तिलक करना, चिबुक ( ठोढ़ी ) पर तिल बनाना, मेंहदी लगाना, सुवासित अथवा सुगंधित वस्तुओं इत्र इत्यादि का प्रयोग करना, आभूषण धारण करना, फूल माला पहनना, मिस्सी लगाना, होंटों को लाल बनाना, यह सोलह श्रृंगार होते हैं। २३. चूड़ामणि, २४. उदासीन।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( ३६ )

चलाँ वाही देस चलाँ वाही देस।
कहो कुसम्मी[1] सारी रँगावाँ[2] कहो तो भगवाँ[3] भेस[4]।
कहो तो मोतियन माँग भरावाँ[5], कहो छिटकावाँ[6] केस।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर सुणज्यों विड़द[7] नरेस॥

( ३७ )

चालो मन गंगा जमना तीर[8]
गंगा जमना निरमल[9] पाणी[10], सीतल होत सरीर।
बंसी बजावत गावत कान्हो, संग लिया बलवीर[11]।
मोर मुकुट पीताम्बर[12] सोहै, कुंडल झलकत हीर[13]।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण कँवल पै सीर[14]॥

---

१. कुसुम के रंग में। २. रँगाऊँ। ३. गेरुए वस्त्र, जो योगी पहनते हैं। ४ बाना, वेश। ५. भराऊँ। ६. छिटकाऊँ, केश खोले रहूँ, जोगी की सों जटा रखूँ यह भाव है। ७. विरद, बड़ाई। ८. तट पर। ९. निर्मल, पवित्र, शुद्ध। १० पानी, जल। ११. बलदाऊ या बलवीर कृष्ण के बड़े भाई। १२. पीला वस्त्र, कृष्णजी का वस्त्र विशेष। १३. हीरा। १४. मस्तक।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( ३८ )

छाड़ो लँगर[1] मोरी बहियाँ गहो ना।
मैं तो नार पराये घर की, मेरे भरोसे गुपाल रहो ना।
जो तुम मेरी बहियाँ गहत हो, नयन जोर मेरे प्राण हरो ना।।
वृन्दाबन की कुंज गली में, रीत छोड़ अनरीत करो ना।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण कँवल चित टारे टरो ना।।

( ३९ )

जावा दे जावा दे[2] जोगी किसका मीत।
सदा उदास रहै मोरी सजनी, निपट[3] अटपटी[4] रीत।
बोलत वचन मधुर[5] से मानूँ जोड़त[6] नाही प्रीत।
मैं जाणूँ या पार निभेगी, छाँड़ि चले अधबीच।
मीराँ के प्रभु स्याम मनोहर, प्रेम पियारा मीत।।

( ४० )

जावो निरमोहिया[7] रे जाणी थाँरी प्रीत।
लगन लगी जदि प्रीत और हीं[8], अब कुछ और ही रीत।
इमरत[9] पाइ[10] कै विष क्यूँ दीजै, कूंण[11] गाँव की रीत।
मीरा के प्रभु हरि अविनासी, अपणी गरज के मीत।।

---

१. ढीठ, शरारती। २. जाने दे, जाने दे। ३. नितान्त, बिलकुल। ४. बेढंगी। ५. मीठे। ६. लगाते। ७. निर्मोही। ८. (ही) थी। ९. अमृत। १०. पिला कर। ११. कौन।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( ४१ )

जागो बंसीवारे ललना[१] जागो मोरे प्यारे।
रजनी बीती भोर भयो है घर घर खुले किंवारे।
गोपी दही मथत सुनियत है, कँगना[२] के झनकारे[३]।
उठो लाल जी भोर भयो है, सुर नर ठाढ़े द्वारे।
ग्वाल बाल सब करत कुलाहल, जय-जय सबद उचारे।
माखन रोटी हाथ में लीनी, गउवन के रखवारे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर तरण[४] आयाँ[५] को तारे।

( ४२ )

जागो म्हारा जगपति राइक[६], हँसि बोलो क्यूँ नहीं।
हरि छो[७] जी हिरदा माँहि पट खोलो क्यूँ नहीं।
तन-मन सुरति[८] सँजोइ[९], सीस चरणाँ[१०] धरूँ।
जहाँ जहाँ देखूँ म्हारो राम जहाँ सेवा करूँ।
सदकैं[११] करूँ जी सरीर[१२], जुगै जुग वारणौं[१३]।
छोड़ी छोड़ी कुल की लाज, साहिब तेरे कारणौं।

---

१. लाल, प्यार का सम्बोधन। २. कंकण। ३. ध्वनि। ४. पार होने को। ५. आए हुओं को। ६. राइ, राजा 'क' छंद पूर्ति के लिए प्रयुक्त व्यर्थ शब्द है। ७. छो, हो, है। ८. स्मरण। ९. सजा कर। १०. पैरों पर। ११. न्यौछावर। १२. शरीर। १३. वारी जाऊँ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

थोड़ी थोड़ी लिखूं सिलाम[1] वहोत करि जाणज्यौ ।
बंदी[2] हूँ खानाजाद[3] महरि[4] करि मानज्यौ[5] ।
हाँ हो म्हारा नाथ सुनाथ विलम[6] नहिं कीजियै ।
मीराँ चरणाँ की दास, दरस अब दीजियै ।

( ४३ )

जग में जीवणा[7] थोड़ा, राम कुण कह रे जंजार[8] ।
मात पिता तो जन्म दियो है, करम[9] दियो करतार ।
कइ[10] रे खाइयो कइ रे खरचियो, कइ रे कियो उपकार ।
दिया लिया तेरे संग चलेगा, और नहीं तेरी लार ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, भज उतरो भवपार[11] ।

( ४४ )

जोगिया छाड़ रह्या[12] परदेस ।
जब का बिछड्या फेर न मिलिया, बहोरि[13] न दियो संदेस ।
या तन ऊपर भसम रमाऊँ, खार करूँ सिर केस ।
भगवाँ भेख[14] धरूँ तुम कारण, ढूँढत चारूँ देस ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, जीवनि जनम अनेस[15] ।।

---

१. सलाम. प्रणाम । २. दासी । ३. खानाजाद, जन्म से पाली हुई दासी । ४. कृपा । ५. स्वीकार करना । ६. विलम्ब, देर । ७. जीवन ८. नर पशु । ९. कर्म, भाग्य । १०. कि । ११. संसार-सागर । १२. रहा, रहे । १३. फिर । १४. भेष । १५. अनेक ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( ४५ )

जोगिया जी निस दिन जोऊँ बाट[1] ।
पाँव न चाले[2] पंथ दुहेलो[3], आड़ा[4] औघट[5] घाट ।
नगर आइ जोगी रम गया[6] रे, मो मन प्रीत न पाइ[7] ।
मैं भोली[8] भोलापण कीन्हो, राख्यो नहि बिलमाइ[9] ।
जोगिया कूँ जोवत बोहो[10] दिन बीता अजहुँ आयो नाँहि ।
विरह बुझावण अन्तर आवो, तपन लगी तन माहिं ॥
कै तो जोगी जग में नहीं कैर[11] बिसारी मोइ ।
काँइ करूँ कित जाऊँ री सजनी, नैण गुमाया रोइ ॥
आरति[12] तेरी अंतरि मेरे आवो अपणी जाणि ।
मीरा व्याकुल बिरहिणी रे तुम विन तलफत प्राणि ॥

( ४६ )

जोगिया ने कहज्यो जी आदेस[13] ।
जोगियो चतुर सुजाण[14] सजनी, ध्यावै संकर सेस ।
आऊँगी मैं नाह रहूँगी, (रे म्हारा) पीव विना परदेस ।
करि किरपा प्रतिपाल[15] मो परि, रखो न अपणै देस ।

---

१. प्रतीक्षा । २. चलता है । ३. बिकट । ४. बीच में । ५. दुर्गम । ६. बस गया । ७. देख कर । ८. सरल । ९. रोक कर । १०. बहुत से । ११. या तो अथवा । १२. लालसा । १३. संदेस । १४. चतुर । १५. रक्षक ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

माला मदुरा[1] मेखला[2] रे वाला खप्पर[3] लूँगी हाथ।
जोगण होइ जुग ढूँढसूँ रे म्हारा रावलियारी[4] साथ।
सावण आवण कह गया वाला कर गया कौल[5] अनेक।
गिणता गिणता घिस गई रे, म्हारा अंगलियाँ री रेख[6]।
पीव कारण पीली पड़ी वाला जोवनवाली वेस[7]।
दास मीरा राम भजि कै तन-मन कीन्हौ पेस[8]॥

( ४७ )

जोगिया से प्रीत कियाँ दुख होइ।
प्रीत कियाँ सुख ना मोरी सजनी जोगी मिंत न कोइ।
रात दिवस कल नाहिं परत है, तुम मिलियाँ विन मोइ।
ऐसी सूरत या जगि माहीं, फेरि न देखी सोइ।
मीरा के प्रभु कब र मिलोगे, मिलियाँ आणँद होइ॥

( ४८ )

जोगिया जो आवो ने या देस।
नैण ज देखूँ नाथ मेरो ध्याइ[9] करूँ आदेस[10]।
आया सावण मास सजनी, भरे जल थल ताल।
रावल कुण विलमाइ राखो, विरहिन है वेहाल[11]।

---

१. योगियों का एक कर्णाभूषण। २. योगियों के कमर में बाँधने का वस्त्र, कफनी। ३. भिक्षा-पात्र। ४. श्रीमान के। ५. वायदा। ६. रेखा। ७. आयु ८. समर्पण। ९. ध्यान। १०. निवेदन। ११. विह्वल, बुरे हाल वाली।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बीछड़ियाँ[1] कोइ भौ[2] भयो (रे जोगी) ऐ दिन अहला[3] जाइ ।
एक बेरी देह फेरी[4] नगर हमारे आइ ।
वा मूरत मेरे मन बसे (रे जोगी) छिन भरि रह्यौ न जाइ ।
मीरा के प्रभु हरि अविनासी, दरसन द्यौं[5] हरि आइ ॥

( ४९ )

जोगिया री प्रीतड़ी[6] है दुखड़ा[7] री मूल ।
हिल मिल[8] बात बणावत[9] मीठी, पीछे जावत भूल ।
तोड़त जेज[10] करत नहिं सजनी, जैसे चमेली के फूल ।
मीरा के प्रभु तुमरे दरस बिन, लगत हिवड़ा[11] मैं सूल[12] ॥

( ५० )

जोगिया तू कब रे मिलौगो आई ।
तेरे कारण जोग लियौ है, घर घर अलख[13] जगाई ।
दिवस न भूख रैन[14] नहि निद्रा, तुम बिन कछु न सुहाई ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, मिल कर तपन[15] बुझाई ।

---

१. बिछुड़े । २. युग । ३. यों ही, व्यर्थ । ४. फेरी लगा, चक्कर लगा । ५. दो । ६. प्रीति है री । ७. दुःख का (रोने का) । ८. प्रेम उत्पन्न कर । ९. बनाता है । १०. देरी । ११. हृदय । १२. शूल, पीड़ । १३. जो दिखाई न पड़े, अलख जगाने का अर्थ है पुकार पुकार कर परमात्मा को स्मरण करना । १४. रात्रि । १५. ज्वाला ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( ५१ )

जोगिया री सूरत मन में वसी ।
नित प्रति ध्यान करत हूँ दिल में, निस दिन होत कुसी[1] ।
काह करूँ कित जाऊँ सजनी, मानो सरप डसी ।
मीरा कहै प्रभु कब रे मिलोगे, प्रीति रसीली वसी ।

( ५२ )

जोगी मत जा, मत जा, मत जा, पाँव परूँ मैं चेरी तेरी ।
प्रेम भगति को पैंडो[2] है न्यारो[3], हम कूँ गैल[4] वता जा ।
अगर[5] चँदण[6] की चिता वणाऊँ[7], अपणे हाथ जला जा[8] ।
जल वल भई भस्म की ढेरी[9] अपणे अंग लगा जा ।
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर, जोत[10] में जोत मिला जा ।

( ५३ )

जोगी म्हाँने दरस दियाँ[11] सुख होइ ।
नातरि[12] दुखी जग माँहिं जीवड़ो निसिदिनि[13] झूरै तोइ ।
दरस[14] दिवानी भई वावरी, डोली सब[15] ही देस ।
मीरा दासी भइ है पंडर[16], पलटया[17] काला केस[18] ।

---

१. खुशी,प्रसन्नता । २. मार्ग,रास्ता । ३.जुदा । ४.रास्ता । ५. एक सुगन्धित वस्तु । ६. चन्दन । ७. बनाऊँ । ८.प्रज्वलित कर जा । ९.समूह । १० ज्योति । ११. देने से । १२.नहीं तो । १३. रात दिन । १४.व्यर्थ ही । १५.फिरी । १६. पीला पड़ना । १७.बदल गये,सफ़ेद हो गये । १८.बाल ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( ५४ )

जोसीड़ा[१] ने लाख बधाई रे अब घर आये स्याम।
आजि आनँद उमँग भयो है जीव लहै[२] सुख धाम।
पाँच सखी[३] मिलि पीव परसि कै[४] आनँद ठाम्रूँ ठाम[५]।
बिसरि गई दुख निरखि[६] पिया[७] कूँ सुफल मनोरथ काम[८]।
मीरा के सुख सागर स्वामी भवन गवन[९] कियो राम।

( ५५ )

डारि[१०] गयो मन मोहन पाँसी[११]।
आवाँ[१२] की डालि कोइल इक बोलै,
मेरो मरणु अरु जग केरी हाँसी[१३]।
विरह की मारी[१४] मैं वन वन डोलूँ,
प्राण तजूँ करवत ल्यूँ कासी।
मीरा के प्रभु हरि अविनासी,
तुम मेरे ठाकुर[१५] मैं तेरी दासी॥

---

१. ज्योतिषी। २. पाता है। ३. पाँच सखी का मतलब है पाँच इन्द्रियाँ। ४. स्पर्श करके। ५. स्थान स्थान पर। ६. देखकर। ७. प्रियतमरूपी परमात्मा। ८. कामना। ९. गमन। १०. डाल गया। ११. पाश, बंधन। १२. अम्ब, आम। १३. हँसी, तमाशा। १४. सताई। १५. स्वामी।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( ५६ )

तनक हरि चितवौ जी मोरी ओर।
हम चितवत तुम चितवत नाहीं, दिल के बड़े कठोर।
मेरे आसा चितवनि तुमरी, और न दूजी दोर[1]।
तुम से हमकूँ कब रे मिलोगे, हम सी लाख करोर[2]।
ऊभी ठाढ़ी अरज[3] करत हूँ अरज करत भयो भोर।
मीरा के प्रभु हरि अविनासी, देस्यूँ[4] प्राण अकोर[5]।।

( ५७ )

तुम आज्यो जी रामा, आवत आस्याँ सामा[6]।
तुम मिलियाँ मैं बहु सुख पाऊँ सरैं मनोरथ कामा।
तुम विच हम बिच अंतर नाहीं, जैसे सूरज घामा।
मीरा के मन और न माने, चाहे सुन्दर स्यामा।

( ५८ )

तुम जीमो[7] गिरधरलाल जी।
मीरा दासी अरज करै छे, सुनिए परम दयाल जी।
छप्पन भोग छतीसो विंजन, पावो जन प्रतिपाल जी।
राज भोग आरोगो[8] गिरधर, सनमुख राखो थाल जी।
मीरा दासी चरण उपासी, कीजे बेग निहाल जी।

---

१. दौड़, स्थान। २. करोड़। ३. अर्ज, विनती। ४ दूँगी। ५. न्योछावर कर। ६. शाम, साँझ, संध्या। ७. भोग लगाओ। ८. स्वीकार करो।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( ५९ )

तुम पलक उघाड़ो दीनानाथ, हूँ हाजिर नाजिर कब की खड़ी।
साऊ[1] थे दुसमण[2] होइ लागे, सब ने लगी कड़ी[3]।
तुम बिन साऊ कोऊ नाहीं, डिगी नाव मेरी समँद अड़ी॥१॥
दिन नहिं चैन रात नहिं निदरा, सूखूँ खड़ी खड़ी।
बान बिरह के लगे हिये में, भूलूँ न एक घड़ी॥२॥
पत्थर को तो अहिल्या[4] तारी, बन के बीच पड़ी।
कहा बोझ मीरा में कहिये, सौ ऊपर एक धड़ी[5]॥३॥
गुरु रैदास मिले मोहि पूरे, धुर से कलस भिड़ी।
सतगुरु सैन[6] दई जब आ के, जोत में जोत रली॥४॥

( ६० )

तुम सुणो दयाल म्हाँरी अरजी
भौ सागर में बही जात हूँ, काढ़ो तो थाँरी मरजी।
यो संसार सगो नहिं कोई, साँचा सगा रघुबर जी।
मात-पिता अरु कुटुँब कबीलो, सब मतबल के गरजी।
मीरा की प्रभु अरजी सुन लो, चरण लगाओ थाँरी मरजी॥

---

१. रक्षक। २. शत्रु, वैरी। ३. कड़वी। ४. अहल्या की कहानी बहुत प्रसिद्ध है। ५. पंसेरी। ६. संकेत।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( ६१ )

तुम्हरे कारण सब सुख छोड्या अब मोहिं क्यूँ तरसावौ हो।
विरह विथा लागी उर अन्तर सो तुम आय वुझावौ हो।
अब छोड़त नहिं बणें प्रभू जी, हाँसि करि तुरत वुलावौ हो।
मीरा दासी जनम जनम की, अंग सूँ अंग लगावौ हौ।

( ६२ )

तू नागर नन्द-कुमार, तोसों लाग्यौ[१] नेहरा[२]।
मुरली तेरी मन हरयौ[३], विसरयौ ग्रह-व्यौहार।
जब ते स्त्रवननि[४] धुनि परी, ग्रह[५] अँगना न सुहाइ।
पारधि[६] ज्यूँ चूके नहीं, मृगी बेधि दई आइ।
पानी पीर न जानई, मीन तलफि मरि जाइ।
रसिक मधुप[७] के मरम[८] को नहि समुझत कमल सुभाइ।
दीपक को जु दया नहीं, उड़ि उड़ि मरत पतंग।
मीरा प्रभु गिरधर मिले (जैसे) पाणी मिल गयो रंग।

---

१. लगा। २. स्नेह प्रेम। ३. हर लिया। ४. श्रवणनि, कानों में।
५. गृह, घर। ६. बहेलिया। ७. भौंरा। ८. मर्म, रहस्य, गुप्त प्रेम।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( ६३ )

*तू मत बरजे माईड़ी[1], साधा दरसण जाती ।
राम नाम हिरदै बसै, माहिले[2] मन माती[3] ।
माइ कहै सुण धीहड़ी[4], कहे गुण फूली ।
लोक सोवै सुख नींदड़ी थूँ क्यूँ रैणज[5] भूली ।
गेली दुनियाँ बावली, ज्याँ कूँ राम न भावे ।
ज्याँ रे हिरदै हरि वस्ये, त्याँ[6] कूँ नींद न आवे ।
चौबास्याँ की बावड़ी, ज्याँ कूँ नीर न पीजै ।
हरि नाले इमरित झरे, ज्याँ की आस करीजै ।
रूप सुरंगा राम जी मुख निरखत जीजै ।
मीरा व्याकुल बिरहणी, अपणी कर लीजै ॥

( ६४ )

+तेरो कोई नहि रोकनहार मगन होय मीरा चली ।
लाज सरम कुल की मरजादा, सिर से दूरि करी ।
मान अपमान दोउ धर पटके निकसी हूँ ग्यान गली ।

---

१. माई री । २. अन्तर । ३. मगन हूँ । ४. बेटी । ५. रात्रि ।
६. तिस को, उसको, उसे ।

---

* इस पद में पंजाबी भाषा का अच्छा मिश्रण है ।

+ यह पद मीरा की निर्गुण-पंथियों की सी रहस्य-भावना का उदाहरण है । कबीरदास जी की साखियों में भी प्रायः ऐसी ही रहस्य भावना मिलती है । दोनों में अन्तर यह है कि मीरा की भावना



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऊँची अटरिया[1] लाल-किवाड़ियाँ[2], निरगुण[3] सेज बिछी।
पँचरंगी झालर सुभ सोहै, फूलन फूल कली।
बाजूबन्द कडूला[4] सोहै, सेंदुर माँग भरी।
सुमिरण[5] थाल हाथ में लीन्हा, शोभा अधिक खरी।
सेज सुखमणा[6] मीरा सोहै, सुभ है आज घरी।
तुम जावो राणा घर अपणो, मेरी तेरी नाहि सरी[7]।

( ६५ )

तेरो मरम नहिं पायो रे जोगी।
आसण माँड़ि गुफा में बैठो, ध्यान हरी को लगायो।
गल बिच सेली[8] हाथ हाजिरियो[9], अंग भभूति रमायो।
मीरा के प्रभु हरि अविनासी, भाग लिख्यो सोही पायो।

---

१. शून्य ब्रह्मांड, जहाँ योगी लोग ज्योति-स्वरूप आत्मा का अनुभव करते हैं। २. प्रेम-कपाट, प्रेम का रंग काव्य में लाल माना गया है। ३. निर्गुण, सत्त्व, रज, एवं तमोगुण रहित परमात्मा। ४. कठूला, गले का एक आभूषण। ५. सुरति, स्मृति। ६. सुषुम्ना नाड़ी, यह इड़ा और पिंगला नाड़ियों के बीच में होती है, यहाँ मन का लय हो जाता है। ७. पटेगी। ८. सेली, योगियों की माला। ९. हाथ में रखने का रूमाल।

---

प्रेम-मिश्रित व्याकुलता-पूर्ण है क्योंकि वह नारी-हृदय-जनित है और कबीर जी की कट्टर पंथियों की सी रुक्ष। कबीर का लक्ष्य हृदय को स्पर्श करने का नहीं जान पड़ता, वे मस्तिष्क में ज्ञान-ज्योति भर कर हमें जाग्रत होने का सन्देश देते जान पड़ते हैं।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( ६६ )

दरसन विनु दूखन[1] लागे नैन ।
जब तें तुम बिछरे[2] पिय प्यारे, कबहुँ न पायो चैन ।
सब्द[3] सुनत मोरी छतिया काँपै, मीठे लागै बैन[4] ।
एक टक-टकी पंथ निहारूँ, भई छमासी[5] रैन ।
विरह विथा कासूँ कहूँ सजनी, बह गई[6] करवत ऐन ।
मीरा के प्रभु कब र मिलोगे, दुखमेटण सुख दैन ।

( ६७ )

देखत राम हँसे सदामाँ[7] कूँ देखत राम हँसे ।
फाटी तो फुलड़ियाँ[8] पाँव उभाणे[9] चलतें चरण घसे ।
बालपणो का मिंत[10] सदामा, अब क्यों दूर बसे ।
कहा भावज ने भेंट पठाई, ताँदुल[11] तीन पसे[12] ।
कित गई प्रभु मोरी टूटी टपरिया[13], हीरा मोती लाल[14] कसे ।
कित गई प्रभु मोरे गउवन बछिया द्वारा[15] बिच हस्ती[16] फसे[17] ।
मीरा के प्रभु हरि अविनासी, सरणो तोरे बसे ॥

---

१. दुखने लगे, पीड़ा होने लगी । २. बिछुड़े, अलग हुए । ३ नाम । ४. वाणी । ५. छः मास की, विरहिणी को रात्रि लंबी जान पड़ती है । ६. ठीक मेरे कलेजे पर आरी सी चल गई । ७. सुदामा ( श्रीकृष्ण का बालसखा ) ८. जूती । ९. नंगे । १० मित्र । ११. तंडुल, चावल । १२. पसर, मुट्ठी । १३. कुटिया । १४. मणि । १५. द्वार में । १६. हस्ती, हाथी । १७. रोक कर खड़े हैं ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( ६८ )

देखी बरसा की सरसाई, पियाजी की मन में आई।
नन्हीं नन्हीं बूँदन बरसन लाग्यो, दामिनि दमके झरलाई।
स्याम घटा उमड़ी चहुँ दिसि ते, बोलत मोर सुहाई।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, आनँद मंगल गाई।

( ६९ )

देखो सइयाँ हरि मन काठ कियो।
आवन कहि गयो अजहूँ न आयो, करि करि वचन गयो।
खान पान सुध बुध सब बिसरी, कैसे करि मैं जियो।
वचन तुम्हारे तुमहिं बिसारे, मन मेरो हर लियो।
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, तुम बिन फटत हियो।

( ७० )

धूतारा[1] जोगी एका[2] सूँ हँसि बोल।
जगत बदीत[3] करी मनमोहन, कहा बजावत ढोल।
अंग भभूति गले म्रिघ छाला, तू जन गुढ़ियाँ[4] खोल।

---

१. धूर्त। २. एक बार। ३. विदित, प्रसिद्ध। ४. रहस्य को खोल दे।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सदन[1] सरोज[2] बदन[3] की सोभा, ऊभी जोऊँ कपोल[4]।
सेली[5] नाद[6] बभूत[7] न बटेवा[8], अजूँ[9] मुनी[10] मुख खोल[11]।
चढ़ती बैस[12] नैण अणियाले[13], तूँ घरि घरि मत डोल।
मीरा के प्रभु हरि अविनासी, चेरी भई बिन मोल॥

( ७१ )

नंदनँदन बिलमाई, बदराने घेरी माई।
इत घन गरजै उत घन गरजै,
चमकत बिज्जु सवाई।
उमड़ घुमड़ चहूँ दिसि से आया,
पवन चले पुरवाई।
दादुर मोर पपही बोलै,
कोयल सबद सुणाई।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर,
चरण कमल चित लाई॥

---

१. ताज़ा, नवीन (सद्यस्)। २. कमल। ३. मुख। ४. मुखमंडल। ५. योगियों के पहनने की माला या चादर। ६. योगियों के बजाने का सींग का बाजा। ७. भस्म, राख। ८. योगियों का एक वस्त्र। ९. अब भी। १०. मौनी। ११. बोल। १२. उठती हुई उम्र (युवावस्था के उभार के समय की आयु)। १३. तीक्ष्ण, तेज अनियारे, नुकीले जो घुसते चले जायँ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( ७२ )

नहि ऐसो जनम बारंबार ।
का जानूँ कछु पुण्य प्रगटे[१], मानुसा[२] अवतार ।
बढ़त छिन छिन[३] घटत[४] पल पल, जात न लागे बार[५] ।
बिरछ[६] के ज्यों पात[७] टूटे, बहुरि[८] न लागे डार[९] ।
भौ सागर[१०] अति जोर कहिए, अनंत ऊँडी[११] धार ।
राम नाम का बाँध बेड़ा[१२], उतर परले पार[१३] ।
ज्ञान-चौसर[१४] मंडी[१५] चोहटे[१६], सुरत पासा[१७] सार[१८] ।
या दुनियाँ में रची बाजी, जीत भावें[१९] हार ।
साधु संत महंत[२०] ज्ञानी, चलत करत पुकार ।
दास मीरा लाल गिरधर, जीवणा दिन च्यार[२१] ।

---

१. प्रकट हुए, उत्पन्न हुए, प्रकाश में आए । २. मनुष्य का (अवतार जन्म) । ३. क्षण-क्षण । ४. नष्ट होते, बीतते । ५. देरी, विलंब । ६. वृक्ष । ७. पत्ते, पत्ता । ८. फिर । ९. डाल, टहनी, शाखा । १०. भव सागर, ससार रूपी सागर । ११. गहरी, गंभीर । १२. नाव, तरणी । १३. उस पार । १४. चौपड़ की बाज़ी । १५. बिछी है । १६. बाज़ार में । १७. चौसर के पाँसे । १८. गोट । १९. चाहे । २०. महन्त, मठधारी, पुजारी । २१. चार दिन, अल्प समय ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( ७३ )

नहि भावै[1] थारो[2] देसड़लो[3] जी रूड़ो[4] रूड़ो ।
*हरि की भगति करै नहिं कोई, लोग बसें सब कूड़ो ।
पाटी माँग[5] उतारि धरूँगी, न पहिनूँ कर चूड़ो[6] ।
मीरा हठीली कह संतन सो, बर पायो छै पूरो ॥

( ७४ )

नातो[7] नाम को मोसों[8] तनक[9] न तोड्यों[10] जाइ ।
पाना[11] ज्यूँ पीली पड़ी रे लोग कहे पिंड[12] रोग ।
छाने[13] लाँघण[14] मैं किया रे, राम मिलण के जोग ।

---

१. सुहावे, अच्छा लगे । २. तुम्हारा । ३. देश । ४. रूखा-सूखा, नीरस । ५. सांसारिक सौभाग्य-चिह्न । ६. चूड़ा, हाथी दाँत की चूंड़ियाँ ७. नाता सम्बन्ध । ८. मुझसे । ९ तनिक, ज़रा भी । १०. तोड़ा जाता है । ११. पान के पत्ते की भाँति । १२. पांडु रोग, पीलिया । १३. छिप कर । १४. उपवास, अनशन ।

---

* क प्रति में निम्नलिखित पाठान्तर है ।
"थाराँ देसां में राणा साध नहीं लोग बसे सब कूड़ो ।
गहणा गांठी राणा हम सब त्यागा, त्यागा कारो जूड़ो ।
काजल टीकी हम सब त्यागा, त्याग्यो छै बांधन जूडो ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर,......................."



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

*बाबल[1] वैद बुलाईया रे, पकड़ दिखाई बाँह।
मूरख वैद मरम नहिं जाणे, करक[2] कलेजा[3] माँह।
जा वैदा घर आपणे रे, मेरो नाँव[4] न लेइ।
मैं तो दाधी[5] विरह की रे, तू काहे को दारू[6] देह।
माँस गल गल[7] छीजियां[8] रे, करक[9] रह्या गल आहि[10]।
आँगलिया[11] री मूँदड़ो,[12] (म्हारे) आवण लागो बाँहि।
रहो रहो पापी पपीहा रे, पिव को नाम न लेइ।
जे को विरह[13]सा साम्हले[14], (सजनी) पिव कारण जीव देइ।
खिण[15] मन्दिर खिण आँगणे रे, खिण खिण ठाढ़ी होय।
घाय लज्यों[16] घूमूँ सदा री[17], (म्हारी) विथा[18] न बूझो कोय।
ज्याँ देसाँ म्हाँरो पिव बसै, (सजनी) वे[19] देखै तू खाइ[20]।
म्हाँरो नातो नाँव को रे, और न वातो कोइ।
मीरा व्याकुल विरहणी रे, (पिया) दरसण दीजो मोइ॥

---

१. बाबा ने। २. कसक। ३. कलेजे। ४. नाम। ५. जली हुई। ६. दवा ७. गल गल कर। ८. घट गया। ९. हड्डी। १०. में। ११. उँगली को। १२ अँगूठी। १३ विरहिणी। १४.सुने। १५. क्षण में। १६.जैसे। १७. सदैव। १८.व्यथा। १९.उसको देखता हुआ। २०.खाना।

---

*इस पद के भाव कबीर के निम्नलिखित दोहे से मिलते हैं—
कबिरा बैद बुलाइया, पकरि कै देखी बाँह।
बैद न बेदन जानई, करक करेजे माँहि॥



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(७५)

निपट[१] बंकट[२] छबि[३] अटके[४] मेरे नैना निपट बंकट छबि अटके।
देखत रूप मदन मोहन को, पियत[५] मयूखन[६] मटके[७]।
वारिज[८] भवाँ[९] अलक[१०] टेढ़ी मनो, अति सुगंध[११] रस अटके।
टेढ़ी कटि[१२] टेढ़ी करि मुरली, टेढ़ी पाग[१३] लर[१४] लटके।
मीरा प्रभु के रूप लुभानी[१५], गिरिधर नागर नट के[१६]॥

(७६)

नींदलड़ी[१७] नहि आवे सारी रात, किस बिध होइ परभात[१८]।
चमक उठी सुपने[१९] सुधि भूली, चन्द्रकला[२०] न सुहात[२१]।
तलफ तलफ जिव[२२] जाय हमारो, कब रे मिले दीना-नाथ।
भइ हूँ दिवानी तन सुध भूली, कोई न जानी म्हाँरी वात।
मीरा कहै वीती सोइ जानै, मरण[२३] जीवण[२४] उन हाथ।

---

१. बिलकुल, सर्वथा। २. टेढ़ा, तिरछा श्रीकृष्ण का विशेषण। ३. शोभा। ४. फँस गए, अटक गये, उलझ गए। ५. पीते हैं। ६. पीयूष, अमृत। ७. चंचल हुए, फिरे। ८. कमल। ९. भौं, भ्रू, भृकुटी। १०. केश-पाश। ११. इत्र से सुवासित। १२. कमर। १३. पगड़ी। १४. लड़। १५. मोहित हो गई। १६. नट (नटवर) श्री कृष्ण के। १७. निद्रा। १८. प्रभात, प्रातःकाल। १९. स्वप्न में। २०. चन्द्रमा की किरणें अथवा चाँदनी। २१. अच्छी लगती है। २२. जीव-प्राण। २३. मृत्यु। २४. जीवन।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( ७७ )

ननन वनज[1] वसाऊँ री जो मैं साहिव[2] पाऊँ री।
इन नैनन मेरा साहिब वसता, डरती पलक[3] न पाऊँ री[4]।
त्रिकुटी[5] महल में बना है झरोखा, तहाँ से झाँकी लगाऊँ री।
सुन्न[6] महल में सुरति जमाऊँ, सुख की सेज विछाऊँ री।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, बार-बार बल[7] जाऊँ री ॥

( ७८ )

नैना लोभी[8] रे बहुरि[9] सके नहिं आय।
रोम रोम नख-सिख सब निरखत, ललकि रहे ललचाय।
मैं ठाढ़ी ग्रह आपने रे, मोहन निकसे आय।
*सारँग[10] ओट तजे कुल अंकुस[11], वदन[12] दिये मुसकाय।

---

१. छवि। २. स्वामी परमात्मा। ३. नेत्र पुट,पलकैं। ४. बन्द करूँ। ५. भृकुटी के मध्य में नासिका के ऊपर योगी लोग ध्यान स्थिर करते हैं, यहाँ अभ्यास करते हुए ब्रह्मरंध्र में ध्यान लगाते हैं जहाँ आत्मा के दर्शन होते हैं। ६. शून्य ब्रह्मांड। ७. बलि जाऊँ, न्योछावर होऊँ। ८. लालची। ९. फिर, नेत्र जहाँ अटके वहाँ से फिर वापस न आए। १०. नेत्र, नेत्रों ने परदा त्याग दिया, टकटकी लगादी। ११. अंकुश,इससे हाथी वश में किया जाता है, यहाँ रोक टोक का तात्पर्य है। १२. मुख।

---

* बिहारी के—"लाज लगाम न मानहिं, नैना मों बस नाहिं।
ये मुँह जोर तुरंग लौं, ऐंचतहू चलि जाहिं ॥"
के भाव से मिलता है, महात्मा सूरदास ने भी ऐसे कइ पद लिखे हैं।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

लोग कुटुंबी बरजि[1] बरजहीं, बतियाँ कहत बनाय।
चंचल निपट अटक नहिं मानत, पर हथ गये बिकाय[2]।
भली कहौ कोइ बुरी कहौ मैं, सब लइ सीस चढ़ाय।
मीरा प्रभु गिरधरन लाल बिन पल भरि रह्यो न जाय॥

( ७९ )

परम सनेही राम की निति ओलूँ[3] रे आवै।
राम हमारे हम हैं राम के, हरि बिन कछू न सुहावै।
आवण कह गये अजहुँ न आये जिवड़ो अति अकुलावै।
तुम दरसण की आस रमइया[4], कब हरि दरस दिखावै।
चरण कमल की लगनि लगी नित बिन दरसण दुख पावै।
मीरा कूँ प्रभु दरसण दीज्यौ आणँद बरण्यूँ[5] न जावै।

( ८० )

पतिया मैं कैसे लिखूँ लिखि ही न जाई।
कलम भरत मेरो कर कंपत है, हियड़ो रही घराई[6]।
बात कहूँ मोहिं बात न आवै, नैण रहे झर्राई[7]।
किस विधि चरण कँवल मैं गहिहौं, सबहिं अंग थर्राई[8]।
मीरा कहे प्रभु गिरधर नागर, सब ही दुख बिसराई।

---

१. रोकते रहे। २. पराये हाथ बिक गए, दूसरे के हो गए। ३. स्मृति, याद। ४. राम–प्रियतमरूपी परमात्मा। ५. वर्णन किया। ६. धड़धड़ाता है, धड़कता है। ७. झड़ी लगाए हैं। ८. काँपते हैं।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( ८१ )

पपइया प्यारे कब को वैर चितारयो[1] ।
मैं सूती[2] छी अपने भवन में, पिय पिय करत पुकारयो ।
दाहया[3] ऊपर लूण लगायो, हिवड़े करवत सारयो[4]
उठि बैठो वो वृच्छ की डाली, बोल बोल कँठ सारयो[5] ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरि चरणाँ चित धारयो ।

( ८२ )

पपइया रे पिव की वाणी न बोल ।
(जो) सुणि पावेली[6] विरहणी रे, थारी रालेली[7] पाँख मरोड़ ।
चाँच कटाऊँ पपइया रे, ऊपर कालर[8] लूण ।
पिव मेरा मैं पीव की रे, तू पिव कहे स कूण ।
थाँरा सबद सुहावणा रे, जो पिव मेला[9] आज ।
चाँच मढ़ाऊँ थारी सोवनी[10] रे, तू मेरे सिरताज[11] ।
प्रीतम कूँ पतिया लिखूँ, कउवा तू ले जाइ ।
जाइ प्रीतमजी सूँ यूँ कहै रे, थाँरी विरहणि धान न खाइ ।
मीरा दासी व्याकुली रे, पिव पिव करत विहाइ[12] ।
वेगि मिलो प्रभु अंतरजामी, तुम विन रह्यौ हि न जाइ ।

१. याद किया है । २. सोती थी । ३. जले, दग्ध हुए । ४. आरा चलाया । ५. फाड़ डाला । ६. पावेगी,पायेगी । ७. डालेगी । ८. काला । ९. मिलन, १०. सुवर्ण । ११. शिरोधार्य, सम्माननीय । १२. समय व्यतीत करती है ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( ८३ )

पायो जी मैंने नाम रतन धन पायो ।
वस्तु अमोलक[१] दी मेरे सतगुरु करि किरपा अपनायौ[२] ।
जनम जनम की पूँजी[३] पाई, जग में सबै खोवायौ[४] ।
खरचै नहिं कोई, चोर न लेवे, दिन दिन बढ़त सवायो[५] ।
सत की नाव खेवड़िया[६] सतगुर भवसागर तरि आयो ।
मीरा के प्रभु गिरिधर नागर, हरखि[७] हरखि जस[८] गायौ ।

( ८४ )

पिय विन सूनो छै जी म्हारो देस ।
ऐसा है कोई पीव कूँ मिलावै, तन मन करूँ सब पेस[९] ।
तेरे कारण बन-बन डोलूँ, कर जोगण को भेस ।
अवधि[१०] बढ़ौती अजूँ[११] न आए, पंडर[१२] होइ गया केस ।
मीरा के प्रभु कब र मिलोगे तजि दियो नगर नरेस[१३] ।

---

१. अमूल्य जिसका कोई दाम ही न लगा सके 'अनमोल'। २ शरण में ले लिया । ३. मूल धन। ४. सब लुप्त हो गया, विलीन होगया, कोई इच्छा न रही । ५. सवाई,अधिक। ६. केवट,नाव को खेने वाला,माँझी । ७. प्रसन्न हो हो कर । ८. यश । ९. समर्पण । १०. समय । ११. बढ़ गई, बीत गई, किसी वस्तु या कार्य की समाप्ति के लिए अब भी 'बढ़ गई' इत्यादि का प्रयोग करते हैं, जैसे दीया बढ़ा दिया। १२ पांडु, श्वेत । १३. स्वामी, राजा ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(८५)

पिय इतनी विनती सुणि मोरी, कोई कहियो रे जाय ।
औरन सूँ रस बतियाँ[1] करत हो, हम से रहै चित[2] चोरी ।
तुम विन मेरे और न कोई, मैं सरणागत[3] तोरी ।
आवण कह गये अजहुँ न आये, दिवस रहे अब थोरी ।
मीरा कहै प्रभु कब र मिलोगे, अरज करूँ कर जोरी ।।

(८६)

*पिया तैं कहाँ गयो नेहरा[4] लगाय ।
छाड़ि गयौ अ कहाँ विसासी[5], प्रेम की बाती[6] बराय[7] ।
विरह समुद में छाड़ि गयौ, पिव, नेह[8] की नाव चलाय ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, तुम विन रह्यो न जाय ।।

---

१. रस रीति का पालन करते हो,प्रेम निभाते हो । २.(मुझ से) जी चुराते हो सामने नहीं आते । ३. मैं तेरी शरण में आई हूँ । ४. नेह, स्नेह, प्रेम । ५. विश्वासघाती । ६. बत्ती । ७. जलाकर ८. प्रेम की ।

---

* क, ख और ग प्रति में 'पिया' के स्थान पर 'प्रभुजी' पाठ है ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

(८७)

पिया जी म्हांरे नैणा आगे रहो जी ।
नैणाँ आगे रह-ज्यो म्हांरे, भूल मत जाज्यो[१] जी ।
भौ सागर में बही जात हूँ, बेग[२] म्हाँरी सुध लीज्यो[३] जी ।
राणाजी भेजया विख[४] का प्याला, सो इमरित[५] कर दीज्यो[६] जी ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, मिल बिछुड़न[७] मत कीज्यो[८] जी ।

(८८)

पिया अब घर आज्यो[९] मोरे, तुम मोरे हूँ तोरे ।
मैं जन[१०] तेरा पंथ निहारूँ, मारग चितवत तोरे ॥
अवध वदीती[११] अजहुँ न आये, दुतियन[१२] सूँ नेह जोरे ।
मीरा कहे प्रभु कव र मिलोगे, दरसण विन दिन दोरे[१३] ॥

(८९)

पिया तेरे नाम लुभाणी[१४] हो ।
नाम लेत तिरता[१५] सुण्या[१६], जैसे पाहण[१७] पाणी[१८] हो ।
सुकिरत[१९] कोई न कियो, बहु करम कुभाणी[२०] हो ।

---

१. जाना । २. शीघ्र ही । ३. लेना । ४. विष । ५. अमृत । ६. देना । ७. वियोग । ८. करना । ९. आना । १०. भक्त, दास । ११. समय बीत गया । १२. दूसरों से । १३. कठिन । १४. मुग्ध हुई हूँ । १५ तरता है तरण हो जाता है । १६. शून्य में, जहाँ कुछ भी न हो । १७. पत्थर (पाषाण) । १८. जल । (जैसे जल में पाषाण तैरने लगते हैं । १९. सुकृत, शुभ कर्म । २०. खोटे कर्म कमाये ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गणिका[1] कीर पढ़ावताँ, वैकुंठ बसाणी[2] हो।
अरध[3] नाम कुंजर[4] लियो, वाकी अवध[5] घटानी[6] हो।
गरुड़ छाँड़ि हरि धाइया[7], पसु[8] जूण[9] मिटाणी[10] हो।
अजामेल[11] से ऊधरे[12], जम[13] त्रास[14] नसानी[15] हो।
पुत्र हेत पद्वी[16] दई, जग सारे जाणी हो।
नाम महातम[17] गुरु दियो, परतीत[18] पिछाणी[19] हो।
मीरा दासी रावली[20], अपणी कर जाणी हो।

---

१. एक वेश्या जो अपने तोते को राम नाम पढ़ाया करती थी और इसी कारण वह बैकुंठ गई। २. बसी। ३. आधा (नाम लिया)। ४. हाथी (गज और ग्राह की लड़ाई में गज ने भगवान को स्मरण किया था जिससे रक्षा करने के लिए हरि (नारायण) गरुड़ का त्याग करके तुरंत दौड़ आए थे। ५. निश्चित समय। यह गज पूर्व जन्म का गन्धर्व था, शाप-ग्रस्त होने पर पशु योनि में उत्पन्न हुआ। ६. घट गई (समय से पहले मुक्त कर दिया)। ७. दौड़े आए। ८. पशु. । ९. योनि। १०. मिट गई। ११. अजामिल कान्यकुब्ज देश का रहने वाला सदाचारी ब्राह्मण था जो शूद्र जाति की स्त्री के प्रेम में स्वधर्म का नाश कर बैठा था। उससे उत्पन्न हुए पुत्र का नाम 'नारायण' रखा था। जब यम-दूत उसे लेने आए तब उसने भयभीत होकर पुत्र (बालक नारायण) को पुकारा इस पर भगवान् ने अपने पारषद भेज कर उसे स्वर्ग में बुला लिया। १२. उद्धार पाया। १३. यम। १४ भय १५. नष्ट हो गया, मिट गया। १६. पद स्वर्गवासी उत्तमपद, स्थान। १७. माहात्म्य। १८. प्रतीति-विश्वास। १९. पीछे लगी हूँ। २०. तुम्हारी।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( ९० )

पिया मोहि आरत तेरी हो।
आरत तेरे नाम की, मोहिं साँझ सबेरी[१] हो।
या तन को दिवला[२] करूँ, मनसा[३] की बाती हो।
तेल जलाऊँ प्रेम को, बालूँ[४] दिन राती हो।
पटिया[५] पारूँ गुरू ज्ञान की बुद्धि (की) माँग सवारूँ हो।
पीया तेरे कारणे, धन जोबन[६] गारूँ[७] हो।
सेजड़िया[८] बहु रंगिया[९], चंगा फूल[१०] बिछाया हो।
रैण गई तारा गिणत[११], प्रभु अजहूँ न आया हो।
आया सावण भादवाँ, वर्षा रितु छाई हो।
स्याम पधार्या सेज में, सूती[१२] सैन[१३] जगाई हो।
तुम हो पूरे साइयाँ[१४], पूरा सुख दीजै हो।
मीरा व्याकुल विरहणी (रे) अपणी कर लीजै हो।

---

१. सायं-प्रातः,सुबह-शाम। २. दीपक,चिराग़। ३. मन,अंतःकरण। ४. जलाऊँ। ५. केश गुंथन, केश का सँवारना। ६.यौवन। ७.नष्ट करती हूँ। ८. सेज, शय्या। ९. रस रंग से भरे हुए। १०. कोमल सुगंधित पुष्प। ११.गिनते हुए। १२. सोती से। १३. संकेत से। १४.स्वामी,पति।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


पिया मोहि दरसण दीजै हो।
बेर बेर मैं टेर[१] हूँ, अहे क्रिपा ( किरपा) कीजै हो।
जेठ महीने जल बिना, पंछी दुख होई हो।
मोर असाढ़ाँ[२] कुरलहे[३], घन चात्रका[४] सोई हो।
सावण में झड़ लागियौ, सखि तीजाँ खेलै हो।
भादरवैं[५] नदियां वहै, दूरी जिन मेलै हो।
सीप स्वाति[६] ही झेलती[७], आसोजां[८] सोई हो।
देव काती[९] में पूजहे, मेरे तुम होई हो।
मगसर[१०] ठंढ बहोती पड़ै, मोहि बेगि सम्हालो हो।
पोस[११] मही पाला घणा[१२], अब ही तुम न्हालो[१३] हो।
महा मही[१४] बसंत पंचमी, फागाँ[१५], सब गावै हो।
फागुण फागाँ[१६] खेल हैं, बणराइ[१७] जरावै हो।

---

१. पुकारती हूँ। २. आषाढ़ मास। ३. कलरव करते हैं। ४. चातक, पपीहा। ५. भाद्रपद, भादों मास। ६. स्वाति नक्षत्र, प्रसिद्ध है कि स्वाति नक्षत्र में वर्षा का जल सीप में जाकर मोती बनता है; इसी आशा में सीप का मुख खुला रहता है। ७. सहन करती है। ८. आश्विन मास। ९. कार्तिक। मास। १०. मार्गशीर्ष, अगहन मास। ११. पौष मास। १२. बहुत अधिक १३. आकर देखो। १४. माघ मास में। १५. एक प्रकार का राग जो होली के दिनों में गाया जाता है। १६. होली के अवसर पर तथा बसंत के दिन गुलाल इत्यादि से खेला जाता है। १७. वन राजि, वन के वन।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चैत चित्त में ऊपजी[1], दरसण तुम दीजै हो।
बैसाख वणराइ फूलवै[2], कोइल कुरलीजै हो।
काग[3] उड़ावत दिन गया, बूझूँ पिंडत[4] जोसी[5] हो।
मीरा बिरहणि व्याकुली, दरसण कब होसी हो।

( ९२ )

पिया विन रह्यो न जाइ।
तन मन मेरो पिया पर वारूँ, वार वार बलि जाइ।
निस-दिन जोऊँ बाट पिया की, कब र मिलोगे आइ।
मीरा कें प्रभु आस तुमारी, लीज्यौ कंठ लगाइ।

( ९३ )

प्रभू विनि न सरै माई।
मेरा प्राण निकस्या जात री, विन ना सरै माई।
मीन दादुर बसत जल में, जल से उपजाई।
तनक जल से बाहर कीना तुरत (ही) मर जाई।
काठ लकरी बन परी, काठ घुन खाई।
ले अगन[6] प्रभु डार आये, भसम[7] हो जाई।

---

१. इच्छा होती है। २. फूलती है। ३. कौआ पक्षी। ४. पंडित, विद्वान्। ५. ज्योतिषी। ६. अग्नि। ७. भस्म।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri
बन बन ढूँढत मैं फिरी, आली[1] सुधि नहिं पाई।
एक बेर दरसण दीजै, सब कसर मिटि जाई।
पात ज्यों पीरी परी अरु, विपत तन छाई।
दास मीरा लाल गिरधर, मिल्या सुख छाई।

(९४)

*प्रेम नी[2] प्रेम नी प्रेम नी रे मन लागी कटारी,प्रेम नी रे।
जल जमना माँ भरता गया ताँ हती गागर माथे हेम नी रे।
काँचे ते ताँत ने[3] हरि जीये बाँधे[4], जेम खेंचे तेमनी रे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, साँवली सुरत सुभ एमनी[5] रे।

(९५)

फागुन[6] के दिन चार रे, होली[7] खेल मना रे।
बिन करताल[8] पखावज बाजै, अणहद[9] की झनकार रे।
बिन सुर राग छतीसूँ[10] गावै, रोम रोम रंग[11] सार रे।
सील सँतोष की केसर रोली, प्रेम प्रीत पिचकार रे।

---

१. सखी। २. प्रीति की। ३. सूत डोरा। ४. हरि जी ने कच्चे धागे अर्थात् प्रेम रूपी डोरी से मुझे बाँध लिया और जहाँ चाहते हैं खींच लिए जाते हैं। ५. ऐसी। ६ यह जीवन चार दिन का है। ७. भगवतभक्तिरूपी होली। ८. एक प्रकार के बाजे। ९. समाधिगत शब्द-विशेष जिसे योगी जन अनुभव से सुनते हैं। १०. छ राग व छत्तीस रागनियाँ। ११. आनन्द। १२. पिचकारी।

---

*इस पद के मीराकृत होने में संदेह है, परन्तु घ प्रति में है।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उड़त गुलाल लाल भये बादर, बरसत रंग अपार रे।
घट के सब पट[1] खोल दिये हैं, लोक-लाज सब डार रे।
होली खेल प्यारी घर आये, सोइ प्यारी पिय[2] प्यार रे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण कवँल व्यौहार रे।

(६९)

बड़े घर ताली[3] लागी रे, म्हाँरा मन री उणारथ[4] भागी[5] रे।
छीलरिये[6] म्हाँरो चित्त नहीं रे, डाबरिये[7] कुण[8] जाव।
गंगा जमना सूँ काम नहीं रे, मैं तो जाइ मिलूँ दरियाव[9]।
हाल्याँ मोल्याँ[10] सूँ काम नहीं रे, सीख नहीं सिरदार[11]।
कामदाराँ[12] सूँ काम नहीं रे, मैं तो जाब[13] करूँ दरबार[14]॥
काच[15] कथीर[16] सूँ काम नहीं रे, लोहा चढ़े सिर भार।
सोना[17] रूपा[18] सूँ काम नहीं रे, म्हारे हीरा[19] रो बौपार[20]॥

---

१. घट के पट, हृदय का परदा, भेद बुद्धि अहंकार आदि। २. प्रियतम, परमात्मा। ३. सम्बन्ध हुआ। ४. लालसा। ५. दूर हुई। ६. छिछले उथले तालाब में। ७. डाबर, गंदा पानी, अशुद्ध जल, पानी भरा हुआ छोटा गड्ढा। ८. कौन जावे। ९. समुद्र। १०. हाल्याँ मोल्याँ, जमींदार के खेत में भृत्ति (वेतन) पर काम करने वाले किसान। ११. सरदार, राजा के सामन्त। १२. कामदार, प्रधान किसी धनाढ्य के नीचे उसकी जायदाद का प्रबन्ध करने वाला अधिकारी। १३. जवाब। १४. दरबार में स्वयं जाकर स्वयं मालिक से। १५. शीशा (धातु)। १६. राँगा (धातु)। १७. सोना। १८. चाँदी। १९. हीरों का। २०. व्यापार।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भाग हमारो जागियो रे, भयो समँद[1] सूँ सीर[2] ॥
इमृत प्याला छाँड़ि कै, कुण पीवै कड़वो नीर[3] ।
पीपा[4] कूँ प्रभु परचो[5] दीन्हौ, दिया रे खजीना[6] पूर[7] ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, धणी[8] मिल्या छै हजूर ।

( ९७ )

वदला[9] रे तू जल भरि ले आयो ।
छोटी-छोटी बूँदन बरसन लागी, कोयल सबद सुनायो ।
गाजै बाजै पवन मधुरिया, अंबर[10] बदरा छायो ॥
सेझ[11] सँवारी पिय घर आये, हिल-मिल मंगल गायो ।
मीरा के प्रभु हरि अविनासी, भाग[12] भलो जिन पायो ॥

( ९८ )

वरजी मैं काहू की नाहीं रहूँ ।
सुनौ री सखी तुम चेतन[13] होइ कै, मन की बात कहूँ ।
साध संगत करि हरि सुख लीजै, जग सूँ दूरि रहूँ ॥
तन-धन मेरो सब ही जावो, भलि मेरो सीस लहूँ ।

---

१. समुद्र । २. सम्बन्ध । ३. जल । ४. पीपा, एक भगवत्भक्त, जो पहले राजा थे, बाद में भगवत् प्रेम के कारण राज्य छोड़ वैरागी होगये । ५. परिचय, चमत्कार (दिखाया) । ६. खजाना, कोष । ७. भर दिया । ८. पति । ९. बादल, मेघ । १०. आकाश । ११. शय्या । १२. भाग्य । १३. ध्यान पूर्वक ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मन मेरो लागो सुमिरण सेती, सब का मैं बोल सहूँ
मीरा के प्रभु हरि अविनासी, सतगुर सरण गहूँ।

( ९९ )

बरसै बदरिया सावन की,
सावन की मन भावन की।
सावन में उमग्यो[1] मेरी मनवा, भनक सुनी हरि आवन की।
उमड़-घुमड़ चहुँ दिसि से आयो, दामक[2] दमण[3] झरलावन[4] की॥
नन्हीं नन्हीं बूँदन मेहा बरसै, सीतल पवन सोहावन की।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, आनँद मंगल सावन की॥

( १०० )

बसो मोरे नैनन में नँदलाल
मोहनी मूरति साँवरी सूरत, नैना बने बिसाल[5]।
अधर सुधा रस मुरली राजति[6] उर बैजन्ती[7] माल॥
छुद्र घंटिका[8] कटि[9] तट[10] सोभित, नूपुर[11] सबद रसाल[12]।
मीरा प्रभु संतन सुखदाई, भगत वछल[13] गोपाल॥

---

१. उमंग-उल्लसित, उत्सुक। २. दामिनी, बिजली। ३. चमक। ४. झड़ी-लगातार। ५. विशाल, दीर्घ बड़े। ६. शोभित (धारण किये हैं)। ७. विविध पुष्पों तथा तुलसी की पैरों तक लटकती हुई माला। ८. करधनी। ९. कमर। १०. पास। ११. घुँघरू। १२. मधुर। १३. भक्त-वत्सल, भक्तों से प्रेम करने वाले।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri


*वंसी वारो आयो म्हारे देस,
थाँरी साँवरी सुरत वाली बैस[१]।

आऊँ-आऊँ कर गया साँवरा, कर गया कौल[२] अनेक।
गिणते गिणते घिस गई अँगली[३], घिस गई अँगली दी[४] रेख॥
मैं वैरागणि आदि की, थारे म्हाँरे कद[५] की सनेस[६]।
विन पानी बिन उवटनो, हर गई धुर सपेद[७]॥
जोगणा हुई मैं वन वन हेरूँ, तेरा न पाया भेस।
तेरी सुरत के कारणे, धर लिया भगवा भेस॥
मोर मुकट पीतांबर सोहै, घूँघर[८] वाला केस।
मीरा प्रभु गिरधर मिल गये, दूणा वढ़ा सनेस॥

( १०२ )

वंसीवारे की चितवन सालति[९] है।
मोर मुकुट[१०] मकराक्रित[११] कुंडल, ता पर कलँगी[१२] हालति है।

---

१. वय-आयु। २. वादा, प्रतिज्ञा, वचन। ३. उँगली। ४. की। ५. कब। ६. स्नेह। ७. श्वेत, निर्मल। ८. घुँघराले केश। ९. सालत, चुभती है। १०. मोर के पखों की कलगी से बनाया हुआ मुकुट। ११. श्रीकृष्णजी का मकर के आकार का कुंडल, जिसे कानों में पहनते थे। १२. कलगी, एक पंख जो मुकुट के गुच्छे के सब से ऊपर रहता है।

---

* घ प्रति में इस पद के कुछ शब्दों के परिवर्तित रूप दिए गए हैं, जो मीराकृत नहीं जान पड़ते।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मैं तो छकी[1] तुमरी छवि ऊपर, जो न छके तेहि नालति[2] है।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर चरण कवँल चित लागति है॥

( १०३ )

बादर देखी डरी हो, स्याम मैं बादर देखी डरी।
कारी पीरी घटा जुमड़ी[3], बरसी एक धरी[4]॥
जित जाऊँ तित पाणिहि पाणी, हुई सब भोम[5] हरी।
जाको पिव परदेस बसत है, भीजै बार[6] खड़ी॥
मीरा के प्रभु हरि अविनासी, कीज्यौ प्रीत खरी।

( १०४ )

बाल्हा[7] मैं वैरागिण हूँगी हो
जो-जो भेस म्हारो साहिब रीझे, सोई-सोई भेस धरूँगी हो।
*जाको नाम निरंजन[8] कहिये ताको ध्यान धरूँगी हो॥
सील संतोष धरूँ घट भीतर, समता पकड़ रहूँगी हो।
गुरू ज्ञान रँगूँ तन कपड़ा, मन मुद्रा पेरूँगी[9] हो॥
प्रेम प्रीत सूँ हरि गुण गाऊँ, चरणन लिपटि रहूँगी हो।

---

१. आश्चर्ययुत अथवा परितृप्त। २. नालति, ( उर्दू शब्द लानत का अशुद्ध रूप है) धिक्कार है। ३. उमड़ी, घिर आई। ४. धार, झड़ी। ५. भूमि। ६. बाहर। ७. प्यारे। ८. मायारहित। ९. फेरूँगी।

---

*'निरंजन' शब्द गुरु गोरखनाथ जी का है। गोरखपंथी साधु अब भी 'अलख निरंजन' का उच्चारण करके भिक्षा याचना करते हैं।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

या तन की मैं करूँ कींगरी[1], रसना नाम रटूँगी हो ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, साधाँ संग रहूँगी हो ।

( १०५ )

*वैद को सारो नाहीं रे भाई वैद को नहिं सारो ।
कहत लीलता वैद बुलाऊँ, आवे नंद को प्यारो ॥
वो आया दुख नाहि रहैगो, मोहिं पतियारो[2] ।
वैद आया जु हाथ पकरयो[3], रोग है भारो ॥
परम पुरुष[4] की लहर व्यापी; डस गयो कारो[5] ।
मोर[6] चंदा हाथ लै; हरि देत है डारो ॥
दासी मीरा लाल गिरधर; विष कियो न्यारो[7] ।

( १०६ )

भज मन चरण कवँल अविनासी ।
जेतइ[8] दीसे[9] धरण[10] गगन[11] विच, तेतई[12] सब उठि जासी[13] ।
कहा भयो तीरथ व्रत कीन्हे, कहा लिये करवत[14] कासी ॥

---

१. बाजा, यह दो तारा सितारा के आकार का छोटा बाजा होता है। बहुधा अब भी भिखारी लोग इसे बजा कर गाते हुए निकलते हैं। २. विश्वास करो। ३. पकड़ा, नाड़ी देखी। ४. परमात्मा। ५. सर्प। ६. मोर-चन्द्रिका। ७. अलग किया। ८. जितना। ९. दीखता है, दिखाई पड़ता है। १०. धरणि, पृथ्वी। ११. (और) आकाश ( के बीच में )। १२. वह सब। १३. जायगा। १४. काशी में आरी से शरीर चिराने से।

---

* इस पद के मीराकृत होने में संदेह है।



आम्नाय-ग्रन्थालय, ... काशी
Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

इस देही का गरब[१] न करना, माटी में मिल जासी।
यो संसार चहर[२] की बाजी[३], साँझ पड़्याँ[४] उठि जासी॥
कहा भयो है भगवाँ पहरयाँ, घर तज भये सन्यासी।
जोगी होय जुगति[५] नहिं जाणी, उलटि जनम फिर आसी[६]॥
अरज करौं अबला कर जोरे, स्याम तुम्हारी दासी।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, काटो जम[७] की फाँसी॥

( १०७ )

भज ले रे मन गोपाल गुणा।
अधम तरे अधिकार भजन सूँ, जो आयो हरि की सरण।
अविस्वास तो साखि बताऊँ, अजामिल गणिका सदना॥
जो कृपाल तन-मन-धन दीन्हों, नैन नासिका मुख रसना।
जाको रचत मास दस लागे, ताहि न सुमिरो एक छिना॥
बालापन सब खेल गँवाया, तरुन भयो जब रूप घना।
ब्रिद्ध भयो जब आलस उपज्यो, माया मोह भयो मगना॥
गज अरु गीदहु[८] तरे भजन सूँ, कोऊ तर्‌यो नहीं भजन बिना।
धना भगत पीपा पुनि सेवरी, मीरा की हूँ करो गनना॥

---

१. गर्व, अभिमान। २. बयापक्षी। ३. खेल। चहर की बाजी, चिड़ियों का खेल। ४. पड़ने पर। ५. युक्ति, उपाय। ६. आयगा। ७. मृत्यु का भय। ८. गिद्ध-राज जटायू जिससे राम सीता-हरण के बाद मिले थे और जिसकी राम ने अन्त्येष्टि क्रिया भी की थी।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( १०८ )

भर भारी रे बाना मेरे सतगुरु विरह लगाय के।
पावन[1] पंगा[2] कानन बहिरा, सूझत नाहीं नैना ॥
खड़ी-खड़ी रे पंथ निहारूँ, नाम न कोई जाना।
सतगुरु ओषद[3] ऐसी दीन्ही, रूम रूम भइ चैना।
सतगुरु जस्या वैद न कोई, पूछो वेद पुराना।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, अमर लोक में रहना ॥

( १०९ )

भवनपति तुम घरि आज्यो हो।
विथा लगी तन माहि ने, म्हारी तपत बुझाज्यो हो।
रोवत-रोवत डोलताँ सब रैण विहावै[4] हो ॥
भूख गई निद्रा[5] गई, पापी जीव न जावै हो।
दुखिया कूँ सुखिया करो, मोहि दरसण दीजै हो ॥
मीरा व्याकुल विरहणी, अब बिलम[6] न कीजै हो।

( ११० )

भीजै[7] म्हारो दाँवन[8] चीर[9],
सावणि[10] यो लूम रह्यो रे।

---

१. पैरों से। २. अपंग-लंगड़ा। ३. औषध, दवा। ४. व्यतीत होती है। ५. निद्रा। ६. विलंब। ७ भीगता है। ८. दामन, अंचल का छोर। ९. वस्त्र, साड़ी। १० श्रावण की पुरवाई ( हवा )।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आप तो जाय बिदेसाँ छाये,
जिवड़ो धरत न धीर।
लिख-लिख पतियाँ सँदेसा भेजूँ,
कब घर आवै म्हाँरो पीव।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर,
दरसन दोने बलबीर[1]।

( १११ )

मतवारो[2] बादर आये, हरि को सनेसो[3] कबहुँ न लाये रे।
दादुर मोर पपइया बोलै कोयल सबद सुणाये रे॥
(इक)कारी अँधियारी बिजरी[4],चमकै बिरहिण अति डरपाये।
(इक) गाजै[5] बाजै पवन मधुरिया[6] मेहा अति झड़ लाये रे।
(इक)कारी नाग बिरह अति जारी[7] मीराँ मन हरि भाये रे।

( ११२ )

मानुख[8] जनम पदारथ पायो, ऐसो बहुरि न आती।
अनके मोसर[9] ज्ञान विचारो, राम राम मुख गाती॥
सतगुरु मिलिया सुंज[10] पिछाणी, ऐसा ब्रह्म मैं पाती।
सतगुरा[11] सूरा अम्रत पीवे, निगुरा[12] प्यासा जाती।

---

१ बलदाऊ के भाई श्रीकृष्ण। २ मतवाले की भाँति झूमते हुए। ३ सँदेसा, सँदेश। ४ विजली। ५ गरजता है। ६ मधुर,मीठा। ७ सतायी। ८ मनुष्य का। ९ औसर, अवसर, मौका। १० सूझ दिखाई। ११ गुरुवाला। १२ बिना गुरु वाला।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मोर मुगट पीताम्बर सोहै, गल बैजन्ती माला।
बिन्द्रावन में धेनु[1] चरावै, मोहन मुरली वाला।
*हरे हरे नित बन्न[2] बनाऊँ, बिच बिच राखूँ क्यारी।
साँवरिया के दरसण पाऊँ, पहर कुसुम्भी[3] सारी।
जोगी आया जोग करण कूँ, तप करणे[4] सन्यासी।
हरी भजन कूँ साधू आया, बिन्द्रावन के बासी।
मीरा के प्रभु गहिर[5] गँभीरा[6], सदा रहो[7] जो धीरा।
आधी रात प्रभु दरसण दैहैं, प्रेम नदी के तीरा।

( १४२ )

म्हारा ओलगिया[8] घर आया जी।
तन की ताप मिटी सुख पाया, हिल-मिल[9] मंगल गाया जी।
घन की धुन सुनि मोर मगन[10] भया, यूँ मेरे आणँद आयाजी।
मगन भई मिलि प्रभु[11] अपणासूँ, भौ[12] का दरध[13] मिटायाजी।

---

१. गाय। २. बन्द। ३. कुसुम्ब के रंग से रंगी हुई लाल रंग की साड़ी। ४. करने। ५. गहरे, अनन्त। ६. अथाह। ७. धैर्य धरो (या जो धारे रहते हैं)। ८. परदेशी, प्रवासी, परदेसी। ९. सखियों के साथ मिल कर। १०. मग्न, मुग्ध, प्रसन्न। ११. अपने प्रभु से। १२. भव, संसार। १३. दरद, दर्द, पीड़ा।

---

* 'ग, 'घ' प्रति म निम्न पाठान्तर है—
"ऊँचे ऊचे महल बनाऊँ, बिच बिच राखूँ बारी।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चंद कूँ देखि कमोदणि[1] फूलै, हरखि[2] भया मेरी काया[3] जी।
रग रग सीतल[4] भई मेरी सजनी, हरि मेरे महल सिधाया[5] जी।
सब भगतन[6] का कारज कीन्हा, सोई प्रभु मैं पाया जी।
मीरा विरहिण सीतल होई, दुख दुन्द[7] दूरि न्हसाया[8] जी।

( १४३ )

म्हारा सतगुर बेगा[9] आज्यो जी,
म्हारे सुख री सीर[10] बुवाज्यो[11] जी।
तुम वीछड़ियाँ[12] दुख पाऊँ जी, मेरा मन माँही मुरझाऊँ[13] जी।
मैं कोइल[14] कुरलाऊँ[15] जी, कुछ बाहरि[16] कहि न जणाऊँजी।
मोहि वाघण[17] विरह सतावे जी, कोई कहियाँ[18] पार न पावै जी

---

१. कुमुदिनी का फूल, यह तालाब में होता है, जैसे कमल सूर्योदय के साथ ही खिलता है वैसे कुमुदिनी का फूल रात में चन्द्रोदय के समय विकसित होता है। २. हरषि, हर्ष, प्रसन्न हो कर। ३. शरीर, तन। ४. शीतल, ताप बुझ गया। ५. सिधारा, पधारा, आया। ६. भक्तों। ७. द्वन्द, उत्पात। ८. नसाया, नष्ट हुए, भाग गये। ९. शीघ्र। १०. धारा (सीर अधिकांश माता के स्तनों से निकली हुई दूध की धारा के लिए आता है। यहाँ माता के दूध की धारा की सी निर्दोषिता और पवित्रता का भाव लेना चाहिये)। ११. बहाइयेगा। १२. बिछुड़ने से। १३. उदास होती हूँ। १४. कोकिल। १५. करुण शब्द में पुकारती हूँ। १६. प्रकाश में, बाहर। १७. बाघिन। १८. कहने में।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ज्यूँ जल त्यागा[१] मीना[२] जी, तुम दरसण विन खीना[३] जी।
ज्यूँ चकवी रैण न भावै जी, वा ऊगो[४] भाण[५] सुहावै जी।
ऊ दिन कबै करोला[६] जी, म्हारे आँगण पाँव धरोला[७] जी।
अरज करै मीरा दासी जी, गुरुपद रज[८] की प्यासी जी।

( १४४ )

म्हारे घर आज्यो[९] प्रीतम प्यारा,
तुम विन सब जग खारा[१०]।
तन-मन-धन सब भेंट करूँ, और भजन करूँ मैं थारा।
तुम गुणवन्त[११] बड़े, गुण सागर, मैं हूँ जो औगणहारा[१२]।
मैं निगुणी गुण एको नाहीं, तुझ में जी गुण सारा।
मीरा कहै प्रभु कब र मिलौगे, विन दरसण दुखियारा।

( १४५ )

म्हारे घर रमतो[१३] ही आई रे तू जोगिया।
कानाँ[१४] विच कुंडल गले विच सेली, अंग भभूत रमाई[१५] रे।
तुम देख्याँ विन कल न पड़त है, ग्रिह[१६] अँगणों न सुहाई रे।
मीरा के प्रभु हरि अविनासी, दरसण द्यो मोकूँ आई रे।

---

१. छोड़ा। २. मछली। ३. क्षीण, दुर्बल, दीन। ४. उगा, उदय हुआ। ५. भानु, सूर्य। ६. करेंगे। ७. धरोगे, रखोगे। ८. धूल। ९. आइयो। १०. बुरा। ११. गुणवालो। १२. अवगुणों वाला, बुरे कर्म वाला। १३. खेलते हुए हो। १४. कानों में। १५. लपेटे हुए। १६. गृह, घर।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( १४६ )

म्हारे घर होता जाज्यो[1] राज[2] ।

अब के जिन[3] टाला[4] दे जावो, सिर पर राखूँ[5] विराज ।
म्हें[6] तो जनम जनम की दासी, थे म्हाँका[7] सिरताज ।
पावणड़ा[8] म्हाँके भला ही पधारो, सब ही सुधारण काज ।
म्हें तो बुरी छाँ[9] थाँके[10] भली छै[11], घणेरी[12] तुम हो एक रसराज[13]
थाँने[14] हम सबहिन[15] की चिंता, तुम सबके हो गरिबनिवाज[16] ।
सब के मुगट सिरोमनि[17] सिर पर, मानु पुण्य की पाज[18] ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, नागर बाँह[19] गहे की लाज ।

( १४७ )

म्हारे नैणा आगे रहीजो[20] जी, स्याम गोविन्द ।

दास कबीर घर बालद[21] जो लाया, नाम देव[22] का छान छवंद ।
दास धना[23] को खेत निपजायो, गज को टेर सुनन्द[24] ।

---

१. होते जाइये । २. आप (आदर सूचक) । ३. मत । ४. टाल जाओ । ५. विराज राखूँ, बैठा रखूँगी । ६. मैं । ७. तुम हमारे । ८. पाहुना, अतिथि । ९. हूँ । १०. आपके । ११. हैं । १२. बहुतेरी । १३. रसिकराज (रसिकों में अग्रगण्य) । १४. आपको । १५. सब की ही, सभी की । १६. दीनों का पालन करने वाले । १७. शिरोमणि । १८. पुल, आधार । १९. हाथ पकड़ने की लज्जा, शरणागत की लज्जा रखो अर्थात् मुझे तारो । २०. रहो । २१. बैल । २२. नाम देव छीपी भक्त कवि, यह जाति के छीपा थे अर्थात् छापने वाले । २३. एक भगवत भक्त । २४. सुनंत —सुनते ही ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

*भीलणी का बेर सुदामा का तंडुल,[1] भर मूठी बुकन्द[2] ।
करमा[3] की खिचरी अरोग्यो, होइ परसण पावन्द[4] ।
सहस[5] गोप विच स्याम विराजे, ज्यों तारा विच चन्द[6] ।
सब सन्तों का काज सुधारयो, मीरा सूँ दूर रहन्द[7] ।

( १४८ )

म्हारो जनम मरण को साथी,
थाँने नहिं बिसरूँ[8] दिन राती ।
तुम देख्याँ बिन कल न पड़त है, जानत मेरी छाती ।
ऊँची चढ़-चढ़ पंथ निहारूं रोय-रोय अँखियाँ राती[9] ।
यो संसार सकल जग झूठो, झूँठा कुलरा[10] नाती ।
दोउ कर जोड़्याँ[11] अरज करत हूँ, सुण लीज्यो मेरी वाती[12] ।
यो मन मेरो बड़ा कुचाली[13], ज्यूँ मदमातो[14] हाथी ।
सतगुर दस्त[15] धरयो सिर ऊपर, आँकुस[16] दे समझाती ।

---

१. तन्दुल—चावल । २. भोग लगाया । ३. करमाबाई—एक भक्तिनी हो गई हैं इनकी खिचड़ी प्रसिद्ध है । ४. अधीन । ५. सहस्र । ६. चन्द्रमा । ७. रहन्त, रहते हैं । ८. भूलूँ । ९. लाल हो गई हैं । १०. कुल के नातेदार कुटुम्ब के सम्बन्धी । ११. दोनों हाथ जोड़ कर । १२. बात, प्रार्थना । १३. बुरी चाल वाला, दुष्ट । १४. हाथी के समान मस्त किसी को न सुनने वाला । १५. दस्त (फ़ारसी शब्द) हाथ । १६. अंकुश ।

---

* यह पद मीरा का नहीं जान पड़ता है । बुकन्द शब्द विचारणीय है ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पल पल तेरा रूप निहारूँ, निरख निरख[1] सुख पाती।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरि चरणाँ चित राती।

( १४९ )

यहि विधि भक्ति कैसे होय।
मन को मैल हिय तें न छूटी, दियो तिलक सर धोय।
काम कूकुर[2] लोभ[3] डोरी, बाँधि मोहि चंडाल।
क्रोध कसाई रहत घट में, कैसे मिलै गोपाल।
बिलार[4] विषया लालची रे, ताहि भोजन देत।
दीन हीन ह्वै छुधा रत से, राम नाम न लेत।
आप ही आप पुजाय के रे, फूले अँग न समात।
अभिमान टीला किये बहु, कहु जल कहाँ ठहरात।
जो तेरे हिये अन्तर[5] की जाने, तासों कपट न बनै।
हिरदै हरि को नाम न आवे, मुख तें मनियाँ[6] गनै।
हरि हितु से हेत कर, संसार आसा त्याग।
दासि मीरा लाल गिरधर, सहज[7] कर वैराग।

---

१. देख देख कर। २. काम रूपी कुत्ता। ३. लोभ-रूपी रस्सी। ४. बिल्ली। ५. हृदय के भीतर की, मन की गुप्त से गुप्त भावना। ६. माला के दाने। ७. स्वभाव से।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( १५० )

या ब्रज में कछु देख्यो री टोना ।
ले मटुकी सिर चली गुजरिया,
आगे मिले बाबा नंद जी को छोना ।
दधि को नाम बिसरि गयो प्यारी,
'ले लेहु री कोई स्याम सलोना ।'
वृन्दावन की कुंजगलिन में,
आँख लगाइ गयो मनमोहना ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर,
सुन्दर स्याम सुघर रस लोना ।

( १५१ )

या मोहन के मैं रूप लुभानी ।
सुन्दर वदन कमल-दल-लोचन,
बाँकी चितवन मँद मुसकानी ।
जमना के नीरे तीरे धेन चरावे,
बंसी में गावे मीठी बानी ।
तन-मन-धन गिरधर पर वारूँ,
चरण कँवल मीरा लपटानी ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( १५२ )

*योंं तो रँग धत्ताँ[1] लग्यो ए भाय।

पिया पियाला अमर रस का, चढ़ गई घूमघुमाय[2]।
यो तो अमल म्हारो कबहु न उतरे, कोटि करो न उपाय।
साँप पिटारो राणाजी भेज्यो, द्यो मेड़तणी गल डार।
हँस-हँस मीरा कंठ लगावे, यो तो म्हारो नौसर हार[3]।
विष को प्यालो राणाजी भेज्यो, दयो मेड़तणी ने पाय।
कर चरणामृत पी गई रे, गुण गोविंद रा गाय।
पिया पियाला नाम का रे, और न रँग सोहाय।
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर, काचो रँग उड़ जाय॥

( १५३ )

रघुनन्दन आगे नाचूँगी

नाच-नाच रघुनाथ रिझाऊँ, प्रेमी जन को जाचूँगी।
प्रेम-प्रीत की बाँध घूँघरा, सुरत की कछनी काछूँगी।
लोक लाज कुल की मरजादा, या मैं एक न राखूँगी।
पिया के पलँगा जा पौढ़ूँगी, मीरा हरि रँग राचूँगी।

---

१. ख़ूब-गाढ़ा यहाँ गहरे प्रेम का भाव है। २. ज़ोर का नशा ३. नौ लड़ा हार।

---

*यह पद केवल 'घ' प्रति में है, इस पद में मीरा के चिर-परिचित शब्द भी नहीं मिलते, केवल भावसाम्य है अतएव रख दिया है।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( १५४ )

रमइया बिन रह्योइ न[1] जाइ।
खान पान मोहि फीको[2] सो लागै, नैणा रहे मुरझाई[3]।
वार-वार मैं अरज करत हूँ, रैण गई दिन जाइ।
मीरा कहै हरि तुम मिलियाँ, बिनि तरस तरस तन जाइ॥

( १५५ )

रमइया बिनि यौ जिवड़ौ[4] दुख पावे,
कहौ कुण धीर बँधावे।
यौ संसार कुबधि[5] को भाँडो, साध संगति नहिं भावै।
राम नाम की निन्द्या ठाणै[6], करम ही करम कुमावै[7]।
राम नाम बिनि मुकुति[8] न पावै, फिर चौरासी[9] जावै।
साध सँगत में कबहुँ न जावै, मूरिख[10] जनम गुँवावै[11]।
जन मीराँ सतगुर के सरणैं, जीव परमपद[12] पावै।

---

१. रहा ही नहीं। २. नीरस, बेस्वाद। ३. कुम्हला गये हैं। ४. जिय, मन। ५. कुबुद्धि, बुरी भावना। ६. निन्दा करता है। ७. कमाता है, संग्रह करता है। ८. मुक्ति-निर्वाण। ९. आवागमन में जन्म की चौरासी लाख योनियाँ मानी गई हैं अतएव चौरासी में जाने का तात्पर्य है जन्म-मरण के चक्कर में पड़ना। १० मूर्ख। ११ गवाँ देता है, खो देता है। १२. परमत्व, परमात्मा में लीन हो जाना।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( १५६ )

## रमइया बिन नींद न आवै

नींद न आवे विरह सतावे, प्रेम की आँच ढुलावै[१] ।
बिन पिय जोत[२] मन्दिर अँधियारो, दीपक दाय न आवै ।
पिया विना मेरी सेज अलूनी[३]. जागत रैण बिहावै ।
पिया कब रे घर आवै ॥ १ ॥
दादुर मोर पपीहिरा बोलै, कोइल सबद सुणावै ।
घुमँट[४] घटा ऊलर[५] होइ आई, दामिन दमक डरावै ।
नैन झरलावै ॥ २ ॥
कहा करूँ कित जाऊँ मोरी सजनी, बेदन कूण बुतावै[६] ।
विरह नागण मोरी काया[७] डसी है, लहर लहर जिव जावै ।
जडी[८] घस[९] लावै ॥ ३ ॥
को है सखी[१०], सहेली सजनी, पिया कूँ आन मिलावै ।
मीरा कूँ प्रभु कब रे मिलोगे, मनमोहन मोहि भावै ।
कबै हँस करि बतरावै[११] ॥४॥

---

१. प्रेमी की वियोगाग्नि से व्यथित करके चारों ओर उसके दर्शनार्थ घुमाता है । २. ज्योति, प्रकाश । ३. नीरस-अच्छी नहीं लगती । ४. घुमड़ कर (घिरकर) ५. बरसने को । ६. बुझायगा । ७. शरीर । ८. बूटी ( संजीवनी) । ९. घिस कर । १०. हे सखा, कौन ऐसी परम-मित्र (अंतरंग) सखी है जो प्रियतम को लाकर मुझ से मिलायेगी । ११. बात करेगा ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( १५७ )

रमइया मैं तो थारे रँग राती[१] ।
और क पिया परदेस वसत हैं, लिख लिख भेजैं पाती ।
मेरे पिय मेरे हीय वसत हैं, रोल करूँ दिन राती ।
चूवा चोला पहिर सखी री, झुरमट[२] रमवा[३] जाती ।
झुरमट में मोहि मोहन मिलिया, घाल[४] मिली गलबाँथी[५] ।।
और सखी मद पी पी माती, मैं विन पीयाँ ही माती ।
प्रेम-भठी[६] को मैं मद पीयो, छकी फिरूँ दिन राती ।।
सुरत निरत को दिवला जोयो, मनसा-पूरन वाती ।
अगम[७] घाणि[८] को तेल सिंचायो, बाल रही दिन राती ।।
जाऊँनी पीहरिये[९] जाऊँनी सासुरिये[१०], हरि सूँ सैन लगाती ।
दासी मीरा के प्रभु गिरधर, हरि चरनाँ चित लाती[११] ।।

( १५८ )

राणा जी थे क्यांने[१२] राखो म्हांसूँ[१३] वैर ।
थे[१४] तो राणाजी म्हाने[१५] इसड़ा[१६] लागो ज्यों ब्रच्छन[१७] में कैर[१८] ।

---

१. निमग्न, तल्लीन । २. कुंज । ३. रमण करने ( खेलने ) । ४. छोड़कर, डालकर । ५. गलबाँही । ६. भट्टी । ७. अनन्त । ८. उतनी वस्तु जितनी एक बार डाल कर कोल्हू में पेरी या चक्की में पीसी जाय । ९. पितृगृह, मायके । १०. श्वसुरालय, सुसराल । ११. लगाई । १२. क्यों, किस लिए । १३. हम से । १४. तुम । १५. हम को । १६. ऐसा । १७. वृक्षों में । १८. करीर का वृक्ष ( काँटेदार होता है ) ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महल अटारी हम सब ताग्यो[1], ताग्यो थाँरो बसनी[2] सहर[3] ॥
काजल टीकी[4] राणा हम सब ताग्या, भगवीं[5] चादर पहर।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, इमरत[6] कर दियो जहर ॥

( १५९ )

राणा जी म्हें तो गोविंद का गुण गास्याँ।
चरणाम्रित[7] को नेम[8] हमारे नित उठ दरसण जास्याँ।
हरि मंदिर में निरत[9] करास्याँ,[10] घूँघरिया[11] धमकास्याँ[12]।
राम नाम को झाझ[13] चलास्याँ[14], भव सागर तर जास्याँ।
यह संसार बाड़[15] का काँटा, ज्या संगत नहिं जास्याँ।
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर, निरख परख[16] गुण गास्याँ।

( १६० )

राणा जी हूँ अब न रहूँगी तोरी हटकी[17]।
साध-सँगत मोहिं प्यारा लागै, लाज गई घूँघट की।
पीहर मेड़ता[18] छोड़ा अपना, सुरत निरत दोउ चटकी।

---

१. त्याग दिया। २. बसना, रहना। ३. शहर, नगर। ४. बिंदी। ५. भगवाँ-गेरुआ वस्त्र। ६. अमृत। ७. चरणामृत। ८. नियम, प्रण। ९. नृत्य, नाच। १०. करूँगी। ११. घुँघरू। १२. धम धम आवाज़ से बजाऊँगी, किन्तु घुँघरू का शब्द मधुर होता है अतः छनछनाऊँगी विशेष उपयुक्त होगा। १३. जहाज़। १४. चलाऊँगी। १५, झरबेरी के काँटों का घेरा। १६. भली-भाँति देख भाल कर। १७, रोकने से। १८, मेड़ता ( जोधपुर में, जहाँ मीरा का जन्म हुआ था।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सतगुर मुकर[१] दिखाया घटका[२], नाचुंगी दे दे चुटकी।
हार सिंगार सभी ल्यो अपना, चूड़ी कर की पटकी[३]।
मेरा सुहाग अब मोकूँ दरसा[४], और न जाने घट की।
महल किला राणा मोहि न चाहिये, सारी रेसम पट[५] की।
भई दिवानी मीरा डोलै, केस लटा सब छिटकी।

( १६१ )

राणा जी म्हाँ कूँ ये बदनामी लागे मीठी।
कोई निंदो कोई विंदो, मैं चलूँगी चाल अपूठी[६]।
साँकली[७] गली में सतगुर मिलिया, क्यूँ कर फिरूँ अपूठी[८]।
सतगुर जी सूँ बात ज करताँ, दुरजन लोगाँ ने दीठी[९]।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, दुरजन जलो अँगीठी।

( १६२ )

राम तने रँग राची, राणा,
मैं तो साँवलिया रँग राँची रे।
ताल पखावज मिरदँग बाजा, साधों आगे नाची रे।
कोई कहै मीरा भई बावरी, कोई कहै मत माती रे।

---

१. दर्पण। २. अन्तरात्मा, अन्तःकरण का। ३. पटक दी, फोड़ डाली। ४. दरशा, दिखाई पड़ा। ५. वस्त्र। ६. उलटी। ७. साँकरी तंग। ८. अनजान। ९. देखी, दृष्टि पड़ी।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विष का प्याला राणा भर भेज्या, इमरित कर आरोगो रे।
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर, जनम जनम की दासी रे।

( १६३ )

राम नाम रस पीजे मनुआँ, राम नाम रस पीजे।
तज कुसंग सतसंग बैठ नित, हरि चरचा सुण लीजे।
काम क्रोद मद लोभ मोह कूँ, चित से दूर करीजे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, ताहि के रँग में भीजे।

( १६४ )

राम नाम मेरे मन बसियो[1],
रसियो राग रिझाऊँ ( ए माय)।
मैं मंदभागिण[2] करम अभागिण[3], कीरत कैसे गाऊँ।
बिरह पिंजर की वाड[4] सखी री, उठकर जी हुलसाऊँ[5]।
मन कूँ मार सजूँ[6] सतगुर सूँ, दुरमत[7] दूर गसाऊँ[8]।
डाको[9] नाम सुरत की डोरी, कड़्या[10] प्रेम चढ़ाऊँ।
ज्ञान को ढोल बन्यो अति भारी, मगन होय गुण गाऊँ।

---

१. मन में बस गया है। २. मंदभागिनी। ३. अभागिन। ४. काँटेदार घेरा। ५. उत्साहित करूँ। ६. मिलने की तैयारी। ७. दुर्मति, कुभावनाएँ। ८. छेद कर बँधाऊँ। ९. डंका। १० कड़ियाँ, जिन से डंका नगाड़ा या ढोल की डोरी कसी जाती है इसे 'छल्ला' भी कहते हैं।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तन करूँ ताल मन करूँ मोरचंग, सोती सुरत जगाऊँ।
निरत करूँ मैं प्रीतम आगे, तौ अमरापुर[1] पाऊँ।
मो अवला पर किरपा कीज्यो, गुण गोविंद के गाऊँ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, रज[2] चरणाँ की पाऊँ।

( १६५ )

राम मिलण के काज सखी, मेरे,
आरति[3] उर जागी[4] री।
तलफत तलफत कल न परत है, विरह वाण उर लागी री।
निस दिन पंथ निहारूँ पीव को, पलक[5] न पल भरि लागी री[6]।
पीव-पीव मैं रटूँ रात दिन, दूजी सुधि बुधि भागी री[7]।
विरह भवँग[8] मेरो डसो है कलेजो, लहरि हलाहल[9] जागी री।
मेरी आरति मेटि[10] गुसाँई आइ मिलौं मोहिं सागी री।
मीरा व्याकुल अति उकलाणि[11], पिया की उमँग अति लागी री।

---

१ अमरपुर, स्वर्ग, बैकुंठ। २. धूल। ३. पीड़ा। ४. जाग्रत हुई, उत्पन्न हुई। ५. आँख का पपोटा, मुहावरे में सोने के लिए प्रयुक्त होता है। ६. लगती, पलक नहीं लगती, नींद नहीं आती। ७. दूर हो गई, भाग गई। ८. भुअंग-भुजंग सर्प। ९. विष। १०. मिटा कर। ११. अकुलाई, व्याकुल हुई।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राम मिलणरो[1] घणो[2] उमावो,[3]
नित उठ जोऊँ वाटड़ियाँ[4] ।
दरस बिना मोहि कछु न सुहावै, जक[5] न पड़त है आँखड़ियाँ[6] ।
तलफत तलफत बहु दिन बीता, पड़ी विरह की पासड़ियाँ[7] ।
अब तो बेगि दया कर साहिब, मैं तो तुम्हारी दासड़ियाँ[8] ।
नैण दुखी दरसण कूँ तरसैं, नाभि न बैठे[9] सासड़ियाँ[10] ।
राति दिवस यह आरति मेरे, अब हरि राखै पासड़ियाँ[11] ।
लगी लगनि छूटण की नाही, अब क्यूँ कीजै आँटड़ियाँ[12] ।
मीरा के प्रभु कब र मिलोगे, पूरी मन की आसड़ियाँ[13] ।

( १६७ )

राम मोरी बाँहड़ली[14] जी गहो ।
या भवसागर मंझधार में थे ही निभावण[15] हो ।
म्हाँ में ओगण घणा छै हो प्रभुजी थेही[16] सहो[17] तो सहो ।
मीरा के प्रभु हरि अविनासी, लाज विरद[18] की वहो[19] ।

---

१.मिलने का । २.बहुत अत्यन्त । ३.उमंग-लालसा ४.रास्ता (पंजाबी भाषा का)५. चैन-आँख लगना (झपकी आना) । ६. आँखों में । ७. पाशड़ियाँ फाँस ८.दासी । ९.साँस नहींसमाती । १०.श्वास । ११ .पास-निकट । १२.आँट,वक्रता टेढ़ाई। १३.आशाएँ १४.बाँह-भुजा। १५.निर्वाह करनेवाले । १६.तुम्हीं आप ही। १७.सहें तो सह सकते हैं, आप ही चाहें तो सह सकते हैं,आप ही चाहें तो कर सकते हैं । १८.यश, स्वभाव । १९.करो,रखो ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मगन भया मेरा मन सुख में, गोविंद का गुण गाती।
साहब पाया आदि-अनादि[1], नातर भव में जाती॥
मीरा कहै इक आस आपकी, औराँ सूँ सकुचाती।

( ११३ )

माई म्हाँरी हरिहू न बूझी[2] बात।
पिंड[3] माँसूँ[4] प्राण पापी, निकसि क्यूँ नहीं जात॥
पाट[5] न खोल्या[6] मुखा न बोल्या[7], साँझ[8] भई परभात[9]।
अबोलणा[10] जुग[11] बीतण लागो[12], तो काहे की कुसलात[13]॥
सावण आवण कह गया रे, हरि आवन की आस।
रैण अँधेरी बीजु[14] चमकै[15], तारा गिणत निरास॥
लेइ कटारी कंठ सारूँ[16] मरूँगी विष खाई।
मीराँ दासी राम राती, लालच रही ललचाई॥

( ११४ )

माई री मैं तो लियो[17] गोविन्द मोल।
कोई कहै छाने[18] कोई कहै चौड़े[19] कै, लियो रे बजन्ता[20] ढोल[21]॥

---

१. आदि-अनादि-जिसका आरम्भ और अन्त न हो जीवन-मरण रहित। २. पूछी। ३. पिंड, शरीर। ४. में से। ५. घूँघट या द्वार। ६. खोले। ७. बोले। ८. संध्या। ९. प्रभात, सवेरा। १०. बिना बोले। ११. युग। १२ बीतने लगे। १३. कुशल। १४. बिजली। १५. चमकती है। १६. काटूँ। १७. लिया है। १८. छुप के, गुप्त रूप से। १९. खुले। २०. बजाते हुए। २१. ढोल बजाते हुए, प्रकट रूप से।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कोई कहै मुँहघो[1] कोई(कहै)सुँहघो[2], लियो री तराजू तोल।
कोई कहै कारो कोई कहै गोरो, लियोरी अमोलक[3] मोल ॥
याही कूँ सब लोग जाणत, लियो री आँखी खोल।
मीराँ कूँ प्रभु दरसण दीज्यौ, पूरब जनम कौ कौल ॥

( ११५ )

माई म्हाँने सुपणे[4] में परण[5] गया जगदीस।
सोती को सुपणा आविया जी, सुपणा बिस्वा बीस[6] ॥
गैली[7] दीखे मीरा बावली, सुपणा आल जँजाल।
माई म्हाँने सुपणे में, परण गया गोपाल ॥
अंग अंग हल्दी मैं करीजी[8], सुधे[9] भीज्यो गात।
माई म्हाँने सुपणे में, परण गया दीनानाथ ॥
छप्पन कोट जहाँ जान[10] पधारे[11], दूल्हो श्री भगवान।
सुपणे में तोरण[12] बाँधियो जी, सुपणे में आई जान ॥
मीरा को गिरधर मिल्या जी, पूर्व जनम के भाग।
सुपणे में म्हाँने परण गया जी, हो गया अचल[13] सुहाग ॥

---

१. महँगा। २. सस्ता। ३. अमूल्य। ४. स्वप्न। ५. ब्याह गया। ६.बीसों बिस्वा, पूरा,पूर्ण रूप से। ७.मार्ग में। ८.अंग अंग विरहाग्नि ( चिन्तन ) से पीला पड़ गया। ९. अमृत। १० बरात। ११. आये। १२. तोरण-बन्दनवार। १३. अटल।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( ११६ )

मिलता जाज्यो हो गुरु ज्ञानी,
थाँरी सूरत देखि लुभानी।
मेरो नाम बूझि तुम लीज्यो मैं हूँ विरह दिवानी।
रात दिवस कल नाहिं परत है, जैसे मीन विन पानी ॥
दरस विना मोहि कछु न सुहावे, तलफ तलफ मर जानी।
मीरा तो चरणन की चेरी, सुन लीजै सुखदानी ॥

( ११७ )

मीरा लागो रंग हरी, औरन रंग सब अटक परी।
चूड़ो म्हारे तिलक अरु माला, सील बरत सिणगारो ॥
और सिंगार म्हाँरे दाय न आवै, यो गुरु ज्ञान हमारो।
कोई निन्दो कोई विन्दो, म्हें तो गुण गोविंद का गास्याँ ॥
जिण मारग म्हाँरा साध पधारै, उण मारग म्हें जास्याँ।
चोरी न करस्याँ, जिव न सतास्याँ, काँई करसी म्हाँरो कोई ॥
गज से उतर के खर नहि चढस्याँ, यो तो वात न होई।
'सती न होस्याँ गिरधर गास्याँ, म्हाँरा मन मोहो धण नामी ॥
जेठ वहू को नातो राणाजी, हूँ सेवक थे स्वामी।
गिरधर कंथ गिरधर धनि म्हाँरे, मात पिता वीर भाई ॥
थे थाँरे में म्हारे राणाजी, ( यूँ कहै मीरा बाई ) ॥"



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( ११८ )

मीरा मन मानी सुरत सैल असमानी ।।टेक।।
जब जब सुरत लगे वा घर की, पल पल नैनन पानी ।।१।।
ज्यों हिये पीर तीर सम सालत, कसक कसक कसकानी ।।२।।
रात दिवस मोहिं नींद न आवत, भावे अन्न न पानी ।।३।।
ऐसो पीर बिरह तन भीतर, जागत रैन बिहानी ।।४।।
ऐसा बैद मिले कोई भेदी, देस बिदेस पिछानी ।।५।।
तासों पीर कहूँ तन केरी, फिर नाहँ भरमों खानी ।।६।।
खोजत फिरों भेद वा घर को, कोई न करत बखानी ।।७।।
रैदास संत मिले मोहिं सतगुरु, दीन्हा सुरत सहदानी ।।८।।
मैं मिलि जाय पाय पिय अपना, तब मोरी पीर बुझानी ।।९।।
मीरा खाक खलक सिर डारी, मैं अपना घर जानी ।।१०।।

( ११९ )

मुझ अबला ने मोटी निरांत[1] थई[2],
सामलो[3] घरे[4] नु म्हारे साँचु[5] रे ।
वाली घड़ाऊँ, बीठल वर केरी, हार हरि नो म्हारे हइये रे ।
चीन माल चतुरभुज ज़ुड़लो[7], सिद्[8] सोनी घर जइये रे ।।

---

१ पसन्द । २ हुआ । ३ साँवला । ४ घर में । ५ आया ।
६ गढ़ाऊँ । ७ चूड़ी । ८ सिद्ध सुनार, स्वर्णकार, पारखी ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

झाँझरिया[1] जग जोवन केरा, किस्न गलां[2] री कंठी रे।
बिछुवा घुँघरा राम नरायण, अनवट अन्तरजामी ॥
पेटी घड़ाऊँ पुरसोतम केरी, टीकम[3] नाम नू तालो रे।
कुंची[4] कराऊँ करुना नँद केरी, तेमा घैणा[5] नू मारूँ रे ॥
सासर वासो सजी ने बैठी, हवे[6] नथी काइ काँचू[7] रे।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरि नु चरणे जाँचूँ रे ॥

( १२० )

मेरा बेड़ा लगाय दीजो पार प्रभु जी अरज करूँ छूँ।
या भवसागर में मैं बड़ दुख पायो, संसा सोग निवार ॥
अस्ट करम की तलब लगी है, दूर करो दुख पार।
यो संसार सब बह्यो जात है, लख चौरासी धार ॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, आवागवन निवार।

( १२१ )

मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई ॥
जाके सिर मोर मुकट मेरो पति सोई।
छाँडि दई कुल की कानिं काहा करिहै कोई।
संतन ढिग बैठि बैठि लोक लाज खोई ॥

---

१. झीना, पतला, क्षीण, नष्ट होने वाला। २. गले की। ३. टीके में नाम का ताला। ४. कुंजी, चाभी। ५. गहना आभूषण। ६. अब। ७. चोली, कंचुकी।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अँसुवन जल सींचि सींचि प्रेम बेलि बोई ।
अब तो बेलि फैलि गई आनँद फल होई ।।
भगति देखि राजि हुई, जगत देखी रोई ।
दासी मीरा लाल गिरधर, तारो अब मोही ।।*

( १२२ )

मेरे प्रीतम प्यारे राम कूँ लिख भेजूँ रे पाती ।
स्याम सनेसो कबहुँ न दीन्हों, जानि बूझ गुझ बाती[१] ।।
डगर बुहारूँ पंथ निहारूँ रोइ रोइ अँखियाँ राती[२] ।
रात दिवस मोहि कल न पड़त है हीयो फटत मेरी छाती ।।
मीरा के प्रभु कब रे मिलोगे, पूरब जनम के साथी ।

( १२३ )

मेरे मन राम नाम बसी ।
तेरे कारण स्याम सुन्दर, सकल लोग हँसी ।
कोई कहै मीरा भई बौरी[३], कोई कहें कुलनासी[४] ।
कोई कहै मीरा दीप आगरी, नाम पिया सूँ रसी ।।
खाँड़ धार भक्ति की न्यारी काटि है जम फाँसी ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, सब्द सरोवर धँसी ।।

---

१. गुप्त । २. लाल । ३. बावली । ४. कुल का नाश करने वाली ।

---

*ब प्रति में इतना अधिक है—"दूध की मथनियाँ बड़े प्रेम सों बिलोई
माखन जब काढ़ि लियो छाछ पिये कोई"



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( ११४ )

मेरे मन रामहि राम रटै रे।
राम नाम जप लीजे प्राणी, कोटिक पाप कटै रे।
जनम जनम के खत जु पुराने, नामहि लेत फटै रे।
कनक कटोरे अमृत भरियो, पीवत कौन कटै रे।
मीरा कहे प्रभु हरि अविनासी, तन मन ताहि पटै रे।

( ११५ )

मेरो मन बसिगो गिरधरलाल सो।
मोर मुकट पीतांबरो गल वैजंती माल।
गउवन के सँग डोलत हो जसुमति को लाल॥
कालिंदी के तीर हो कान्हा, गउवाँ चराय।
सीतल कदम की छाहियाँ हो मुरली बजाय॥
जसुमति के दुवरवाँ ग्वालिन सब जाय।
बरजहु आपन दुलरुवा हम सों अरुझाय॥
वृन्दावन क्रीड़ा करै, गोपिन के साथ।
सुर नर मुनि सब मोहे, हो ठाकुर जदुनाथ॥
इन्द्र कोप घन बरखो मूसल जल धार।
बूड़त ब्रज को राखेऊ मोरे प्रान अधार॥



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मीरा के प्रभु गिरधर हो, सुनिये चित लाय ।
तुमरे दरस की भूखी हो, मोहिं कछु न सोहाय ।।

( १२६ )

मेरो मन लागो हरिजूँ सूँ अब न रहूँगी अटकी ।
गुरु मिलिया रैदास जी, दीन्हीं ज्ञान की गुटकी ।
चोट लगी निज नाम हरी की, म्हारे हिवड़े खटकी ।
माणिक मोती परत न पहिरूँ, मैं कब की नटकी ।
गेणो तो म्हारे माला दोवड़ी, और चंदन की कुटकी ।
राज कुल की लाज गमाई, साधाँ के सँग मैं भटकी ।
नित उठि हरिजूके मंदिर जास्याँ, नाच्याँ दे दे चुटकी ।
भाग खुल्यो म्हाँरो साध सँगत सूँ साँवरिया की बटकी ।
जेठ वहू को काण न मानूँ, घूँघट पड़ गई पटकी ।
परम गुराँ के सरन में रहस्याँ, परणाम कराँ लुटकी ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, जनम मरन सूँ छुटकी ।

( १२७ )

मेरो मन हरि सूँ जोरयो[1],
हरि सूँ जोर सकल सूँ तोरयो[2] ।

---

१. जोड़ा, लगाया । २. तोड़ा ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मेरी प्रीत निरंतर[1] हरि सूँ, ज्यूँ खेलत बाजीगर[2] गोरचो[3] ।
जब मैं चली साध के दरसण, तब राणो मारण कूँ दौरचो ।।
जहर देन की बात बिचारी, निरमल जल में लै विष घोरचो[4] ।
जब चरणोदक सुण्यो सरवणा[5], रामभरोसे मुख में ढोरचो[6] ।।
नाचन लगी जब घूँघट कैसो, लोक-लाज तिणका[7] ज्यूँ तोरचो ।
नेकी बदी हूँ सिर पर धारी, मनहस्ती[8] अंकुस दे मोरचो[9] ।।
प्रगट निसान[10] बजाय चली मैं, राणा राव सकल जग जोरचो (ह्यो)
मीरा सबल धणी के सरणे, कहा भयो भूपति[11] मुख मोरचो ।।

( १२८ )

मेहा बरसिवो करे रे,
आज तो रमियो मेरे घेरे रे ।
नन्हीं नान्हीं बूँद मेघ घन बरसे,
सूखे सरवर[12] भरे रे ।

---

१. सदा । २. जादूगर । ३. नज़रबन्द । ( मारवाड़ में गोरचो नज़रबन्द को कहते हैं) जिस प्रकार बाज़ीगर अपने भेद को गुप्त रखता है उस प्रकार मैं हरि को हृदय में गुप्त रूप से स्थापित किये हूँ । ४. घोला । ५. श्रवण, कान । ६. डाला, उँडेला । ७. तिनके की भाँति । ८. मनरूपी मस्त हाथी । ९. घुमाया । १०. डंका, नगाड़े पर चोट देकर, प्रकाश रूप में, सब को जना कर । ११. राजा, यहाँ राणाजी से तात्पर्य है । १२. सरोवर, ताल ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

बहुत दिना पै प्रीतम पायो,
विछुरन को मोहिं डर रे।
मीरा कहे अति नेह जुड़ायो,
मैं लियो पुरबली[1] वर रे[2] ॥

( १२९ )

मैं अपने सैयाँ सँग साँची[3] ।
अब काहे की लाज सजनी, परगट[4] ह्वै[5] नाची ॥
दिवस भूख न चैन कबहूँ, नींद निसि नासी[6] ।
वेधि वार[7] (को) पार ह्वै गो, ग्यान गुह[8] गाँसी[9] ॥
कुल कुटुम्बी आन बैठे, मनहुँ[10] मधुमासी[11] ।
दासी मीरा लाल गिरधर, मिटी जग हाँसी ॥

( १३० )

मैं जाण्यो नाहीं प्रभु को मिलण कैसे होइ री ।
आये मेरे सजना फिरि गये अँगना, मैं अभागण रही सोइ री ॥
फारूँगी चीर करूँ गल कंथा, रहूँगी वैरागण होइ री ।
चुरिया फोरूँ, माँग बखेरूँ कजरा मैं डारूँ धोइ री[12] ॥

---

१. पूर्व जन्म का । २. वर, दूल्हा, पति । ३. सच्ची, निर्भेद । ४. प्रकट, खुल कर, प्रकाशरूप में । ५. हो कर । ६. नष्ट हो गयी है, रात्रि में निद्रा नहीं आती । ७. आर-पार । ८. गुह्य । ९. वाण । १०. मानों । ११. मधुमक्खी । १२. सुहागिनों के सब चिह्न दूर कर दूँगी



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri
निस बासर मोहि बिरह सतावे, कल न परत पल मोइ री।
मीरा के प्रभु हरि अविनासी, मिलि बिछरो मति कोइ री ॥

( १३१ )

मैं गिरधर रँगराती[1], सैयाँ मैं गिरधर रँग राती।
पँचरँग चोला[2] पहिर सखी मैं, झिरमिट[3] खेलन जाती।
ओहि[4] झिरमिट माँ मिल्यो साँवरो, खोल मिली तन गाती[5]।
जिनका पिया परदेस बसत है, लिख लिख भेजें पाती[6] ॥
मेरा पिया मेरे हीय बसत है, न कहुँ आती[7] न जाती।
चंदा जायगा सुरिज[8] जायगा, जायगी धरण[9] अकासी[10] ॥
पवन पाणी दोनु[11] ही जायँगे, अटल रहे अविनासी।
सुरत[12] निरत[13] का दिवला[14] सँजोले[15] मनसा[16] की करले बाती[17] ॥
प्रेम हटी[18] का तेल मँगाले जग[19] रह्या दिन ते राती।

---

१. प्रेम में निमग्न, डूबी हुई। २. लंबा चोला जो गले से पैर तक एक ही में रहता है। ३. झुरमुट, कुंजों में। ४. उसी। ५. शरीर पर लपेटने की चादर (संन्यासी लोग इसे बाहों के नीचे से निकाल छाती पर गाँठ लगा लेते हैं इसी को ब्रह्म गाती भी कहते हैं) अर्थात् तन रूपी वस्त्र खोल कर, एकाकार होगई। ६. पत्र, चिट्ठी। ७. न आता है, ना जाता है। ८. सूर्य। ९. पृथ्वी। १०. आकाश। ११. दोनों ही। १२. ईश्वर की स्मृति। १३. सांसारिक विषयों से निरति अर्थात् विरक्त। १४. दीपक। १५. जला ले। १६. मन की। १७. बत्ती। १८. हाट, बाजार। १९. जलाता है।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सतगुर मिलिया संसा[1] भाग्या[2] सैन बताई साँची ॥
ना घर तेरा ना घर मेरा, गावै मीरा दासी ।

( १३२ )

मैं गिरधर के घर जाऊँ
गिरधर म्हाँरो साँचो प्रीतम, देखत रूप लुभाऊँ[3] ।
रैण पड़े तब ही उठि जाऊँ, भोर[4] भये उठि आऊँ ॥
जो पहिरावै सोई पहिरूँ, जो दे सोई खाऊँ ।
मेरी उणकी प्रीत पुराणी, उन बिन पल न रहाऊँ ॥
जहाँ बैठावे तितही[5] बैठूँ, बेचै तो बिक जाऊँ ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, बार-बार बलि जाऊँ ॥

( १३३ )

मैं गोविन्द गुण गाणा ।
राजा[6] रूठै नगरी राखै, हरि रूठ्याँ[7] कहँ जाणा ।
राणा भेजा जहर पियाला, इमरित कर पी जाणा[8] ॥
डिबिया में भेजा जु भुजंगम[9], सालिगराम[10] करि जाना ।
मीरा तो अब प्रेम दिवाणी[11], साँवलिया[12] वर पाणा ॥

---

१. संशय । २. नष्ट होगये । ३. मोहित होगई । ४. प्रातःकाल । ५. वहाँ ही । ६. राणा जी (मीराबाई के देवर) । ७ रूठे, क्रोधित होने में । ८. पी गई । ९. साँप । १०. शालिग्राम, विष्णु की पत्थर की गोल मूर्त्ति जो गंडकी नदी में मिलती है। ११. दीवानी, पागल । १२. श्रीकृष्ण ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( १३४ )

*मैं तो तेरी सरण परी रे रामाँ,
ज्यूँ जाणे ज्यूँ तार ।
अड़सठ तीरथ भ्रमि[1] भ्रमि आयो, मन नाहीं मानीं हार ॥
या जग में कोई नहीं अपणा, सुनियौ श्रवण[2] मुरार[3] ।
मीरा दासी राम भरोसे जम का फंदा निवार[4] ॥

( १३५ )

†मैं तो साँवरे रँग[5] राँची ।
साजि सिंगार बाँध पग घुँघरू, लोक-लाज तजि नाची ॥
गई कुमति लई[6] साधु-संगति, भगत रूप भई साँची ।
गाय गाय हरि के गुन निस दिन, काल व्याल[7] सों बाँची[8] ॥
उण[9] बिन सब जग खारो[10] लागत, और बात सब काँची[11] ।
मीरा श्री गिरधरन लाल सूँ भगति रसीली जाँची[12] ॥

---

१. भ्रमण कर, तीर्थ-यात्रा करके। २. कानों से सुनिये। ३. मुरारि, श्रीकृष्ण का नाम जो 'मुर' राक्षस को मारने के कारण पड़ा था। ४. निवृत्ति-दूर करो, काटो। ५. प्रेम रंग में रँगी। ६. पाई। ७. सर्प। ८. बच गई। ९. उन के। १०. कडुआ या नीरस। ११. कच्ची। १२. माँगी।

---

* 'क' प्रति से
† 'क' तथा 'ग' प्रति से



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( १३६ )

मैं तो राजी[1] भई मेरे मन में,
मोहिं पिया मिले इक छिन में।
पिया मिल्या मोहिं किरपा दीन्हीं,
दीदार[2] दिखाया हरि ने।
सतगुर सबद लगाया[3] अंस री,
ध्यान लगाया धुन में।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर,
मगन भई मेरे मन में।

( १३७ )

मैं तो म्हारा रमैया[4] ने देखबो करूँ री।
तेरो ही उमरण तेरो ही सुमरण[5],
तेरो ही ध्यान धरूँ री।
जहाँ जहाँ पाँव धरूँ धरणी पर,
तहाँ तहाँ निरत[6] करूँ री।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर,
चरणाँ लिपट परूँ री॥

---

१. मैंने अपने मन में पति स्वीकार कर लिया तो एक पल में हरि मिल गये। २. दीदार, नज़र,(फारसी शब्द) दर्शन। ३. दिखाया, बताया। ४. रमण करने वाला, परमात्मा, स्वामी। ५. सुमिरण, स्मरण। ६. नृत्य, नाचूँगो।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( १३८ )

मैं विरहिण बैठी जागूँ,
जगत सब सोवै री आली।
विरहिण बैठी रंग महल में, मोतियन की लड़ पावै।
इक विरहिण हम ऐसी देखी, अँसुअन की माला पोवै[१]।
तारा गिण गिण रैण विहानी, सुख की घड़ी कब आवै।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, मिल के विछुड़ न जावै।

( १३९ )

मैं हरि बिन क्यूँ जिवूँ[२] री माइ।
पिव कारण बौरी भई, ज्यूँ काठहि[३] घुन खाइ।
ओखद[४] मूल न संचरै[५], मोहिं लाग्यो बौराइ[६]।
कमठ[७] दादुर[८] बसत जल में, जलहि ते उपजाइ।
मीन[९] जल के बीछुरे तन तलफि कै मर जाइ।
पिव ढूँढण बन बन गई, कहुँ मुरली धुनि पाइ।
मीरा के प्रभु लाल गिरधर, मिलि गये सुखदाइ[१०]।

---

१. पोहती है। २. जीवित रहूँ। ३. काठ-लकड़ी को। ४. औषध, दवाई। ५. प्रभाव, असर। ६. पागलपन। ७. कछुआ। ८. मेंढक। ९. मछली। १०. सुख देनेवाले।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( १४० )

मोहि लागी लगन गुर चरनन[१] की।

चरन बिना कछुवै[२] नहिं भावै,
जग माया सब सपनन[३] की।
भव सागर सब सूखि गयौ है,
फिकर नहीं मोहि तरनन[४] की।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर,
आस वही गुर सरनन[५] की।

( १४१ )

म्हाने चाकर[६] राखो जी,
गिरधारी लला चाकर राखो जी।
चाकर रहसूँ[७], बाग लगासूँ[८] नित उठ दरसण पासूँ[९] जी।
बिन्द्राबन की कुंज गलिन में, तेरी लीला गासूँ[१०] जी।
चाकरी में दरसण पाऊँ, सुमिरण पाऊँ खरची[११]।
भाव भगत जागीरी[१२] पाऊँ, तीनों बाताँ सरसी[१३]।

---

१. चरणों की। २. कुछ भी अच्छा नहीं लगता। ३. स्वप्नों की। ४. तरने की, अपने तरण, अर्थात् पार हो जाने की। ५. शरण। ६. सेवक सेविका। ७. रहूँगी। ८. लगाऊँगी। ९. पाऊँगी। १० गाऊँगी। ११. हाथ, ख़र्च के रूप में। १२. जागीर के रूप में। १३. पूरी होंगी।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( १६८ )

रावलो[1] विड़द[2] मोहि रूढो लागे[3],
पीडित[4]—पराये प्राण।
सगो सनेही मेरो और न कोई, बैरी सकल जहान।
ग्राह गह्यो गजराज उबारयो, बूड़ न दियो छे जान।
मीरा दासी अरज करत है, नहि जी सहारो[5] आन ॥

( १६९ )

री मेरे पार निकस गया सतगुरु मारया तीर।
विरह भाल लागी उर अंतरि, व्याकुल भया सरीर।
इत-उत चित चलै नहिं कब हूँ, डारी प्रेम जँजीर।
कै जाणै मेरो प्रीतम प्यारो, और न जाणै पीर।
कहा करूँ मेरो वस नहिं सजनी, नैन झरत दोउ नीर।
मीरा कहै प्रभु तुम मिलियाँ विनि, प्राण धरत नहि धीर ॥

( १७० )

रे साँवलिया म्हाँरे आज रँगीली गणगोर छै जी।
काली पीली वदली में बिजली चमके, मेघ घटा घनगोर छै जी।
दादुर मोर पपीहा बोले, कोयल कर रही सोर छै जी।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरणाँ में म्हारो जोर छै जी ॥

---

१. आपका। २. विरद। ३. अच्छा लगता है। ४. भक्तों को व्यथित देखकर। ५. सहारा, अवलंब।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( १७१ )

लागी[1] सोही जाणै कठण[2] लगन दी[3] पीर।
विपत पड़्यां[4] कोई निकटि न आवै, सुख में सब को सीर[5]।
बाहरि घाव कछू नहिं दीसै, रोम-रोम दी पीर।
जन मीरा गिरधर के ऊपर, सदकै[6] करूँ सरीर।

( १७२ )

लागी मोहि राम खुमारी[7] हो
रिमझिम[8] बरसै मेहड़ा[9] भीजै तन सारी हो।
चहुँ दिस चमकै दामणी गरजै घन भारी हो।
सतगुर भेद बताइया, खोली भरम[10] किवारी हो।
सब घट दीसै आतमा, सब ही सूँ न्यारी हो[11]।
दीपक जोऊँ ज्ञान का, चढ़ूँ ज्ञान अटारी[12] हो।
मीरा दासी राम की, इमरत बलिहारी हो।

---

१. चोट खाई है, (प्रीति की है)। २. कठिन। ३. लगन की; 'दी' पंजाबी हिन्दी का सम्बन्ध कारक में प्रयुक्त हुआ है। ४. पड़ने पर। ५. हिस्सा। ६. न्योछावर। ७. नशा। ८. नन्हीं-नन्हीं बूँदों में धीमी वर्षा। ९. मेंह, 'डा' यह अपभ्रंश तथा राजस्थानी में ऊनार्थ-वाचक प्रत्यय है। १०. भ्रम, भ्रान्ति, अज्ञान। ११. आत्मा का पूर्ण दर्शन हो जाता है कि वह किस प्रकार सर्वमय रह कर भी सबसे अलग अर्थात् निर्लिप्त रहता है। १२. घर का सब से ऊँचा भाग, शरीर और जीवन का सब से उच्च अंग एवं स्थान मस्तिष्क एवं ब्रह्मांड।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( १७३ )

लेताँ-लेताँ[1] राम नाम रे, लोकड़ियाँ[2] तो लाजाँ[3] मरे छै।
हर मंदिर जाता[4] पावलिया रे दूखे[5] फिरि आवे सारो गाम[6] रे।
झगड़ो थाय[7] त्याँ[8] दौड़ीने[9] जाय रे, मूकीने[10] घरना[11] काम रे।
भाँड[12] भवैया[13] गणिका[14] त्रित[15] करताँ, वेसी[16] रहे चारों जाम[17] रे
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण कमल चित हाम[18] रे।

( १७४ )

वारी वारी हो राम हूँ वारी,
तुम आज्यो गली हमारी।
तुम देख्याँ बिन कल न पड़त है, जोऊँ बाट तुमारी।
कूण सखी सूँ तुम रँग राते, हम सूँ अधिक पियारी।
करि किरपा मोहि दरसण दीज्यो, सब तकसीर बिसारी।
तुम सरणागत परम दयाला, भव-जल तार मुरारी।
मीरा दासी तुम चरणन की, बार-बार बलिहारी॥

---

१. लेते-लेते। २. लोग, जन। ३. लज्जा का अनुभव करते हैं। ४. जाते हुए। ५. पाँव, पैर दुखते हैं। ६. गाँव। ७. हो। ८. वहाँ। ९. दौड़कर। १०. छोड़ कर। ११. घर का। १२. नाचने वाला। १३. नाचने वाला। १४. वेश्या। १५. नृत्य, नाच। १६. बैठे रहें। १७. चारों याम, हर समय। १८. लगा रहे।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( १७५ )

सखी मेरो कानूड़ो[१] कलेजे कोर[२]
मोर मुकुट पीतांबर सोहै, कुंडल की झकझोर[३]।
बिन्द्रावन की कुंजगलिन में, नाचत नन्द किसोर[४]।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, चरण कँवल चितचोर।

( १७६ )

सखी मेरी नींद नसानी हो।
पिय को पंथ निहारत, सिगरी रैण विहानी हो।
सब सखियन मिलि सीख दई, मन एक ( ै ) न मानी हो।
बिन देख्याँ कल नाहिं पड़त, जिय ऐसी ठानी हो।
अंगि अंगि व्याकुल भई, मुख पिय पिय वानी हो।
अंतर वेदन विरह की, वह पीड़ न जानी हो।
ज्यों चातक घन कूँ रटै, मछरी जिमि पानी हो।
मीरा व्याकुल विरहणी, सुध-बुध विसराणी हो।

---

१. कन्हैया, ऊनार्थं वाचक दो प्रत्यय लगा कर, अत्यधिक प्रेम प्रदर्शित किया गया है। २. हृदय का भाग, कलेजे का टुकड़ा, अत्यन्त प्रिय। ३. झिलमिलाहट, हिलते हुए प्रकाश को झिलमिलाहट कहते हैं। ४. नन्द का पुत्र ( श्री कृष्ण )।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( १७७ )

‡सखी री लाज बैरण[1] भई ।
श्रीलाल गोपाल के सँग काहें नाहीं गई ।
कठिन क्रूर[2] अक्रूर[3] आयो, साजि रथ कहँ नई ।
रथ चढ़ाय गोपाल लैगो, हाथन मींजत[4] रही ।
कठिन छाती स्याम बिछुरत, बिरह ते तन तई[5] ।
दासि मीरा लाल गिरधर, बिखर[6] क्यों न गई ॥

( १७८ )

सजन सुधि ज्यू जाणि ज्यूँ लीजै हो ।
तुम बिन मोरे और न कोई क्रिपा रावरी[7] कीजै हो ।
दिन नहि भूख रैण नहिं निंदरा यूँ तन पल पल छीजै हो ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, मिल बिछुड़न मत कीजै हो ।

---

१. वैरनि । २. कठोर, दुष्ट । ३. कंस का प्रधान मंत्री । ४. हाथ मलते हुए । ५. शरीर जलने लगा । ६. नष्ट क्यों न हो गया । ७. अपनी ।

---

‡ यह पद मीरा का नहीं जान पड़ता यद्यपि सब प्रतियों में है । इसकी भाषा शुद्ध व्रजभाषा है और मीरा की भाषा शुद्ध व्रज भाषा नहीं है । यह महात्मा सूरदास का पद है जो कि साधुओं द्वारा गाये जाने से मीराकृत मान लिया गया है ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( १७९ )

सतगुर म्हारा प्रीत निभाज्यो[१] जी।

थे[२] छो[३] म्हारा गुणरा[४] सागर, ओगण[५] म्हारूँ मति जाज्यो जी[६]।
लोकन धीजै[७] (म्हारो) मन पतीजै[८], मुखड़ारा[९] सबद सुणाज्योजी।
मैं तो दासी जनम-जनम की, म्हारे आँगणि रमता आज्यो[१०] जी।
मीरा के प्रभु हरि अविनासी, बेड़ो पार लगाज्यो जी।

( १८० )

सहेलियाँ साजन घर आया हो।

बहोत दिना की जोवती[११], विरहणि पिव पावा[१२] हो।
रतन[१३] करूँ नेवछावरी,[१४] ले आरति[१५] साजूँ हो।
पिया का दिया सनेसड़ा[१६] ताहि बहोत निवाजूँ[१७] हो।
पाँच सखी इकठी भई मिलि मंगल गावै हो।
पिय की रली[१८] वधावणां[१९], आणँद अंगि न मावै[२०] हो।
हरिसागर[२१] सूँ नेहरो, नैणा बँध्या सनेह हो।
मीरा सखी के आँगणै, दूधाँ[२२] बूठा[२३] मेह हो।

---

१. निभा देना। २. आप। ३. हो। ४. के। ५. अवगुणों पर। ६. ध्यान दीजियेगा। ७. प्रतीत (विश्वास) करते हैं। ८. विश्वास होता है। ९. मुख से। १०. आ जाइयेगा। ११. खोजती रही, प्रतीक्षा करती रही। १२. पाया। १३. रत्न। १४. निछावर। १५. आरती। १६. सन्देश। १७. प्रसन्न करूँ। १८. आनन्द। १९. बधाई (रली बँधावणा आनन्द बधाई का उत्सव)। २०. समाता है। २१. हरि रूपी समुद्र। २२. दूध की धाराओं से। २३. बरसै।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( १८१ )

साजन घर आवो (रे) मिठबोला[1] ।

कब की ठाढी पंथ निहारूँ, थाहीं आया होस[2] भला ॥१॥

आवो निसंक संक मति मानो, आयाँ ही सुख रहेला[3] ॥२॥

तन-मन वार करूँ नीछावर, दीजो स्याम मोहेला ॥३॥

आतुर बहुत बिलम नहिं करणा, आयाँ ही रंग रहेला ॥४॥

तोरे कारण सब रँग ताग्या, कारज तिलक तमोला[4] ॥५॥

तुम देख्याँ बिन कल न पड़त है, कर धर रही कपोला[5] ॥६॥

मीरा दासी जनम-जनम की, दिल की घुंडी खोला ॥७॥

( १८२ )

सावण दे रह्यो जोरा रे, घर आयो जी स्याम मोरा ।

उमड़ घुमड़ चहुँ दिस से आया, गरजत है घनघोरा ।

दादुर मोर पपीहा बोले, कोयल कर रही सोरा ।

मीरा के प्रभु गिरधर नागर, जो वारूँ सो थोरा ॥

( १८३ )

सीसोद्यो[6] रूठो तो म्हारो काँई[7] कर लेसी[8],

म्हें तो गुण गोविन्द का गास्यां[9] हो भाई ।

---

१. मधुर बोलने वाले । २. होगा । ३. रहेगा । ४. पान । ५. कपोल, गाल । ६. सिसोदिया कुल के, मीरा के देवर । ७. क्या । ८. लेगा । ९. गाऊँगी ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राणो जी रूठ्यो वाँरो[1] देस रखासी[2],
हरि रूठ्या कुम्हलास्याँ[3] हो माई।
लोक लाज की कान[4] न मानूँ,
निरभय निसाण घुरास्याँ[5] हो माई।
राम नाम की झाझ[6] चलास्याँ[7],
भव सागर तर जास्याँ हो माई।
मीरा सरण सबल गिरधर की,
चरण कमल लपटास्याँ[8] हो माई।

( १८४ )

सुनी हो मैं हरि आवन की अवाज।
म्हैल चढ़े चढ़ि जोऊ मेरी सजनी, कब आवै माहाराज।
दादुर मोर पपइया बोले, कोइल मधुरे साज।
उमग्यो इन्द[9] चहूँ दिसि बरसे, दामणि छोड़ी लाज।
धरती रूप नवा नवा[10] धरिया[11], इन्द्र मिलण के काज।
मीरा के प्रभु हरि अविनासी, वेग मिलो महाराज।

---

१. उनका। २. रखेगा। ३. कुम्हला जाऊँगी। ४. मर्य्यादा। ५. बजाऊँगी। ६. जहाज़। ७. चलाऊँगी। ८. लपटाऊँगी। ९. मेघ ( बादल से तात्पर्य है )। १० नया नया, नवीन। ११. धारण किया।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( १८५ )

सोवत ही पलका[1] में, मैं पलक लगी पल में पिव आये।
मैं जु उठी प्रभु आदर देण कूँ, जाग परी पिव ढूँढ न पाये।
और सखी पिन सोइ[2] गमाये, मैं जु सखी पिव जागि गमाये[3]।

( १८६ )

स्याम सुन्दर पर वार, जिवड़ा मैं वार डारूँगी ।।स्याम०।।
तेरे कारण जोग धारणा, लोक लाज कुल डार।
तुम देख्याँ विन कल न पड़त है, नैन चलत दोउ वार[4] ।।स्याम०।।
कहा करूँ कित जाऊँ सजनी, कठिन विरह की धार।
मीरा कहै प्रभु कब रे मिलोगे, तुम चरणा आधार ।।स्याम०।।

( १८७ )

स्याम म्हाँसूँ ऐंडो[5] डोले हो[6]।
औरन सूँ खेलै धमार[7] म्हाँसू मुखहूँ न बोलै हो।

---

१. पलँग (शय्या पर)। २. सोकर। ३ गवाँ दिया, खो दिया। ४. वार (वारि) जल, आँसू। ५. ऐंठा रूठा। ६. घूमता है। ७. धमार होली के अवसर पर खेला जाता है (गोपियों के साथ तो क्रीड़ा करता था और हम से मुख से भी नहीं बोलता)।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

म्हारी गलिया ना फिरै, वाके आँगन डोलै हो।
म्हारी अँगुली न छुवै, वाकी बहियाँ मोरै हो।
म्हारो अँचरा न छुवे[1], वाको घूँघट खोलै हो।
मीरा के प्रभु साँवरो, रंग-रसिया डोलै हो॥

( १८८ )

हमने सुनी छै हरि अधम उधारण[2]।
अधम उधारण सब जग तारण।
गज की अरजि[3] गरजि उठि ध्यायो,
संकट पड़यो तव कष्ट[4] निवारण[5]।
द्रुपद सुता[6] को चीर बढ़ायो,
दूसासन को मान[7] मद मारण[8]।

---

१. हमारा अंचल पकड़ कर मार्ग भी नहीं बताता और उनका अन्तर पट खोल दिया ( भाव यह है कि हमारे ध्यान में नहीं आता और गोपियों के आँगन में मक्खन के लिए घूमता रहा। हमारी ओर दृष्टि भी नहीं डालता कि मीरा कितनी विह्वल है पर उन गोपबालाओं को हृदयेश्वरी बनाया अर्थात् उनसे अखंड प्रेम किया, मीरा ने यह प्रेमोपालंभ कृष्णावतार की गोपियों को लेकर किया है ) २. उद्धार करने वाले। ३. प्रार्थना। ४. विपत्ति। ५. निवृत्त करने को, दूर करने को। ६. द्रौपदी। ७. अभिमान। ८. नष्ट करने को।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रहलाद की प्रतंग्या[1] राखी,
हरणाकुस[2] नख उद्र[3] विदारण[4]।
रिखि-पतनी[5] पर किरपा कीन्ही,
बिप्र सदामा[6] की विपति बिदारण।
मीरा के प्रभु मो बंदी परि,
एती[7] अबेरि[8] भई किण कारण।

( १८९ )

हमरो प्रणाम बाँकेबिहारी को।
मोर मुकट माथे तिलक बिराजे, कुंडल अलका[9] कारी को।
अधर मधुर पर बंसी बजावै, रीझ रिझावै राधा प्यारी को।
यह छवि देखि मगन भई मीरा, मोहन गिरवरधारी को।

---

१. प्रतिज्ञा। २. प्रह्लाद का पिता। ३. उदर, पेट। ४. फाड़ डालने को। प्रह्लाद भगवत भक्त था इसमे उसका पिता हिरण्यकशिपु बहुत क्रुद्ध रहता था, उसने प्रह्लाद को अनेक दंड दिये अन्त में भगवान् ने नृसिंह रूप धारण कर हिरण्यकशिपु का पेट फाड़ मार डाला। ५. गौतम की स्त्री अहल्या। रामावतार में जनकपुर के मार्ग में राम ने इसे तारा था जो गौतम के शाप से शिला-रूप हो गई थी। ६. कृष्ण का बालसखा (गुरुभाई भक्त सुदामा को दरिद्र से धनी बनाया) ७. इतनी। ८. देर, विलंब। ९. अलक, केशों की लटें।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( १९० )

हरि बिन कूँण मती[1] मेरी ।

तुम मेरे प्रतिपाल[2] कहिये मैं रावरी[3] चेरी ।
आदि अंत निज नाँव तेरो हीया में फेरी ।
बेरि-बेरि पुकारि कहूँ प्रभु आरति है तेरी ।
यौ संसार विकार सागर, बीच में घेरी ।
नाव फाटी प्रभु पालि[4] बाँध्यो बूड़त है बेरी[5] ।
विरहणि पिव की बाट जोवै राखिल्यौ नेरी ।
दास मीरा राम रटत है, मैं सरणि हूँ तेरी ।

( १९१ )

हरि ! तुम हरो जन की भीर ॥

द्रौपदी की लाज राखी,
तुम बढ़ायो चीर ॥१॥
भगत कारन रूप नरहरि[6],
धरचो आप सरीर[7] ॥२॥

---

१. दशा । २. पालन करने वाले । ३. तुम्हारो । ४. पाल व कपड़ा जो नौका के मस्तूल पर बाँधा जाता है, इसी के जोर से प्राचीन समय में नौका चलती थी, अब भी इसका प्रयोग होता है । ५. बेड़ा जहाज अर्थात् नौका । ६. भगवान् का नृसिंह अवतार । ७. शरीर धारण किया ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

हरिनकस्यप मार लीन्हा,
धरयो नाहिन धीर ॥ ३ ॥
बूड़ते गजराज[1] राख्यो,
कियो बाहर नीर ॥ ४ ॥
दासि मीरा लाल गिरधर,
दुख जहाँ तहँ पीर ॥ ५ ॥

( १९२ )

हरि मेरे जीवन प्राण अधार ।
और आसिरो[2] नाहिन[3] तुम बिन, तीनूँ[4] लोक मँझार[5] ।
आप बिना मोहि कछु न सुहावै, निरख्यौ[6] सब संसार ।
मीराँ कहै मैं दासी रावरी[7], दीज्यौ मती[8] बिसार[9] ॥

---

१. हाथी, गन्धर्व जो शाप भ्रष्ट हो हाथी हो गया था जिसकी ग्राह से लड़ाई में भगवान ने सहायता की थी। २. आसरा, आशा, सहारा। ३. नहीं है। ४. तीनों लोक में, पृथ्वी, स्वर्ग, और पाताल में। ५. मध्य में, बीच में। ६. भली-भाँति खोज कर देख लिया। ७. आपकी। ८. मत। भूल जाना, कहीं विस्मरण न कर देना।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( १९३ )

हे मेरो मन मोहना,
आयो नहीं सखी री । हे०
कैं कहुँ काज[1] किया संतन का, कै कहुँ गैल भुलावना[2] ।
कहा करूँ कित जाऊँ मोरी सजनी, लाग्यो है बिरह सँतावना[3] ॥
मीरा दासी दरसण प्यासी, हरि चरणा चित लावना[4] ॥

( १९४ )

हे री[5] मैं तो दरद[6] दिवाणी[7],
मोरा दरद न जाणै कोइ ।
घाइल[8] की गति[9] घायल जाणै, की जिण लाई होइ[10] ।
जौहरि[11] की गति जौहरी जाणैं, की जिन जौहर होइ ।

---

१. या तो कहीं संत या भक्त के तारने के कार्य्य में लग गये । अथवा कहीं मार्ग भूल गये कि इधर भी जाना है । २. भूल गये । ३. सता रहा है । ४. मन लगा है । ५. अरी । ६. प्रेम, पीड़ा । ७. पगली । ८. घायल ( जिसे चोट लगी हो ) । ९. दशा । १०. व्यथा लगाई हो । ११. जौहरी ( रत्न-पारखी ) की दशा परखने वाला ही जान सकता है या तो जिसमें परखने का विशेष गुण हो ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सूली[1] ऊपर सेज हमारी, सोवण किस विध होइ।
गगन[2] मँडल पै सेज पिया की, किस विध मिलणा होइ।
दरद की मारी बन बन डोलूँ, वैद मिल्या नहिं कोइ।
मीरा की प्रभु पीर मिटैगी, जब वैद सँवलिया होइ।

( १९५ )

हेली सुरत सुहागिन नार।
सुरत मेरी राम से लगी ॥ हेली० ॥
लगनी लहँगा पहिर सुहागिन, बीती जाय बहार।
धन योवन दिन चार का है, जात न लागे वार।
झूठे वर को क्या वरूँगी, अधबिच में तज जाय।
वर वराँ ला राम जी, म्हारो चूड़ो अमर हो जाय।
राम नाम का चूड़लो हो, निरगुन सुरमो सार।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरि चरणाँ की मैं दास।

---

१. सूली पर अब तो प्राण देने में ही हमें विश्राम है अर्थात् मर कर ही शान्ति मिलेगी, अतः सूली ही मेरी कोमल सुखद शय्या है, किन्तु उस पर किस प्रकार सोया जायगा। २. अनन्त आकाश मंडल में जहाँ ( शून्य है ) कुछ भी नहीं है उस स्थान में हमारे स्वामी की सेज बिछो है, ( यहाँ शून्य ब्रह्मांड से तात्पर्य है। कैसे उस प्रियतम से जाकर मिलूँगी )



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( १९६ )

हो गये श्याम दूइज के चन्दा।
मधुवन जाइ भये मधुबनिया,
हम पर डारो प्रेम फंदा।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर,
अब तो नेह परो मंदा॥

( १९७ )

हो जी हरि कित गये नेह लगाय।
नेह लगाय मेरो मन हर लीयो रस भर टेरि सुनाय।
मेरे मन में ऐसी आवे, मरूँ जहर बिस खाय।
छाड़ि गयो विसवासघात करि, नेह केरी नाव चढ़ाय।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, रहे मधुपुरी छाय।

( १९७ )

हो जी महाराज छोड़ मत जाज्यो।
मैं अबला बल नाहिं गुसाईं, तुमहि मेरे सिरताज।
मैं गुण हीन गुण नाहिं गुसाईं, तुम समरथ महराज।
रावली होइ ये किनरे जाऊँ, तुम हौ हिवड़ा रो साज।
मीरा के प्रभु और न कोई, राखो अब के लाज।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

( १९९ )

होरी खेलत हैं गिरधारी ।

मुरली चंग[1] बजत डफ[1] न्यारो, संग जुवति[2] ब्रिजनारी ।
चन्दन केसर छिरकत मोहन, अपने हाथ बिहारी ।
भरि भरि मूठि[3] गुलाल लाल चहुँ, देत सबन पै डारी ।
छैल छबीले नवल[4] कान्ह सँग स्यामा प्राण-पियारी ।
गावत चार धमार राग तहँ दै-दै कल करतारी[5] ।
मीराँ के प्रभु गिरधर मिल गये, मोहन लाल बिहारी ।

( २०० )

होली पिया बिन मोहि न भावै,
घर आँगण न सुहावै ॥

दीपक जोय[6] कहा करूँ सजनी, पिय परदेस रहावे ।
सूनी सेज जहर ज्यूँ लागे, सुसक-सुसक[7] जिय जावे ।
नींद नहिं नैनन आवै ॥ होली पिया० ॥
कब की ठाढ़ी मैं मग जोवत (हूँ) निस दिन बिरह सतावे ।
कहा कहूँ कछु कहत न आवे, हिवड़ो अति अकुलावे ।
पिया कब दरस दिखावे ॥ होली० ॥

---

१. एक प्रकार का बाजा । २. युवती । ३. मुट्ठी । ४. नवयुवक । ५. सुन्दर ताली बजाकर । ६. जला कर ( सँजोय ) । ७. सिसक सिसक कर रोते ही प्राण जा रहे हैं ।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऐसो है कोइ परम सनेही, तुरत सँदेसो लावे।
वा[1] बिरियाँ[2] कब होगी मोकूँ, हँसि कर निकट बुलावे।
मीरा मिल होली गावे ॥ होली० ॥

( २०१ )

होली पिया बिन लागे खारी,
सुनो री सखी मोरी प्यारी ॥
सूनो गाँव देस सब सूनो, सूनी सेज अटारी।
सूनी बिरहणि पिव बिन डोलै, तज दइ है पिव प्यारी।
भई हूँ या दुखकारी ॥ होली० ॥
देस-बिदेस सँदेस न पहुँचे, होय अँदेसा भारी।
गिणताँ गिणताँ घस गइँ रेखा, आँगरियाँ की साँरी।
अजहु नहिं आये मुरारी ॥ होली० ॥
बाजत झाँझ मृदंग मुरलिया, बाज रही इकतारी।
आई बसंत कंथ घर नाहीं तन ज्वर भया भारी।
स्याम मन कहा बिचारी ॥ होली० ॥
अब तो मिहर करो मुझ ऊपर, चित दे सुणो हमारी।
मीरा के प्रभु मिलज्यो माधो, जनम जनम की मैं थाँरी।
लागी दरसण की तारी ॥ होली० ॥

---

१. वह। २. समय।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# कुछ अंतर्कथाएँ

## १—जिन चरण ध्रुव अटल कीने

राजा उत्तानपाद की दो रानियाँ थीं—सुनीति और सुरुचि। सुनीति के लड़के का नाम ध्रुव था और सुरुचि के लड़के का नाम था उत्तम। राजा का प्यार सुरुचि से अधिक था। एक दिन उत्तम राजा की गोद में खेल रहा था, इतने में ध्रुव वहाँ आया और उसने अपनी पिता की गोद में बैठना चाहा, इस पर सुरुचि ने कहा कि तू मेरे पेट से नहीं पैदा हुआ, इसलिए तू राजा की गोद में नहीं बैठ सकता, यह आसन तो मेरे लड़के के लिए ही है। सुरुचि के वाक्-प्रहार से दुखी होकर ध्रुव राज्य छोड़ कर चला गया और ध्रुव-पद की प्राप्ति के लिए कठोर तप करने लगा अन्त में परमात्मा के दर्शन पा उसने यह पद प्राप्त किया।

## २—जिन चरण काल नाग नाथ्यो

गोकुल के पास कालीदह नामक तालाब में एक भयानक विषैला साँप रहता था। उसके विष के प्रभाव से उस तालाब का सारा जल विषैला हो गया था। एक बार खेलते-खेलते कृष्ण की गेंद उस तालाब में गिर पड़ी। गेंद लेने के लिए कृष्ण जल में कूद पड़े। कालीनाग यह देख उन पर झपटा पर कृष्ण उसके फण पर चढ़कर खूब नाचे। अंत में कालीनाग को उनकी वशता स्वीकार करनी पड़ी।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

## ३—'अजामिल अपराधी तारे'

एक महापतित वेश्यागामी ब्राह्मण था। किसी साधु के उपदेश से उसने अपने वेश्यापुत्र का नाम 'नारायण' रखा था। मरते समय पुत्र को याद करके उसने उसका 'नारायण' नाम लेकर पुकारा और दम तोड़ दिया। विष्णु भगवान् के दूतों ने नाम की महिमा के बल से समस्त यमदूतों को मार भगाया और अजामिल को वैकुण्ठ में ले गये।

## ४—'जल डूबत गजराज उबारे'

एक गन्धर्व शापवश 'गज' हुआ। जवानी में सैकड़ों हथिनियों को साथ लिये वन में विहार करता फिरता और हर समय मस्त रहता। एक समय एक सरोवर में पानी पीने गया। वहाँ ग्राह ने उसे पकड़ा। हाथी ने ग्राह से विकट युद्ध किया, पर वह गहरे जल में खींच ही ले गया। हथिनियों ने कुछ सहायता न की। जब वह हाथी डूबने लगा और देखा कि कोई भी सहायक नहीं, तब एक कमल पुष्प तोड़ कर उसने 'नारायणार्पणमस्तु' किया। इस उपहार से द्रवित होकर नारायण ने तुरंत अपने चक्र से ग्राह का सिर उड़ा दिया और हाथी को उठाकर शुष्क-स्थल पर पहुँचाया।

## ५—'गणिका चढ़ी विमान'

एक वेश्या ने किसी साधु के कहने से एक सुग्गा पाल रक्खा था और यदा-कदा उसे सिखाने की गरज से 'राम-राम सीताराम' रटाया करती थी। अपने कुकर्म में निरत रहते हुए भी इस बहाने से उसके मुख से भी कई बार रामनाम निकल जाता था। इसी के प्रभाव से अंत में उसको मुक्ति प्राप्त हुई।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

## ६—कुबजा ( कुब्जा )

यह कंस की एक दासी थी। जब भगवान वृन्दावन से मथुरा जा रहे थे, तब उसने चन्दन केसर इत्यादि द्वारा उनका तिलक किया था। उसका यह प्रेमपूर्ण व्यवहार देखकर कृष्णजी ने उसका भारी कूबर ठीक कर दिया तथा कंस के मार चुकने पर भगवान् उसके घर गये और उसके मनोरथ पूर्ण किये।

## ७—नीच भीलनी

भीलनी ( शबरी ) ऋषि की सेवा किया करती थी, जब वे परम धाम जाने लगे तो उसने भी साथ जाने की इच्छा प्रकट की तब ऋषि ने कहा तू यहाँ ही रह। तुझे त्रेतायुग में श्रीरामचन्द्रजी के दर्शन होंगे और तू अविचल भक्ति और परम धाम को पावेगी। जब सीता को खोजते-खोजते श्रीरामचन्द्र लक्ष्मण समेत उसकी कुटी में पहुँचे तो इसने चख-चखकर मीठे बेर भगवान को दिये और भगवान ने जूठे बेर बड़े प्रेम से खाये। उसकी सेवा से प्रसन्न हो, रामचन्द्रजी ने उसे मुक्ति दी।

## ८—जग्य कियो बलि लेण इन्द्रासन सो पाताल धरे

राजा बलि बड़े दानी थे। वे एक बार इन्द्रासन पाने के लिए महायज्ञ कर रहे थे। इसी समय इन्द्र की भलाई के लिए विष्णु भगवान् वामन रूप धर कर बलि के पास गये और इस से तीन पग पृथ्वी माँगी। गुरु के मना करने पर भी बलि ने ध्यान न दिया और प्रसन्नता से संकल्प कर लिया। जब त्रिविक्रम रूप से भगवान् ने दो ही पग में तीनों लोक नाप लिये तब तीसरे पग के लिए राजा ने पीठ देकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी की और विष्णु ने उसे पाताल भेज दिया।


Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

## ९—हिरण्यकशिपु-प्रह्लाद

यह कश्यप और दिति का पुत्र था और भगवान् का बड़ा भारी विरोधी था। इसे ब्रह्मा से यह वर मिला था कि मनुष्य, देवता या और किसी प्राणी से तुम्हारा वध नहीं हो सकता। इससे यह अत्यन्त प्रबल और अजेय हो गया। जब इसने अपने पुत्र प्रह्लाद को भगवान् की भक्ति करने के कारण बहुत सताया और एक दिन उसे खंभे से बाँध और तलवार खींचकर बार-बार कहने लगा कि बता अब तेरा भगवान् कहाँ है ? तब भगवान् (आधा सिंह, आधा मनुष्य) का रूप धारण कर खंभा फाड़कर प्रकट हुए और उसे फाड़ डाला। भगवान् ने इसी दैत्य को मारने के लिए (नृसिंह) नरहरि का रूप धारण किया था और इस प्रकार प्रह्लाद के प्रभु-भक्ति के प्रण को रख लिया था।

## १०—रिखि-पत्नी ( ऋषि-पत्नी अहल्या )

एक दिन गौतम ऋषि अपनी कुटिया से कहीं बाहर गये हुए थे, उनकी पत्नी अहल्या वहाँ उपस्थित थी, इतने में काममोहित देवराज इन्द्र गौतम ऋषि का रूप धरकर वहाँ पहुँचा, और उसने ऋषि-पत्नी के साथ व्यभिचार किया। जब गौतम ऋषि वापिस आये और उनको इस बात का पता लगा, तो उन्होंने इन्द्र को शाप दिया कि तू हज़ार भगवाला हो जा, और अहल्या को शाप दिया कि तू शिला हो जा। और त्रेता में जब श्री रामचन्द्र जी आयेंगे, और अपने पैर से छुएँगे तब शाप मुक्त होगी। सो जब रामचन्द्रजी विश्वामित्र के साथ जनकपुरी को जा रहे थे, तब उन्होंने रास्ते में अहल्या का उद्धार किया।



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

## ११—सदना

एक प्रसिद्ध कसाई का नाम है, जो बड़ा भगवद्भक्त था।

## १२—सेना

प्रसिद्ध भगवद्भक्त नाई था।

## १३—धन्ना भक्त का खेत उपजाया

भक्त धन्ना जाट थे। बचपन से ही वे बड़े भगवद्भक्त थे। एक समय धन्नाजी के पिता ने उन्हें खेत में गेहूँ बोने के लिए बीज देकर भेजा, रास्ते में कुछ सन्त मिल गये। सन्त भूखे थे, उन्होंने धन्नाजी से भिक्षा माँगी। धन्नाजी ने भगवान के प्रतिनिधि उन सन्तों को बाँट दिया। धन्नाजी ने गेहूँ तो दे दिया पर माता-पिता के भय से यों ही घर लौटना उचित न समझ कर वह खेत चले गये और यों ही ज़मीन पर हल चला कर वह घर लौट आये। अपने भगत की इज्ज़त की रक्षा के लिए भगवान ने उस खेत को सब से अधिक हरा-भरा कर दिया। धन्ना सब बात समझ गये और उस दिन से वे और भी अधिक दृढ़ भक्त हो गये।

## १४—अम्बरीष

अयोध्या के राजा थे। बड़े सच्चे हरिभक्त थे। एकादशी का व्रत बड़ी निष्ठा से करते थे। एक बार दुर्वासाजी इन पर क्रुद्ध हुए और शापाग्नि से इनको जलाना चाहा। भगवान् ने पहले ही से अपने सुदर्शन चक्र को राजा की रक्षा की आज्ञा दे रक्खी थी। जब सुदर्शन ने देखा कि दुर्वासा की शापाग्नि राजा को जलाने को बढ़ रही है, तब उसने निज प्रताप से अग्नि को शान्त करके दुर्वासा



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

को जलाना चाहा। सुदर्शन की आँच से व्याकुल होकर दुर्वासा अपनी रक्षा के हेतु त्रिलोक में भागते फिरे, पर किसी ने उनकी रक्षा न की। अन्त में नारद के समझाने से दुर्वासा ने पुनः राजा अम्बरीष के पास आकर अपनी रक्षा के हेतु उनसे विनय की। तब दयालु राजा ने सुदर्शन से विनती की कि मैं क्षत्रिय हूँ और दुर्वासा ब्राह्मण हैं, अब ये मेरी शरण में आये हैं, मेरी प्रार्थना से आप इन्हें क्षमा करें। सुदर्शन शान्त हो गये। इस बात से मर्माहत होकर दुर्वासा ने विष्णु की प्रसन्नता के लिए कठिन तप किया। जब विष्णु प्रसन्न हुए, तब यह वर माँगा कि 'राजा अम्बरीष को दस हज़ार बार जन्म-मरण का कष्ट भोगना पड़े'। विष्णु ने कहा कि ऐसा तो नहीं हो सकता, पर तुम्हारा वरदान मैं इस प्रकार पूरा करूँगा कि अन्य मनुष्यों के हज़ार जन्म मेरे एक अवतार के बराबर हैं, अतः मैं खुद राजा अम्बरीष के दस हज़ार जन्मों के बदले दस अवतार धारण करूँगा। धन्य प्रभु की ऐसी दयालुता को।

सुदामा तथा द्रौपदी की कहानियाँ बहुत प्रसिद्ध हैं, अतः नहीं दी गई।

---



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

# अनुक्रमणिका


| पदसंख्या | पद | पृष्ठ-संख्या |
|---|---|---|
| १ | मन रे परसि हरि के चरण | १ |
| २ | जब से मोहि नन्दनन्दन | २ |
| ३ | अब तो निभायाँ बनेगा | ३ |
| ४ | अब मैं सरण तिहारी जी | ४ |
| ५ | अब नहिं बिसरूँ म्हारे हिरदे | ४ |
| ६ | अच्छे मीठे चाख-चाख | ५ |
| ७ | अपणो करम को वो छै | ६ |
| ८ | अब नहिं मानूँ राणाँ थारी | ६ |
| ९ | असा प्रभु जान न दीजै हो | ७ |
| १० | आवत मेरी गलियन में गिरधारी | ७ |
| ११ | आवो मन मोहना जी मीठा थाँरा बोल | ८ |
| १२ | आओ मन मोहना जी जोऊँ थारी बाट | ८ |
| १३ | आओ सहेल्या रली कराँ हे | ८ |
| १४ | आली म्हाँने लागे बृन्दावन नीको | १० |
| १५ | आली रे मेरे नैणाँ बाण पड़ी | १० |
| १६ | इक अरज सुनो पिय मोरी | १० |
| १७ | ऐसी लगन लगाय कहाँ तू जासी | ११ |
| १८ | ऐसे पियै जान न दीजै हो | ११ |
| १९ | कर परम सनेही राम की | १२ |
| २० | करम गति टारै नाहिं टरै | १२ |
| २१ | करणा सुणि स्याम मोरी | १३ |




Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

२२ किण संग खेलूँ होली . . . . १३
२३ कुण बाँचै पाती . . . . १४
२४ कैसे जिऊँ री माई हरि बिन . . . . १५
२५ कोई कहियौ रे प्रभु आवन की . . . १६
२६ कोई कछू कहे मन लागा . . . . १६
२७ कोई दिन याद करोगे . . . . १७
२८ कभी हमारी गली आवरे . . . . १७
२९ कमल दल लोचना . . . . १८
३० गली तो चारों बन्द हुई . . . . १८
३१ गोविंद कबहुँ मिले पिया मेरा . . . . १९
३२ घड़ी एक नहिं आवड़े . . . . २०
३३ घर आँगन न सुहावे . . . . २१
३४ घुँघरू बाँध मीरा नाची . . . . २१
३५ चलो अगम के देस . . . . २२
३६ चालाँ वाही देस . . . . २४
३७ चालो मन गंगा जमना तीर . . . . २४
३८ छाड़ो लँगर मोरी बहियाँ गहो ना . . . २५
३९ जावा दे जावा दे जोगी किसका मीत . . . २५
४० जावो निरमोहिया रे जाणी थाँरी प्रीत . . २५
४१ जागो बंसीवारे ललना . . . . २६
४२ जागो म्हारा जगपति राइक . . . . २६
४३ जग में जीवणा थोड़ा . . . . २७
४४ जोगिया छाइ रह्या परदेस . . . . २७
४५ जोगिया जी निसदिन जोऊँ बाट . . . २७
४६ जोगिया ने कहज्यो जी आदेस . . . २८
४७ जोगिया से प्रीत कियाँ दुख होय . . . २९



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

४८ जोगिया जी आवो ने या देस . . . . . २९
४९ जोगिया री प्रीतड़ी है दुखड़ा री मूल . . . . ३०
५० जोगिया तू कब रे मिलौगो आई . . . . ३०
५१ जोगिया री सूरत मन में बसी . . . . ३१
५२ जोगी मत जा, मत जा, मत जा . . . . ३१
५३ जोगी म्हाँने दरस दियाँ सुख होइ . . . . ३१
५४ जोसीड़ा ने लाख बधाई रे . . . . ३२
५५ डारि गयो मन मोहन फाँसी . . . . ३२
५६ तनक हरि चितवौ जी मोरी ओर . . . . ३३
५७ तुम आज्यो जी रामा . . . . . ३३
५८ तुम जीमो गिरधरलाल जी . . . . . ३३
५९ तुम पलक उघाड़ो दीनानाथ . . . . . ३४
६० तुम सुणो दयाल म्हाँरी अरजी . . . . ३४
६१ तुम्हारे कारण सब सुख छोड्या . . . . ३५
६२ तू नागर नन्द कुमार . . . . . ३५
६३ तू मत बरजे माईड़ी . . . . . ३६
६४ तेरो कोई नहि रोकनहार . . . . . ३६
६५ तेरो मरम नहि पायो रे जोगी . . . . ३७
६६ दरसन बिनु दूखन लागे नैन . . . . . ३८
६७ देखत राम हँसे सदामाँ . . . . . ३८
६८ देखी बरसा की सरसाई . . . . . ३९
६९ देखो सइयाँ हरि मन काठ कियो . . . . ३९
७० धूतारा जोगी एका सूँ हँसि बोल . . . . ३९
७१ नन्दनँदन बिलमाइ . . . . . ४०
७२ नहि ऐसो जनम बारंबार . . . . . ४१
७३ नहि भावै थारो देसड़लो जी . . . . . ४२



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

७४ नातो नाम को मोसो . . . . ४२
७५ निपट बंकट छबि अटकै . . . . ४४
७६ नींदलड़ी नहि आवे सारी रात . . . . ४४
७७ नैनन बनज बसाऊँ री . . . . ४५
७८ नैना लोभी रे . . . . ४५
७९ परम सनेही राम की . . . . ४६
८० पतिया मैं कैसे लिखूँ . . . . ४६
८१ पपइया प्यारे कब को . . . . ४७
८२ पपइया रे पिव की वाणी न बोल . . . ४७
८३ पायो जी मैंने नाम रतन धन पायो . . . ४८
८४ पिय बिन सूनो छै जी म्हारो देस . . . ४८
८५ पिय इतनी बिनती सुणि मोरी . . . ४९
८६ पिया तैं कहाँ गयौ नेहरा लगाय . . . ४९
८७ पिया जी म्हाँरे नैणा आगे रहो जी . . . ५०
८८ पिया अब घर आज्यो मोरे . . . ५०
८९ पिया तेरे नाम लुभाणी हो . . . ५०
९० पिया मोहि आरत तेरी हो . . . ५२
९१ पिया मोहि दरसण दीजै हो . . . ५३
९२ पिया बिन रह्यो न जाइ . . . ५४
९३ प्रभू बिनि न सरै माई . . . . ५४
९४ प्रेम नी प्रेम नी प्रेम नी . . . . ५५
९५ फागुन के दिन चार रे . . . . ५५
९६ बड़े घर ताली लागी रे . . . . ५६
९७ बदला रे तू जल भरि ले आयो . . . ५७
९८ बरजी मैं काहू की नाहीं रहूँ . . . ५७
९९ बरसै बदरिया सावन की . . . . ५८



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१०० बसो मोरे नैनन में नँदलाल . . . ५८
१०१ बंसीवारो आयो म्हारे देस . . . ५९
१०२ बंसीवारे की चितवन सालति है . . . ५९
१०३ बादर देखी डरी हो . . . ६०
१०४ बाल्हा मैं बैरागिण हूँगी हो . . . ६०
१०५ बैद को सारो नाहीं रे भाई . . . ६१
१०६ भज मन चरण कँवल अविनासी . . . ६१
१०७ भज ले रे मन गोपाल गुणा . . . ६२
१०८ भर मारी रे बाना मेरे . . . ६३
१०९ भवनपति तुम घरि आज्यो हो . . . ६३
११० भीजै म्हारो दाँवन चीर . . . ६३
१११ मतवारो बादर आये . . . ६४
११२ मानुख जनम पदारथ पायो . . . ६४
११३ माई म्हाँरी हरिहू न बूझी बात . . . ६५
११४ माई री मैं तो लियो गोविंद मोल . . . ६५
११५ माई म्हाँने सुपणे में परण गयो . . . ६६
११६ मिलता जाज्यो हो गुरु ज्ञानी . . . ६७
११७ मीरा लागो रंग हरी . . . ६७
११८ मीरा मन मानी . . . ६८
११९ मुझ अबला ने मोटी निरांत थई . . . ६८
१२० मेरा बेड़ा लगाय दीजो पार . . . ६९
१२१ मेरे तो गिरधर गोपाल . . . ६९
१२२ मेरे प्रीतम प्यारे राम . . . ७०
१२३ मेरे मन राम नाम बसी . . . ७०
१२४ मेरे मन रामहि राम रटै रे . . . ७१
१२५ मेरो मन बसिगो गिरधरलाल सो . . . ७१



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri


१२६ मेरो मन लागो हरिजूँ सू . . . ७२
१२७ मेरो मन हरि सूँ जोरथो . . . ७२
१२८ मेहा बरसिवो करे रे . . . ७३
१२९ मैं अपने सैयाँ सँग साँची . . . ७४
१३० मैं जाण्यो नाहीं प्रभु को . . . ७४
१३१ मैं गिरधर रंगराती . . . ७५
१३२ मैं गिरधर के घर जाऊँ . . . ७६
१३३ मैं गोविन्द गुण गाणा . . . ७६
१३४ मैं तो तेरी सरण परी रे रामाँ . . . ७७
१३५ मैं तो साँवरे रँग राँची . . . ७७
१३६ मैं तो राजी भई मेरे मन में . . . ७८
१३७ मैं तो म्हारा रमैया ने देखबो . . . ७८
१३८ मैं बिरहिण बैठी जागूँ . . . ७९
१३९ मैं हरि बिन क्यूँ जिवूँ री माइ . . . ७९
१४० मोहि लागी लगन गुर चरनन की . . . ८०
१४१ म्हाने चाकर राखो जी . . . ८०
१४२ म्हारा ओलगिया घर आया जी . . . ८१
१४३ म्हारा सतगुर वेगा आज्यो जी . . . ८२
१४४ म्हारे घर आज्यो प्रीतम प्यारा . . . ८३
१४५ म्हारे घर रमतो ही आई रे तू जोगिया . . ८३
१४६ म्हारे घर होता जाज्यो राज . . . ८४
१४७ म्हारे नैणा आगे रहोजो जी . . . ८४
१४८ म्हारो जनम मरण को साथी . . . ८५
१४९ यहि विधि भक्ति कैसे होय . . . ८६
१५० या ब्रज में कछु देख्यो री टोना . . . ८७
१५१ या मोहन के मैं रूप लुभानी . . . ८७




Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitizagtion by eGangotri
१५२ यो तो रंग धत्तां लग्यो ए माय . . . ८८
१५३ रघुनन्दन आगे नाचूँगी . . . ८८
१५४ रमइया बिन रह्योइ न जाइ . . . ८९
१५५ रमइया बिनि यौ जिवड़ौ दुख पावे . . . ८९
१५६ रमइया बिन नींद न आवै . . . ९०
१५७ रमइया मैं तो थारे रँग राती . . . ९१
१५८ राणा जी थे क्याँ ने राखो म्हाँसूँ बैर . . . ९१
१५९ राणा जी म्हें तो गोविंद का गुण गास्याँ . . . ९२
१६० राणा जी हूँ अब न रहूँगी तोरी हटकी . . . ९२
१६१ राणा जी म्हाँ कूँ ये बदनामी लागे मीठी . . . ९३
१६२ राम तने रँग राची, राणा . . . ९३
१६३ राम नाम रस पीजे मनुआँ . . . ९४
१६४ राम नाम मेरे मन बसियो . . . ९४
१६५ राम मिलण के काज सखी, . . . ९५
१६६ राम मिलणरो घणो उमावो . . . ९६
१६७ राम मोरी बाँहड़ली जी गहो . . . ९६
१६८ रावलो विड़द मोहि रूढ़ो लागे . . . ९७
१६९ री मेरे पार निकस गया . . . ९७
१७० रे साँवलिया म्हारे आज . . . ९७
१७१ लागी सोही जाणै कठण लगन . . . ९८
१७२ लागी मोहि राम खुमारी हो . . . ९८
१७३ लेताँ-लेताँ राम नाम रे . . . ९९
१७४ वारी वारी हो राम हूँ वारी . . . ९९
१७५ सखी मेरो कानूड़ो कलेजे कोर . . . १००
१७६ सखी मेरी नींद नसानी हो . . . १००
१७७ सखी री लाज बैरण भई . . . १०१

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

१७८ सजन सुधि ज्यूँ जाणि ज्यू लीज हो . . . . १०१
१७९ सतगुर म्हाँरा प्रीत निभाज्यो जी . . . . १०२
१८० सहेलियाँ साजन घर आया हो . . . . १०२
१८१ साजन घर आवो ( रे ) मिठबोला . . . . १०३
१८२ सावण दे रह्यो जोरा रे . . . . १०३
१८३ सीसोद्यो रूठो तो म्हाँरो . . . . १०३
१८४ सुनी हो मैं हरि आवन की आवाज . . . . १०४
१८५ सोवत ही पलका में . . . . १०५
१८६ स्याम सुन्दर पर वार . . . . १०५
१८७ स्याम म्हाँसूँ ऐंडो डोले हो . . . . १०५
१८८ हमने सुनी छै हरि अधम उधारण . . . . १०६
१८९ हमरो प्रणाम बाँकेबिहारी को . . . . १०७
१९० हरि बिन कूँण गती मेरी . . . . १०८
१९१ हरि ! तुम हरो जन की भीर . . . . १०८
१९२ हरि मेरे जीवन प्राण अधार . . . . १०९
१९३ हे मेरो मन मोहना . . . . ११०
१९४ हे री मैं तो दरद दिवाणी . . . . ११०
१९५ हेली सुरत सुहागिन नार . . . . १११
१९६ हो गये स्याम दूइज के चन्दा . . . . ११२
१९७ हो जी हरि कित गये नेह लगाय . . . . ११२
१९८ हो जी महाराज छोड़ मत जाज्यो . . . . ११२
१९९ होरी खेलत है गिरधारी . . . . ११३
२०० होली पिया बिन मोहि न भावै . . . . ११३
२०१ होली पिया बिन लागै खारी . . . . ११४



Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आम्नाय–ग्रन्थालय,
रत्ननिधि. करौंवा
वाराणसी-5

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi